सिरि अन्तगडदसा

[मूल, संस्कृत छाया, हिन्दी शब्दार्थ एवं भावार्थ सहित]

अनुवादक

जैनाचार्य श्री हस्तिमलजी महाराज

सम्पादक

गजसिंह राठौड़
चांदमल कर्णावट
प्रेमराज बोगावत

प्रकाशक

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर-३

प्रकाशक
सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
बापू बाजार, जयपुर 302003

●

द्वितीय परिवर्तित एव
परिवर्द्धित सस्करण
1100

●

आंशिक द्रव्य सहायतादाता
स्व० श्री भूरालालजी पाडलेचा
निवासी धनोप

●

मूल्य १० ०० रु० मात्र

वीर सम्वत् २५03
विक्रम सम्वत् २०3५
ईस्वी सन् १६७९

●

मुद्रक
पॉपुलर प्रिन्टर्स
हवेली
त्रिपोलिया बाजार
जयपुर-२

। की

श्री अन्तगडदशाग सूत्र का प्रथम सस्करण मण्डल के द्वारा कुछ वर्षों पूर्व प्रकाशित हुआ। थोडे समय में ही उसकी प्रतिया समाप्त हो गई।

इसके बाद द्वितीय सस्करण शीघ्र ही प्रकाशित करने का निर्णय मडल ने लिया। उस समय मण्डल के समक्ष एक सुझाव आया कि प्रथम सस्करण में जहा मूल सूत्रपाठ एव उसका सरल हिन्दी अर्थ ही लिया गया, वहा इस सस्करण में सस्कृत छाया एव सरल हिन्दी भावार्थ भी और जोड दिया जाय तो स्वाध्याय सघ के भाइयों को एव अन्य स्वाध्याय रसिकों को इस आगम सूत्र के अर्थ बोध में और भी सुगमता होगी।

हमें सुझाव पसद आया। इसके लिये आचार्य गुरुदेव से प्रार्थना की गई। गुरुदेव ने कृपा की। उनके मार्ग-दर्शन में यह परिवर्द्धित सस्करण तैयार हुआ। श्री गजसिहजी राठौड, श्री चादमल जी कर्णावट एव श्री प्रेमराज जी बोगावत जैसे जैनागम-ज्ञाता विद्वानों का सम्पादन सहयोग इसमें हमें मिला। इसकी हमें प्रसन्नता है। हम इन सम्पादक बन्धुओं के प्रति अपना हार्दिक आभार प्रकट करते हैं। पूज्य गुरुदेव के आशीर्वाद का तो यह सुफल है ही। उनका यह मण्डल चिरऋणी रहेगा।

इसका अग्रेजी अनुवाद भी इसके साथ देने की हमारी भावना थी, पर कई व्यावहारिक कठिनाइयों के कारण इसे फिलहाल हमें स्थगित रखना पडा। आशा और विश्वास है कि स्वाध्याय रसिक साधक वृन्द इस ग्रन्थ के इस परिवर्द्धित रूप को अधिक पसन्द करेंगे एव इससे अधिक से अधिक लाभ उठाकर अपनी स्वाध्याय प्रवृत्ति को बढाएगे, तो हम अपने श्रम को सार्थक समझेंगे।

सोहननाथ मोदी
अध्यक्ष

चन्द्रराज सिघवी
मत्री

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

उद्गार

(आचार्य श्री हस्तिमल जी महाराज सा)

धर्म शास्त्र की महिमा

शास्त्र किसे कहते है ? इसकी अगर शाब्दिक परिभाषा की जाय तो भापा शास्त्र के अनुसार 'शासन करने वाले' या 'मानव मन को अनुशासित बनाने वाले' ग्रन्थ को 'शास्त्र' कहते है जो तद् तद् विषयानुकुल अनेक प्रकार के होते है—जैसे अर्थ शास्त्र, काम शास्त्र, भाषा शास्त्र, समाज शास्त्र, व्याकरण शास्त्र, वास्तु शास्त्र, रसायन शास्त्र, नीति शास्त्र, और धर्म शास्त्र आदि आदि । उपर्युक्त अन्य शास्त्र जहा मनुष्य की भौतिक इच्छा, शाब्दिक ऊहा पोह, रस परिविज्ञान एव कामादि लालसा को जागृत कर उसे स्वार्थ परायण और सघर्षशील बनाते है, वहाँ 'धर्म शास्त्र' मानव को भौतिक प्रपच से मोडकर कर्त्तव्य-परायरा, आत्माभिमुखी और विश्व हितैपी बनाता है । वह मानव की पापानुबन्धी बहिर्मुखी कलुषित मनोवृत्ति को दबाकर उसे पुण्यानुबन्धी अन्तर्मुखी बनने की प्रेरणा देता है । जैसे पारस का सम्पर्क लौह को बहुमूल्य सुवर्ण बना देता है, वैसे ही धर्म शास्त्र भी आत्म परायरा नर को नारायण बना देता है, इसलिए किसी विद्वान् ने ठीक ही कहा है कि—

> श्लोको वर परम तत्व-पथ प्रकाशी,
> न ग्रन्थ-कोटि-पठन जन-रजनाय ।
> सजीवनीति वरमौषधमेकमेव,
> व्यर्थ श्रमस्य जननी न तु मूल-भार ।

अर्थात् परम तत्व के मार्ग को बताने वाला एक श्लोक भी अच्छा किन्तु जन रजन के लिए करोडो ग्रन्थो का पढना भी श्रेष्ठ नही । सजीवनी जडी का एक टुकडा भी अच्छा किन्तु व्यर्थ मे भार वहन कराने वाला मूले का भार हितकर नही ।

धर्म शास्त्र की इस महिमा के कारण ही महर्षियो ने इसकी श्रुति तक को दुर्लभ बताया है । जैसा कि कहा है—

"सुई धम्मस्स दुल्लहा" धर्म का सुनना दुर्लभ है । वस्तुत तो ससार को सन्मार्ग पर ले चलने का सारा श्रेय धर्म शास्त्र को ही है ।

धर्मशास्त्र और द्वादशांगी

महिमाशाली होकर भी साधारण धर्म शास्त्र मानव जगत का उतना कल्याण नही कर पाते जितना कि उनसे अपेक्षित है। जिनके गायक या रचयिता स्वय ही सरागी, भोगी एव अज्ञान युक्त है, वे ग्रन्थ भला मानव का अभिलषित उपकार कहा तक कर सकते है ? अत वीतराग, आप्त पुरुषो की वाणी या तदनुकुल सत्पुरुषो की वाणी ही मानव-कल्याण मे समर्थ मानी गई है।

अनादिकाल की नियत मर्यादा है कि तीर्थंकर भगवान को जब केवलज्ञान की प्राप्ति हो जाती है तब वे श्रुत धर्म और चारित्र धर्म की देशना देकर चतुर्विध सघ की स्थापना करते है। उस समय उनके परम प्रमुख शिष्य गणधर प्रत्यक्षदर्शी तीर्थंकरो की अर्थ रूपी वाणी को ग्रहण कर उसे सूत्र रूप मे गू थते है जैसे चतुर माली लता से गिरे हुए फूलो को एकत्र कर हार बनाता है और उससे मानव का मनोरजन करता है।

गणधरो द्वारा गू थे गये (रचे गये) वे प्रमुख सूत्र-शास्त्र ही द्वादशागी के नाम से कहे जाते है। जैसे कि कहा है—

अत्थ भासइ अरहा, सुत्त गथति गणहरा निउण।
सासणस्स हियट्ठाए तओ सुत्त पवत्तइ ॥

अर्थात् तीर्थंकर भगवान अर्थ रूप वाणी बोलते है और गणधर उसको ग्रहण कर शासन हित के लिए निपुणता पूर्वक सूत्र की रचना करते है तब सूत्र की प्रवृत्ति होती है। शब्दरूप से सादि सान्त होकर भी यह द्वादशागी श्रुत अर्थ रूप से नित्य एव अनादि अनन्त कहा गया है। जैसा कि नन्दी सूत्र मे उल्लेख है—

"से जहा नामए पच अत्थि काया न कयाइ नासी न कयाइ न भवइ, न कयाइ न भविस्सइ, भुवि य, भवइ य, भविस्सइ य, धुवे नियए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए णिच्चे एवमेव दुवालसगे गणिपिडगे न कयाइनासी।"

अर्थात् पचास्तिकाय की तरह कोई भी ऐसा समय नही था, नही है, और नही होगा जबकि द्वादशाँगी श्रुत नही था नही है या नही रहेगा। अत यह द्वादशागी नित्य है। जैसाकि पहले कह गए है कि शब्द रूप से द्वादशागी सादि सान्त है। प्रत्येक तीर्थंकर के समय गणधरो द्वारा इसकी रचना होती है। फिर भी अर्थरूप से यह नित्य है। इस प्रकार महर्षियो ने शास्त्र की अपौरुषेयता का भी समाधान कर दिया है। उन्होने अर्थरूप से शास्त्र ज्ञान को नित्य अपौरुषेय एव शब्द रूप से सादि पौरुषेय कहा है।

श्वेताम्बर परम्परा के अनुसार अब भी द्वादशागी के ग्यारह अग शास्त्र विद्यमान हैं और सुधर्मा स्वामी की वाचना प्रस्तुत होने से इनके रचनाकार भी सुधर्मा स्वामी माने

गए है। आचाराग १, सूत्रकृताग २, स्थानाग ३, समवायाग ४, विवाह प्रज्ञप्ति ५, ज्ञाता-धर्म कथा ६, उपासक दशा ७, अतकृत दशा ८, अनुत्तरौपपातिक दशा ९, प्रश्न व्याकरण १०, और विपाक सूत्र ११। इनमे अन्तकृत दशा का आठवा स्थान है। उपाग, मूल, छेद और प्रकीर्ण सूत्रो की अपेक्षा प्रधान होने से इनको अग शास्त्र माना गया है।

नाम और महत्व

प्रस्तुत शास्त्र "अतगडदसा" के नाम की सार्थकता स्वय इसके अध्ययन से विदित हो जाती है। यद्यपि मोक्षगामी पुरुषो की गौरव गाथा तो अन्य शास्त्रो मे भी प्राप्त होती है, पर इस शास्त्र मे केवल उन्ही सत सतियो के जीवन परिचय है, जिन्होने इसी भव से जन्म-जरा-मरण रूप भवचक्र का अ त कर दिया अथवा अष्ट विध कर्मो का अन्त कर जो सिद्ध-बुद्ध-मुक्त हो गए। सदा के लिए ससार लीला का अन्त करने वाले 'अ तगड' जीवो की साधना दशा का वर्णन करने से ही इसका 'अ तगडदसाओ' नाम रक्खा गया हैं।

इसके पठन पाठन और मनन से हर भव्य जीव को अन्त क्रिया की प्रेरणा मिलती है, अत यह परम कल्याणकारी ग्रन्थ है। उपासक दशा मे एक भव से मोक्ष जाने वाले श्रमणोपासको का वर्णन है, किन्तु इस आठवे अग 'अन्तकृत दशा' मे उसी जन्म मे सिद्ध गति प्राप्त करने वाले उत्तम श्रमणो का वर्णन है। अत परम-मगलमय है और इसी लिये लोक जीवन मे इसका महत्वपूर्ण स्थान है।

वर्णन शैली

ग्रन्थो की रोचकता को उनकी वर्णन शैली से भी आकने की प्रथा है। अच्छी से अच्छी बाते भी अरोचक ढग से कहने पर उतना असर नही डालती जितना कि एक साधारण बात भी सुन्दर व व्यवस्थित ढग से कहने पर श्रोतृ-चित्त को आकृष्ट कर लेती है। प्रस्तुत ग्रन्थ की वर्णन शैली भी व्यवस्थित है। इसमे प्रत्येक साधक के नगर, उद्यान, चैत्य-व्यतरायतन, राजा, माता-पिता, धर्माचार्य, धर्मकथा, इहलोक एव परलोक की ऋद्धि, पाणिग्रहण और दाति प्रीतिदान, भोगो का परित्याग, प्रव्रज्या, दीक्षाकाल, श्रुतग्रहण, तपोपधान, सलेखना और अन्त क्रिया स्थान का उल्लेख किया गया है।

'अन्तगडदशा' मे वर्णित साधक पात्रो के परिचय से प्रकट होता है कि श्रमण भगवान महावीर के शासन मे विभिन्न जाति एव श्रेणी के व्यक्तियो को साधना मे समान अधिकार प्राप्त था। एक ओर जहा बीसियो राजपुत्र-राजरानी और गाथापति साधना-पथ मे चरण से चरण मिला कर चल रहे है, दूसरी ओर वही कतिपय उपेक्षित वर्ग वाले और मनुष्य घाती तक भी ससम्मान इस साधना क्षेत्र मे आकर समान रूप से आगे बढ रहे है। कर्मक्षय कर सिद्ध-बुद्ध एव मुक्त होने मे किसी को कोई रुकावट नही, बाधा नही। 'हरि को भजे सो हरि को होई' वाली लौकिक उक्ति अक्षरश चरितार्थ हुई है। कितनी

समानता-समता और आत्मीयता भरी थी उन सूत्रकारो के मन मे? वय की दृष्टि से अतिमुक्त जैसे बाल मुनि और गज सुकुमार जैसे राजप्रासाद के दुलारे गिने जाने वाले भी इस क्षेत्र मे उतर कर सिद्धि प्राप्त कर गये। शास्त्रकार की वह रचना शैली विश्व के मानव मात्र को कल्याण साधना मे पूर्णरूप से प्रेरित एव उत्साहित करती है।

परिचय

समवायाग मे "अन्तगडदसा" का परिचय इस प्रकार मिलता है-अन्तगडदशा मे अन्तकृत आत्माओ के नगर, उद्यान, चैत्य-व्यतरालय, वनखड, राजा, माता पिता, समवसरण, धर्माचार्य, धर्मकथा, लौकिक और पारलौकिक ऋद्धि, भोग, परित्याग, प्रव्रज्या, श्रुतग्रहण, उपधान-तप, प्रतिमा, बहुत प्रकार की क्षमा, आर्जव, मार्दव, शौच और सत्य सहित १७ प्रकार का सयम, उत्तम ब्रह्मचर्य, अकिंचनता, तप क्रिया और समिति गुप्ति तथा अप्रमाद योग, उत्तम सयम आप्त पुरुषो के स्वाध्याय-ध्यान का लक्षण, चार प्रकार के कर्म क्षय करने पर केवल ज्ञान की प्राप्ति, जिन्होने सयम का पालन किया-पादोपगमन सथारा और जहा जितने भक्त का छेदन करना था वह करके अन्तकृत मुनिवर अज्ञान रूप अन्धकार से मुक्त हो सर्व श्रेष्ठ मुक्तिपद प्राप्त कर गये, ऐसे अन्यान्य वर्णन भी इसमे विस्तार के साथ कहे गए ह।

अन्तकृतदशा सूत्र की परिमित वाचना एव सख्येय अनुयोग द्वार हैं, यावत् सख्येय सग्रहणी है। अ ग की अपेक्षा यह आठवा अ ग है इसके एक श्रु त स्कन्ध-दश अध्ययन और सात वर्ग है। दश उद्देशन काल और दश ही समुद्देशन काल बतलाए है। (सम०पृ० २५१ हैदराबाद वाला)

नन्दी सूत्र-गत परिचय से समवायाग के इस परिचय मे यह विशेषता है कि यहा क्षमा, आर्जव, मार्दव, शौच आदि यति धर्म का स्वरूप बताने के साथ स्वाध्याय और ध्यान का लक्षण भी बताया गया है। सम्भव है आज का 'अन्तगडदशा' कोई भिन्न वाचना का हो। इसमे स्त्री पुरुष, बालक और वृद्ध साधको की कठोर साधना गायी गई है। महामुनि गज सुकुमाल के आत्मध्यान का भी वर्णन है। पर उसमे ध्यान की विशेष परिपाटी या लक्षण का पृथक कोई उल्लेख नही मिलता। कदाचित् सक्षेपीकरण के समय देवर्द्धिगणी ने कम कर दिया हो, अथवा प्राप्त वाचना मे इसी प्रकार का पाठ हो।

अध्ययन और वर्ग का परिचय भी समवायाग सूत्र मे भिन्न प्रकार से है। नन्दीकार जहा "अन्तगडदसा" का एक श्रु त स्कन्ध, आठ वर्ग और आठ ही उद्देशन काल बताते है, वहा समवायॉग मे एक श्रु त स्कन्ध, दश अध्याय तथा ७ वर्ग बतलाए है। आचार्य श्री अमोलक ऋषिजी म०ने दश अध्याय का एक वर्ग और सात वर्ग यो आठ वर्ग लिखे है। पर उद्देशन काल दश कहे है, जबकि नन्दी सूत्र मे आठ उद्देशन काल बतलाए है।

इससे प्रमाणित होता है कि समवायाग सूत्र निर्दिष्ट 'अन्तगडदसा' वर्तमान 'अन्तगडदसा' से कोई भिन्न था। वर्तमान मे उपलब्ध सूत्र ही नन्दी सूत्र मे निर्दिष्ट अन्तगडदसा है।

अतगडदसा की तपः साधना

अन्तकृद्दशा सूत्र के वर्णनो पर गहराई से चिंतन किया जाय तो साधना क्षेत्र की विविध सामग्रिया उपलब्ध होती है।

सामान्य तौर से सयम और तप की विमल साधना से मुक्ति की प्राप्ति मानी गयी है। सयम का साधन ज्ञानपूर्वक ही होता है, अत उसके लिए जीवाजीवादि का तत्व ज्ञान आवश्यक माना गया है। विषय कषाय को जीतने के लिए ज्ञान या ध्यान का बल पुष्ट साधन है और तप, ज्ञान ध्यान का साधन है, अथवा ज्ञान ध्यान स्वय भी एक प्रकार का तप है। फिर भी व्यवहार दृष्टि से यह जिज्ञासा हो सकती है कि ज्ञान साधना से मुक्ति होती है? या ध्यान से अथवा कठोर तप साधन से या उपशम से?

अन्तगडदसा सूत्र के मनन से ज्ञात होता है कि गौतम आदि, १८ मुनियो के समान १२ भिक्षु प्रतिमा एव गुणरत्न-सवत्सर तप की साधना से भी साधक कर्म क्षय कर मुक्ति मिला लेता है। अनीक सेनादि मुनि १४ पूर्व के ज्ञान मे रमण करते हुए सामान्य बेले २ की तपस्या से कर्म क्षय कर मुक्ति के अधिकारी बन गए। अर्जुनमाली ने उपशमभाव-क्षमा की प्रधानता से केवल छह मास बेले २ की तपस्या कर सिद्धि मिलाली। दूसरी ओर अतिमुक्त कुमार ने ज्ञान-पूर्वक गुण-रत्न-तप की साधना से सिद्धि मिलाई और गज सुकुमाल ने विना शास्त्र पढे और लम्बे समय तक साधना एव तपस्या किए बिना ही केवल एक शुद्ध ध्यान के बल से ही सिद्धि प्राप्त करली। इससे प्रकट होता है कि ध्यान भी एक बडा तप है। काली आदि रानियो ने सयम लेकर कठोर साधना की और लम्बे समय से सिद्धि मिलाई। इस प्रकार कोई सामान्य तप से, कोई कठोर तप से, कोई क्षमा की प्रधानता से तो कोई अन्य केवल आत्म ध्यान की अग्नि मे कर्मो को झोक कर सिद्धि के अधिकारी बन गए।

मथितार्थ यह है कि शास्त्रो का गम्भीर अभ्यास और लम्बे काल का कठोर तप चाहे हो या न हो, यदि कर्म हल्के है और आत्मध्यान मे मन अडोल है तो अल्प काल मे भी मुक्ति हो सकती है।

विविध प्रकार के तप

अन्तगडदसा सूत्र मे ध्यान की साधना का तो स्पष्ट रूप नही मिलता, पर तपस्या के अनेको प्रकार उपलब्ध होते है। सर्व प्रथम १२ भिक्षु प्रतिमाओ का वर्णन है, जिनका

विस्तृत उल्लेख दशाश्रुत स्कध मे मिलता है। दूसरा गुणरत्न सवत्सर तप है जो गौतमकुमार आदि मुनियो के द्वारा साधा गया है। इसके लिए सैलाना से प्रकाशित अन्तगडदसा के टिप्पण मे ऐसा लिखा है कि प्राचीन धारणा के अनुसार इसका आराधना काल ऋतुबद्ध याने ८ मास है, परन्तु **भगवती सूत्र शतक २ उद्देश १ में खदक मुनि के अधिकार** मे इसका रूप इस प्रकार उपलब्ध होता है। जैसे–पहले महीने एकातर उपवास का पारणा करना, दूसरे महीने मे दो दो उपवास का पारणा करना, तीसरे महीने तीन तीन उपवास का पारणा करना, चोथे महीने ४-४ उपवास का पारणा, पाचवे महीने मे ५-५ का–छठे महीने मे ६-६ का–इस प्रकार बढते हुए १६वे महीने मे १६।१६ उपवास का पारणा करना, दिन को उत्कट आसन से आतापना लेना और रात मे वीरासन से खुले बदन डास आदि के परिषह सहना। यह इस तप का स्वरूप बताया गया है।

तीसरा तप है रत्नावली—इसमे एक उपवास से लेकर ऊचे १६ तक की तपस्या चढाव उतार से की जाती है। मध्य मे बेले और आदि अन्त मे उपवास, बेला तेला की तपस्या की जाती है। चारो परिपाटियो मे चार वर्ष ३ मास और ६ दिन तप के और ३५२ पारणा के दिन होते है।

चौथा तप है कनकावली—रत्नावली के समान ही इसमे भी उपवास से १६ तक तप का चढाव उतार होता है। अन्तर केवल इतना है कि इसमे ३ स्थान पर रत्नावली के षष्ठ तप के बदले अष्टम तप किया जाता है। चारो परिपाटी मे ४ वर्ष ६ मास और २६ दिन का तप और ३५२ पारणे होते है। एक परिपाटी मे १ वर्ष दो मास और १४ दिन का तप तथा ८८ पारणे होते हे।

पाचवा तप है लघुसिह निष्क्रीडित—इसमे जैसे शेर आगे पीछे कदम रखता है, वैसे ही उपवास से लेकर ५ तक की तपस्या मे आगे बढना और पीछे हटना। इस प्रकार ४ परिपाटियाँ की जाती है। एक मे ५ मास और ४ दिन के तप एव ३३ पारणे होते है। चार के १ वर्ष ८ मास १६ दिन के तप और १३२ पारणे होते है।

छठा तप महासिह निष्क्रीडित—इसमे ऊचे से ऊचे १६ तक का तप होता है। साधना काल ६ वर्ष २ मास और १२ दिन मे ५ वर्ष ६ मास और ८ दिन तप के तथा २४४ पारणे होते है।

सातवा तप सप्त सप्तमिका भिक्षु प्रतिमा, आठवा अष्ट अष्टमिका भिक्षु प्रतिमा नवमा नव नवमिका भिक्षु प्रतिमा और दशवा दश दशमिका भिक्षु प्रतिमा है।

ये चारो तप साधुओ की अपेक्षा से कहे गए है। इन चारो प्रतिमाओ मे भोजन की दाती की अपेक्षा तप का आराधन किया जाता है। सप्त सप्तमिका मे प्रथम सप्ताह मे एक दत्ति भोजन की व एक दत्ति जल की, दूसरे सप्ताह मे दो दो, यावत् सातवे सप्ताह मे सात दत्ति भोजन की, और सात ही जल की ग्रहण की जाती है। इसके तप दिन ४९ होते

है। ऐसे अष्ट अष्टमिका के ६४ दिन, नव नवमिका के ८१ दिन और दश दशमिका के १०० दिन होते है। दिन के प्रमाण से प्रथम अष्टक मे १ दत्ति और आठवे मे आठ दत्ति इस प्रकार नव नवमिका मे नव दिन और दशमिका मे दश दिन से एक एक दत्ति बढानी चाहिए।

ग्यारहवा तप लघु सर्वतोभद्र प्रतिमा है इसमे अनानुपूर्वी क्रम से १ उपवास से ६ उपवास तक ५ लाइन की जाती है। एक परिपाटी मे ७५ दिन का तप और २५ पारणे होते है। इस प्रकार चार परिपाटी मे तप की पूर्ण आराधना की जाती है।

बारहवा महासर्वतोभद्र तप है, इसमे एक उपवास से ७ उपवास तक पूर्व कथित प्रकार से किये जाते है। एक परिपाटी मे १९६ दिन तप और ४९ पारणे होते है।

तेरहवी भद्रोत्तर प्रतिमा है इस तप मे ५।६।७।८।९ इस प्रकार अनानुपूर्वी से पाच पंक्ति मे तपस्या की एक परिपाटी पूर्ण होती है। जिसमे ६ मास २० दिन का समय लगता है। तप के दिन १७५ और २५ पारणे होते है।

चौदहवाँ आयबिल वर्धमान तप है। इसमे १ से १०० तक आयबिल बढाये जाते है। पारणा के दिन बीच मे उपवास किया जाता है। आयबिल के कुल दिन ५०५० और १०० दिन के उपवास होते है। साधारण सा दिखने पर भी यह तप बडा महत्वशाली और कठिन है।

पन्दरहवा मुक्तावली तप है। इसमे ऊचे से ऊचा १६ तक का तप होता है। एक परिपाटी मे २८५ दिन का तप और ६० पारणे होते है। चारो परिपाटिया ३ वर्ष और १० मास मे पूर्ण की जाती है।

पर्यूषण मे अन्तगड का वाचन

बहुत बार यह जिज्ञासा होती है कि पर्यूषण मे अन्तगड का वाचन आवश्यक क्यो माना जाता है? अन्य किसी सूत्र का वाचन क्यो नही किया जाता? बात ठीक है, शास्त्र सभी मागलिक है और उनका पर्व दिनो मे वाचन भी हो सकता है, कोई दोष की बात नही है। विचार केवल इतना ही है कि पर्वाधिराज के इन अल्प दिनो मे वैसे सूत्र का वाचन होना चाहिये जो आठ ही दिनो मे पूरा हो सके और आत्म साधना की प्रेरणा देने मे भी पर्याप्त हो, अग या उपाग शास्त्रो मे ऐसा कोई अग सूत्र नही जो इस मर्यादित काल मे पूरा हो सके। अनुत्तरौपपातिक दशा है तो वह अति लघु होने के साथ इतनी प्रेरक सामग्री प्रस्तुत नही करता। फिर उसमे वर्णित साधक अनुत्तर विमान के ही अधिकारी होते है, मोक्ष के नही। परन्तु अन्तकृतदशा मे ये दोनो बाते है, वह अति लघु या महत् आकार मे नही है, साथ ही उसमे ऐसे ही साधको की जीवन गाथा है जो तप सयम से कर्म क्षय कर 'पूर्णानद के भागी बन चुके है। अन्तकृतदशा के उद्देश समुद्देश का काल भी ८ दिन

का है और पर्यूषण का अष्टान्हिक पर्व भी अष्टगुणों की प्राप्ति एव अष्ट कर्मों की क्षीणता के लिये है। अत पर्यूषण मे इसी का वाचन उपयुक्त है। प्रस्तुत सूत्र मे छोटे वडे ऐसे साधको की जीवन गाथा बताई है जिनसे आबाल वृद्ध सब नर नारी प्रेरणा ले सके और अपनी योग्यता के अनुसार साधना कर आत्मा का विकास कर सके। यही खास कारण है कि पूर्वाचार्यो ने पर्यूषण के अष्टान्हिक पर्व मे आठ वर्ग वाले इस मगलमय शास्त्र का बोधप्रद वाचन निश्चित किया।

जैसे मगल हेतु एव ऐतिहासिक परिचय प्रदान करने को कल्पसूत्र मे महावीरादि के पच कल्याण और पट्टावली का वाचन आवश्यक माना गया है, वैसे ही लगता है कि आत्म साधना मे प्रेरणा प्रदान करने के लिए अन्तकृतदशा का वाचन भी आरम्भ किया गया हो। वीर निर्वाण ९९३ के समय कल्प सूत्र का सामूहिक वाचन होने लगा था सभव है उस समय साधना प्रेमी सतो ने यह सोचकर कि कल्पसूत्र मे केवल तीर्थंकर भगवान् की गुण गाथा है। चतुर्विध सघ को साधना के लिये वैसी प्रेरणा दायक सामग्री नही है अत इसका वाचन आवश्यक माना हो, अथवा तो समाज मे आडम्बर और जन्म महोत्सव की भक्ति आदि की ओर बढते मोड को बदलने के लिये अन्तकृतदशा का वाचन चालू किया हो। इतना सुनिश्चित है कि पर्वाधिराज मे अन्तगडदशा का वाचन सहेतुक एव उपयोगी है।

प्राप्त टीका और प्रकाशन

अन्तगडदशा पर कुछ टीका ग्रथ है, जैसे-अभयदेवसूरि कृत सस्कृत टीका, प्राचीन टब्बा, पडित रत्न श्री घासीलालजी महाराज कृत सस्कृत टीका। हिन्दी, गुजराती, अनुवाद भी प्राप्त होते है। इस सूत्र के अनेक स्थानो से मूल टीका और अनुवाद के प्रकाशन हो चुके है। उनमे—

१-सर्वप्रथम राय धनपतसिह बहादुर का टीका और गुजराती टब्बा सहित अतिशुद्ध नही होने पर भी इसका बडा उपयोग हुआ, कागज साधारण होने से वह अधिक स्थिर नही रह सका।

२-आगमोदय समिति सूरत से सशोधित, सयुक्त प्रकाशन-अन्तकृतदशा और अनुत्तरौपपातिक सटीक।

३-पूज्य अमोलखऋषि जी महाराज कृत हिन्दी अनुवाद, लाला ज्वाला प्रसाद जी की ओर से, हैदराबाद का प्रकाशन।

४-पडित रत्न श्री घासीलाल जी महाराज कृत सस्कृत टीका और हिन्दी गुजराती अनुवाद सहित, अहमदाबाद।

५-उपाध्याय श्री प्यारचन्द जी महाराज कृत हिन्दी भाषा अनुवाद सहित।

६–पण्डित घेवरचन्द जी बांठिया द्वारा अनूदित मूल अनुवाद, सैलाना। यह पुस्तकाकार एव सरल है।

७–सुत्तागम समिति 'गुडगाव' और अमोल जैन ज्ञानालय धूलिया से प्रकाशित मूल। धूलिया की प्रति प्राय शुद्ध एव सुवाच्य होने के साथ विशिष्ट शब्द कोष सहित है। इसके अतिरिक्त एक दो गुजराती सस्करण भी होगे।

उपरोक्त प्रकाशनो से मूल और सस्कृत-भाषी विद्वानो की जिज्ञासा की तो पूर्ति हो जाती है, किन्तु शुद्ध मूल के साथ शब्दानुलक्षी अर्थ की जिज्ञासा रखने वाले पाठको की आवश्यकता पूर्ण नही होती। इधर पर्यू पण के दिनो मे प्राय सर्वत्र इसका वाचन होता है। इसी आवश्यकता को पूर्ण करने के लिये सूत्र का मूल सशोधन के साथ भाषानुवाद भी तैयार करना आवश्यक हुआ। अब तक के अनुवादो की अपेक्षा इसमे यह खास ध्यान रखा गया है कि अनुवादो मे कोई खास शब्द छूटने नही पाये, सरलता के लिए अर्थ भी सामने पेज पर इसीलिए दिया है कि पाठक मूल की ओर ध्यान रख कर पढे तो सहज मे बोध प्राप्त कर सके। इसके अतिरिक्त परिशिष्ट मे शब्द कोश देकर उसमे विशिष्ट पदो का सरल हिन्दी अर्थ करने का प्रयास किया गया है। समास युक्त और सम्बन्धित पदो को एक साथ देकर लिखा है। करीब २ सम्पूर्ण शब्दो को लेने का प्रयास किया गया है, फिर भी समय की अल्पता और कार्य की गुरुता से सम्भव है कोई पद छूट गया हो अथवा अर्थ मे कही स्खलना हो तो सुज्ञ पाठक ध्यान से पढकर उसे सुधार ले। अर्थ और पाठ-शुद्धि मे निम्न पुस्तको का उपयोग किया है–१ उपाध्याय श्री प्यारचन्द जी महाराज द्वारा अनूदित पत्राकार प्रति, २ सैलाना से प्रकाशित पुस्तक, ३ प्राचीन हस्तलिखित प्रति, ४ आगमोदय समिति से प्रकाशित सटीक अन्तकृतदशा और ५ भगवती सूत्र का खधक प्रकरण।

सूत्र की पाडुलिपि तैयार करने मे जैन रत्न विद्यालय के मास्टर जगदीशचन्द्र और विद्यालय के स्नातक श्री रतनलाल बाफणा ने पूरा सहयोग दिया, और शब्द कोष का चयन करने मे मास्टर चादमलजी कर्णावट और पारसमल जी 'प्रसून' का सहयोग भुलाने योग्य नही है। विद्यालय के स्नातक बादलचन्द जी ओस्तवाल तथा दो विद्यार्थियो का लेखन मे हार्दिक सहयोग भी अवश्य स्मरणीय है। विद्यालय के मास्टर और इन विद्यार्थियो ने श्रुत सेवा के इस पुनीत कार्य मे योगदान देकर अवश्य श्रुत सेवा के साथ अपने लिए पुण्य लाभ उपार्जन किया है। शब्द कोष मे कई पद पुनरावृत्त भी हो गये है।

उपयोग पूर्वक कार्य करने पर भी वीतराग-वाणी से कही विपरीत लिखा हो, तो हार्दिक पश्चात्ताप के साथ मै अपने उद्गार समाप्त करता हू।

श्रावण पूर्णिमा
स २०२०
पीपाड शहर

उपाध्याय गजेन्द्र मुनि

(सन् १९६५ मे प्रकाशित प्रथम सस्करण से उद्धृत)

(इस द्वितीय सस्करण के सम्बन्ध मे)

यह सस्करण जैसा भी है पाठको के हाथो मे है । इसमे प्रयास किया गया है कि पाठको को और भी सरलता से मूल पाठ का अर्थ ज्ञात हो जाय । कालम प्रणाली को अपनाने के पीछे भी यही भावना निहित है यद्यपि इसमे सस्कृत छाया भी दे दी गई है । इन सव कारणो से प्रथम आवृत्ति की तरह इसमे शब्दकोप के लिये अतिरिक्त परिशिष्ट देने की आवश्यकता नही रही ।

परिशिष्ट मे उन उन शब्दो का टिप्पण के तौर पर विस्तृत अर्थ भी दे दिया गया है जिन को मूल पुस्तक मे अकित किया गया है ।

सामान्य जानकारी रखने वाले सस्कृतज्ञ को भी सरलता से शब्द का अर्थ ज्ञात हो सके इस दृष्टि से व्याकरण सम्बन्धी कुछ सामान्य नियमो जैसे विसर्ग सधियो आदि की छूट रखदी गई है । आशा है विद्वज्जन इसे इसी भावना से लेगे ।

प्रस्तुत सस्करण मे कालम पद्धति अपनाने के कारण पुस्तक का कलेवर बढा है एव साथ ही कागज का खर्च भी । फिर भी अगर इस पद्धति से जिज्ञासुओ को सरलता अनुभव हुई तो हम अपने श्रम को सार्थक समझेगे ।

आशा है जिज्ञासु विद्वज्जनो को यह परिवर्तित एव परिवर्द्धित सस्करण विशेप रुचिकर, सरल एव सुबोध लगेगा ।

अनुक्रमणिका

रि रि अन्तग दसाओ

(श्री न्तकृद्दशांगसू म्)

(श्री अन्तगडदशांग सूत्र)

श्री न्तग दशांग ूत्र

(आठवा अगशास्त्र)

उत्थानिका (पूर्व-पीठिका)

सूत्र १

[हिन्दी छाया]

उस काल उस समय[3]
चम्पा नामकी नगरी थी,
(जो) वर्णनीय[4] थी।
वहा चम्पा नगरी मे
उत्तर पूर्व दिशा भाग मे[5]
यहा पूर्णभद्र नाम का चैत्य था।
(यहा) वन खण्ड (भी) वर्णनीय था।
उस चम्पा नगरी मे
कौणिक नाम का राजा था।
(जो) महा हिमवान् पर्वत
के समान[6] वर्णनीय था।

[हिन्दी अर्थ]

उस काल उस समय अर्थात् इसी अव-सर्पिणी काल के चतुर्थ आरक के अन्तिम समय मे, जबकि भ० महावीर विचर रहे थे, वर्णन करने योग्य नगरियो[7] मे आदर्श एव प्रतीक स्वरूप चम्पा नाम की नगरी थी। उस चम्पानगरी के ईशान कोणमे पूर्णभद्र नामक चैत्य था। वहा का वनखण्ड वर्णनीय अर्थात् मन को प्रफुल्लित कर देने वाला, नयनाभिराम और बडा रम्य था। उस चम्पा नगरी मे कौणिक नामक राजा[8] था, जो क्षेत्रो की मर्यादाओ को बनाये रखने वाले महाहिमवान् पर्वत[9] के समान सुसभ्य, मानव समाज की मर्यादाओ का सरक्षक और वर्णन करने योग्य एक सुशासक के सभी गुणो से सम्पन्न था।

सूत्र २

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
तेणं कालेणं तेणं समएणं	तस्मिन् काले तस्मिन् समये
अज्ज सुहम्मे थेरे जाव	आर्य सुधर्मा स्थविर॰ यावत्
हिं अणगार-सएहिं सद्धि	पंचभि॰ अणगार-शतै॰ सार्द्धं
संपरिवुडे	संपरिवृत्त॰
पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे	पूर्वानुपूर्व्या चरन्
गामाणुगाम दूइज्जमाणे	ग्रामानुग्राम द्रवन्
सुहंसुहेणं विहरमाणे	सुखं सुखेन विहरमाण
जेणेव चम्पा णयरी	यत्रैव चम्पा नगरी
जेणेव पुण्णभद्दे चेइए	यत्रैव पूर्णभद्र चैत्य॰
तेणेव समोसरिए ।	तत्रैव समवसृत॰ ।
परिसा णिग्गया[10]	परिषद् निर्गता
जाव परिसा पडिगया ।[11]	यावत् परिषद् प्रतिगता ।

तेणं कालेणं तेण समएण	तस्मिन् काले तस्मिन् समये
अज्ज सुहम्मस्स अंतेवासी	आर्य-सुधर्मणः अन्तेवासी
अज्ज जंबू जाव	आर्य जम्बू यावत्
पज्जुवासमाणे	पर्युपासीन
एवं वयासी—	एवं अवादीत्-
जइ णं भंते !	यदि खलु भदन्त !
समणेणं भगवया महावीरेण	श्रमणेन भगवता महावीरेण
आइगरेणं जाव	आदिकरेण यावत्
तेणं	(सिद्धगतिनामधेय स्थानं) सम्प्राप्तेन
सत्तमस्स उवासगदसाण	सप्तमस्य अगस्य उपासकदशाना
अयमट्ठे पण्णत्ते	अर्थ॰ प्रज्ञप्त॰
ण भते! अगस्स	अष्टमस्य खलु भदन्त ! अगस्य
अतगडदसाण समणेणं	अन्तकृद्दशाना श्रमणेन

[हिन्दी छाया]

काल उस स
र्य सुधर्मा स्थविर यावत्
च सौ साधुओं के साथ
रे हुए,
ं परम्परानुसार विचरते हुए,
मानुग्राम चलते हुए,
खपूर्वक विहार करते हुए,
हा चम्पा नगरी थी,
हा पूर्णभद्र चैत्य था,
हीं पधारे ।
रिषद् आई,
ावत् परिषद् लौट गई ।

[हिन्दी अर्थ]

उस काल उस समय मे अर्थात् इस अवसर्पिणी के चतुर्थ आरक के अन्तिम समय मे स्थविर आर्य सुधर्मा स्वामी पाच सौ साधुओं[१३] के परिवार सहित पूर्व परम्परा अर्थात् तीर्थंकर परम्परा के अनुसार विचरते तथा एक ग्राम से दूसरे ग्राम मे सुखपूर्वक विहार करते हुए, उस चम्पानगरी के पूर्णभद्र नामक उद्यान मे पधारे । नागरिको के समूह आर्य सुधर्मा की सेवा मे उपस्थित हुए। दर्शन, वन्दन के पश्चात् वे सभा के रूप मे बैठे। परिषद् ने आर्य सुधर्मा का उपदेश सुना । उपदेश सुनकर जन-समूह अपने-अपने स्थान को लौट गया ।

उस काल उस समय
आर्य सुधर्मा स्वामी के अन्तेवासी शिष्य
आर्य जम्बू स्वामी यावत्
सेवा उपासना करते हुए
इस प्रकार बोले—
"हे पूज्य ! यदि
श्रमण भगवान् महावीर
(धर्म की) आदि करने वाले यावत्[१२]
(सिद्धगति नाम स्थान को) प्राप्त (प्रभु)
ने सातवे अग शास्त्र उपासकदशा का
यह भाव प्रतिपादित किया है (तो)
हे भगवन् ! आठवे अग शास्त्र
अन्तगडदशा का (उन) श्रमण ने

उस काल उस समय मे आर्य सुधर्मा स्वामी के अन्तेवासी शिष्य आर्य जम्बू स्वामी ने अपने गुरु को सविधि सविनय वन्दन-नमन के पश्चात् उनकी पर्युपासना करते हुए इस प्रकार पूछा—"हे भवभयहारी भगवन् ! यदि धर्म की आदि करने वाले विशेषण से लेकर सिद्धगति नामक स्थान को प्राप्त विशेषण से अलकृत श्रमण, भगवान् महावीर ने सातवे अग शास्त्र उपासक-दशा का यह अर्थ निरूपित किया है, तो हे पूज्यवर ! अब आप मुझे यह बताने की कृपा कीजिये कि ससार से मुक्त हुए उन श्रमण भगवान् महावीर ने

[मूल सूत्र पाठ]	[सस्कृत छाया]
जाव संपत्तेणं	यावत् (सिद्धगति) सप्राप्तेन
के अट्ठे पण्णत्ते ?	क. अर्थ· प्रज्ञप्त. ?

सूत्र ३

पढमो वग्गो	प्रथम वर्गम्
एव खलु जम्बू ! समणेण	एव खलु जम्बू ! श्रमणेन
जाव सपत्तेण	यावत् (सिद्धगति) सम्प्राप्तेन
अट्ठ　अंगस्स	अष्टमस्य अगस्य
अतगडदसाण	अन्तकृद्दशाना
वग्गा पण्णत्ता ।	अष्टौ वर्गा· प्रज्ञप्ता ।
जइ ण भते !	यदि खलु भदन्त !
समणेण जाव सपत्तेण	श्रमणेन यावत् (सिद्धगति) सप्राप्तेन
अट्ठमस्स अगस्स	अष्टमस्य अगस्य
अतगडदसाण	अन्तकृद्दशाना
अट्ठ वग्गा पण्णत्ता	अष्टौ वर्गा. प्रज्ञप्ता,
पढमस्स ण भते !	प्रथमस्य खलु भदन्त !
वग्गस्स　गडदसाणं	वर्गस्य अन्तकृद्दशानां
समणेणं जाव सपत्तेणं	श्रमणेन यावत् (सिद्धगति) सप्राप्तेन
कइ अज्झयणा पण्णत्ता ?	कति अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि ?
एवं खलु जबू !	एव खलु जम्बू !
समणेणं जाव सपत्तेणं	श्रमणेन यावत् (सिद्धगति) सप्राप्तेन
अट्ठमस्स अगस्स	अष्टमस्य अंगस्य
अतगडदसाणं	अन्तकृद्दशानां
पढमस्स वग्गस्स	प्रथमस्य वर्गस्य
दस अज्झयणा पण्णत्ता ।	दश अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि ।
तं जहा	तद् यथा

[हिन्दी छाया]

यावत् सिद्धगति प्राप्त प्रभु ने
क्या भाव प्ररूपित किया है ?"

[हिन्दी अर्थ]

आठवे अंग-शास्त्र अन्तगडदशा मे किस विषय का प्रतिपादन किया है ?"

सूत्र ३

प्रथम वर्ग

"एवं निश्चय ही हे जम्बू ! श्रमण
यावत् (सिद्धगति) प्राप्त वीर प्रभु ने
आठवे अंग-शास्त्र
अन्तगडदशा के
आठ वर्ग प्रतिपादित किये है ।"
"हे पूज्य ! यदि निश्चय ही
श्रमण यावत् मुक्ति को प्राप्त प्रभु ने
आठवे अग
अन्तगडदशा के
आठ वर्ग प्रतिपादित किये है (तो)
भदन्त ! निश्चय ही पहले
अन्तगड-दशाग सूत्र के वर्ग के
श्रमण यावत् मोक्ष प्राप्त प्रभु ने
कितने अध्ययन कहे है ?"
"इस प्रकार हे जम्बू !
श्रमण यावत् मोक्ष प्राप्त प्रभु ने
आठवे अग
अन्तगडदशा के
प्रथम वर्ग के
दस अध्ययन प्रतिपादित किये है ।
वे इस प्रकार है :—

सुधर्मा स्वामी श्रीमुख से कहते है-"इस प्रकार निश्चित रूप से हे जम्बू ! श्रमण भगवान् महावीर, जो मोक्ष पधारे है, उन प्रभु ने अन्तगडदशा नामक आठवे अङ्ग शास्त्र के आठ वर्ग कहे है ।"

जम्बू—"हे भगवन् ! यदि श्रमण यावत् मुक्ति-प्राप्त प्रभु ने आठवे अग अन्तगडदशा के आठ वर्ग फरमाये है, तो हे पूज्य ! अन्तगडदशाग के प्रथम वर्ग मे श्रमण यावत् मोक्ष प्राप्त प्रभु ने कितने अध्ययन कहे है ?"

सुधर्मा स्वामी—"इस प्रकार निश्चित रूप से हे जम्बू ! श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त महावीर प्रभु ने आठवे अग अन्तगडदशा सूत्र के प्रथम वर्ग मे दस अध्ययन कहे है, जो इस प्रकार है —

[मूल सूत्र पाठ]

जाव सपत्तेण
के अट्ठे पण्णत्ते ?

[संस्कृत छाया]

यावत् (सिद्धगति) सप्राप्तेन
क अर्थ· प्रज्ञप्त· ?

सूत्र ३

पढमो वग्गो

एवं खलु जम्बू ! समणेणं
जाव सपत्तेण
अट्ठमस्स अगस्स
अंतगडदसाणं
अट्ठ वग्गा पण्णत्ता ।
जइ ण भते !
समणेण जाव सपत्तेणं
अट्ठमस्स अगस्स
अतगडदसाण
अट्ठ वग्गा पण्णत्ता
पढमस्स ण भते !
वग्गस्स ´ गडदसाणं
समणेण जाव सपत्तेण
कइ अज्झयणा पण्णत्ता ?
एव खलु जबू !
समणेणं जाव सपत्तेणं
अट्ठमस्स अगस्स
अंतगडदसाण
पढमस्स वग्गस्स
दस अज्झयणा पण्णत्ता ।
त जहा

प्रथम वर्गम्

एव खलु जम्बू ! श्रमणेन
यावत् (सिद्धगति) सम्प्राप्तेन
अष्टमस्य अगस्य
अन्तकृद्दशाना
अष्टौ वर्गा· प्रज्ञप्ता· ।
यदि खलु भदन्त !
श्रमणेन यावत् (सिद्धगति) सप्राप्तेन
अष्टमस्य अगस्य
अन्तकृद्दशाना
अष्टौ वर्गा· प्रज्ञप्ता,
प्रथमस्य खलु भदन्त !
वर्गस्य अन्तकृद्दशानां
श्रमणेन यावत् (सिद्धगति) सप्राप्तेन
कति अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि ?
एव खलु जम्बू !
श्रमणेन यावत् (सिद्धगति) सप्राप्तेन
अष्टमस्य अंगस्य
अन्तकृद्दशानां
प्रथमस्य वर्गस्य
दश अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि ।
तद् यथा

[हिन्दी छाया]

यावत् सिद्धगति प्राप्त प्रभु ने
क्या भाव प्ररूपित किया है ?"

[हिन्दी अर्थ]

आठवे अग-शास्त्र अन्तगडदशा मे किस विषय का प्रतिपादन किया है ?"

सूत्र ३

प्रथम वर्ग

"एवं निश्चय ही हे जम्बू ! श्रमरण
यावत् (सिद्धगति) प्राप्त वीर प्रभु ने
आठवे अंग-शास्त्र
अन्तगडदशा के
आठ वर्ग प्रतिपादित किये है ।"
"हे पूज्य ! यदि निश्चय ही
श्रमरण यावत् मुक्ति को प्राप्त प्रभु ने
आठवे अग
अन्तगडदशा के
आठ वर्ग प्रतिपादित किये है (तो)
भदन्त ! निश्चय ही पहले
अन्तगड-दशाग सूत्र के वर्ग के
श्रमरण यावत् मोक्ष प्राप्त प्रभु ने
कितने अध्ययन कहे है ?"
"इस प्रकार हे जम्बू !
श्रमरण यावत् मोक्ष प्राप्त प्रभु ने
आठवे अग
अन्तगडदशा के
प्रथम वर्ग के
दस अध्ययन प्रतिपादित किये है ।
वे इस प्रकार है :—

सुधर्मा स्वामी श्रीमुख से कहते हे–"इस प्रकार निश्चित रूप से हे जम्बू ! श्रमरण भगवान् महावीर, जो मोक्ष पधारे है, उन प्रभु ने अन्तगडदशा नामक आठवे अङ्ग शास्त्र के आठ वर्ग कहे हे ।"

जम्बू—"हे भगवन् ! यदि श्रमरण यावत् मुक्ति-प्राप्त प्रभु ने आठवे अग अन्तगडदशा के आठ वर्ग फरमाये है, तो हे पूज्य ! अन्त-गडदशाग के प्रथम वर्ग मे श्रमरण यावत् मोक्ष प्राप्त प्रभु ने कितने अध्ययन कहे है ?"

सुधर्मा स्वामी—"इस प्रकार निश्चित रूप से हे जम्बू ! श्रमरण यावत् मुक्ति प्राप्त महावीर प्रभु ने आठवे अग अन्तगडदशा सूत्र के प्रथम वर्ग मे दस अध्ययन कहे है, जो इस प्रकार है –

[मूल सूत्र पाठ]	[सस्कृत छाया]
१ गोयम २ समुद्द ३ सागर	१ गौतम २ समुद्र ३ सागर
४ गभीरे चेव ५ होइ थिमिए य	४ गम्भीरश्चैव ५ भवति स्तिमितश्च
६ अयले ७ कपिल्ले ८ खलु	६ अचल ७ काम्पिल्य. ८ खलु
अक्खोभ ९ पसेणई १० विण्हू	अक्षोभ ९ प्रसेनजित १० विष्णु

सूत्र ४

जइण भन्ते !	यदि खलु भदन्त !
समणेण जाव सपत्तेण	श्रमणेन यावत् सिद्धगति सप्राप्तेन
अट्ठमस्स अगस्स अतगडदसाण	अष्टमस्य अगस्य अन्तकृद्दशाना
पढमस्स वग्गस्स	प्रथमस्य वर्गस्य
दस अज्झयणा पण्णत्ता	दश अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि
त जहा—	तद्यथा—
गोयम विण्हू	गौतम यावत् विष्णु
पढमस्स ण भते !	प्रथमस्य हे भदन्त !
अज्झयणस्स अतगडदसाण	अध्ययनस्य अन्तकृद्दशाना
समणेण जाव सपत्तेण	श्रमणेन यावत् सिद्धगति संप्राप्तेन
के अट्ठे पण्णत्ते ?	कोऽर्थ प्रज्ञप्त ?
एव खलु जबू !	एव खलु जम्बू !
तेण कालेण तेण समएण	तस्मिन् काले तस्मिन् समये
बारवई णाम णयरी होत्था ।	द्वारवती नाम नगरी अभवत् ।
दुवालस जोयणायामा	द्वादश योजन-आयामा
णव जोयण वित्थिण्णा	नव योजन-विस्तीर्णा
धणवइमइ-णिम्मिया	धनपतिमति-निर्मिता
चामीगरपागारा णाणा मणि	चामोकरप्राकारा नाना मणि
पञ्चवण्ण कवि-सीसग-परिमण्डिया	पचवर्ण-कपिशी . परिमण्डिता

[हिन्दी छाया]

१ गौतम, २ समुद्र, ३ सागर, ४ गम्भीर भी, ५ स्तिमित भी हुए, ६ अचल, ७ काम्पिल्य, ८ निश्चयही अक्षोभ ९ प्रसेनजित, १० विष्णु।

[हिन्दी अर्थ]

१ गौतम कुमार, २ समुद्र कुमार, ३ सागर कुमार, ४ गम्भीर कुमार और ५ स्तिमित कुमार, ६ अचल कुमार, ७ काम्पिल्य कुमार, ८ अक्षोभ कुमार, ९ प्रसेन जित और १० विष्णु कुमार।

सूत्र ४

यदि निश्चय ही हे भदन्त !
श्रमण यावत् मोक्षप्राप्त (प्रभु) ने
आठवें अंग अन्तगडदसा के
प्रथम वर्ग के
दस अध्ययन कहे है,
जो इस प्रकार है—
"गौतम से लेकर विष्णुकुमार तक"
(तो) हे भदन्त ! प्रथम का
अन्तगडदशाग के अध्ययन का
श्रमण यावत् मोक्षप्राप्त (प्रभु) ने
क्या भाव प्रतिपादित किया है ?

आर्य जम्बू—'हे पूज्य ! यदि श्रमण भगवान् महावीर ने आठवे अग शास्त्र अन्तगडदशा के प्रथम वर्ग के दस अध्ययन कहे है, जैसे गौतम आदि, तो हे भगवन् अन्तगडदशाग सूत्र के प्रथम अध्ययन का श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने क्या भाव कहा है ? कृपा करके बतलाए।"

इस प्रकार निश्चय करके हे जम्बू !
उस काल उस समय
द्वारिका नाम की नगरी थी।
(वह) १२ योजना लम्बी (और)
नौ योजन विस्तीर्ण (यानि चौडी)
(स्वय) धन कुबेर की बुद्धि से निर्मित
स्वर्ण-प्राकार से युक्त, अनेको मणियो
पाच वर्ण [14] की से मडित कंगूरोवाली

आर्य सुधर्मा—"इस प्रकार हे जम्बू ! उस काल उस समय मे द्वारिका नाम की एक नगरी थी। वह बारह योजन लम्बी, नौ योजन चौडी, स्वय कुबेर के कौशल से निर्मित, स्वर्ण के कोट से घिरी हुई और अनेक प्रकार के पाच वर्ण की (इन्द्र, नील, वैडूर्य, (पद्य) पद्म रागादि) मणियो से जटित, कगूरो वाली शोभनीय एव अत्यन्त रमणीय थी। नगरियो मे वह वैश्रमण की नगरी के समान, प्रमुदित एव क्रीडायुक्त होने से प्रत्यक्ष देव-

[मूल सूत्र पाठ]	[सस्कृत छाया]
सुरम्मा ।	सुरम्या ।
अलकापुरी–सकासा	अलकापुरी–संकाशा
पमुइय–पक्कीलिया	प्रमुदिता प्रक्रीड़िता
पच्चक्ख देवलोगभूया	प्रत्यक्ष देवलोकभूता
पासाइया दरिसणिज्जा	प्रासादीया दर्शनीया
अभिरूवा पडिरूवा ।	अभिरूपा प्रतिरूपा ।

सूत्र ५

तीसे ण बारवईए णयरीए	तस्या द्वारावत्या. नगर्या
बहिया उत्तर–पुरत्थिमे दिसिभाए	बहिरुत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे
एत्थ णं रेवयए णाम पव्वए होत्था	अत्र खलु रैवतको नाम पर्वतोऽभूत्
वण्णओ	वर्णक
तत्थ णं रेवयए पव्वए	तत्र खलु रैवतके पर्वते
णदणवणे णाम उज्जाणे होत्था ।	नन्दनवन नाम उद्यानमासीत् ।
वण्णओ, सुरप्पिएणाम	वर्णक, सुरप्रियनाम
जक्खाययणे होत्था	यक्षायतनमभवत् ।
पोराणे से ण एगेण	पुरातने तत् खलु एकेन
वणखडेण परिक्खित्ते	वनखडेन परिक्षिप्त.
असोभवर पायवे	अशोकवर पादप
तत्थ ण बारवईए णयरीए	तत्र खलु द्वारावत्या नगर्या
कण्हे णाम वासुदेवे	कृष्णो नाम वासुदेव
राया परिवसइ	राजा परिवसति
महया हिमवन्त–राय वण्णओ	महता हिमवन्तराजवर्णक ।
से ण तत्थ समुद्दविजय पामोक्खाण	स खलु तत्र समुद्रविजय प्रमुखाना
दसण्हं राण	दशाना दशार्हाणाम्
बलदेव पामोक्खाणं	बलदेव प्रमुखानाम्

[हिन्दी छाया]

सुरम्य
कुबेर की नगरी के सदृश
प्रमुदित और प्रक्रीडित
साक्षात् देवलोक तुल्य
प्रमोदजनक, दर्शनीय
नित नई सर्वोत्तम थी।

[हिन्दी अर्थ]

लोक के समान एव मन को प्रफुल्लित करने वाली थी। उसकी दीवारो पर राजहस, चक्रवाक, सारस, हाथी, घोडे, मयूर, मृग, मगर, आदि पशु-पक्षियो एव अन्य अनेक प्राणियो के चित्र बने हुए थे। विशिष्ट असाधारण सौन्दर्य से युक्त होने से वह अभिरूपा थी और जिसके स्फटिक निर्मित दीवारो पर प्रतिबिम्ब सर्वदा प्रतिफलित होते रहने से, जो प्रतिरूपा भी थी।

सूत्र ५

उस द्वारिका नगरी के
बाहर ईशान कोण मे
यहा रैवतक नाम का पर्वत था,
जो वर्णन करने योग्य था।
उस रैवतक पर्वत पर
नन्दनवन नामक उद्यान था।
जो वर्णनीय था, जिसमे सुरप्रिय नाम का
यक्षायतन था,
जो प्राचीन था, जो एक
वनखण्ड से घिरा हुआ था।
(उसमे एक) श्रेष्ठ अशोक वृक्ष था।
वहा निश्चय करके (उस) द्वारिका मे
कृष्ण नाम के वासुदेव
राजा रहते थे।
वे महान् हिमवन्त पर्वत की
तरह मर्यादापालक थे[१५]

"ऐसी उस द्वारिकानगरी के बाहिर ईशान कोण मे रैवतक नाम का एक पर्वत था, जो वर्णन करके योग्य था। उस रैवतक पर्वत पर नन्दनवन नामक एक उद्यान था, जो भी वर्णनीय था। उस उद्यान मे सुरप्रिय नाम का एक यक्षायतन था, जो प्राचीन था। वह उद्यान चारो ओर एक वन खण्ड से घिरा हुआ था और उसमे एक श्रेष्ठ जाति का अशोक का वृक्ष था। उस द्वारिका नगरी मे श्रीकृष्ण नाम के वासुदेव राज्य करते थे, जो हिमवान पर्वत की भाति मर्यादा पुरुषोत्तम थे। उनके राज्य का वर्णन कौणिक के राज्य के वर्णन की भाति समझना चाहिये।" (नगरियो एव राज्यो के वर्णन को विस्तार पूर्वक समझने की जिज्ञासा वालो को औपपातिक सूत्र का अवलोकन करना चाहिए।)

वहा द्वारिका मे समुद्र विजय प्रमुख
दस दशार्ह अर्थात् पूज्यनीय पुरुष,
बलदेव प्रमुख,

"ऐसी द्वारिका नगरी मे समुद्र विजयजी आदि दस दशार्ह अर्थात् पूज्य पुरुष निवास करते थे। महावीर कहे जाने वाले बलदेव

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
पंचण्ह महावीराणं	पंचानां महावीराणां
पज्जुण्ण पामोक्खाण	प्रद्युम्न प्रमुखाना
अद्धुट्ठाणं कुमार कोडीण	अर्द्धचतुष्काणा कुमार कोटीना
सब पामोक्खाणं	शाम्ब प्रमुखाना
सट्ठीए दुद्द त साहस्सीण	षष्ट्या दुर्दान्त साहस्रीणाम्
महासेण पामोक्खाण	महासेन प्रमुखाना
छप्पण्णाए बलवग्गसाहस्सीणं	षट्पञ्चाशत बलवर्गसाहस्रीणाम्
वीरसेण पामोक्खाणं	वीरसेन प्रमुखानाम्
एगवीसाए वीरसाहस्सीण	एकविंशति वीरसाहस्रीणाम्
उग्गसेण पामोक्खाणं	उग्रसेन प्रमुखाना
सोलसण्ह रायसाहस्सीण	षोडशानाम् राज साहस्रीणाम्
रूप्पिणी पामोक्खाण	रुक्मिणी प्रमुखानाम्
सोलसण्हं देवीसाहस्सीण	षोडशानाम् देवीसाहस्रीणाम्
अणगसेणा पामोक्खाणं	अनगसेना प्रमुखाना
अणेगाण गणियासाहस्सीण	अनेकासाम् गणिकासाहस्रीणाम्
अण्णेसि च बहूण	अन्येषां च बहूनाम्
ईसर जाव सत्थवाहाणं	ईश्वर यावत् सार्थवाहानाम्
वारवईए णयरीए	द्वारावत्या. नगर्या.
अद्धभरहस्स य सम्मत्तस्स य	अर्धभरतस्य च समस्तस्य च
आहेवच्चं जाव विहरई।	आधिपत्य यावत् विहरति।

सूत्र ६

तत्थ ण बारवईए णयरीए	तत्र खलु द्वारावत्या नगर्याम्
अंधगवण्ही णाम राया परिवसइ	अन्धकवृष्णि नाम राजा परिवसति
महया हिमवन्त वण्णओ।	महता हि त् वर्णकः
तस्स णं अंधगवण्हिस्स रण्णो	तस्य खलु अन्धकवृष्णे. राज्ञ.
धारिणी णाम देवी होत्था, वण्णओ	धारिणीनामा देवी अभवत्, वर्णकः

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
पचण्हं महावीराणं	पंचाना महावीराणा
पज्जुण्ण पामोक्खाण	प्रद्युम्न प्रमुखाना
अद्धवुट्ठाणं कुमार कोडीण	अर्द्धचतुष्काणा कुमार कोटीना
सब पामोक्खाणं	शाम्ब प्रमुखाना
सट्ठीए दुद्द त साहस्सीण	षष्ट्या दुर्दान्त साहस्रीणाम्
महासेण पामोक्खाण	महासेन प्रमुखाना
छप्पण्णाए बलवग्गसाहस्सीण	षट्पञ्चाशत बलवर्गसाहस्रीणाम्
वीरसेण पामोक्खाण	वीरसेन प्रमुखानाम्
एगवीसाए वीरसाहस्सीण	एकविंशति वीरसाहस्रीणाम्
उग्गसेण पामोक्खाण	उग्रसेन प्रमुखाना
सोलसण्ह रायसाहस्सीण	षोडशानाम् राज साहस्रीणाम्
रूप्पिणी पामोक्खाण	रुक्मिणी प्रमुखानाम्
सोलसण्ह देवीसाहस्सीण	षोडशानाम् देवीसाहस्रीणाम्
अणंगसेणा पामोक्खाणं	अनगसेना प्रमुखाना
अणेगाणं गणियासाहस्सीण	अनेकासाम् गणिकासाहस्रीणाम्
अण्णेसि च बहूण	अन्येषां च बहूनाम्
ईसर जाव सत्थवाहाण	ईश्वर यावत् सार्थवाहानाम्
वारवईए णयरीए	द्वारावत्या नगर्याः
अद्धभरहस्स य सम्मत्तस्स य	अर्धभरतस्य च समस्तस्य च
आहेवच्च जाव विहरई।	आधिपत्यं यावत् विहरति।

सूत्र ६

तत्थ ण बारवईए णयरीए	तत्र खलु द्वारावत्या नगर्याम्
अधगवण्ही णामं राया परिवसइ	अन्धकवृष्णि नाम राजा परिवसति
महया हिमवन्त वण्णओ।	महता हिमवान् वर्णकः
तस्स ण अधगवण्हिस्स रण्णो	खलु अन्धकवृष्णे. राज्ञ
धारिणी णाम देवी होत्था, वण्णओ	धारिणीनामा देवी अभवत्, वर्णक·

[हिन्दी छाया]

पांच महावीर (और)
प्रद्युम्नकुमार आदि
साढे तीन करोड़ कुमार,
शाम्ब प्रमुख
साठ हजार दुर्दान्त वीर, तथा
महासेन प्रमुख
छप्पन हजार बलवर्ग सैनिक,
वीरसेन आदि
इक्कीस हजार वीर योद्धा
उग्रसेन प्रमुख
सोलह हजार राजा एव
रुक्मिणी प्रमुख
सोलह हजार रानियां
अनंगसेना आदि
अनेक हजार गणिकाए
एव अन्य बहुत से
ईश्वर पदधारी से लेकर
सार्थवाहो से[१६] सम्पन्न
द्वारिका नगरी के (तथा)
समस्त अर्द्ध भरत यानि ३ खण्ड के
अधिपतित्व को धारण करते हुए यावत्
(श्री कृष्ण) विचरते थे।

[हिन्दी अर्थ]

आदि पाच श्रेष्ठ नागरिक और प्रद्युम्न प्रमुख साढे तीन करोड कुमार भी वहा रहते थे। वही शाम्ब, जिनमे प्रमुख गिने जाते थे, ऐसे साठ हजार दुर्दान्त वीर, महासेन आदि छप्पन हजार बलवर्ग सैनिक भी थे। वीरसेन आदि इक्कीस हजार वीर योद्धा, उग्रसेन प्रमुख सोलह हजार राजा एव रुक्मिणी प्रमुख १६ हजार रानिया, अनगसेना आदि हजारो गणिकाए तथा अन्य बहुत से ईश्वर पदधारी नागरिको से लेकर अनेक सार्थवाह भी उस नगरी के निवासी थे।"

"इस प्रकार सब प्रकार के वैभव एव शक्तिशाली नागरिको से सम्पन्न उस द्वारिका नगरी के तथा समस्त अर्द्ध-भरत के अर्थात् इस जम्बू द्वीप के तीन खण्डो के अधिपतित्व को धारण करते हुए यावत् श्रीकृष्ण विचरण करते थे।"

सूत्र ६

उस द्वारिका नगरी मे
अन्धकवृष्णि नाम के राजा रहते थे।
जो महा हिमवान्[१७] की भाति वर्णनीय थे।
उस अधकवृष्णि राजा के
धारिणी नामकी वर्णन योग्य रानी थी,

"उस द्वारिका नगरी मे अधकवृष्णि नाम के एक राजा भी रहते थे, जो महान् हिमालय पर्वत की भाति शक्तिशाली एव मर्यादापालक थे। उनकी धारिणी नाम की रानी थी, जो वर्णन करने योग्य थी। वह धारिणी रानी किसी दिन पुण्यशालिनी

[मूल सूत्र पाठ]	[सस्कृत छाया]
तए ण सा धारिणी देवी अण्णया इ	: सा धारिणी देवी अन्यदा कदाचिद्
तंसि तारिसगसि	तस्मिन् तादृशके (कृतपुण्योपसेव्ये)
सयणिज्जसि एवं जहा महाबले —	नीये एव यथा महाबल'—
सुमिणदसण-कहणा	स्वप्नदर्शन कथनम्
जम्मं बालत्तण कलाओ य	जन्म बालत्वं कलाश्च
जोव्वण-पाणिग्गहणं	यौवन पाणिग्रहणम्
कंता पासाय भोगा य	कान्ता प्रासाद भोगाश्च
णवरं गोयमो णामेणं	विशेष' गौतमो नाम्ना
अट्ठण्ह रायवर कन्नाण	अष्टानां राजवर कन्यानाम्
एगदिवसेण पाणि	एकस्मिन् दिवसे पाणि
गिण्हावेति, अट्ठट्ठओ दाओ।	ग्राहयन्ति, अष्टौ अष्टौ दाय।

सूत्र ७

तेण कालेणं तेणं समयेण	तस्मिन् काले तस्मिन् समये
अरहा अरिट्ठणेमी आइगरे	अर्हन् अरिष्टनेमी आदिकरो
जाव विहरइ	यावत् विहरति
चउव्विहा देवा आगया,	चतुर्विधा देवाः आगताः
कण्हे वि णिग्गए	कृष्णः अपि निर्गत,
तए ण से गोयमेकुमारे	ततः खलु स गौतम कुमारः
जहा मेहे तहा णिग्गए,	यथा मेघ तथा निर्गत,
धम्म सोच्चा णिसम्म	धर्म श्रुत्वा निशम्य
ज णवर देवाणुप्पिया !	यद् नवरं देवानुप्रिया !
अम्मापियरौ आपुच्छामि	मातापितरौ अपृच्छामि
देवाणुप्पियाणं अंतिए पव्वयामि।	देवानुप्रियाणाम् अन्तिके प्रव्रजामि।
एव जहा मेहे जाव अणगारे	एवम् यथा मेघ यावत् अणगारो
जाए, इरियासमिए जाव इणमेव	जातः, ईर्यासमित यावत् एतदेव

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
तए णं सा धारिणी देवी अण्णया इं	ततः सा धारिणी देवी अन्यदा कदाचिद्
तंसि तारिसगंसि	तस्मिन् तादृशके (कृतपुण्योपसेव्ये)
सयणिज्जंसि एव जहा महाबले —	शयनीये एव यथा महाबल —
सुमिणदसण-कहणा	स्वप्नदर्शन कथनम्
जम्म बालत्तण कलाओ य	जन्म बालत्व कलाश्च
जोव्वण-पाणिग्गहण	यौवन पाणिग्रहणम्
कंता पासाय भोगा य	कान्ता प्रासाद भोगाश्च
णवरं गोयमो णामेण	विशेषः गौतमो नाम्ना
अट्ठण्ह रायवर कन्नाणं	अष्टानां राजवर कन्यानाम्
एगदिवसेण पाणि	एकस्मिन् दिवसे पाणि
गिण्हावेंति, अट्ठट्ठओ दाओ ।	ग्राहयन्ति, अष्टौ अष्टौ दाय ।

सूत्र ७

तेणं कालेणं तेणं समयेणं	तस्मिन् काले तस्मिन् समये
अरहा अरिट्ठणेमी आइगरे	अर्हन् अरिष्टनेमी आदिकरो
जाव विहरइ	यावत् विहरति
चउव्विहा देवा आगया,	चतुर्विधा देवा आगताः
कण्हे वि णिग्गए	कृष्ण. अपि निर्गत,
तए णं से गोयमेकुमारे	तत. खलु स' गौतम कुमारः
जहा मेहे तहा णिग्गए,	यथा मेघ तथा निर्गत,
धम्म सोच्चा णिसम्म	धर्मं श्रुत्वा निशम्य
ज णवर देवाणुप्पिया !	यद् नवरं देवानुप्रिया !
अम्मापियरौ आपुच्छामि	मातापितरौ अपृच्छामि
देवाणुप्पियाण अंतिए पव्वयामि ।	देवानुि णाम् अन्तिके ामि ।
एवं जहा मेहे जाव अणगारे	एवम् यथा मेघ यावत् अणगारो
जाए, इरियासमिए जाव इणमेव	जात., ईर्यासमित' यावत् एतदेव

[हिन्दी छाया]

तदनन्तर वह धारिणी रानी किसी दिन
कदाचित् पुण्यवान् के योग्य
शय्या पर सोई हुई थी जैसे महाबल ।
स्वप्न दर्शन, उसका कथन,
जन्म, बाल लीला, कला ज्ञान,
यौवन, पाणिग्रहण
रम्य प्रासाद एव भोगादि
विशेष गौतम नाम,
आठ उत्तम राजकन्याए
एक ही दिन पाणि-
ग्रहण, आठ २ का दहेज ।

[हिन्दी अर्थ]

के योग्य शय्या पर सोई हुई थी, जिसका वर्णन महाबल के प्रकरण मे वर्णित वर्णन के समान समझ लेना चाहिये । जैसे कि उस धारिणी राणी का स्वप्न देखना, पति को निवेदन करना, बालक का जन्म लेना, उसका बाल्यकाल बीतना और कलाचार्यो के पास शिक्षण लेना, युवावस्था को प्राप्त होना, योग्य कन्याओ से उसका पाणिग्रहण होना, रमणीय प्रासाद मे रहना एव सासारिक भोगो को भोगना आदि ।"

"महाबलकुमार के वर्णन से यहा इतना विशिष्ट है कि उस कुमार का नाम गौतम-कुमार रक्खा गया, आठ उत्तम कुलीन राज-कन्याओ के साथ एक ही दिन मे उसका पाणिग्रहण कराया गया एव उसे दहेज के रूप मे आठ-आठ हिरण्य कोटि प्रदान की गई ।"

सूत्र ७

उस काल उससमय
आदिकर अर्हन् अरिष्टनेमि
यावत् वि रते है।
चार प्रकार के देव आये ।
श्रीकृष्णजी भी निकले ।
इसके बाद वह गौतम कुमार भी
मेघ कुमार की तरह निकले ।
धर्मोपदेश सुनकर व धारण करके
(वे बोले) हे देवानुप्रिय ! मै यथावसर
माता पिता को पूछता हूँ (और)
देवानुप्रिय के समीप प्रव्रज्या लेता हूँ ।
इस प्रकार मेघकुमार के समान
यावत् (वे गौतमकुमार) अणगार हो गये
(एव) ईर्या समिति आदि को एव

उस काल उस समय मे अरिहन्त अरि-ष्टनेमि भगवान् धर्मतीर्थ की आदि करने वाले यावत् विचरते हुए उस द्वारिकानगरी मे पधारे । भगवान् के समवसरण मे चार प्रकार के देव आये । श्री कृष्ण भी उन्हे वन्दन करने को निकले । गौतमकुमार भी ज्ञातासूत्र मे वर्णित मेघकुमार की तरह प्रभु का धर्मोपदेश सुनने को निकले । धर्मोपदेश सुनकर एव उसे अपने हृदय पटल पर अकित करके गौतमकुमार प्रभु से बोले —'हे प्रभो ! मै अपने माता पिता को पूछकर आप देवानुप्रिय के पास श्रमण दीक्षा' अगीकार करु गा ।"

इस प्रकार ज्ञातासूत्र मे वर्णित मेघ-कुमार के समान यावत् ~~गौतमकुमार~~ भी गौतम श्रमणधर्म मे दीक्षित हो गये ।

[मूल सूत्र पाठ]	[सस्कृत छाया]
णिग्गंठ्ठं पावयणं पुरओ	नैर्ग्रन्थ्यं प्रवचन पुरत.
काउं विहरइ ।	कृत्वा विहरति ।
तए ण से गोयमे अणगारे	तत खलु स गौतम. अनगार
अण्णया कयाइ	अन्यदा कदाचित्
अरहओ अरिट्ठ-णेमिस्स	अर्हत अरिष्टनेमेः
तहारूवाण थेराणं	तथारूपाणाम् स्थविराणाम्
अतिए सामाइयमाइयाइ	अन्तिके सामयिकादीनि
एक्कारस अगाइं अहिज्जइ,	एकादश अंगानि अधीते,
अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थ	अधीत्य बहुभिः चतुर्थभक्तादिभि.
जाव अप्पाण भावेमाणे विहरइ ।	यावत् आत्मानं भावमान विहरति ।
तए णं अरहा अरिट्ठणेमी	तत' खलु अर्हन् अरिष्टनेमि
अण्णया कयाइ बारवइओ णयरीओ	अन्यदा कदाचित् द्वारावत्या नगर्या
णंदणवणाओ उज्जाणाओ	नन्दनवनात् उद्यानात्
पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता	प्रतिनिष्क्रमति, प्रतिनिष्क्रम्य
बहिया जणवय विहार विहरइ ।	बहिः जनपद विहार विहरति ।

सूत्र ८

तए ण से गोयमे अणगारे	खलु स. गौतमः अनगार
अण्णया कयाइं जेणेव	अन्यदा कदाचित् यत्रैव
अरहा अरिट्ठणेमी तेणेव उवागच्छइ	अर्हन् अरिष्टनेमि तत्रैव उपागच्छति
उवागच्छित्ता अरह अरिट्ठनेमि	उपागत्य अर्हन्तम् अरिष्टनेमिम्
तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिणं करेइ,	त्रि.कृत्वा क्षिणप्रदक्षिणा करोति,
करित्ता, वदइ, णमंसइ,	कृत्वा वदते, नमस्यति,
वदित्ता णमंसित्ता एव वयासी -	वदित्वा नमस्यित्वा एवमवादीत्
इच्छामि ण भन्ते !	इच्छामि खलु भदन्त !
तुब्भेहि अब्भणुण्णाए समाणे	युष्माभि अभ्यनुज्ञात सन्
मासियं भिक्खुपडिमं	मासिकीम् भिक्षुप्रतिमाम्

[हिन्दी छाया]

निर्ग्रन्थ प्रवचन को अपने आगे रखकर विचरते है ।
इसके बाद निश्चय ही गौतम अरणगार ने अन्य किसी दिन अर्हन्त अरिष्टनेमि भगवान् के तथा-रूप (गुणसम्पन्न गीतार्थ) स्थविरो के पास सामायिक आदि ११ अगो का अध्ययन किया । अध्ययन करके बहुत से उपवासादि द्वारा यावत् अपनी आत्मा को भावित करते हुए विहार करने लगे ।
तदनन्तर निश्चय से अर्हन्त अरिष्टनेमि ने अन्यदा किसी दिन द्वारिकानगरी के नन्दनवन उद्यान से प्रस्थान किया, प्रस्थान करके बाहर जनपद मे विचरने लगे ।

[हिन्दी अर्थ]

वे ईर्या समिति आदि गुणो वाले यावत् इसी वीतराग निर्ग्रन्थ शासन को अपने आगे रखकर भगवान की आज्ञाओ का पालन करते हुए विचरने लगे ।

तदनन्तर उन गौतम अरणगार ने अन्य किसी दिन अरिहन्त अरिष्टनेमि भगवान् के गुण सम्पन्न गीतार्थ स्थविरो के पास, सामायिक आदि ग्यारह अगो का अध्ययन किया । अध्ययन करके बहुत से उपवास आदि तपश्चरण द्वारा अपनी आत्मा को भावित करते हुए एव उसकी शुद्धि करते हुए वे ग्रामानुग्राम विहार करने लगे ।

तत्पश्चात् अरिहन्त अरिष्टनेमि भगवान् ने अन्यदा किसी दिन उस द्वारिका नगरी के नन्दनवन नामक उद्यान से प्रस्थान किया । वहा से प्रस्थान करके बाहर जनपद मे विचरण करने लगे ।

सूत्र ८

इसके बाद वह गौतम अणगार अन्यदा किसी दिन जहा अरिहन्त अरिष्टनेमि थे वही आये । आकर (उन्होने) अरिहन्त अरिष्टनेमि को ३ बार दक्षिण-तरफ से प्रदक्षिणा की । प्रदक्षिणा करके वन्दन नमस्कार किया । वन्दन नमस्कार करके ऐसे बोले—
"हे भगवन् ! मै चाहता हू आपकी आज्ञा प्राप्त होने पर मासिकी भिक्षु प्रतिमा

इसके बाद वह गौतम अणगार अन्यदा किसी दिन जहा अरिहन्त भगवान् अरिष्टनेमि थे वहा आये । वहा आकर उन्होने अरिहन्त अरिष्टनेमि (नेमिनाथ) को तीन बार दक्षिण की तरफ से प्रदक्षिणा की। प्रदक्षिणा करके वन्दन नमस्कार किया । वन्दन नमस्कार करके वे प्रभु से इस प्रकार

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
णिग्गंठं पावयणं पुरओ	नैर्ग्रन्थ्यं प्रवचनं पुरतः
काउं विहरइ ।	कृत्वा विहरति ।
तए ण से गोयमे अणगारे	तत खलु स गौतम. अनगारः
अण्णया कयाइ	अन्यदा कदाचित्
अरहओ अरिट्ठ-णेमिस्स	अर्हत अरिष्टनेमे·
तहारूवाण थेराण	तथारूपाणाम् स्थविराणाम्
अतिए सामाइयमाइयाइं	अन्तिके सामायिकादीनि
एक्कारस अगाइ अहिज्जइ,	एकादश अंगानि अधीते,
अहिज्जित्ता बहूहि चउत्थ	अधीत्य बहुभिः चतुर्थभक्तादिभि·
जाव अप्पाण भावेमाणे विहरइ ।	यावत् आत्मानं भावमानः विहरति ।
तए ण अरहा अरिट्ठणेमी	ततः खलु अर्हन् अरिष्टनेमि
अण्णया कयाइ बारवइओ णयरीओ	अन्यदा कदाचित् द्वारावत्या नगर्या
णंदणवणाओ णाओ	नन्दनवनात् उद्यानात्
पडिणिव इ, पडिणि मित्ता	प्रतिनिष्क्रमति, प्रतिनिष्क्रम्य
बहिया जणवय विहार विहरइ ।	बहिः जनपद विहार विहरति ।

सूत्र ८

तए णं से गोयमे अणगारे	खलु स. गौतमः अनगारः
अण्णया कयाइ जेणेव	अन्यदा कदाचित् यत्रैव
अरहा अरिट्ठणेमी तेणेव उवागच्छइ	अर्हन् अरिष्टनेमि तत्रैव उपागच्छति
उवागच्छित्ता अरह अरिट्ठनेमि	उपागत्य अर्हन्तम् अरिष्टनेमिम्
तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिणं करेइ,	त्रि·कृत्वा क्षिणप्रदक्षिणा करोति,
करित्ता, वंदइ, णमंसइ,	कृत्वा वंदते, नमस्यति,
वदित्ता णमसित्ता एव वयासी -	वदित्वा नमस्यित्वा ए दीत्
इच्छामि ण भन्ते !	इच्छामि खलु भदन्त !
तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे	युष्माभि अभ्यनुज्ञात सन्
मासियं भिक्खुपडिमं	मासिकीम् भिक्षुप्रतिमाम्

[हिन्दी छाया]

निर्ग्रन्थ प्रवचन को अपने आगे
रखकर विचरते है ।
इसके बाद निश्चय ही गौतम अणगार
ने अन्य किसी दिन
अर्हन्त अरिष्टनेमि भगवान् के
तथा-रूप (गुणसम्पन्न गीतार्थ) स्थविरो
के पास सामायिक आदि
११ अगो का अध्ययन किया ।
अध्ययन करके बहुत से उपवासादि द्वारा
यावत् अपनी आत्मा को भावित
करते हुए विहार करने लगे ।
तदनन्तर निश्चय से अर्हन्त अरिष्टनेमि ने
अन्यदा किसी दिन द्वारिकानगरी के
नन्दनवन उद्यान से
प्रस्थान किया, प्रस्थान करके
बाहर जनपद मे विचरने लगे ।

[हिन्दी अर्थ]

वे ईर्या समिति आदि गुणो वाले यावत् इसी वीतराग निर्ग्रन्थ शासन को अपने आगे रखकर भगवान की आज्ञाओ का पालन करते हुए विचरने लगे ।

तदनन्तर उन गौतम अणगार ने अन्य किसी दिन अरिहन्त अरिष्टनेमि भगवान् के गुण सम्पन्न गीतार्थ स्थविरो के पास, सामायिक आदि ग्यारह अगो का अध्ययन किया। अध्ययन करके बहुत से उपवास आदि तपश्चरण द्वारा अपनी आत्मा को भावित करते हुए एव उसकी शुद्धि करते हुए वे ग्रामानुग्राम विहार करने लगे।

तत्पश्चात् अरिहन्त अरिष्टनेमि भगवान् ने अन्यदा किसी दिन उस द्वारिका नगरी के नन्दनवन नामक उद्यान से प्रस्थान किया। वहा से प्रस्थान करके बाहर जनपद मे विचरण करने लगे।

सूत्र ८

इसके बाद वह गौतम अणगार
अन्यदा किसी दिन जहा
अरिहन्त अरिष्टनेमि थे वहीं आये ।
आकर (उन्होने) अरिहन्त अरिष्टनेमि को
३ बार दक्षिण-तरफ से प्रदक्षिणा की ।
प्रदक्षिणा करके वन्दन नमस्कार किया ।
वन्दन नमस्कार करके ऐसे बोले—
"हे भगवन् ! मै चाहता हू
आपकी आज्ञा प्राप्त होने पर
मासिकी भिक्षु प्रतिमा

इसके बाद वह गौतम अणगार अन्यदा किसी दिन जहा अरिहन्त भगवान् अरिष्टनेमि थे वहा आये। वहा आकर उन्होने अरिहन्त अरिष्टनेमि (नेमिनाथ) को तीन बार दक्षिण की तरफ से प्रदक्षिणा की। प्रदक्षिणा करके वन्दन नमस्कार किया। वन्दन नमस्कार करके वे प्रभु से इस प्रकार

[मूल सूत्र पाठ]	[सस्कृत छाया]
उवसपज्जित्ताण विहरित्तए ।	उपसंपद्य विहर्तुम् ।
एव जहा खदओ,	एवं यथा स्कदक
तहा बारस भिक्खुपडिमाओ फासेइ,	तथा द्वादश भिक्षुप्रतिमाः स्पृशति
फासित्ता गुणरयण वि	स्पृष्ट्वा गुणरत्नमपि
तवोकम्मं तहेव फासेइ,	तपः कर्म तथैव स्पृशति,
णिरवसेस जहा खंदओ	निरवशेष यथा स्कन्दकः
तहा चितइ, तहा आपुच्छइ,	तथा चिन्तयति, तथा आपृच्छति,
तहा थेरेहिं सद्धि	तथा स्थविरैः सार्द्धम्
सेत्तु ज दुरूहइ,	शत्रुञ्जयं दुरोहति
मासियाए सलेहणाए बारस वरिसाइं	मासिक्या संलेखनया द्वादश वर्षाणि
परियाए जाव सिद्धे ।	पर्याय (दीक्षाकाल.) यावत् सिद्धः ।

सूत्र ९

एव खलु जम्बू !	एवं खलु जबू !
समणेण जाव संपत्तेणं	श्रमणेन यावत् सप्राप्तेन
अट्ठमस्स अगस्स अतगडदसाण	अष्टमस्य अंगस्य अन्तकृद्दशानाम्
प स वग्गस्स पढमस्स अज्झयणस्स	प्रथमस्य वर्गस्य प्रथमस्य अध्ययनस्य
अयमट्ठे पण्णत्ते ।	अ र्थः प्रज्ञप्तः ।

प्रथमोऽध्यायः समाप्त

[हिन्दी छाया]

अगीकार करके विचरण करू ।"
इस प्रकार जैसे स्कधक ने साधन किया,
वैसे ही बारह भिक्षु प्रतिमाओ का
(गौतम ने भी) समाराधन किया ।
आराधन करके गुण रत्न नामक
तप का भी वैसे ही आराधन किया ।
पूर्ण रूपेण स्कन्धक की तरह ही
चितन किया, भगवान् से पूछा
तथा स्थविर मुनियो के साथ
वैसे ही शत्रुंजय पर्वत पर चढे ।
१ मास की सलेखणा से १२ वर्ष की
दीक्षा पर्याय पूर्ण करके यावत् सिद्ध हुए ।

[हिन्दी अर्थ]

बोले —"हे भगवन् ! मै चाहता हू कि आपकी आज्ञा प्राप्त करके मै मासिकी भिक्षु-पडिमा को अगीकार करके विचरण करू ।"

इस प्रकार जैसे स्कन्धक मुनि ने भावना की वैसे ही मुनि गौतमकुमार ने भी बारह भिक्षु पडिमाओ का आराधन करके गुणरत्न नामक तप का भी उसी प्रकार आराधन किया ।

सम्पूर्ण रूप से मुनि स्कन्धक की तरह ही मुनि गौतमकुमार ने भी वैसा ही चिन्तन किया और उसी प्रकार भगवान् से पूछा तथा स्थविर मुनियो के साथ वैसे ही जैसे मुनि स्कन्धक ने किया वे भी शत्रुजय पर्वत पर चढे । पर्वत पर चढकर उन्होने एक मास की सलेखणा की एव इस सलेखणापूर्वक १२ वर्ष की अपनी दीक्षा पर्याय पूर्ण करके यावत् सिद्ध हुए ।

सूत्र ६

"इस प्रकार निश्चय से हे जम्बू !
श्रमण यावत् मोक्ष को प्राप्त प्रभु ने
आठवे अग अन्तगडदशा के
प्रथम वर्ग के प्रथम अध्ययन का
यह भाव फरमाया है ।

आर्यसुधर्मा -"इस प्रकार हे जम्बू! श्रमण भगवान् यावत् मोक्ष प्राप्त प्रभु ने आठवे अगशास्त्र अन्तगडदशा के प्रथम वर्ग के प्रथम अध्ययन का यह भाव कहा है ।"

प्रथम अध्ययन समाप्त

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
एव जहा गोयमो तहा सेसा	एव यथा गौतम॰ तथा शेषाणि
वण्ही पिया, धारिणी माया	वृष्णि: पिता धारिणी माता
समुद्दे सागरे गभीरे थिमिए	समुद्र॰ सागर गम्भीर स्तिमित
अयले कपिल्ले अक्खोभे	अचल काम्पिल्य अक्षोभ:
पसेणई विण्हु एए एगगमा	प्रसेनजित् विष्णु॰ एते एकगमा॰
पढमो वग्गो, दस अज्झयणा पण्णत्ता।	प्रथम वर्ग दश अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि।

दो से दस अध्ययन समाप्त

प्रथम वर्ग समाप्त

द्वितीय वर्ग–सूत्र १

जइ ण भते !	यदि खलु भदन्त !
समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स	श्रमणेन यावत् सप्राप्तेन प्रथमस्य
वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते,	वर्गस्य अयमर्थ प्रज्ञप्त,
दोच्चस्स ण भन्ते !	द्वितीयस्य खलु भदन्त !
वग्गस्स अतगडदसाण	वर्गस्य अन्तकृद्दशानाम्
समणेण जाव संपत्तेण	श्रमणेन यावत् सप्राप्तेन
कई अज्झयणा पण्णत्ता ?	कति अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि ?
एवं खलु जबू !	एव खलु जम्बू !
समणेणं जाव सपत्तेण	श्रमणेन यावत् (मुक्ति) संप्राप्तेन
अट्ठ अज्झयणा पण्णत्ता	अष्टौ अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि
त जहा—गाहा–	तानि यथा—गाथा–
अक्खोभे सागरे खलु	अक्षोभ॰ सागर॰ खलु
समुद्द हिमवत अयल णामे य !	समुद्र॰ हिमवन्त: अचल नामाश्च !
धरणे य पूरणे वि य	धरणश्च पूरणोऽपि च
अभिचदे चेव अट्ठमए	अभिचन्द्रश्चैव अष्टमक:

[हिन्दी छाया]

इस प्रकार जैसे गौतम वैसे बाकी के
वृष्णि पिता, धारिणी माता
समुद्र, सागर, गम्भीर, स्तिमित,
अचल, काम्पिल्य, अक्षोभ,
प्रसेनजित, विष्णु ये सब एक समान है
(इस प्रकार) प्रथम वर्ग और उसके
दस अध्ययन कहे गये है।

[हिन्दी अर्थ]

इस प्रकार मुनि गौतम कुमार की तरह शेष ९ अध्ययन भी समझने चाहिये। सब के पिता वृष्णि एवं माता धारिणी थी। उनके नाम इस प्रकार है —

"२ समुद्रकुमार, ३ सागरकुमार, ४ गम्भीर कुमार, ५ स्तिमित कुमार, ६ अचल कुमार, ७ काम्पिल्य कुमार, ८ अक्षोभ कुमार, ९ प्रसेनजित, १० विष्णु कुमार"।

ये सब अध्ययन एक समान है। आगे का सबका वर्णन गौतम कुमार मुनि की तरह है। इस तरह यह प्रथम वर्ग और उसके दस अध्ययन कहे गये है।

दो से दस अध्ययन समाप्त

प्रथम वर्ग समाप्त

द्वितीय वर्ग—सूत्र १

"यदि निश्चय करके हे पूज्य!
श्रमण यावत् मोक्ष प्राप्त प्रभु ने पहले
वर्ग का यह भाव कहा है
तो भदन्त! दूसरे
अन्तगडदशांग के वर्ग के
श्रमण यावत् मोक्ष प्राप्त प्रभु ने
कितने अध्ययन प्रतिपादित किये है?
निश्चय करके हे जम्बू!
श्रमण यावत् मोक्ष प्राप्त प्रभु ने
आठ अध्ययन कहे है।
वे इस प्रकार है —गाथा—
१ अक्षोभ २ सागर
३ समुद्र ४ हिमवन्त ५ अचल
६ धरण ७ पूरण
८ अभिचन्द्र।"

जम्बू स्वामी बोले—"हे पूज्य! श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने प्रथम वर्ग का यह वर्णन किया है। अब हे भगवन्! अंतगडदशा के दूसरे वर्ग मे श्रमण भगवान् महावीर ने कितने अध्ययन फरमाये है?"

आर्य सुधर्मा श्रीमुख से कहते है—"इस प्रकार हे जम्बू! श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने दूसरे वर्ग के आठ अध्ययन फरमाये है, जैसे कि – प्रथम अक्षोभ कुमार, दूसरे सागर, तीसरे समुद्र, चौथे हिमवान और पाचवे अचल कुमार, छठे धरण, सातवे पूरण और आठवे अभिचन्द्र होते है।"

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
एव जहा गोयमो तहा सेसा	एव यथा गौतम. तथा शेषाणि
वण्ही पिया, धारिणी माया	वृष्णि पिता धारिणी माता
समुद्दे सागरे गभीरे थिमिए	समुद्र सागर गम्भीर स्तिमित
अयले कपिल्ले अक्खोभे	अचल काम्पिल्य अक्षोभ
पसेणई विण्हु एए एगगमा	प्रसेनजित् विष्णु एते एकगमा
पढमो वग्गो, दस अज्झयणा पण्णत्ता ।	प्रथम वर्ग दश अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि ।

दो से दस अध्ययन समाप्त
प्रथम वर्ग समाप्त

द्वितीय वर्ग–सूत्र १

जइ ण भते !	यदि खलु भदन्त !
समणेणं जाव सपत्तेण पढमस्स	श्रमणेन यावत् संप्राप्तेन प्रथमस्य
वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते,	वर्गस्य अयमर्थः प्रज्ञप्त ,
दो स ण भन्ते !	द्वितीयस्य खलु भदन्त !
वग्गस्स अतगडदसाण	वर्गस्य अन्तकृद्दशानाम्
समणेण जाव संपत्तेणं	श्रमणेन यावत् सप्राप्तेन
कई अज्झयणा पण्णत्ता ?	कति अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि ?
एव खलु जंबू !	एव खलु जम्बू !
णेणं सपत्तेण	श्रमणेन यावत् (मुक्ति) संप्राप्तेन
अट्ठ अज्झयणा पण्णत्ता	अष्टौ अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि
त जहा—गाहा–	तानि यथा—गाथा–
अक्खोभे सागरे	अक्षोभ. सागर. खलु
समुद्द हिमवत ेय !	समुद्र. हि न्त. अचल नामाश्च !
धरणे य पूरणे य	धरण पूरणोऽपि च
अि दे	अि न्द्रश्चै अष्ट :

[हिन्दी छाया]

इस प्रकार जैसे गौतम वैसे बाकी के वृष्णि पिता, धारिणी माता समुद्र, सागर, गम्भीर, स्तिमित, अचल, काम्पिल्य, अक्षोभ, प्रसेनजित, विष्णु ये सब एक समान है (इस प्रकार) प्रथम वर्ग और उसके दस अध्ययन कहे गये है।

[हिन्दी अर्थ]

इस प्रकार मुनि गौतम कुमार की तरह शेष ९ अध्ययन भी समझने चाहिये। सब के पिता वृष्णि एव माता धारिणी थी। उनके नाम इस प्रकार है —

"२ समुद्रकुमार, ३ सागरकुमार, ४ गम्भीर कुमार, ५ स्तिमित कुमार, ६ अचल कुमार, ७ काम्पिल्य कुमार, ८ अक्षोभ कुमार, ९ प्रसेनजित, १० विष्णु कुमार"।

ये सब अध्ययन एक समान है। आगे का सबका वर्णन गौतम कुमार मुनि की तरह है। इस तरह यह प्रथम वर्ग और उसके दस अध्ययन कहे गये है।

दो से दस अध्ययन समाप्त

प्रथम वर्ग समाप्त

द्वितीय वर्ग–सूत्र १

"यदि निश्चय करके हे पूज्य !
श्रमण यावत् मोक्ष प्राप्त प्रभु ने पहले
वर्ग का यह भाव कहा है
तो भदन्त ! दूसरे
अन्तगडदशाग के वर्ग के
श्रमण यावत् मोक्ष प्राप्त प्रभु ने
कितने अध्ययन प्रतिपादित किये है?
निश्चय करके हे जम्बू !
श्रमण यावत् मोक्ष प्राप्त प्रभु ने
आठ अध्ययन कहे है।
वे इस प्रकार है —गाथा–
१ अक्षोभ २ सागर
३ समुद्र ४ हिमवन्त ५ अचल
६ धरण ७ पूरण
८ अभिचन्द्र।"

जम्बू स्वामी बोले—"हे पूज्य ! श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने प्रथम वर्ग का यह वर्णन किया है। अब हे भगवन् ! अतगडदशा के दूसरे वर्ग मे श्रमण भगवान् महावीर ने कितने अध्ययन फरमाये है ?"

आर्य सुधर्मा श्रीमुख से कहते है–"इस प्रकार हे जम्बू ! श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने दूसरे वर्ग के आठ अध्ययन फरमाये है, जैसे कि – प्रथम अक्षोभ कुमार, दूसरे सागर, तीसरे समुद्र, चौथे हिमवान और पाचवे अचल कुमार, छठे धरण, सातवे पूरण और आठवे अभिचन्द्र होते है।"

[मूल सूत्र पाठ]	[सस्कृत छाया]
तेण कालेण तेण समयेण	तस्मिन् काले तस्मिन् समये
बारवईए णयरीए वण्ही पिया	द्वारावत्या नगर्या वृष्णि पिता
धारिणी माया ।	धारिणी माता ।
जहा पढमो वग्गो,	यथा प्रथम वर्ग.
तहा सव्वे अट्ठ अज्झयणा ।	तथा सर्वाणि अष्ट अध्ययनानि ।
गुणरयण तवोकम्म,	गुणरत्न तप कर्म
सोलस वासाइ परियाओ	षोडश वर्षाणि (दीक्षा) पर्याय :
सेत्तु‌ जे मासियाए सलेहणाए	शत्रुजये (पर्वते) मासिक्या सलेखनया
जाव सिद्धा ।	यावत् सिद्धा. ।
एव खलु जंबू !	एवं खलु जम्बू !
समणेण जाव सपत्तेण	श्रमणेन यावत् सप्राप्तेन
अट्ठमस्स अगस्स	अष्टमस्य अंगस्य
दोच्चस्स वग्गस्स	द्वितीयस्य वर्गस्य
अयमट्ठे पण्णत्ते ।	अयमर्थः प्रज्ञप्त ।

इति द्वितीय वर्गः

अर्थ तृतीय वर्ग–सूत्र १

जइ ण भन्ते !	यदि खलु भदन्त !
समणेणं जाव सपत्तेणं	श्रमणेन यावत् संप्राप्तेन
अट्ठमस्स अगस्स दोच्चस्स वग्गस्स	अष्टमस्य अंगस्य द्वितीयस्य वर्गस्य
अयमट्ठे पण्णत्ते,	अयमर्थ. प्रज्ञप्त,
तच्चस्स णं भन्ते ! वग्गस्स	तृतीयस्य खलु भदन्त ! वर्गस्य
समणेण जाव सपत्तेणं	श्रमणेन यावत् सप्राप्तेन
के अट्ठे पण्णत्ते ?	क अर्थ प्रज्ञप्त ?

[हिन्दी छाया]

उस काल उस समय
द्वारिका नगरी मे वृष्णि (राजा) पिता थे
और धारिणी रानी माता थी ।
जैसे प्रथम वर्ग
वैसे सभी आठ अध्ययन ।
(सभी ने) गुणरत्न तप किया,
सोलह वर्ष की दीक्षा पर्याय पाली,
शत्रुंजय पर मासिकी सलेखना की,
और यावत् सिद्ध हुए ।
इस प्रकार निश्चय करके हे जम्बू !
श्रमण यावत् मोक्ष-प्राप्त प्रभु ने
(इस) आठवें अंग शास्त्र के
दूसरे वर्ग का
यह भाव कथन किया है ।

[हिन्दी अर्थ]

उस काल उस समय मे द्वारिका नगरी मे इन आठो कुमारो के वृष्णि राजा पिता और धारिणी माता थी । जिस प्रकार प्रथम वर्ग कहा, उसी प्रकार ये सभी आठो अध्ययन समझने चाहिये ।

इन सभी ने गुणरत्न सवत्सर तप किया । सोलह वर्ष का चारित्र पालन कर, शत्रु जय पर्वत पर एक मास की सलेखणा से यावत् सिद्ध हुए ।

इस प्रकार हे जम्बू ! श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने आठवे अग शास्त्र अतगडदशा के दूसरे वर्ग का यह भाव श्रीमुख से कहा है ।

आठ अध्ययन समाप्त

द्वितीय वर्ग समाप्त

तृतीय वर्ग–सूत्र १

(आर्य जम्बू) "यदि निश्चय करके
हे पूज्य !
श्रमण यावत् मोक्ष प्राप्त प्रभु ने
आठवें अंग शास्त्र के दूसरे वर्ग का
यह भाव कथित किया है (तो)
हे पूज्य (अब) तीसरे वर्ग का
श्रमण यावत् मोक्ष प्राप्त प्रभु ने
क्या भाव कहा है ?"

आर्य जम्बू – "हे पूज्य ! श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने आठवे अग अतकृद्दशा के दूसरे वर्ग का यह भाव कहा है । अब हे पूज्य ! तीसरे वर्ग का श्रमण भगवान् महावीर यावत् मुक्ति-प्राप्त प्रभु ने क्या भाव कहा है ?

[मूल सूत्र पाठ]

एव खलु जबू !
समणेण जाव सपत्तेण
अट्ठमस्स अंगस्स तच्चस्स वग्गस्स
अतगडदसाण
तेरस अज्झयणा पण्णत्ता,
तंजहा—
अणीयसेणे, अणंतसेणे,
अजियसेणे, अणिहयरिऊ,
देवसेणे, सत्तुसेणे, सारणे,
गए, सुमुहे, दुम्मुहे,
कूवए, दारुए, अणादिट्ठी ।

जइ ण भन्ते !
समणेण जाव सपत्तेणं अट्ठमस्स
अगस्स अतगडदसाणं
तच्चस्स वग्गस्स तेरस
अज्झयणा पण्णत्ता,
तं जहा—
अणीयसेणे जाव अणादिट्ठी,
पढमस्स ण भन्ते !
अज्झयणस्स अंतगडदसाणं
समणेण जाव सपत्तेण
के अट्ठे पण्णत्ते ?

[संस्कृत छाया]

एव खलु जम्बू !
श्रमणेन यावत् सप्राप्तेन
अष्टमस्य अगस्य तृतीयस्य वर्गस्य
अन्तकृद्दशानाम्
त्रयोदश अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि,
तानि यथा—
अनीकसेन , अनन्तसेन ,
अजितसेन., अनिहतरिपु ,
देवसेन , शत्रुसेन , सारण',
गज., सुमुख , दुर्मुख ,
कूपक , दारुक , अनादृष्टिः ।

यदि खलु भदन्त !
श्रमणेन यावत् सप्राप्तेन अष्टमस्य
अगस्य अन्तकृद्दशानाम्
तृतीयस्य वर्गस्य त्रयोदशानि
अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि,
तानि यथा—
अनीकसेनः यावत् अनादृष्टिः,
प्रथमस्य खलु भदन्त !
अध्ययनस्य अन्तकृद्दशानाम्
श्रमणेन यावत् सप्राप्तेन
क. अर्थ. प्रज्ञप्त ?

[हिन्दी शब्दार्थ]

इस ार निश्चय करके हे जम्बू !
श्रमण यावत् मोक्ष प्राप्त (प्रभु) ने
आठवे अंग के तृतीय वर्ग के
अन्तगड । के
तेरह अध्ययन कहे है ।

जो इस प्रकार है—
१ अनीक सेन २ अनन्त सेन
३ अ ि सेन ४ अनिहत रिपु
५. देवसेन ६ शत्रुसेन ७ सारण
८. गज सुकुमाल ९. सुमुख १० दुर्मुख
११. कूपक १२. दारुक १३. ादृष्टि

यदि निश्चय ही हे भदन्त !
श्रमण यावत् मुक्त (प्रभु) ने आठवे
अग अन्तगडदशा के
तृतीय वर्ग के तेरह
अध्ययन कहे है,

जो इस प्रकार है—
अनीक सेन से लेकर अनादृष्टि तक
(तो) हे भदन्त! प्रथम का
अन्तगडदशांग के अध्ययन का
श्रमण यावत् मोक्ष प्राप्त (प्रभु) ने
क्या भाव प्रतिपादित किया है ?

[हिन्दी अर्थ]

श्री सुधर्मा स्वामी–"हे जम्बू! श्रमण भगवान् महावीर स्वामी ने आठवे अग शास्त्र अन्तगडदशा के तीसरे वर्ग मे तेरह अध्ययनो का वर्णन किया है। वे इस प्रकार है—

१ अनीक सेन २ अनन्त सेन ३ अजित सेन ४ अनिहत रिपु ५ देव सेन ६ शत्रु सेन ७ सारण ८ गज सुकुमाल ९ सुमुख १० दुर्मुख ११ कूपक १२ दारुक और १३ अनादृष्टि।"

श्री जम्बू स्वामी– "यदि निश्चय ही हे भगवन्! श्रमण यावत् मोक्ष प्राप्त प्रभु महावीर ने आठवे अग शास्त्र अन्तगडदशा के तीसरे वर्ग मे "अनिकसेन से अनादृष्टि तक" तेरह अध्ययन कहे है तो हे भगवन्! इस तीसरे वर्ग मे श्रमण भगवान् महावीर स्वामी ने प्रथम अध्ययन का क्या भाव प्रतिपादित किया है?"

[मूल सूत्र पाठ]	[सस्कृत छाया]

सूत्र २

एव खलु जबू !	एवं खलु जबू !
तेरण कालेरण तेरणं समएरण	तस्मिन् काले तस्मिन् समये
भद्दिलपुरे रणाम रणयरे होत्था,	भद्दिलपुर नाम नगर अभवत् ।
रिद्धत्थिमिय समिद्धे, वण्णओ ।	ऋद्धस्तिमितसमृद्ध, वर्णक. ।
तस्सरणं भद्दिलपुरस्स रणयरस्स बहिया	तस्य खलु भद्दिलपुरस्य नगरस्य बहि
उत्तर पुरत्थिमे दिसिभाए	उत्तर पौरस्त्ये दिग्भागे
सिरोवरणे रणाम उज्जारणे होत्था,	श्रीवन नाम उद्यानं अभवत्,
वण्णओ । जियसत्तू राया ।	वर्णक. । जितशत्रु नाम राजा
तत्थरणं भद्दिलपुरे रणयरे रणागे	तत्र खलु भद्दिलपुरे नगरे नाग
रणामं गाहावई होत्था,	नाम गाथापति अभवत् ।
अड्ढे जाव अपरिभूए ।	आढ्यो यावत् अपरिभूत
तस्सरण रणागस्स गाहावइस्स सुलसा	तस्य खलु नागस्य गाथापते. सुलसा
रणाम भारिया होत्था,	नाम भार्या अभवत्,
सुकुमाला जाव सुरूवा ।	सुकुमारा यावत् सुरूपा ।
तस्स रणं रणागस्स गाहावइस्स	तस्य खलु नागस्य गाथापते
पुत्ते सुलसाए भारियाए अत्तए	पुत्र सुलसाया भार्याया. आत्मजः
अरणीयसेरणे रणामं कुमारे होत्था,	अनीकसेन नाम कुमार. आसीत्,
सुकुमाले जाव सुरूवे ।	सुकुमार यावत् सुरूप ।
पंचधाई–परिक्खित्ते । तंजहा	पचधात्री परिक्षिप्त । तद् यथा
खीरधाई, मज्जरण धाई, मंडरण धाई,	क्षीरधात्री, मज्जन धात्री, मण्डन धात्री,
कीलाबरण धाई, धाई ।	क्रीडनधात्री, अङ्कधात्री ।
जहा दढपइण्णे जाव	यथा दृढप्रतिज्ञ. यावत्
गिरिकन्दर–मल्लीरणेव चंपकवर–पायवे	गिरिकन्दरासीन चंपक वर पादप इव
सुहंसुहेरणं परिवड्ढइ ।	सुखंसुखेन परिवर्द्धते ।

सूत्र ३

तएरणं तं अरणीयसेरण कुमारं	तत खलु तं अनीकसेनं नाम कुमारं
साइरेगं अट्ठवास–जायं	सातिरेकं अष्टवर्ष जातम्

[हिन्दी शब्दार्थ]

इस प्रकार निश्चय से हे जम्बू !
उस काल मे और उस समय मे
'भद्दिलपुर' नाम का नगर था, (जो)
ऋद्ध, स्तिमित, समृद्ध व वर्णनीय था।
उस भद्दिलपुर नगर के बाहर
उत्तरपूर्व दिशा (ईशानकोण) मे
श्रीवन नाम का उद्यान था,
वर्णनीय, (वहाका) जितशत्रु राजा था।
उस भद्दिलपुर नगर मे नाग
नाम का गाथापति था, (जो)
आढ्य यावत् अपरिभूत था।
उस नाग गाथापति की सुलसा
नाम की स्त्री थी,
(जो) सुकुमार यावत् सुरूपवती थी।
उस नाग गाथापति के
पुत्र सुलसा पत्नी की कुक्षी से
अनिकसेन नाम का कुमार था,
(जो) सुकोमल यावत् रूपवान था।
पाच धायमाताओ से घिरा
हुआ प्रतिपालित था। वे ये है—
क्षीरधात्री, मज्जनधात्री, मडनधात्री,
क्रीडनधात्री, अकधात्री।
जैसे दृढप्रतिज्ञ उसी प्रकार यावत्
गिरिकन्दरा मे लीन चम्पक वृक्ष के समान
सुखपूर्वक बढने लगा

[हिन्दी अर्थ]

श्री सुधर्मा—"हे जम्बू ! उस काल उस समय मे 'भद्दिलपुर' नाम का नगर था। वह नगर उत्तम नगरो के सभी गुणो से युक्त धन-धान्यादि से परिपूर्ण, भय रहित एव भवनादि से समृद्ध वर्णन करने योग्य था।

उस भद्दिलपुर नगर के बाहर ईशान कोण मे श्रीवन नाम का उद्यान था। वह फलदार व फूलो से वेष्ठित वृक्षो से युक्त था। वहा 'जितशत्रु' राजा राज करता था। उस नगर मे 'नाग' नाम का गाथापति रहता था। वह अत्यन्त समृद्धिशाली और अपरिभूत यानि जिसका कोई अपमान नही कर सके, ऐसा था।

उस नाग गाथापति के सुलसा नाम की भार्या थी। जो सुकुमाल यावत् अत्यन्त रूपवती थी।

उस नाग गाथापति का पुत्र और सुलसा भार्या का अगज अनीकसेन नाम का कुमार था। वह सुकोमल यावत् शरीर से रूपवान् था। पाच धाय-माताओ से घिरा रहता था, जो उसका लालन पालन करती थी।

जैसे—१ क्षीर धात्री यानि दूध पिलाने वाली धाय, २ मज्जनधात्री स्नान कराने वाली धाय, ३ मडनधात्री-अलकार कराने वाली धाय, ४ क्रीडा धात्री-क्रीडा यानि खेल खिलाने वाली धाय, और ५ अक धात्री-गोद मे खिलाने वाली धाय। दृढ प्रतिज्ञ कुमार के समान यावत्-पहाडी गुफा मे लीन-सुरक्षित चपक वृक्ष के समान वह सुखपूर्वक बढने लगा।

सूत्र ३

तदनन्तर उस अनिकसेन कुमार को
साधिक आठ वर्ष का हुआ जानकर

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]

सूत्र २

एव खलु जबू !	एव खलु जबू !
तेणं कालेणं तेणं समएणं	तस्मिन् काले तस्मिन् समये
भद्दिलपुरे णाम णयरे होत्था,	भद्दिलपुर नाम नगरं अभवत् ।
रिद्धत्थिमिय समिद्धे, वण्णओ ।	ऋद्धस्तिमितसमृद्धं, वर्णक ।
तस्सणं भद्दिलपुरस्स णयरस्स बहिया	तस्य खलु भद्दिलपुरस्य नगरस्य बहि·
उत्तर पुरत्थिमे दिसिभाए	उत्तर पौरस्त्ये दिग्भागे
सिरीवणे णामं उज्जाणे होत्था,	श्रीवन नाम उद्यान अभवत्,
वण्णओ । जियसत्तू राया ।	वर्णक । जितशत्रु नाम राजा
तत्थणं भद्दिलपुरे णयरे णागे	तत्र खलु भद्दिलपुरे नगरे नाग
णाम गाहावई होत्था,	नाम गाथापति अभवत् ।
अड्ढे जाव अपरिभूए ।	आढ्यो यावत् अपरिभूत
तस्सणं णागस्स गाहावइस्स सुलसा	तस्य खलु नागस्य गाथापते· सुलसा
णाम भारिया होत्था,	नाम भार्या अभवत्,
सुकुमाला जाव सुरूवा ।	सुकुमारा यावत् सुरूपा ।
तस्स ण णागस्स गाहावइस्स	तस्य खलु नागस्य गाथापते·
पुत्ते सुलसाए भारियाए ए	पुत्र सुलसाया भार्याया· आत्मजः
अणीयसेणे णाम कुमारे होत्था,	अनीकसेन नाम कुमार· आसीत्,
सुकुमाले जाव सुरूवे ।	सुकुमार· यावत् सुरूप ।
पचधाई–परिक्खित्ते । तजहा	पचधात्री परिक्षिप्त । तद् यथा
खीरधाई, मज्जण धाई, मडण धाई,	क्षीरधात्री, मज्जन धात्री, मण्डन धात्री,
कीलावण धाई, धाई ।	क्रीडनधात्री, अङ्कधात्री ।
जहा दढपइण्णे जाव	यथा दृढप्रति : यावत्
गिरिकन्दर–मल्लीणेव चंपकवर–पायवे	गिरिकन्दरासीन चंपक वर पादप इव
सुहंसुहेणं परिवड्ढइ ।	सुखसुखेन परिवर्द्धते ।

सूत्र ३

तएणं तं अणीयसेणं कुमारं	तत खलु तं अनीकसेन नाम कुमार
साइरेगं अट्ठवास–जाय	सातिरेकं अष्टवर्ष म

[हिन्दी शब्दार्थ]

इस प्रकार निश्चय से हे जम्बू !
उस काल मे और उस समय मे
'भद्दिलपुर' नाम का नगर था, (जो)
ऋद्ध, स्तिमित, समृद्ध व वर्णनीय था।
उस भद्दिलपुर नगर के बाहर
उत्तरपूर्व दिशा (ईशानकोण) में
श्रीवन नाम का उद्यान था,
वर्णनीय, (वहाका) जितशत्रु राजा था।
उस भद्दिलपुर नगर मे नाग
नाम का गाथापति था, (जो)
आढ्य यावत् अपरिभूत था।
उस नाग गाथापति की सुलसा
नाम की स्त्री थी,
(जो) सुकुमार यावत् सुरूपवती थी।
उस नाग गाथापति के
पुत्र सुलसा पत्नी की कुक्षी से
अनिकसेन नाम का कुमार था,
(जो) सुकोमल यावत् रूपवान था।
पाच धायमाताओ से घिरा
हुआ प्रतिपालित था। वे ये है —
क्षीरधात्री, मज्जनधात्री, मंडनधात्री,
क्रीडनधात्री, अकधात्री।
जैसे दृढप्रतिज्ञ उसी प्रकार यावत्
गिरिकन्दरा मे लीन चम्पक वृक्ष के समान
सुखपूर्वक बढने लगा

[हिन्दी अर्थ]

श्री सुधर्मा—"हे जम्बू ! उस काल उस समय मे 'भद्दिलपुर' नाम का नगर था। वह नगर उत्तम नगरो के सभी गुणो से युक्त धन-धान्यादि से परिपूर्ण, भय रहित एव भवनादि से समृद्ध वर्णन करने योग्य था।

उस भद्दिलपुर नगर के बाहर ईशान कोण मे श्रीवन नाम का उद्यान था। वह फलदार व फूलो से वेष्ठित वृक्षो से युक्त था। वहा 'जितशत्रु' राजा राज करता था। उस नगर मे 'नाग' नाम का गाथापति रहता था। वह अत्यन्त समृद्धिशाली और अपरिभूत यानि जिसका कोई अपमान नही कर सके, ऐसा था।

उस नाग गाथापति के सुलसा नाम की भार्या थी। जो सुकुमाल यावत् अत्यन्त रूपवती थी।

उस नाग गाथापति का पुत्र और सुलसा भार्या का अगज अनीकसेन नाम का कुमार था। वह सुकोमल यावत् शरीर से रूपवान् था। पाच धाय-माताओ से घिरा रहता था, जो उसका लालन पालन करती थी।

जैसे—१ क्षीर धात्री यानि दूध पिलाने वाली धाय, २ मज्जनधात्री स्नान कराने वाली धाय, ३ मडनधात्री-अलकार कराने वाली धाय, ४ क्रीडा धात्री-क्रीडा यानि खेल खिलाने वाली धाय, और ५ अक धात्री-गोद मे खिलाने वाली धाय। दृढ प्रतिज्ञ कुमार के समान यावत् -पहाडी गुफा मे लीन-सुरक्षित चपक वृक्ष के समान वह सुखपूर्वक बढने लगा।

सूत्र ३

तदनन्तर उस अनिकसेन कुमार को
साधिक आठ वर्ष का हुआ जानकर

[मूल सूत्र पाठ]

अम्मापियरो कलायरिय जाव
भोगसमत्थे जाए यावि होत्था ।
तएणं त अणीयसेणं कुमारं
उम्मुक्क–बालभावं जाणित्ता
अम्मापियरो सरिसयाणं
सरिसवयाण, सरिसत्तयाणं,
सरिसलावण्ण रूवजोवण्ण गुणोव
–वेयाण, सरिसेहितो कुलेहितो
आणिल्लियाणं बत्तीसाए
इब्भवरकण्णगाणं
एग दिवसेणं पाणि गिण्हावेति ।

[संस्कृत छाया]

अम्बापितरौ कलाचार्यः यावत्
भोग समर्थो जातश्चापि ीत् ।
ततः खलु तं अनीकसेनं कुमारं
उन्मुक्तबालभावं
अम्बापितरौ सदृशीना
सदृशवयस्काना, सदृशत्वचाम्
सदृशलावण्यरूपयौवनगुणोप–
पेताना, सदृशेभ्य. कुलेभ्य.
आनीताना द्वात्रिशत्
इभ्यवरकन्यकाना
एकदिवसे खलु पाणि ग्रहण कुर्वावन्ति ।

सूत्र ४

तएणं से णागे गाहावई
अणीयसेणस्स कुमारस्स इमं
एयारूवं पीइदाणं यइ, त जहा—
ीसं हिरण्ण कोडीओ जहा
महब्बलस्स जाव उप्पिपासायवरगए
फुट्टमाणेहि मुइगमत्थएहि
भोगभोगाइं, भुंजमाणे विहरइ ।

: खलु स नाग. गाथापति
अनीकसेनाय कुमाराय इदं
एतद् रूप प्रीतिदानं ददाति, तद्यथा—
द्वात्रिंशत् हिरण्य कोटिक यथा
महाबलस्य यावत् उपरिप्रासादवरगते
स्फुटद्भि. मृदंगमस्तकैः (ताड्यमानै)
भोगभोगान् भुंजान. विहरति ।

तेणं कालेणं तेणं समएणं
अरहा अरिट्ठणेमी जाव ोसढे,
सिरिवणे उज्जाणे अहापडिरूवं
उग्गहं जाव विहरइ ।
परिसा णिग्गया ।
तते णं अणीयसेणस्स कुमा

तस्मिन् काले तस्मिन् समये
अर्हन् अरिष्टनेमी यावत् समवसृतः,
श्रीवने उद्याने यथाप्रतिरूपम्
अवग्रहम् यावत् विहरति ।
परिषद् निर्गता ।
ततः खलु अनीकसेनस्य कुमारस्य

[हिन्दी शब्दार्थ]

मातापितानेक र्यके पास भेजा यावत् भोग समर्थ युवावस्था सम हुआ। तब उस अनिकसेन कुमार को भाव से मुक्त जानकर (के) माता पिता (उस) सरीखी समान वयवाली, समान त्वचावाली, समान ला -रूप-यौवन-गुण सम्पन्न, समान वाली आनीत (लाई गई), बत्तीस श्रेष्ठ इभ्य सेठो की कन्याओ के साथ एक ही दिन मे पाणिग्रहण करवाते है।

[हिन्दी अर्थ]

इस तरह अनीकसेन कुमार को आठ वर्ष से अधिक वय का होने पर माता पिता ने कलाचार्य के पास भेजा, यावत् वह भोग समर्थ युवावस्था को प्राप्त हुआ।

तब उस अनीकसेन कुमार को माता-पिता ने उन्मुक्त बालभाव-अर्थात् युवावस्था मे प्रविष्ट हुआ जानकर, उसके अनुरूप समान वय वाली, समान त्वचा और समान रूप लावण्य तथा तारुण्य गुण वाली, अपने समान कुलो से लाई गई बत्तीस इभ्य श्रेष्ठियो की कन्याओ के साथ उसका एक ही दिन मे पाणिग्रहण सस्कार करवाया।

सूत्र ४

वह नाग गाथापति अनिकसेन कुमार के लिए एक इस प्रकार का प्रीतिदान देता है। जैसे बत्तीस करोड़ चांदी सोना आदि जैसा महाबल के प्रकरण मे उल्लेख है।

यावत् श्रेष्ठ भवन मे ऊपर बजते हुए मृदग यन्त्रो के साथ भोग भोगताहुआ (वह) विचरने लगा। उस काल उस समय मे अरिहन्त अरिष्टनेमि यावत् पधारे, (और) श्रीवन उद्यान मे यथा विधि अवग्रह आदि की आज्ञा लेकर यावद् विचरने लगे।

परिषद् आई।

तव उस अनिकसेन कुमार ने

पाणिग्रहण कराने के पश्चात् उस नाग गाथापति ने अनीकसेन कुमार को इस प्रकार का प्रीति-दान दिया, जैसे कि बत्तीस करोड चादी, सोना आदि।

इसका विवरण महाबल के समान समझना।

यावत् अनिक सेन ऊपर प्रासाद मे बजती हुई मृदङ्गो की तालो केसाथ उत्तम भोगो को भोगते हुए रहने लगा।

उस काल उस समय मे अरिहत अरिष्ट-नेमि यावत् भद्दिलपुर पधारे।

श्रीवन नाम के उद्यान मे यथाविधि अवग्रह-तृणादि की आज्ञा लेकर यावत् विचरने लगे।

धर्म श्रवण करने परिषद् आई।

[मूल सूत्र पाठ]

त महया जणसद्द जहा गोयमे तहा,
णवर सामाइयमाइयाइ
चोद्दस पुव्वाइं अहिज्जइ ।
वीस वासाइ परियाओ,
सेस तहेव जाव सेत्तुंजे पव्वए
मासियाए संलेहणाए जाव सिद्धे ।

एवं खलु जम्बू !
समणेणं जाव सपत्तेणं अट्ठमस्स
अगस्स अतगडदसाणं तच्चस्स वग्गस्स
पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

[सस्कृत छाया]

तं महज्जनशब्दं यथा गौतमस्तथा,
विशेषेण सामायिकादीनि
चतुर्दश पूर्वाणि अधीते ।
विंशति वर्षाणि दीक्षापर्यायः,
शेषं तथैव यावत् शत्रुञ्जये पर्वते
मासिक्या सलेखनया यावत् सिद्ध ।

एवं खलु जम्बू !
श्रमणेन यावत् संप्राप्तेन अष्टमस्यांगस्य
कृद्दशानां तृतीयस्य वर्गस्य
प्रथमस्य अध्ययनस्य अयमर्थः प्रज्ञप्तः ।

इति प्रथमं अध्ययनम्

सूत्र ५

जहा अणीयसेणे, एव सेसावि—
[अणतसेणे अजियसेणे अणिहयरिऊ
देवसेणे सत्तुसेणे]
छ अज्झयणा एगगमा—बत्तीसओ दाओ,
बीस वासाइ परियाओ,
चोद्दस पुव्वाइं अहिज्जति,
सेत्तुजे जाव सिद्धा ।
छट्ठमज्झयणं समत्त ।

यथा अनीकसेन, एवं शेषान्यपि—
२ अनंतसेन, ३. अजितसेन ,
४. अनिहतरिपु., ५.देवसेनः, ६ शत्रुसेनः।
षडध्ययनानि एकगमानि, द्वात्रिंशत् दायः
विंशति वर्षाणि दीक्षापर्याय
च ... पूर्वाणि अधीयते,
शत्रुञ्जये यावत् सिद्धा. ।
षष्ठमाध्ययनं समाप्तम् ।

इति दो से छ अध्ययन

[हिन्दी शब्दार्थ]	[हिन्दी अर्थ]
जन समुदाय का कोलाहल सुनकर 'गौतम' की तरह दीक्षादि ली। विशेष रूप से सामायिक आदि चौदह पूर्व का ज्ञान सीखा। बीस वर्ष की दीक्षा पर्याय पाली। शेष उसी प्रकार यावत् शत्रु जय पर्वत पर १मासकीसलेखणाकरके यावत् सिद्धहुए। इस प्रकार हे जम्बू ! श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने आठवे अग अन्तकृद्दशा के तीसरे वर्ग के प्रथम अध्ययन का यह भाव दर्शाया है।	तदनन्तर उस अनीकसेन कुमार के कर्ण रन्ध्रो मे प्रभु दर्शनार्थ जाते हुए जन समूह का विपुल जनरव पडा। गौतम के समान कुमार अनीकसेन ने भी समवसरण मे जा, प्रभु का उपदेश सुन, माता पिता की आज्ञा ले प्रभु चरणो मे दीक्षा ग्रहण की। विशेष यह कि सामायिक आदि १४ पूर्वो का ज्ञान सीखा। २० वर्ष की श्रमण पर्याय का पालन किया। शेष उसी प्रकार यावत् शत्रु जय पर्वत पर जाकर एक मास की सलेखणा करके यावत् सिद्ध हुए। उपसहार—इस प्रकार हे जम्बू ! श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने आठवे अतगडदशा नामक अग शास्त्र के तीसरे वर्ग मे प्रथम अध्ययन का इस भाति वर्णन किया है।"

तीसरे ˊ का प्रथम अध्ययन समाप्त

सूत्र ५

जैसे अनिकसेन वैसे शेष दूसरे भी। जैसे (अनन्तसेन, अ॒ि सेन, अनिहतरिपु, देवसेन शत्रुसेन) ये छ अध्ययन एक समान है। (सबने) बत्तीस करोड़ का दहेज (लेकर), बीस वर्ष की दीक्षा पर्याय पालनकर चौदह पूर्वो का अध्ययन किया एवं शत्रु जय पर्वत पर यावत् सिद्ध हुए।	जिस प्रकार अनीकसेन कुमार का वर्णन किया गया, उसी प्रकार शेष अध्ययन भी—२ अनतसेन, ३ अजितसेन, ४ अनिहतरिपु, ५ देवसेन और ६ शत्रुसेन— समझना। ये छ ही अध्ययन एक समान है। इन सबको भी बत्तीस २ चादी सोने का दहेज मिला। सबका २०/२० वर्ष का दीक्षा काल रहा। सबने चौदह पूर्व का अध्ययन किया एव सभी शत्रु जय पर्वत पर यावत् सिद्ध हुए।

तीसरे वर्ग के २ से ६ अध्ययन समाप्त

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]

सातवां अध्ययन

जइणं भन्ते ! उक्खेवो सत्तमस्स ।	यदि खलु भदन्त! उत्क्षेपकः ।
तेणं कालेणं तेणं समएणं	तस्मिन् काले तस्मिन् समये
बारवईए णयरीए जहा पढमे,	द्वारावत्यां नगर्यां यथा प्रथमे,
णवरं–वसुदेवे राया, धारिणी ी,	विशेषेण वसुदेवो राजा, धारिणी देवी,
सीहो सुमिणे, सारणे कुमारे,	सिंह: स्वप्ने, सारणः कुमारः,
पण्णासओ दाओ, चोद्दस पुव्वाइं,	पंचाशत् दायः, चतु पूर्वाणि,
वीसवासाइं परियाओ,	ि ति वर्षाणि दीक्षापर्यायः,
सेसं जहा गोयमस्स जाव	शेषः यथा गौतमस्य त्
सेत्तुंजे सिद्धे ।	शत्रुञ्जये सिद्धः ।

इति स ध्ययनम्

अ ध्ययनम्

जइणं भन्ते ! उक्खेवो अट्ठमस्स !	यदि खलु भदन्त! उत्क्षेपकः अष्टमस्य ।
एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं	एव खलु जम्बू! तस्मिन्काले तस्मिन् ये
बारवईए णयरीए जहा पढमे,	द्वारावत्यां नगर्यां यथा प्रथमे,
जाव अरहा अरिट्ठणेमी सामी समोसढे ।	यावन्नर्हन्नरिष्टनेमिः स्वामीस ।
तेणं कालेणं तेणं समएणं	तस्मिन् काले तस्मिन् समये
अरहओ अरिट्ठणेमिस्स छ अंतेवासी,	अर्हत. अरिष्टनेमे. षट् अन्तेवासिन.,
छ अणगारा भायरो सहोयरा होत्था ।	षट् अनगाराः रः सहोदराः अभवन्।
सरिसया, सरिसत्तया, सरिसव्वया,	सदृशका., सदृक्त्वचाः, सदृशवय :,
णीलुप्पल-गवल-गुलि	नीलोत -गवलगुलिका
अयसिकुसुमप्पगासा,	सीकुसुमप्रकाशाः

[हिन्दी शब्दार्थ] [हिन्दी अर्थ]

सातवां अध्ययन

हे पूज्य ! सातवे का यह उत्क्षेपक है।
उस काल उस स मे
द्वारिका नगरी थी। जैसे प्रथम मे।
विशेष-वसुदेव राजा धारिणी रानी थी।
स्वप्न मे रानी ने सिह देखा । उनके
सारण नाम का कुमार था ।
पचास-पचास स्वर्ण रजत कोटि का
दहेज मिला। १४ पूर्व सीखे।
बीस वर्ष दीक्षा पर्याय पाली।
शेष गौतम की तरह यावत्
शत्रुंजय पर सिद्ध हुए।

उत्क्षेपक शब्द सातवे अध्ययन का प्रारभिक वाक्य है। अर्थात् आर्य जम्बू—"हे पूज्य! श्रमणभगवान् महावीर ने छठे अध्ययन का जो भाव कहा वह सुना, अब सातवे अध्ययन का क्या अधिकार है ? कृपा कर कहिये।"

आर्य सुधर्मा—"उस काल उस समय मे द्वारिका नगरी थी। वहा का वर्णन प्रथम अध्ययन के समान समझा जाय। विशेष वहा वसुदेव राजा थे और धारिणी देवी उनकी रानी थी। देवी ने सिह का स्वप्न देखा। उनके कुवर का नाम सारण कुमार था। उसे विवाह मे पचास पचास स्वर्ण रजत कोटि का दहेज मिला। सारण कुमार ने सामायिक आदि १४ पूर्वो का अध्ययन किया। बीस वर्ष तक दीक्षा पर्याय का पालन किया। शेष गौतम कुमार की तरह शत्रु जय पर्वत पर एक मास की सलेखना सहित यावत् सिद्ध हुए।"

सातवा अध्ययन समाप्त

आठवा अध्ययन

हे पूज्य ! यह आठवे का उत्क्षेपक है।
इस प्रकार हे जम्बू! उस काल उस समय
पूर्वोक्त वर्णनवाली द्वारिका नगरी मे
यावत् अर्हन् अरिष्टनेमि स्वामी पधारे।
उस काल उस समय मे
अर्हन्त अरिष्टनेमि के छ अन्तेवासी शिष्य
छ अणगार सहोदर भाई थे।
वे समान आकार त्वचा रूपवय वाले थे।
नील कमल, सींग की गुली,
अलसी के फूल के तुल्य

आर्य जम्बू—"हे पूज्य ! सातवे अध्ययन का भाव सुना, अब आठवे का क्या अधिकार है ?"

आर्य सुधर्मा—"इस प्रकार हे जम्बू ! उस काल, उस समय मे द्वारिका नगरी मे प्रथम अध्ययन मे किये गये वर्णन के अनुसार यावत् अरिहत अरिष्टनेमि भगवान् पधारे।"

"उस काल और उस समय मे भगवान् नेमिनाथ के अतेवासी-शिष्य छ मुनि सहोदर भाई थे। वे समान आकार वाले, समान

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
सिरिवच्छं-कियवच्छा	श्रीवत्साकित व :,
कुसुमकुंडल-भद्दलया, णलकुव्वरसमाणा।	कुसुमकु डलभद्र अलका· नलकूवर
तएण ते छ अणगारा जं चेव दिवसं	समाना ।ततःखलु ते षडनगाराःयस्मिन्नेव
मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारिय	दिवसे मु डा भूत्वा अगारात् अनगारिता
पव्वइया, तं चेव दिवसं	प्रव्रजिताः, तस्मिन्नेव दिवसे
अरह अरिट्ठणेमि वदंति, णमसति,	अर्हन्तं अरिष्टनेमिं वदन्ति नमस्यन्ति,
वदित्ता णमसित्ता एव वयासी—	वन्दित्वा नमस्यित्वा एव अवदन्—
इच्छामो ण भन्ते ! तुब्भेहिं	इच्छामः खलु भदन्त! युष्माभि
अब्भणुण्णाया समाणा जावज्जीवाए	अभ्यनुज्ञाता सन्त· यावज्जीवम्
छट्ठं छट्ठेण अणि त्तेणं तवोकम्मेण	षष्ठ षष्ठेन अनिक्षिप्तेन तप कर्मणा
अप्पाणं भावेमाणा विहरित्तए ।	आत्मान भावयन्तः विहर्तुम् ।
अहासुह देवाणुप्पिया! मा पडिबन्ध करेह	यथासुखं देवानुप्रिय! मा प्रतिबन्ध कुरुत
तएणतेछअणगारा अरहया अरिट्ठणेमिणा	ततःखलुतेषडनगारा अर्हताअरिष्टनेमिना
अब्भणुण्णाया समाणा जा ीवाए	अभ्यनुज्ञाता· सन्त· यावज्जीवम्
छट्ठं छट्ठेणं जाव विहरति ।	षष्ठ षष्ठेन यावत् विहरन्ति ।
तएण ते छ अणगारा अण्णया कयाइ	ततः खलु ते षट् अनगारा·
छट्ठक्खमणपारणगसि पढमाए	अन्यदा कदाचित् षष्ठक्षमणपारणायाम्
पोरिसीए सज्झाय करेति,	प्रथमाया पौरुष्या स्वाध्याय कुर्वन्ति,
जहा गोय ामी,	यथा गौतमस्वामी,
जाव इच्छामो ण भते !	यावत् इच्छाम खलु भदन्त ।
छट्ठक्खमणस्स पारणए तुब्भेहि	षष्ठक्षपणस्य पारणाया युष्माभि·
अब्भणुण्णाया समाणा तिहि	अभ्यनुज्ञाता सन्त त्रिभि
संघाडएहिं वारवईए णयरीए	सघाटकै द्वारावत्या नगर्याम्
जाव अडित्तए ।	यावत् अटितुम् ।
अहा सुहं देवाणुप्पिया !	यथा सुख देवानुप्रिया!
तएण ते छ अणगारा	तत· खलु ते षडनगारा·

[हिन्दी शब्दार्थ]

श्रीवत्स से अंकित वक्ष वाले थे।
कुसुम तुल्य को ,कुंडल सम घुंघराले
बाल वाले नलकूवर के समान थे।
इसके बाद वे छ गार ि दिन
आगार से अणगार धर्म मे दीक्षित
होकर जित हुए उसी दिन
अ० अरिष्ट० को वन्दन नमन करते है।
वन्दन नमस्कार कर वे इस प्रकार बोले-
"हे भदन्त ! हम चाहते है आपकी
आज्ञा पाकर जीवन भर के लिए
बेले-बेले का तप करते हुए एवं उससे
अपनीआत्माकोभावितकरतेहुएविहरना।'
'हे देवानुप्रिय! तथास्तु। प्रमाद न करो।'
तब वे छ ही मुनि अर्हन्त अरिष्टनेमि की
आज्ञा पाकर जीवन पर्यन्त
बेले-बेले का तपकरते हुए विचरने लगे
तब उन छ अणगारो नेअन्यदाि ी दिन
बेले के तप के पारणो मे प्रथम
प्रहर मे स्वाध्याय की।
गौतम कुमार की तरह
यावत् बोले "हे भगवन् ! हम चाहते है
बेले के तप के पारणो मे आपकी
आज्ञा पाकर तीन (दो-दो के तीन)
सघाडो से द्वारिका नगरी मे
यावत् भ्रमण करना।"
'तथास्तु देवानुप्रियो!'
इसके बाद वे ६ अणगार

[हिन्दी अर्थ]

त्वचा और अवस्था मे समान दिखने वाले थे, शरीर का रग नीलकमल, सीग की गुली और अलसी के फूल जैसा था। श्रीवत्स से अकित वक्ष और कुसुम के समान कोमल एव कु डल के समान घु घराले बालो वाले वे सभी मुनि नल-कूवर के समान थे।

तब (दीक्षित होने के पश्चात्) वे छहो मुनि जिस दिन मु डित होकर आगार से अणगार धर्म मे प्रव्रजित हुए, उसी दिन अरिहत अरिष्टनेमि को वदना नमस्कार कर इस प्रकार बोले —

"हे भगवन्! हम चाहते है कि आपकी आज्ञा पाकर जीवन पर्यन्त निरन्तर बेले[२] की तपस्या द्वारा अपनी अपनी आत्मा को भावित (शुद्ध) करते हुए विचरण करे।"

प्रभु ने कहा—"हे देवानुप्रियो! जिससे तुम्हे सुख प्राप्त हो वही कार्य करो, प्रमाद मत करो।"

तब भगवान् के ऐसा कहने पर वे छहो मुनि भगवान् अरिष्टनेमि की आज्ञा पाकर जीवन भर के लिये बेले-बेले की तपस्या करते हुए यावत् विचरण करने लगे।

तदनन्तर उन छहो मुनियो ने अन्यदा किसी समय, बेले की तपस्या के पारणे के दिन प्रथम प्रहर मे स्वाध्याय की और गौतम स्वामी के समान यावत् बोले-"हे भगवन्! हम बेले की तपस्या के पारणे मे आपकी आज्ञा पाकर दो-दो के तीन सघाडो सेद्वारिका नगरी मे यावत् भिक्षा हेतु भ्रमण करना चाहते है।"

[मूल सूत्र पाठ]

सिरिवच्छ-कियवच्छा
कुसुमकु डल-भद्दलया, गलकुव्वरसमाणा।
तएण ते छ अणगारा ज चेव दिवसं
मु डा भवित्ता अगाराओ अणगारिय
पव्वइया, त चेव दिवसं
अरह अरिट्ठणेमिं वदति, ण ति,
वदित्ता णमसित्ता एवं वयासी—
इच्छामो णं भन्ते ! तुब्भेहिं
अब्भणुण्णाया समाणा जावज्जीवाए
छट्ठं छट्ठेण अणि त्तेणं तवोकम्मेण
अप्पाणं भावेमाणा विहरित्तए ।
अहासुह देवाणुप्पिया! मा पडिबन्ध करेह
तएणतेछअणगारा अरहया अरिट्ठणेमिणा
अब्भणुण्णाया समाणा जा ीवाए
छट्ठं छट्ठेण जाव विहरति ।
तएण ते छ अणगारा अण्णया कयाइं
छट्ठक्खमणपारणगसि पढमाए
पोरिसीए सज्झाय करेति,
जहा गोयमसामी,
जाव इच्छामो ण भते !
छट्ठक्खमणस्स पारणए तुब्भेहि
अब्भणुण्णाया समाणा तिहि
सघाडएहिं वारवईए णयरीए
जाव अडित्तए ।
अहा सुहं देवाणुप्पिया !
तएण ते छ अणगारा

[सस्कृत छाया]

श्रीवत्साकित व :,
कुसुमकु डलभद्र का॰ नलकूवर
समाना ।ततःखलु ते षडनगाराःयस्मिन्नेव
दिवसे मु डा॰ भूत्वा अगारात् अनगारितां
प्रव्रजिताः, तस्मिन्नेव दिवसे
अर्हन्त अरिष्टनेमिं वंदन्ति नमस्यन्ति,
वन्दित्वा नमस्यित्वा एव अवदन्—
इच्छामः खलु भदन्त! युष्माभि॰
अभ्यनुज्ञाता सन्तः यावज्जीवम्
षष्ठ षष्ठेन अनिक्षिप्तेन तप कर्मणा
आत्मान भावयन्तः विहर्तुम् ।
यथासुखं देवानुप्रिय! मा प्रतिबन्धं
ततः खलुतेषडनगारा अर्हताअरिष्टनेमिना
अभ्यनुज्ञाताः सन्त॰ यावज्जीवम्
षष्ठ षष्ठेन यावत् विहरन्ति ।
ततः खलु ते षट् अनगाराः
अन्यदा कदाचित् षष्ठक्षमणपारणायाम्
प्रथमाया पौरुष्या स्वाध्याय कुर्वन्ति,
यथा गौतमस्वामी,
यावत् इच्छाम खलु भदन्त ।
षष्ठक्षपणस्य पारणाया युष्माभि
अभ्यनुज्ञाताः सन्त त्रिभि
संघाटकैः द्वारावत्या नगर्याम्
यावत् अटितुम् ।
यथा सुख देवानुप्रिया!
ततः खलु ते षडनगारा॰

[हिन्दी शब्दार्थ]

श्रीवत्स से अंकित वक्ष वाले थे।
कुसुम तुल्य को ,कुंडल सम घुंघराले
बाल वाले कूवर के समान थे।
इसके बाद वे छ गार ि दिन
आगार से अणगार धर्म मे दीक्षित
होकर जित हुए उसी दिन
अ० अरिष्ट० को वन्दन नमन करते है।
वन्दन नमस्कार कर वे इस प्रकार बोले-
"हे भदन्त ! हम चाहते है आपकी
आज्ञा पाकर जीवन भर के लिए
बेले-बेले का तप करते हुए एव उससे
अपनीआतमाकोभावितकरतेहुएविहरना।'
'हे देवानुप्रिय! तथास्तु। प्रमाद न करो।'
तब वे छ ही मुनि अर्हन्त अरिष्टनेमि की
आज्ञा पाकर जीवन पर्यन्त
बेले-बेले का तपकरते हुए विचरने लगे
तब उन छ अणगारो नेअन्यदा ि ी दिन
बेले के तप के पारणो मे प्रथम
प्रहर मे स्वाध्याय की।
गौतम कुमार की तरह
यावत् बोले "हे भगवन् ! हम चाहते है
बेले के तप के पारणो मे आपकी
आज्ञा पाकर तीन (दो-दो के तीन)
सघाडो से द्वारिका नगरी मे
यावत् भ्रमण करना।"
'तथास्तु देवानुप्रियो !'
इसके बाद वे ६ अरणगार

[हिन्दी अर्थ]

त्वचा और अवस्था मे समान दिखने वाले थे, शरीर का रग नीलकमल, सीग की गुली और अलसी के फूल जैसा था। श्रीवत्स से अकित वक्ष और कुसुम के समान कोमल एव कुडल के समान घुघराले बालो वाले वे सभी मुनि नल-कूवर के समान थे।

तब (दीक्षित होने के पश्चात्) वे छहो मुनि जिस दिन मुडित होकर आगार से अरणगार धर्म मे प्रव्रजित हुए, उसी दिन अरिहत अरिष्टनेमि को वदना नमस्कार कर इस प्रकार बोले —

"हे भगवन्! हम चाहते है कि आपकी आज्ञा पाकर जीवन पर्यन्त निरन्तर बेले२ की तपस्या द्वारा अपनी अपनी आत्मा को भावित (शुद्ध) करते हुए विचरण करे।"

प्रभु ने कहा—"हे देवानुप्रियो! जिससे तुम्हे सुख प्राप्त हो वही कार्य करो, प्रमाद मत करो।"

तब भगवान् के ऐसा कहने पर वे छहो मुनि भगवान् अरिष्टनेमि की आज्ञा पाकर जीवन भर के लिये बेले-बेले की तपस्या करते हुए यावत् विचरण करने लगे।

तदनन्तर उन छहो मुनियो ने अन्यदा किसी समय, बेले की तपस्या के पारणे के दिन प्रथम प्रहर मे स्वाध्याय की और गौतम स्वामी के समान यावत् बोले-"हे भगवन्! हम बेले की तपस्या के पारणे मे आपकी आज्ञा पाकर दो-दो के तीन सघाडो सेद्वारिका नगरी मे यावत् भिक्षा हेतु भ्रमण करना चाहते है।"

[मूल सूत्र पाठ]

अरहया अरिट्ठणेमिणा अब्भणुण्णाया
समाणा अरहं अरिट्ठणेमि
वदंति, णमंसंति, वंदित्ता,
णमसित्ता अरहओ अरिट्ठणेमिस्स
अंतियाओ सहस्सब- वणाओ,
उज्जाणाओ पडिणिक्खमंति
पडिणि   मित्ता तिहिं संघाडएहिं
अतुरिय जाव अडन्ति ।
तत्थणं एगे संघाडए बारवईए
णयरीए उच्च-णीय मज्झिम-माइं
कुलाइं घरसमुदाणस्स
भिक्खायरियाए अडमाणे
वसुदेवस्स रण्णोदेवईए देवीए
गिहं अणुप्पविट्ठे ।
तएणं सा देवई देवी
ते अणगारे एज्जमाणे
पासित्ता हट्ठ तुट्ठ चित्तमाणंदिया
पीईमाणा परमसोमणस्सिया

हरिसवसविसप्पमाणहियया
आसणाओ अब्भुट्ठेइ,
अब्भुट्ठित्ता सत्तट्ठपयाइं
अणुगच्छइ
अणुगच्छित्ता तिक्खुत्तो
आयाहिणं पयाहिणं करेइ,
करित्ता वंदइ णमसइ,

[संस्कृत छाया]

अर्हता अरिष्टनेमिना अभ्यनुज्ञाताः
सन्तः अर्हन्त अरिष्टनेमिम्
वदन्ति, नमस्यन्ति, वन्दित्वा,
नमस्यित्वा, अर्हतः अरिष्टनेमेः
अन्तिकात् सहस्राम्रवनात्
उद्यानात् प्रतिनिष्क्रामन्ति,
प्रतिनिष्क्रम्य त्रिभिः संघाटकैः
अत्वरित यावत् अटन्ति
तत्र खलु एक सघाटकः द्वारावत्याम्
नगर्याम् उच्च नीच मध्यमानि
कुलानि गृहसमुदानस्य
भिक्षाचर्यायै अटन्
वसुदेवस्य राज्ञो देवक्याः देव्याः
गृहे अनुप्रविष्टः ।
ततः खलु सा देवकी देवी
तौ अनगारौ आगच्छन्तौ
दृष्ट्वा हृष्टतुष्टचित्तानन्दिता
प्रीतिमना परमसौमनस्यिता

हर्षवशविसर्पणहृदया
आसनात् अभ्युत्तिष्ठति,
अभ्युत्थाय सप्ताष्ट पदानि
अनुगच्छति ।
अनुगम्य त्रिः कृत्वा
आदक्षिणप्रदक्षिणा करोति ।
कृत्वा, वन्दति नमस्यति

[हिन्दी शब्दार्थ]

अर्हन्त अरिष्टनेमि से आज्ञा प्राप्त
कर उन अर्हन्त अरिष्टनेमि भगवान को
वन्दन करते है नमस्कार करते है। वन्दन
नमस्कार करके अर्हन्त अरिष्टनेमि के
पास से सहस्राम्र वन ना (उस)
उद्यान से वे प्रस्थान करते है ।
प्रस्थान करके दो-दो मुनि तीन सघाडो मे
त्वरा रहित यावत् भ्रमण करने लगे ।
इसके बाद एक सघाडा द्वारिका
नगरी मे ऊच नीच मध्यम
कुलो के घरो मे सामूहिक
भिक्षाचरी हेतु भ्रमण करते-करते
वसुदेव जी की राणी देवकी देवी के
प्रासाद मे प्रविष्ट हुआ ।
इसके बाद उस देवकी देवी ने
उन दोनो मुनियो को आते हुए
देख हृष्टतुष्टचित्त व आनन्दित हुई,
(उसके)मन मे प्रीति हुई (तथा वह)
परम सौमनस्यवती हुई ।
हर्ष के कारण उसका हृदय नाचने लगा।
आसन से उठती है,
उठकर, सात आठ कदम
सामने जाती है
सामने जाकर तीन बार दक्षिण
की तरफ से प्रदक्षिणा करती है
प्रदक्षिणा करके वन्दना नमस्कार करती है

[हिन्दी अर्थ]

तब उन छहो मुनियो ने अरिहत अरिष्टनेमि की आज्ञा पाकर प्रभु को वदन नमस्कार किया । वदन नमस्कार कर वे भगवान् अरिष्टनेमि के पास से सहस्राम्रवन उद्यान से प्रस्थान करते है । उद्यान से निकल कर वे दो दो के तीन सघाटको मे सहज गति से यावत् भ्रमण करने लगे ।

उन तीन सघाटको (सघाडो) मे से एक सघाडा द्वारिका नगरी के ऊच-नीच-मध्यम कुलो मे,एक घर से दूसरे घर,भिक्षाचर्या के हेतु भ्रमण करता हुआ राजा वसुदेव की महारानी देवकी के प्रासाद मे प्रविष्ट हुआ ।

उस समय वह देवकी रानी उन दो मुनियो के एक सघाडे को अपने यहा आते देखकर हृष्ट-तुष्ट चित्त के साथ आनन्दित हुई। प्रीतिवश उसका मन परमाह्लाद को प्राप्त हुआ, हर्षातिरेक से उसका हृदय कमल प्रफुल्लित हो उठा ।

आसन से उठकर वह सात आठ पग (कदम) मुनियुगल के सम्मुख गई । सामने जाकर उसने तीन बार दक्षिण की ओर से

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
वन्दित्ता, णमसित्ता	वन्दित्वा नमस्यित्वा
जेणेव भत्तघरे तेणेव	यत्र भक्तगृहं तत्रैव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता	उपागच्छति, उपागत्य
सीहकेसराण मोयगाण थालं	सिंहकेसराणा मोदकानां स्थालं
भरेइ, भरित्ता	भरति, भृत्वा
ते अणगारे पडिलाभेइ	तौ अनगारौ प्रतिलाभयति
पडिलाभित्ता वंदइ, णमंसइ,	प्रतिलाभ्य, वंदति, नमस्यति,
वन्दित्ता णमसित्ता पडिविसज्जेइ ।	वन्दित्वा नमस्यित्वा प्रतिविसर्जयति ।

सूत्र ४

तयाणंतरं च ण दोच्चे संघाडए	तदनन्तर च खलु द्वितीयः सघाटकः
बारवईए णयरीए उच्च जाव	द्वारावत्यां नगर्या उच्च यावत्
पडिविसज्जेइ ।	प्रतिविसर्जयति ।
तयाणतर च ण तच्चे सघाडए	तदनन्तरं च खलु तृतीय. संघाटकः
उच्चणीय जाव पडिलाभेइ,	उच्चनीच यावत् प्रतिलाभयति,
पडिलाभित्ता एवं वयासी—	प्रतिलाभ्य एवम अवदत्—
किण्ण देवाणुप्पिया !	किं खलु देवानुप्रिया !
कण्हस्स वासुदेवस्स इमीसे	कृष्णस्य वासुदेवस्य अस्या
बारवईए णयरीए	द्वारावत्या नगर्याम्
दुवालस जोयण आयामाए	द्वादशयोजनायामायाम्
णवजोयण वित्थिण्णाए	नव योजनविस्तीर्णायाम्
पच्चक्ख देवलोग-भूयाए	प्रत्यक्ष देवलोकभूतायाम्
समणा णिग्गथा उच्चणीयमज्झिमाइं	श्रमणा निर्ग्रन्था. उच्चनीचमध्यमानि
कुलाइं घरसमुदाणस्स	कुलानि गृहसमुदायस्य
भिक्खायरियाए अडमाणा	भिक्षाचर्यायै अटन्तः

[हिन्दी शब्दार्थ]

वन्दना नमस्कार करके
जहां भोजनशाला थी वहीं
आती है । वहा आकर
सिंह केसर वाले लड्डुओं के थाल को
भरती है, भरकर
उन दोनो मुनियो को प्रतिलाभ देती है।
प्रतिलाभ देकर वदना नमस्कार करती है।
वदना नमस्कार करके [illegible] करती है।

[हिन्दी अर्थ]

उनकी प्रदक्षिणा की । प्रदक्षिणा कर उन्हे वन्दन-नमस्कार किया । वन्दन नमस्कार के पश्चात् जहा भोजनशाला है, वहा आई । भोजनशाला मे आकर कृष्ण के प्रसाद योग्य सिंहकेसर मोदको से एक थाल भरा और थाल भर कर उन मुनियो को प्रतिलाभ दिया, प्रतिलाभ देने के पश्चात् देवकी ने उन्हे पुन वन्दन-नमन किया एव वन्दन नमन कर उन्हे प्रतिविसर्जित किया अर्थात् लौटने दिया ।

सूत्र ४

इसके बाद मुनियो का दूसरा संघाडा
द्वारिका नगरी मे उच्च यावत् नीचआदि
कुलो मे भ्रमण करता हुआ आया
पूर्ववत् उसको भी विसर्जित किया ।
इसके बाद मुनियो का तीसरा संघाडा
आया यावत् उसे भी प्रतिलाभ देती है ।
उसको प्रतिलाभ देकर इस प्रकार बोली
हे देवानुप्रिय ! क्या
कृष्ण वासुदेव की इस
द्वारावती नगरी मे
बारह योजन लम्बाई वाली
नौ योजन विस्तार वाली
प्रत्यक्ष देवलोक रूपिणी मे
श्रमण निर्ग्रन्थ ऊचे नीचे व मध्यम
कुलो मे गृह समुदाय की
भिक्षाचर्या के लिए भ्रमण करते हुए

प्रथम सघाटक के लौट जाने के पश्चात् उन छ सहोदर साधुओ के तीन सघाटको मे से दूसरा सघाटक भी द्वारिका के उच्च-नीच-मध्यम आदि कुलो मे भिक्षार्थ भ्रमण करता हुआ महारानी देवकी के प्रासाद मे आया । देवकी ने प्रथम सघाटक की भाति दूसरे मुनि सघाटक को भी हृष्टतुष्ट हो सिंह केसर मोदको का प्रतिलाभ देकर यावत् विसर्जित किया ।

द्वितीय सघाटक के लौट जाने के अनन्तर उन मुनियो का तीसरा सघाडा भी द्वारिका नगरी मे ऊच-नीच-मध्यम कुलो मे भिक्षार्थ भ्रमण करता हुआ महारानी देवकी के प्रासाद मे प्रविष्ट हुआ । देवकी ने पहले आये दो सघाटको के समान उस तीसरे सघाटक को भी हृष्ट-तुष्ट हो यावत् सिंह केसर मोदको का प्रतिलाभ दिया । प्रतिलाभ देकर महारानी देवकी इस प्रकार बोली—

"हे देवानुप्रियो ! क्या कृष्ण-वासुदेव की इस बारह योजन लम्बी, नव योजन चौडी प्रत्यक्ष स्वर्गपुरी के समान द्वारिका नगरीमे श्रमण-निर्ग्रन्थ उच्च-नीच एव मध्यम

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
भत्तपाणं णो लभंति ?	भक्तपानं न लभन्ते ?
जण्णं ताइ चेव कुलाइं	येन खलु तानि चैव कुलानि
भत्तपाणाए भुज्जो भुज्जो	भक्तपानाय भूयोभूयः
अणुप्पविसति ।	अनुप्रविशन्ति ।

सूत्र ५

तएण ते अणगारा	ः खलु तौ अनगारौ
देवइं देवी एवं वयासी—	देवकी देवी एवम् अवदताम्
णो खलु देवाणुप्पिये !	न खलु देवानुप्रिये !
कण्हस्स वासुदेवस्स इमीसे	कृष्णस्य वासुदेवस्य अस्याम्
वारवईए णयरीए जाव	द्वारावत्या नगर्या यावत्
देवलोगभूयाए	देवलोकभूतायाम्
समणा णिग्गंथा उच्चणीय—	श्रमणाः निर्ग्रन्थाः उच्चनीच
जाव अडमाणा	यावत् अटन्तः
भत्तपाण णो लब्भति	भक्तपानं न लभन्ते ।
णो चेव णं ताइ ताइं कुलाइं	नो चैव खलु तानि तानि कुलानि
दोच्चं पि तच्च पि भत्तपाणाए	द्वितीयमपि तृतीयमपि भक्त-पानाय
अणुप्पविसंति ।	अनुप्रविशन्ति ।
एव खलु देवाणुप्पिए !	एव खलु देवानुप्रिये !
अम्हे भद्दिलपुरे णयरे णागस्स	वय भद्दिलपुरे नगरे नागस्य
गाहावइस्स पुत्ता सुलसाए भारियाए	गाथापते पुत्रा. सुलसाया. भार्यायाः
अत्तया छ भायरो	आत्मजा षट् भ्रातरः
सहोयरा सरिसया जाव	सहोदराः सदृशका यावत्
णलकुब्बरसमाणाः	नल- ू रसमाना
अरहओ अरिट्ठणेमिस्स	अर्हत अरिष्टनेमेः
अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म	अन्तिके धर्म श्रुत्वा, निशम्य
ससार भउ—व्विग्गा	संसार भयोद्विग्ना.
भीया जम्ममरणाओ,	भीताः जन्म-मरणाभ्याम्,

[हिन्दी शब्दार्थ]

आहार पानी नहीं प्राप्त करते है ? जिससे कि उन्ही कुलो मे आहार पानी के लिए बार बार प्रवेश करते है।

[हिन्दी अर्थ]

कुलो के गृह-समुदायो से, भिक्षार्थ भ्रमण करते हुए आहार पानी नही प्राप्त करते, जिससे कि उन्हे (श्रमण निर्ग्रन्थो को) आहार-पानी के लिये जिन कुलो मे पहले आ चुके है, उन्ही कुलो मे पुन पुन आना पड़ता है?"

सूत्र ५

इसके बाद उन दोनो मुनियो ने देवकी देवी को प्रकार कहा—हे देवानुप्रिये ! ऐसा नही है कि कृष्ण वासुदेव की इस द्वारिका नगरी मे जो यावत् देवलोक के समान है श्रमण निर्ग्रन्थ उच्च नीच आदि कुलो मे यावत् भ्रमण करते हुए आहार पानी नहीं प्राप्त करते है और न ही उन-उन कुलो मे दूसरी बार तीसरी बार आहार पानी के लिए मुनि लोग प्रवेश करते हैं। हे देवानुप्रिये! बात इस प्रकार है कि—हम भद्दिलपुर नगर मे नाग गाथापति के पुत्र उनकी भार्या सुलसाके अगजात छ· भाई एक ही उदर से उत्पन्न हुए समान आकृति वाले यावत् नलकूवर के समान है। (हमने) अर्हत अरिष्टनेमि भगवान से धर्म सुनकर मन मे धारण करके ससार के भय से उद्विग्न जन्म व मरण के भय से भीत

देवकी देवी द्वारा इस प्रकार का प्रश्न पूछे जाने पर वे मुनि देवकी देवी से इस प्रकार बोले-"हे देवानुप्रिये ! ऐसी बात तो नही है कि कृष्ण-वासुदेव की यावत् प्रत्यक्ष स्वर्ग के समान, इस द्वारिका नगरी मे श्रमण निर्ग्रन्थ उच्च-नीच-मध्यम कुलो मे यावत् भ्रमण करते हुए आहार-पानी प्राप्त नही करते। और न मुनि लोग भी आहार-पानी के लिये उन एक बार स्पृष्ट कुलो मे दूसरी-तीसरी बार जाते है।

वास्तव मे बात इस प्रकार है —"हे देवानुप्रिये! भद्दिलपुर नगर मे हम नाग गाथापति के पुत्र और नाग की सुलसा भार्या के आत्मज छ सहोदर भाई है, पूर्णत समान आकृति वाले यावत् नल कुवेर के समान। हम छहो भाइयो ने अरिहत अरिष्ट-नेमि के पास धर्म उपदेश सुनकर और उसे धारण करके ससार के भय से उद्विग्न एव जन्ममरण से भयभीत हो मु डित होकर यावत् श्रमण धर्म की दीक्षा ग्रहण की।

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
भत्तपाणं णो लभति ?	भक्तपानं न लभन्ते ?
जण्णं ताइं चेव कुलाइं	येन खलु तानि चैव कुलानि
भत्तपाणाए भुज्जो भुज्जो	भक्तपानाय भूयोभूयः
अणुप्पविसंति ।	अनुप्रविशन्ति ।

सूत्र ५

तएण ते अणगारा	ततः खलु तौ अनगारौ
देवइ देवी एवं वयासी—	देवकी देवी एवम् अवदताम्
णो खलु देवाणुप्पिये !	न खलु देवानुप्रिये !
कण्हस्स वासुदेवस्स इमीसे	कृष्णस्य वासुदेवस्य अस्याम्
बारवईए णयरीए जाव	द्वारावत्या नगर्या यावत्
देवलोगभूयाए	देवलोकभूतायाम्
समणा णिग्गंथा उच्चणीय-	श्रमणाः निर्ग्रन्थाः उच्चनीच
जाव अडमाणा	यावत् अटन्तः
भत्तपाण णो लब्भति	भक्तपानं न लभन्ते ।
णो चेव णं ताइ ताइं कुलाइं	नो चैव खलु तानि तानि कुलानि
दोच्चंपि तच्चं पि भत्तपाणाए	द्वितीयमपि तृतीयमपि भक्त-पानाय
अणुप्पविसति ।	अनुप्रविशन्ति ।
एव खलु देवाणुप्पिए !	एव खलु देवानुप्रिये !
अम्हे भद्दिलपुरे णयरे णागस्स	वय भद्दिलपुरे नगरे नागस्य
गाहावइस्स पुत्ता सुलसाए भारियाए	गाथापतेः पुत्रा सुलसाया. भार्यायाः
अत्तया छ भायरो	आत्मजा. षट् भ्रातरः
सहोयरा सरिसया जाव	सहोदराः सदृशका' यावत्
णलकुब्वरसमाणाः	नल-कूवरसमाना
अरहओ अरिट्ठणेमिस्स	अर्हत अरिष्टनेमेः
अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म	अन्तिके धर्म श्रुत्वा, निशम्य
ससार भउ-व्विग्गा	संसार भयोद्विग्नाः
भीया जम्ममरणाओ,	भीताः जन्म-मरणाभ्याम्,

[हिन्दी शब्दार्थ]

आहार पानी नही प्राप्त करते है ?
ि से कि उन्ही कुलो मे
आहार पानी के लिए बार बार
प्रवेश करते है।

[हिन्दी अर्थ]

कुलो के गृह-समुदायो से, भिक्षार्थ भ्रमण करते हुए आहार पानी नही प्राप्त करते, जिससे कि उन्हे (श्रमण निर्ग्रन्थो को) आहार-पानी के लिये जिन कुलो मे पहले आ चुके है, उन्ही कुलो मे पुन पुन आना पडता है?"

सूत्र ५

इसके बाद उन दोनो मुनियो ने
देवकी देवी को प्रकार कहा—
हे देवानुप्रिये ! ऐसा नही है कि
कृष्ण वासुदेव की इस
द्वारिका नगरी मे जो यावत्
देवलोक के समान है
श्रमण निर्ग्रन्थ उच्च नीच आदि
कुलो मे यावत् भ्रमण करते हुए
आहार पानी नहीं प्राप्त करते है
और न ही उन-उन कुलो मे
दूसरी बार तीसरी बार आहार
पानी के लिए मुनि लोग प्रवेश करते है।
हे देवानुप्रिये! बात इस प्रकार है कि—
हम भद्दिलपुर नगर मे नाग
गाथापति के पुत्र उनकी भार्या सुलसा के
अगजात छः भाई एक ही उदर से
उत्पन्न हुए समान आकृति वाले यावत्
नलकूवर के समान है।
(हमने) अर्हन्त अरिष्टनेमि भगवान से
धर्म सुनकर मन मे धारण करके
ससार के भय से उद्विग्न
जन्म व मरण के भय से भीत

देवकी देवी द्वारा इस प्रकार का प्रश्न पूछे जाने पर वे मुनि देवकी देवी से इस प्रकार बोले–"हे देवानुप्रिये । ऐसी बात तो नही है कि कृष्ण-वासुदेव की यावत् प्रत्यक्ष स्वर्ग के समान, इस द्वारिका नगरी मे श्रमण निर्ग्रन्थ उच्च-नीच-मध्यम कुलो मे यावत् भ्रमण करते हुए आहार-पानी प्राप्त नही करते। और न मुनि लोग भी आहार-पानी के लिये उन एक बार स्पृष्ट कुलो मे दूसरी-तीसरी बार जाते है।

वास्तव मे बात इस प्रकार है –"हे देवानुप्रिये । भद्दिलपुर नगर मे हम नाग गाथापति के पुत्र और नाग की सुलसा भार्या के आत्मज छ सहोदर भाई है, पूर्णत समान आकृति वाले यावत् नल कुबेर के समान। हम छहो भाइयो ने अरिहत अरिष्ट-नेमि के पास धर्म उपदेश सुनकर और उसे धारण करके ससार के भय से उद्विग्न एव जन्ममरण से भयभीत हो मुडित होकर यावत् श्रमण धर्म की दीक्षा ग्रहण की।

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
मुंडा जाव पव्वइया ।	मुंडाः यावत् प्रव्रजिताः ।
तए ण अम्हे ज चेव दि	तत खलु वयं यस्मिन् एव दिवसे
पव्वइया त चेव दिवस	प्रव्रजिताः तस्मिन् एव दिवसे
अरहं अरिट्ठणेमि वंदामो णमंसामो	अर्हन्त अरिष्टनेमि वन्दामः नमस्यामः
वदित्ता, णमसित्ता	वन्दित्वा, नमस्यित्वा
इम एयारूव अभिग्गह	इमम् एतद् रूपम् अभिग्रहम्
अभिगिण्हामो	अभिगृह्णीमः
इच्छामो ण भन्ते !	इच्छाम खलु भदन्त !
तुब्भेहि अब्भणुण्णाया समाणा	युष्माभिः अभ्यनुज्ञाता. सन्त.
जाव अहासुह ।	यावत् यथासुखम् ।
देवाणुप्पिया ! तए णं	हे देवानुप्रिये ! ततः खलु
अम्हे अरहया अरिट्ठणेमिणा	वयम् अर्हता अरिष्टनेमिना
अब्भणुण्णाया समाणा	अभ्यनुज्ञाता सन्तः
जावज्जीवाए छट्ठ छट्ठेणं	यावज्जीवम् षष्ठषष्ठेण
जाव विहरामो	यावत् विहराम. ।
त अम्हे अज्ज छट्ठक्खमणपारणगंसि–	तद् वयम् षष्ठक्षमणपारणके
पढमाए पोरिसीए जाव	प्रथमाया पौरुष्या यावत्
अडमाणा	अटन्त
तव गेह अणुप्पविट्ठा ।	तव गृहं (गेह) अनुप्रविष्टा ।
तं णो खलु देवाणुप्पिए !	तत् न खलु देवानुप्रिये !
ते चेव ण अम्हे ।	ते चैव खलु वयम् ।

[हिन्दी शब्दार्थ]

मुण्डित होकर आखिर प्रव्रज्या
(दीक्षा), ग्रहण कर ली।
तदनन्तर हमने जिस दिन
दीक्षा ग्रहण की उसी दिन
अरिहन्त अरिष्टनेमि की
वन्दना की उन्हे नमस्कार किया।
वन्दना नमस्कार करके
एक इस प्रकार के अभिग्रह को
धारण किया है।
हे भगवन् ! निश्चय से हम चाहते है
आपसे आज्ञा दिये गये होते हुए
(बेले-बेले की तपस्या करना)
(प्रभु ने कहा) तथास्तु—जैसा सुख हो।
हे देवानुप्रिये ! तदनन्तर
हम भगवान् अरिष्टनेमि से
आज्ञा दिये गये होकर
जीवनभर के लिए निरन्तर
बेले-बेले की तपस्या करते हुए
विचरण कर रहे है।
अत हम आज बेले के तप के पारणे मे
प्रथम प्रहर मे (स्वाध्याय करके) यावत्
विचरण करते हुए
आपके घर मे प्रविष्ट हुए है।
इस कारण नही हैं हे देवानुप्रिये !
हम वे ही (पहले आये हुए)।

[हिन्दी अर्थ]

तदनन्तर हमने जिस दिन दीक्षा ग्रहण की थी, उसी दिन अरिहत अरिष्टनेमि को वदन-नमन किया और वन्दन नमस्कार कर इस प्रकार का यह अभिग्रह धारण करने की आज्ञा चाही "हे भगवन् ! आपकी अनुज्ञा पाकर हम जीवन पर्यन्त बेले-बेले की तपस्या पूर्वक अपनी आत्मा को भावित करते हुए विचरना चाहते है।"

यावत् प्रभु ने कहा—"देवानुप्रियो ! जिससे तुम्हे सुख हो वैसा ही करो, प्रमाद न करो।"

उसके बाद अरिहत अरिष्टनेमि की अनुज्ञा प्राप्त होने पर हम जीवन भर के लिये निरतर बेले बेले की तपस्या करते हुए विचरण करने लगे।

तो इस प्रकार आज हम छहो भाई-बेले की तपस्या के पारणा के दिन प्रथम प्रहर मे स्वाध्याय करने के पश्चात्—प्रभु अरिष्ट-नेमि की आज्ञा प्राप्त कर यावत् तीन सघाटको मे भिक्षार्थ उच्च-मध्यम एव निम्न कुलो मे भ्रमण करते हुए तुम्हारे घर आ पहुचे है। तो देवानुप्रिये ! ऐसी बात नही है कि जो पहले दो सघाटको मे जो मुनि तुम्हारे यहा आये थे वे हम ही है। वस्तुत हम दूसरे है।"

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
अम्हे गं अण्णे ।	वयं खलु अन्ये ।
देवईं देवीं एवं वयइ,	देवकी देवी एवं वदति,
वइत्ता	वदित्वा
जामेव दिसं पाउब्भूए	यस्याः दिश. प्रादुर्भूता
तामेव दिसं पडिगए ।	तस्यामेव दिशायाम् प्रतिगताः ।

सूत्र ६

तएणं तीसे देवईए देवीए	तत· खलु· तस्या देवक्याः देव्याः
अयमेयारूवे अज्झत्थिए	अयमेतद्रूप अध्यवसाय
जाव समुप्पण्णे ।	यावत् समुत्पन्नः ।
एवं खलु अहं पोलासपुरे णयरे	एव खलु अहं पोलासपुरे नगरे
अइमुत्तेणं कुमार समणेणं—	अतिमुक्त कुमार श्रमणेन
बालत्तणे वागरिया—	बालत्वे व्याकृता—
तुमं णं देवाणुप्पिए ! अट्ठपुत्ते	त्वं खलु देवानुप्रिये ! अष्ट पुत्रान्
पयाइस्ससि, सरिसए जाव	प्रजनिष्यसे, सदृशकान् यावत्
णलकुव्वरसमाणे,	नलकूवरसमानान्,
णो चेव णं भारहेवासे अण्णाओ	न चैव खलु भारते वर्षे अन्याः
अम्मयाओ तारिसए पुत्ते	अम्बा· तादृशकान् पुत्रान्
पयाइस्सति ।	प्रजनिष्यन्ते ।
त ण मिच्छा इमं णं	तत् खलु मिथ्या इदम् खलु
पच्चक्खमेव दिस्सइ	प्रत्यक्षमेव दृश्यते
भारहे वासे अण्णाओ वि अम्मयाओ	भारते वर्षे अन्या अपि अम्बा
एरिसए जाव पुत्ते पयायाओ ।	ईदृशान् यावत् पुत्रान् प्राजनिषत ।
त गच्छामि ण अरह अरिट्ठणेमिं	तद् गच्छामि खलु अर्हन्त अरिष्टनेमिं
वदामि णमसामि	वन्दामि, नमस्यामि,
वदित्ता, णमसित्ता इम	वन्दित्वा, नमस्यित्वा इद

[हिन्दी शब्दार्थ]

हम निश्चय ही दूसरे है।
देवकी देवी को इस प्रकार मुनि कहते है।
कहकर
जिस दिशा से प्रगट हुए थे
उसी दिशा मे चले गये।

[हिन्दी अर्थ]

उन मुनियो ने देवकी देवी को इस प्रकार कहा और यह कहकर वे जिस दिशा से आये थे उसी दिशा की ओर चले गये।

सूत्र ६

तदनन्तर उस देवकी देवी के मन मे
इस प्रकार का विचार
यावत् उत्पन्न हुआ।
पोलासपुर नगर मे मुझे इस प्रकार
अतिमुक्त कुमार श्रमरण ने
बचपन मे कहा था–
हे देवानुप्रिये ! तू आठ पुत्रो को
जन्म देगी (जो) समान आकृतिवाले यावत्
नलकूवर के समान (होगे)
निश्चय ही भारत मे नही अन्य कोई
माता वैसे पुत्रो को
जन्म देगी।
वह (कथन) निश्चय ही मिथ्या है यह
प्रत्यक्ष ही दिख रहा है,
भारतवर्ष मे दूसरी भी माताओ ने
ऐसे यावत् पुत्रो को जन्म दिया है।
इसलिये मै अर्हन्त भगवान
अरिष्टनेमि के पास जाती हूँ।
वन्दना नमस्कार करती हूँ।
वन्दना, नमस्कार करके इस,

इस प्रकार की बात कह कर मुनियो के लौट जाने के पश्चात् उस देवकी देवी को इस प्रकार का विचार यावत् चिन्तापूर्ण अध्यवसाय उत्पन्न हुआ —

"पोलासपुर नगर मे अतिमुक्त कुमार नामक श्रमण ने मेरे समक्ष बचपन मे इस प्रकार भविष्यवाणी की थी कि हे देवानुप्रिये देवकी ! तुम परस्पर एक दूसरे से पूर्णत : समान आठ पुत्रो को जन्म दोगी, जो नलकूवर के समान होगे। भरतक्षेत्र मे दूसरी कोई माता वैसे पुत्रो को जन्म नही देगी।"

पर वह भविष्यवाणी मिथ्या सिद्ध हुई। क्योकि यह प्रत्यक्ष ही दिख रहा है कि भरतक्षेत्र मे अन्य माताओ ने भी सुनिश्चितरूपेण ऐसे पुत्रो को जन्म दिया है। मुनि की बात मिथ्या नही होनी चाहिये, फिर यह प्रत्यक्ष मे उससे विपरीत क्यो? तो ऐसी स्थिति मे मै अरिहत अरिष्टनेमि भगवान की सेवामे जाऊ, उन्हे वदन-नमस्कार करू और वन्दन नमस्कार करके इस प्रकार के कथन के विषय मे प्रभु से पूछू गी।

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
च ण एयारूव वागरणं	च खलु एतद्रूपं व्याकृतं
पुच्छिस्सामि त्ति कट्टु एव सपेहेई,	प्रक्ष्यामि इति कृत्वा एवं सप्रेक्षते ।
सपेहित्ता कोडु बियपुरिसे	सप्रेक्ष्य कौटुम्बिकपुरुषान्
सद्दावेई सद्दावित्ता एव वयासी	शब्दाययति, शब्दयित्वा एवमवादीत्–
लहुकरण जाणप्पवरं जाव	लघुकरण यानप्रवरं यावत्
उवट्ठवेति ।	उपस्थापयतु ।
जहा देवाणदा जाव पज्जुवाइइ ।	यथा देवानन्दा यावत् पर्यु ते ।

सूत्र ७

तए ण अरहा अरिट्ठणेमी	ततः खलु अर्हन् अरिष्टनेमी
देवई देवी एव वयासी–	देवकी देवीम् एवम् अवदत्–
से णूण तव देवई ! इमे	तत् नूनं तव देवकि ! इमान्
छ अणगारे पासित्ता	षडनगारान् दृष्ट्वा
अयमेयारूवे अज्झत्थिए	एतद्रूपः अध्यवसाय.
जाव समुप्पज्जित्था,	यावत् समुत्पन्नः
एव खलु पोलासपुरे	एवं खलु पोलासपुरे
णयरे अईमुत्तेण त	नगरे अतिमुक्तेन तत्
चेव जाव णिग्गच्छसि,	चैव यावत् निर्गच्छसि,
णिगच्छित्ता जेणेव	निर्गत्य यथैव
मम अतिय हव्वमागया	मम अन्तिके शीघ्रमागता,
से णूण देवई देवी	तत् नूनं देवकि देवि !
अयमट्ठे समट्ठे ?	अयम् अर्थ. समर्थ ?
हता ! अत्थि ।	हन्त ! अस्ति ।
एव खलु देवाणुप्पिए !	एवं खलु देवानुप्रिये !
तेणं कालेणं तेणं समयेणं	तस्मिन् काले तस्मिन् समये

[हिन्दी शब्दार्थ]

इस प्रकार के उक्ति वैपरीत्य को पूछूगी ऐसा मन मे ि ार करती है। विचार कर अमात्यादि पुरुषो को बुलवाती है, बुलाकर ऐसे कहा— शीघ्रगति वाले यानप्रवर को यावत् शीघ्र उपस्थित करो। (यान द्वारा वहाँ जाकर) देवानन्दा की तरह उपासना करती है।[१८]

[हिन्दी अर्थ]

इस प्रकार सोचा। ऐसा सोचकर देवकी देवी ने आज्ञाकारी पुरुषो को बुलाया और बुलाकर ऐसा बोली—"लघु कर्णवाले (शीघ्र-गामी) श्रेष्ठ रथ को उपस्थित करो।" आज्ञा-कारी पुरुषो ने रथ उपस्थित किया। देवकी महारानी उस रथ मे बैठ कर यावत् प्रभु के समवसरण मे उपस्थित हुई और देवानन्दा द्वारा जिस प्रकार भगवान् महावीर की पर्युपासना किये जाने का वर्णन है, उसी प्रकार महारानी देवकी भगवान् अरिष्टनेमि की यावत् पर्युपासना करने लगी।

सूत्र ७

तदनन्तर अरिहन्त अरिष्टनेमी ने देवकी देवी को इस प्रकार कहा— तो निश्चय ही हे देवकि ! तुझे इन छ' अनगारोको देखकर इस प्रकार का मतिभ्रम यावत् उत्पन्न हो गया है। इस प्रकार पोलासपुर नगर मे अतिमुक्त कुमार ने मुझे ऐसा कहा था और उसी प्रकार यावत् वन्दन को निकली, निकलकर जेसे ही शीघ्रता से मेरे पास चली आई हो। तब क्या निश्चय ही देवकि देवि ! यह अर्थ तुम्हारे द्वारा समर्थित है ? हे भगवन् ! ऐसा ही है। इस प्रकार हे देवानुप्रिये ? उस काल उस समय मे

तदनन्तर अर्हत् अरिष्टनेमि देवकी को सम्बोधित कर इस प्रकार बोले—"हे देवकी! क्या इन छ साधुओ को देख कर वस्तुत तुम्हारे मन मे इस प्रकार का विचार उत्पन्न हुआ कि पोलासपुर नगर मे अतिमुक्त कुमार ने तुम्हे आठ अप्रतिम पुत्रो को जन्म देने का जो भविष्यकथन किया था, वह मिथ्या सिद्ध हुआ। उस विषय मे पृच्छा करने के लिये तुम यावत् वन्दन को निकली और निकलकर शीघ्रता से मेरे पास चली आई हो, हे देवकी ! क्या यह बात ठीक है?" देवकी ने कहा—"हा भगवन् ! ऐसा ही है।" प्रभु की दिव्य ध्वनि प्रस्फुटित हुई—"हे देवानुप्रिये ! उस काल उस समय मे भद्दिल-पुर नगर मे नाग नाम का गाथापति रहा करता था, जो आढ्य (महान् ऋद्धिशाली) था।

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
च णं एयारूवं वागरणं	च खलु एतद्रूप व्याकृतं
पुच्छिस्सामि त्ति कट्टु एवं संपेहेई,	प्रक्ष्यामि इति कृत्वा एवं संप्रेक्षते ।
संपेहित्ता कोडुं बियपुरिसे	संप्रेक्ष्य कौटुम्बिकपुरुषान्
सद्दावेई सद्दावित्ता एवं वयासी	शब्दाययति, शब्दयित्वा एवमवादीत्–
लहुकरणं जाणप्पवरं जाव	लघुकरणं यानप्रवरं यावत्
उवट्ठवेंति ।	उपस्थापयतु ।
जहा देवाणंदा जाव पज्जुवाइइ ।	यथा देवानन्दा यावत् पर्यु ते ।

सूत्र ७

तए णं अरहा अरिट्ठणेमी	ततः खलु अर्हन् अरिष्टनेमी
देवई देवी एवं वयासी–	देवकी देवीम् एवम् अवदत्–
से णूणं तव देवई ! इमे	तत् नूनं तव देवकि ! इमान्
छ अणगारे पासित्ता	षडनगारान् दृष्ट्वा
अयमेयारूवे अज्झत्थिए	एतद्रूपः अध्यवसायः
जाव समुप्पज्जित्था,	यावत् समुत्पन्नः
एवं खलु पोलासपुरे	एवं खलु पोलासपुरे
णयरे अईमुत्तेणं तं	नगरे अतिमुक्तेन तत्
चेव जाव णिग्गच्छसि,	चैव यावत् निर्गच्छसि,
णिगच्छित्ता जेणेव	निर्गत्य यथैव
मम अंतियं हव्वमागया	मम अन्तिके शीघ्रमागता,
से णूणं देवई देवी	तत् नूनं देवकि देवि !
अयमट्ठे समट्ठे ?	अयम् अर्थः समर्थः ?
हंता ! अत्थि ।	हन्त ! अस्ति ।
एवं खलु देवाणुप्पिए !	एवं खलु देवानुप्रिये !
तेणं कालेणं तेणं समयेणं	तस्मिन् काले तस्मिन् समये

[हिन्दी शब्दार्थ]

इस प्रकार के उक्ति वैपरीत्य को पूछूंगी ऐसा मन मे विचार करती है। विचार कर अमात्यादि पुरुषो को बुलवाती है, बुलाकर ऐसे कहा— शीघ्रगति वाले यानप्रवर को यावत् शीघ्र उपस्थित करो। (यान द्वारा वहाँ जाकर) देवानन्दा की तरह उपासना करती है।[१८]

[हिन्दी अर्थ]

इस प्रकार सोचा। ऐसा सोचकर देवकी देवी ने आज्ञाकारी पुरुषो को बुलाया और बुलाकर ऐसा बोली—"लघु कर्णवाले (शीघ्र-गामी) श्रेष्ठ रथ को उपस्थित करो।" आज्ञा-कारी पुरुषो ने रथ उपस्थित किया। देवकी महारानी उस रथ मे बैठ कर यावत् प्रभु के समवसरण मे उपस्थित हुई और देवानन्दा द्वारा जिस प्रकार भगवान् महावीर की पर्युपासना किये जाने का वर्णन है, उसी प्रकार महारानी देवकी भगवान् अरिष्ठनेमि की यावत् पर्युपासना करने लगी।

सूत्र ७

तदनन्तर अरिहन्त अरिष्टनेमी ने देवकी देवी को इस प्रकार कहा— तो निश्चय ही हे देवकि! तुझे इन छ अनगारोको देखकर इस प्रकार का मतिभ्रम यावत् उत्पन्न हो गया है। इस प्रकार पोलासपुर नगर मे अतिमुक्त कुमार ने मुझे ऐसा कहा था और उसी प्रकार यावत् वन्दन को निकली, निकलकर जंसे ही शीघ्रता से मेरे पास चली आई हो। तब क्या निश्चय ही देवकि देवि! यह अर्थ तुम्हारे द्वारा समर्थित है? हे भगवन्! ऐसा ही है। इस प्रकार हे देवानुप्रिये? उस काल उस समय मे

तदनन्तर अर्हत् अरिष्टनेमि देवकी को सम्बोधित कर इस प्रकार बोले—"हे देवकी! क्या इन छ साधुओ को देख कर वस्तुत तुम्हारे मन मे इस प्रकार का विचार उत्पन्न हुआ कि पोलासपुर नगर मे अतिमुक्त कुमार ने तुम्हे आठ अप्रतिम पुत्रो को जन्म देने का जो भविष्यकथन किया था, वह मिथ्या सिद्ध हुआ। उस विषय मे पृच्छा करने के लिये तुम यावत् वन्दन को निकली और निकलकर शीघ्रता से मेरे पास चली आई हो, हे देवकी! क्या यह बात ठीक है?" देवकी ने कहा—"हा भगवन्! ऐसा ही है।" प्रभु की दिव्य ध्वनि प्रस्फुटित हुई—"हे देवानुप्रिये! उस काल उस समय मे भद्दिल-पुर नगर मे नाग नाम का गाथापति रहा करता था, जो आढ्य (महान् ऋद्धिशाली) था।

[मूल सूत्र पाठ]	[सस्कृत छाया]
भद्दिलपुरे णयरे णागे णामं गाहावई परिवसइ, अड्ढे० ।	भद्रिलपुरे नगरे नागो नामकः गाथापतिः परिवसति, आ : ।
तस्स णं णागस्स गाहावइस्स सुलसा णाम भारिया होत्था । सा सुलसा–गाहावइणी बालत्तणे चेव णिमित्तिएणं वागरिया–	तस्य खलु नागस्य गाथापते सुलसा नाम भार्या आसीत् । सा सुलसा गाथापत्नी बालत्वे चैव नैमित्तिकेन व्याकृता–
एसणं दारिया णिंदू भविस्सइ ।	एषा खलु दारिका निंदु. भविष्यति ।
तए णं सा सुलसा बालप्पभिइं चेव हरिणेगमेसि देव भत्ता यावि होत्था ।	तत खलु सा सुलसा बालप्रभृति चैव हरिणगमेषिणो देवस्य भक्ता अभवत् ।
हरिणेगमेसिस्स पडिम करेइ, करित्ता कल्लाकल्लिं ण्हाया जाव पायच्छित्ता उल्लपडसाडिया महरिह पुप्फच्चणं करेइ,	हरिणगमेषिण· प्रतिमां करोति, कृत्वा कल्पं कल्पं स्नाता यावत् प्रायश्चित्ता सार्द्रपटशाटिका महार्घ्यं पुष्पार्चन करोति,
करित्ता जाणुपायवडिया पणाम करेइ, तओ पच्छा आहारेइ वा णीहारेइ वा ।	कृत्वा जानुपादपतिता प्रणामं करोति, तत पश्चात् आहारयति वा नीहारयति वा

सूत्र ८

तए णं तीसे सुलसाए गाहावइणीए भत्तिबहुमाण–	तत· खलु तस्या सुलसाया गाथापत्न्याः भक्तिबहुमान

[हिन्दी शब्दार्थ]

भ॰ पुर नगर मे नाग नामक
गाथापति रहा करता था, जो कि
धन सम्पन्न (अ) था ।
उस नाग नामक गाथापति के
सुलसा नाम की भार्या थी ।
सुलसा गाथापत्नी को बचपन मे
ही किसी निमित्तज्ञ ने कहा—
यह बालिका मृतवत्सा होगी ।
तब वह सुलसा बाल्यकाल
से ही हरिरणैगमेषी
देव की भक्त बन गई ।
(उसने) हरिरणैगमेषी की प्रतिमा
बनाई, बना कर
शास्त्र विधि से स्नान कर यावत्
दु स्वप्न निवारण को
प्रायश्चित्त कर गीली साडी पहने हुए
उसकी महर्घ (उत्तमोत्तम) पुष्पो
से अर्चना करती थी ।
अर्चना करके घुटने व पैर टेक कर
(पचाग) प्रणाम करती, इसके बाद
आहार नीहारादि करती ।

[हिन्दी अर्थ]

उस नाग गाथापति की सुलसा नामा पत्नी थी । उस सुलसा गाथापत्नी को बाल्यावस्था मे ही किसी निमितज्ञ ने कहा—यह बालिका मृतवत्सा यानि मृत बालको को जन्म देने वाली होगी । तत्पश्चात् वह सुलसा बाल्यकाल से ही हरिणैगमेषी देव की भक्त बन गई ।

उसने हरिणैगमेषी देव की मूर्ति बनाई । मूर्ति बना कर प्रतिदिन प्रात काल स्नान करके यावत् दु स्वप्न निवारणार्थ प्रायश्चित कर गीली साडी पहने हुए उसकी बहुमूल्य पुष्पो से अर्चना करती । पुष्पो द्वारा पूजा के पश्चात् घुटने टिकाकर पाचो अग नमा कर प्रणाम करती, तदनन्तर आहार करती, निहार करती एव अपनी दैनन्दिनी के अन्य कार्य करती ।

सूत्र ८

तदनन्तर उस सुलसा
गाथापत्नी की उस भक्ति व

तत्पश्चात् उस सुलसा गाथापत्नी की उस भक्ति-बहुमान पूर्वक की गई सुश्रूषा से

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
भद्दिलपुरे णयरे णागे णामं गाहावई परिवसइ, अड्ढे० ।	भद्रिलपुरे नगरे नागो नामकः गाथापतिः परि ति, आढ्यः ।
तस्स णं णागस्स गाहावइस्स सुलसा णाम भारिया होत्था । सा सुलसा–गाहावइणी बालत्तणे चेव णिमित्तिएण वागरिया–	तस्य खलु नागस्य गाथापते सुलसा नाम भार्या आसीत् । सा सुलसा गाथापत्नी बालत्वे चैव नैमित्तिकेन व्याकृता–
एसण दारिया णिंदू भविस्सइ ।	एषा खलु दारिका निंदु. भविष्यति ।
तए ण सा सुलसा बालप्पभिइं चेव हरिणेगमेसि देव भत्ता यावि होत्था ।	तत खलु सा सुलसा बालप्रभृति चैव हरिणगमेषिणो देवस्य भक्ता अभवत् ।
हरिणेगमेसिस्स पडिम करेइ, करित्ता कल्लाकल्लि ण्हाया जाव पायच्छित्ता उल्लपडसाडिया महरिह पुप्फच्चणं करेइ,	हरिणगमेषिण' प्रतिमा करोति, कृत्वा कल्प कल्पं स्नाता यावत् प्रायश्चित्ता सार्द्रपटशाटिका महार्घ्यं पुष्पार्चनं करोति,
करित्ता जाणुपायवडिया पणाम करेइ, तओ पच्छा आहारेइ वा णीहारेइ वा ।	कृत्वा जानुपादपतिता प्रणामं करोति, तत पश्चात् आहारयति वा नीहारयति वा

सूत्र ८

तए णं तीसे सुलसाए गाहावइणीए भत्तिवहुमाण–	तत खलु तस्या सुलसाया गाथापत्न्या' भक्तिवहुमान

[हिन्दी शब्दार्थ]

भ॰ पुर नगर मे नाग नामक
गाथापति रहा करता था, जो कि
धन सम्पन्न (अ) था।
उस नाग नामक गाथापति के
सुलसा नाम की भार्या थी।
उस सुलसा गाथापत्नी को बचपन मे
ही किसी निमित्तज्ञ ने कहा—
यह बालिका मृतवत्सा होगी।
तब वह सुलसा बाल्यकाल
से ही हरिणैगमेषी
देव की भक्त बन गई।
(उसने) हरिणैगमेषी की प्रतिमा
बनाई, बना कर
शास्त्र विधि से स्नान कर यावत्
दु:स्वप्न निवारण को
प्रायश्चित्त कर गीली साडी पहने हुए
उसकी महर्घ (उत्तमोत्तम) पुष्पो
से अर्चना करती थी।
अर्चना करके घुटने व पैर टेक कर
(पचाग) प्रणाम करती, इसके बाद
आहार नीहारादि करती।

[हिन्दी अर्थ]

उस नाग गाथापति की सुलसा नामा पत्नी थी। उस सुलसा गाथापत्नी को बाल्यावस्था मे ही किसी निमितज्ञ ने कहा—यह बालिका मृतवत्सा यानि मृत बालको को जन्म देने वाली होगी। तत्पश्चात् वह सुलसा बाल्यकाल से ही हरिणैगमेषी देव की भक्त बन गई।

उसने हरिणैगमेषी देव की मूर्ति बनाई। मूर्ति बना कर प्रतिदिन प्रात काल स्नान करके यावत् दु स्वप्न निवारणार्थ प्रायश्चित कर गीली साडी पहने हुए उसकी बहुमूल्य पुष्पो से अर्चना करती। पुष्पो द्वारा पूजा के पश्चात् घुटने टिकाकर पाचो अग नमा कर प्रणाम करती, तदनन्तर आहार करती, निहार करती एव अपनी दैनन्दिनी के अन्य कार्य करती।

सूत्र ८

तदनन्तर उस सुलसा
गाथापत्नी की उस भक्ति व

तत्पश्चात् उस सुलसा गाथापत्नी की उस भक्ति-बहुमान पूर्वक की गई सुश्रूषा से

[मूल सूत्र पाठ]

सुस्सूसाए हरिणेगमेसी देवे
आराहिए यावि होत्था ।
तए ण से हरिणेगमेसी देवे
सुलसाए गाहावइणीए अणुकंपणट्ठाए
सुलसा गाहावइणी तुमं च
णं दोण्णि वि समउउयाओ करेइ ।
तएणं तुब्भे दो वि सममेव
गब्भे गिण्हह, सममेव
गब्भे परिवहह,

सममेव दारए पयायह ।
तएणं सा सुलसा गाहावइणी
विणिहायमावण्णे दारए पयाइइ ।
तएण से हरिणेगमेसी देवे
सुलसाए अणुकपणट्ठाए
विणिहायमावण्णाए दारए
करयल सपुडेण गिण्हइ,
गिण्हित्ता तव अंतिय साहरइ ।
तं समयं च ण तुम पि णवण्हं
मासाण सुकुमाल दारए पसवसि ।

जे वि य ण देवाणुप्पिए !
तव पुत्ता ते वि य तव
अंतियाओ करयल-संपुडेण गिण्हइ,

गिण्हित्ता सुलसाए गाहावइणीए
अंतिए साहरइ ।

[सस्कृत छाया]

शुश्रूषया हरिणैगमेषी देवः
आराधितः यावत् अभवत् ।
: खलु सः हरिणैगमेषी देवः
सुलसाया. गाथापत्न्या अनुकंपनार्थम्
सुलसां गाथापत्नी त्वा च
खलु द्वेऽपि समऋतुके करोति ।
तत. खलु युवा द्वेऽपि समकमेव काले
गर्भौ ग्रहणीथः, समकालमेव
गर्भौ परिवहथः,

मेव च दारकौ प्रजनयथः
ततः खलु सा सुलसा गाथापत्नी
विनिघातमापन्नान् दारकान् प्र यति ।
तत' खलु स. हरिणैगमेषी देवः
सुलसाया. ुकंपनार्थम्
विनिघातमापन्नान् दारकान्
करतल संपुटेन गृह्णाति,
गृहीत्वा तव अन्तिकं समाहरति ।
तस्मिन् समये च खलु त्वमपि नवानां
मासाना सुकुमारान् दारकान् प्रसवयसि ।

येऽपि च खलु हे देवानुप्रिये !
तव पुत्रा. तेऽपि च तव
अन्तिकात् करतलसपुटेन गृह्णाति,

गृहीत्वा सुलसायाः गाथापत्न्याः
अंतिके समाहरति ।

[हिन्दी शब्दार्थ]

बहुमानपूर्वक शुश्रूषा (सेवा) से
हरिणैगमेषी देव प्रसन्न हो गया।
उस हरिणैगमेषी देव ने
सुलसा गाथापत्नी पर अनुकंपा हेतु
सुलसा गाथापत्नी को और तुझको
दोनो को समकाल मे ऋतुयुक्त किया।
तदनन्तर तुम दोनो ने ही समान काल मे
गर्भ धारण किया,समान काल मे ही
गर्भ की पालना की व
समान काल मे ही
बालको को जन्म दिया था।
तब उस सुलसा गाथापत्नी ने
मरे हुए बालको को जन्म दिया।
तदनन्तर वह हरिणैगमेषी देव
सुलसा पर अनुकम्पा करने के लिये
उसके मृत बालको को
दोनो हाथो मे ले लेता है,
लेकर तेरे पास ले आता है।
उस समय तुम भी नव
मास का काल पूर्ण होने पर सुकुमार
बालको को जन्म देती,
और जो भी हे देवानुप्रिये !
तुम्हारे पुत्र होते उनको भी वह तुम्हारे
पास से दोनो हाथो से ग्रहण कर लेता
लेकर सुलसा गाथापत्नी के
पास ले जाता।

[हिन्दी अर्थ]

देव प्रसन्न हो गया। प्रसन्न होने के पश्चात् हरिणगमेषी देव सुलसा गाथापत्नी पर अनुकम्पा करने हेतु सुलसा गाथापत्नी को तथा तुम्हे—दोनो को समकाल मे ही ऋतुमति (रजस्वला) करता और तब तुम दोनो समकाल मे ही गर्भ धारण करती, समकाल मे ही गर्भ का वहन करती और समकाल मे ही बालक को जन्म देती।

प्रसवकाल मे वह सुलसा गाथापत्नी मरे हुए बालक को जन्म देती।

तब वह हरिणगमेषी देव सुलसा पर अनुकम्पा करने के लिये उसके मृत बालक को दोनो हाथो मे लेता और लेकर तुम्हारे पास लाता। इधर उस समय तुम भी नव मास का काल पूर्ण होने पर सुकुमार बालक को जन्म देती।

हे देवानुप्रिये! जो तुम्हारे पुत्र होते उनको भी हरिणैगमेषी देव तुम्हारे पास से अपने दोनो हाथो मे ग्रहण करता और उन्हे ग्रहण कर सुलसा गाथापत्नी के पास लाकर रख देता (पहुचा देता)।

अत. वास्तव मे हे देवकी! ये तुम्हारे ही पुत्र है, सुलसा गाथा पत्नी के नही है।

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
तं तव चेव णं देवइ !	तत् तव चैव खलु देवकि !
एए पुत्ता, णो चेव णं	एते पुत्रा , न चैव खलु
सुलसाए गाहावइणीए ।	सुलसाया. गाथापत्न्याः ।

सूत्र ९

तए णं सा देवई देवी	ततः खलु सा देवकी देवी
अरहओ अरिट्ठणेमिस्स	अर्हतः अरिष्टनेमिनः
अंतिए एयमट्ठं सोच्चा	अतिके एतदर्थं श्रुत्वा
णिसम्म हट्ठतुट्ठा जाव	निशम्य हृष्टतुष्टा यावत्
हियया, अरह अरिट्ठणेमि	हृदया, अर्हन्तम् अरिष्टनेमिम्
वंदइ णमसइ । वंदित्ता णमंसित्ता	वन्दते, नमस्यति । वन्दित्वा नमस्यित्वा
जेणेव ते छ अणगारा तेणेव उवागच्छइ,	यत्रैव ते षडनगारा तत्रैव उपागच्छति,
उवागच्छित्ता ते छप्पि अणगारे	उपागत्य तान् षडपि अनगारान्
वंदइ णमसइ वंदित्ता णमंसित्ता ।	वन्दते नमस्यति । वन्दित्वा नमस्यित्वा
आगय-पण्हुया	आगत प्रस्नुता (स्तन्य प्र णा)
पप्फुयलोयणा कचुय पडिक्खित्तिया	प्रफुल्ल-लोचना परिक्षिप्तकंचुका
दरियवलयबाहा	दीर्णवलयभुजा (बाहू)
धाराहय कलब पुप्फगं	धाराहतकदबपुष्पक इव
विव समूससिय रोमकूवा	समुच्छ्वसित रोमकूपा
ते छप्पि अणगारे	तान् षडप्यनगारान्
अणिमिसाए दिट्ठीए	अनिमेषया दृष्टया
पेहमाणी, पेहमाणी सुचिर	प्रेक्षमाणा प्रेक्षमाणा सुचिरं
णिरिक्खइ, णिरिक्खित्ता	निरीक्षते, निरीक्ष्य
वंदइ, णमंसइ । वंदित्ता, णमंसित्ता	वन्दते नमस्यति वन्दित्वा, नमस्यित्वा
जेणेव अरहा अरिट्ठणेमि	यत्रैव अर्हन् अरिष्टनेमिः

[हिन्दी शब्दार्थ]

अतः तेरे ही है हे देवकि !
ये पुत्र। नही है उस
सुलसा गाथापत्नी के

[हिन्दी अर्थ]

इसके अनन्तर उस देवकी देवी ने अरिहत अरिष्टनेमि के मुखारविन्द से इस प्रकार की यह रहस्यपूर्ण बात सुनकर तथा हृदयगम

सूत्र ६

तब वह दे　ी देवी
अरिहंत अरिष्टनेमिनाथ के
पास यह बात सुनकर
मनन कर यावत् हृष्टतुष्ट
हृदय वाली ने अरिहन्त अरिष्टनेमि
को वन्दना की, नमस्कार किया।
वन्दना नमस्कार करके
जहा वे छ अनगार थे वहीं आई,
आकर उन छ ही मुनिवरो को
वन्दन-नमस्कार ि　। नमस्कार करके
स्तनो से दूध झराती हुई
प्रफुल्लित नयन वाली कंचुकी
के बन्धन जिसके टूट गये है,
हर्षातिरेक से जिसकी बाहुओ के कडे
चटक गये है,
वर्षाकी धारासे सिक्त कदंबपुष्प की तरह
ि　के रोमकूप उच्छ्वसित हो रहे है
ऐसी वह उन छहो अनगारो को
अपलक दृष्टि से देखती हुई—
देखती हुई बहुत समय तक
देखती रही, देखकर
वन्दना नमस्कार करती है।
वन्दना नमस्कार करके
जहा भगवान अरिष्टनेमि थे,

कर हृष्ट-तुष्ट यावत् प्रफुल्ल हृदया होकर अरिहत अरिष्टनेमि भगवान् को वदन-नमस्कार किया और वदन-नमस्कार करके वे छहो जहा मुनि विराजमान थे वहा आई। आकर वह उन छहो मुनियो को वदन नमस्कार करती है।

उन अनगारो को देखकर पुत्र-प्रेम के कारण उसके स्तनो से दूध झरने लगा। हर्ष के कारण उसकी आखो मे आसू भर आये एव अत्यन्त हर्ष के कारण शरीर फूलने से उसकी कचुकी की कसे टूट गई और भुजाओ के आभूषण तथा हाथ की चूडिया तग हो गई। जिस प्रकार वर्षा की धारा के पडने से कदम्ब पुष्प एक साथ विकसित हो जाते है उसी प्रकार उसके शरीर के सभी रोम पुलकित हो गये। वह उन छहो मुनियो को निर्निमेष दृष्टि से देखती हुई चिरकाल तक निरखती ही रही।

तत्पश्चात् उसने छहो मुनियो को वन्दन-नमस्कार किया। वन्दन नमस्कार करके वह जहा भगवान् अरिष्टनेमि विराजमान है, वहा आई और आकर अर्हत् अरिष्टनेमि को तीन बार दक्षिण तरफ से प्रदक्षिणा करके वन्दन नमस्कार करती है,

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
तेणेव उवागच्छइ,	तत्रैव उपागच्छति,
उवागच्छित्ता अरहं अरिट्ठणेमि	उपागत्य अर्हन्तम् अरिष्टनेमिनम्
तिक्खुत्तो आयाहिणं	त्रिः कृत्वा आदक्षिण
पयाहिणं करेइ,	प्रदक्षिणा करोति,
करित्ता वंदइ णमंसइ,	कृत्वा वन्दते नमस्यति
वंदित्ता णमंसित्ता	वन्दित्वा नमस्यित्वा
तमेव धम्मियं जाणप्पवरं	तमेव धार्मिकम् यान प्रवरम्
दुरुहइ, दुरुहित्ता	दूरोहति, दूरुह्य
जेणेव बारवई णयरी	यत्रैव द्वारावती नगरी
तेणेव उवागच्छइ,	तत्रैव उपागच्छति,
उवागच्छित्ता बारवईं	उपागत्य द्वारावती
णयरीं अणुप्पविसइ ।	नगरीम् अनुप्रवि ति ।
अणुप्पविसित्ता जेणेव	अनुप्रविश्य यत्रैव
सए गिहे, जेणेव बाहिरिया	स्वकं गृहम् यत्रैव बाह्या
उवट्ठाणसाला तेणेव	उपस्थानशाला तत्रैव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता	उपागच्छति, उपागत्य
धम्मियाओ जाणप्पवराओ	धार्मिकात् यान प्रवरात्
पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता	प्रत्यवरोहति, प्रत्यवरुह्य
जेणेव सए वासघरे,	यत्रैव स्वक वासगृहम्,
जेणेव सए सयणिज्जे	यत्रैव स्वकं शयनीयम्
तेणेव उवागच्छइ,	तत्रैव उपागच्छति,
उवागच्छित्ता, सयंसि	उपागत्य, स्वके
सयणिज्जंसि णिसीयइ ।	शयनीये निषीदति ।

[हिन्दी शब्दार्थ]

वहो पर आ जाती है,
आकर भगवान नेमिनाथ को
तीन बार दक्षिण की तरफ से
प्रदक्षिणा करती है, प्रदक्षिणा
करके वन्दना नमस्कार करती है।
वन्दना नमस्कार करके
उसी धार्मिक श्रेष्ठ रथ पर
आरूढ होती है, आरूढ होकर
जहा पर द्वारावती नगरी है
वहा पर आती है,
वहां आकर द्वारावती
नगरी मे प्रवेश करती है।
द्वारावती नगरी मे प्रवेश करके जहाँ
पर अपना प्रासाद और बाहरी
उपस्थान शाला (बैठक) है वहां
पर आती है, आकर
धार्मिक श्रेष्ठ रथ पर से
उतरती है, उतरकर
जहा स्वयं का निवास गृह है,
जहां स्वय का शयन स्थान है
वहा पर ही आती है,
वहां आकर अपनी
शय्या पर बैठती है।

[हिन्दी अर्थ]

वदन-नमस्कार करके उसी धार्मिक श्रेष्ठ रथ पर आरूढ होती है। रथारूढ हो,जहा द्वारिका नगरी है, वहा आती है और वहा आकर द्वारिका नगरी मे प्रविष्ट होती है।

देवकी द्वारिका नगरी मे प्रवेश कर जहा अपने प्रासाद के बाहर की उपस्थानशाला अर्थात् बैठक है वहा आती है। वहा आकर धार्मिक रथ से नीचे उतरती है। नीचे उतर कर जहा अपना वासगृह है, जहा अपनी शय्या है, वहा आती है। वहा आकर अपनी शय्या पर बैठ जाती है।

उस समय उस देवकी देवी को इस प्रकार का विचार, चिन्तन और अभिलाषापूर्ण मानसिक सकल्प उत्पन्न हुआ कि अहो! मैने पूर्णत समान आकृति वाले यावत् नलकूबर के समान सात पुत्रो को जन्म दिया पर मैने एक की भी बाल्यक्रीडा का आनन्दानुभव नही किया।

सूत्र १०

[मूल सूत्र पाठ]	[सस्कृत छाया]
तएरण तीसे देवईए देवीए	ततः खलु तस्याः देवक्याः देव्या.
अय अज्झत्थिए चितिए	मध्यवसाय. चितित.
पत्थिए मरणोगए सकप्पे	प्रार्थितः मनोगतः संकल्प.
समुप्पण्णे, एव खलु	समुत्पन्न , एव खलु
अह सरिसए जाव रगल–	अह सदृशकान् यावत् नल
कुब्बर–समारणे सत्तपुत्ते पयाया,	कूवर समानान् सप्तपुत्रान् प्रजाता
रणो चैव रग मए एगस्स	न चैव खलु मया एकस्य
वि बालत्तरणए समरगुभूए ।	अपि बालत्व समनुभूतम् ।
एस वि य रगं कण्हे	एषः अपि च खलु कृष्ण
वासुदेवे छण्हं मासारग	वासुदेव षण्णा मासानाम्
मम अतिय पायवदए	मम अन्तिके पादवन्दनाय
हव्वमागच्छइ ।	शीघ्रमागच्छति ।
त धण्णाओ रग ताओ अम्मयाओ	तत् धन्या. खलु ता. अम्बाः
जासि मण्णे रिगयगकुच्छि	यासा मन्ये निजकुक्षि
सभूयाइ थरगदुद्धलुद्धयाइं	संभूताः स्तनदुग्धलुब्धकाः
महुर-समुल्लावयाइ मम्मरग	मधुरसमुल्लापकाः मन्मन
पजपियाइं, थरगमूल	प्रजल्पका. स्तनमूल
कक्खदेसभागं अभिसरमारगाइं,	कक्षदेशभागम् अभि रन्ति,
मुद्धयाइं	मुग्धकान्
पुरगो य कोमलकमलोवमेहि	पुनश्च कोमलकमलोपमैः
हत्थेहि गिण्हिऊरग उच्छगे रिगवेसयाइं,	हस्तैः गृहीत्वा उत्संगे निवेशयन्ति,
देंति समुल्लावए	ददति समुल्लापकान्
सुमहुरे पुरगो पुरगो	सुमधुरान् पुन पुनः
मजुलप्पभरिगए ।	मंजुल प्रभरिगतान् ।
अहं रगं अधण्णा अपुण्णा	अह खलु अधन्या, अपुण्या

[हिन्दी शब्दार्थ] [हिन्दी अर्थ]

सूत्र १०

तदनन्तर उस देवकी देवी को इस प्रकार का अध्यवसाय, चिन्ता और अभिलाषा युक्त मानसिक संकल्प उत्पन्न हुआ कि अहो ! निश्चय ही इस प्रकार मैने समान आकृति वाले नल कूबर के समान सात पुत्रो को जन्म दिया परन्तु मैने एक की भी बालक्रीडा का अनुभव नही किया और यह कृष्ण वासुदेव भी छः छः महीनो के बाद मेरे पास चरण वंदना के लिए शीघ्रता से आता है। इसलिये वे माताएं धन्य है, जिनकी अपनी कुक्षि से उत्पन्न, स्तनपान के लोभी बालक मधुर आलाप करने वाले मन्मन बोलते हुए, स्तन मूल कक्ष भाग मे अभिसरण करते है, (ऐसे उन) मुग्ध (भोले) बालको को फिर कोमल कमल के समान हाथो से पकड़कर गोद मे बैठा लेती है, और उन बालको के आलापको का बार-बार सुमधुर और मजुल उत्तर देती है। मै निश्चय ही अधन्य हूँ, पुण्यहीन हूँ

फिर यह कृष्ण वासुदेव भी छ-छ महीनो के पश्चात् मेरे पास चरण वन्दन के लिये आता है और वह भी भागता-दौडता।

तो ऐसी स्थिति मे वस्तुत वे माताएं धन्य है जिनकी अपनी कुक्षि से उत्पन्न हुए, स्तनपान के लोभी बालक, मधुर आलाप करते हुए, तुतलाती बोली से मन्मन बोलते हुए जिनके स्तनमूलकक्षा-भाग मे अभिसरण करते है, एव फिर उन मुग्ध बालको को जो माताए कमल के समान अपने कोमल हाथो द्वारा पकड कर गोद मे बिठाती है और अपने-अपने बालको से मजुल-मधुर-शब्दो मे बार-बार बाते करती है।

मै निश्चितरूपेण अधन्य और पुण्यहीन हू क्योकि मैने इनमे से किसी एक पुत्र की भी बाल क्रीडा नही देखी।

इस प्रकार देवकी खिन्न मन से यावत् आर्त्तध्यान करने लगी।

[मूल सूत्र पाठ]	[सस्कृत छाया]
एत्तो एगयरमवि ण पत्ता	एषु (इतः) एकतरमपि न प्राप्ता
(एवं) ओहयमण संकप्पा	एवं अपहृतमनस्संकल्पा
जाव झियायइ ।	यावत् ध्यायति ।

सूत्र ११

तएणं से कण्हे वासुदेवे ण्हाए	ततः खलु सः कृष्णवासुदेवः
जाव विभूसिए देवईए	स्नातः यावत् विभूषितः देवक्याः
देवीए पायवंदए हव्वमागच्छइ ।	देव्याः पादवंदनार्थं शीघ्रमागच्छति ।
तएण से कण्हे वासुदेवे	ततः खलु सः कृष्ण वासुदेव
देवई देवी पासइ,	देवकी देवी पश्यति,
पासित्ता देवईए देवीए पायग्गहणं करेइ,	दृष्ट्वा दे ः देव्या पादग्रहणं करोति,
करित्ता देवई देविं एवं वयासी—	(चरणवंदनं) कृत्वा देवकीं देवी एवमवदत्
अन्नया ण अम्मो ! तुब्भे	अन्यदा खलु अम्ब ! त्वं
ममं पासित्ता हट्ठजाव,	मा दृष्ट्वा हृष्टा यावत्
भवह, किं णो अम्मो !	भवसि, किं खलु अम्ब !
अज्ज तुब्भे ओहय जाव झियायह ।	अद्य त्वं अवहृता यावत् ध्यायसि ।
तएण सा देवई देवी	ततः खलु सा देवकी देवी
कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—	कृष्ण वासुदेवं एवम् अवदत्—
एवं खलु अहं पुत्ता !	एवं खलु अहं पुत्र !
सरिसए जाव समाणे	सदृशकान् यावत् समानान्
सत्तपुत्ते पयाया ।	सप्त पुत्रान् प्रजाता ।
णो चेव ण मए एगस्स	न चैव खलु मया एकस्य
वि बालत्तणे अणुभूए ।	अपि बालत्वम् अनुभूतम् ।
तुमं पि य ण पुत्ता ! मम	हे पुत्र ! त्वमपि च खलु

[हिन्दी शब्दार्थ]

इनमे से मैने एक भी प्राप्त नही किया (इस प्रकार) खिन्नमन (देवकी) यावत् आर्त्तध्यान करने लगी ।

[हिन्दी अर्थ]

वह इस प्रकार का चिन्तन कर ही रही थी कि

सूत्र ११

तदनन्तर वह कृष्ण वासुदेव स्नान किये हुए यावत् विभूषित हुए महारानी देवकी देवी के चरण वन्दनार्थ शीघ्रता से आये तब उस कृष्ण वासुदेव ने देवकी देवी के दर्शन किये । दर्शन करके देवकी देवी की चरण वन्दना की । वन्दना करके देवकी देवी को ऐसे बोले— हे माताजी ! पहले तो आप मुझको देखकर प्रसन्न होती थी परन्तु हे माता ! आज आप विश्रान्त की तरह यावत् विचार मग्न दिखती हो । तदनन्तर वह देवकी देवी कृष्ण वासुदेव को इस प्रकार बोली— इस प्रकार हे पुत्र ! मैने एक सी (समान) आकृति वाले सात पुत्रो को जन्म दिया । परन्तु मैने एक के भी बाल्यपन का अनुभव नही किया । हे पुत्र ! तुम भी मेरे पास

उसी समय वहा श्री कृष्ण वासुदेव स्नान कर यावत् वस्त्रालकारो से विभूषित होकर देवकी माता के चरण वदन के लिये शीघ्रतापूर्वक आये । तब वह कृष्ण वासुदेव देवकी माता के दर्शन करते है, दर्शन कर देवकी के चरणो मे वन्दन करते है ।

उन्होने अपनी माता को उदास और चिन्तित देखा । तो चरण वन्दन कर देवकी देवी को इस प्रकार पूछने लगे—"हे माता ! पहले तो मै जब जब आपके चरण वन्दन के लिये आता था, तब-तब आप मुझे देखते ही हृष्ट तुष्ट यावत् आनदित हो जाती थी, पर मा ! आज आप उदास, चिन्तित यावत् आर्त्तध्यान मे निमग्न सी क्यो दिख रही हो? हे माता ! इसका क्या कारण है ? कृपा करके बतावे ।"

कृष्ण द्वारा इस प्रकार का प्रश्न किये जाने पर वह देवकी देवी कृष्ण वासुदेव को इस प्रकार कहने लगी—"हे पुत्र ! वस्तुत. बात यह है कि मैने समान आकार यावत् समान रूप वाले सात पुत्रो को जन्म दिया । पर मैने उनमे से किसी एक के भी बाल्यकाल अथवा बाल–लीला का अनुभव नही किया । पुत्र ! तुम भी छ छ महीनो के अन्तर से

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
एत्तो एगयरमवि ण पत्ता (एव) ओहयमण संकप्पा जाव झियायइ ।	एषु (इत·) एकतरमपि न प्राप्ता एवं अपहृतमनस्संकल्पा यावत् ध्यायति ।

सूत्र ११

तएणं से कण्हे वासुदेवे ण्हाए जाव विभूसिए देवईए	ततः खलु सः कृष्णवासुदेव· स्नात· यावत् विभूषित· देवक्याः
देवीए पायवंदए हव्वमागच्छइ । तएणं से कण्हे वासुदेवे देवईं देवी पासइ, पासित्ता देवईए देवीए पायग्गहणं करेइ,	देव्या· पादवदनार्थं शीघ्रमागच्छति । ततः खलु सः कृष्ण वासुदेव देवकी देवी पश्यति, दृष्ट्वा देवक्या·देव्या पादग्रहणं करोति,
करित्ता देवईं देविं एव वयासी— अ ा णं अम्मो ! तुब्भे ममं पासित्ता हट्ठजाव, भवह, किं णो अम्मो ! अज्ज तुब्भे ओहय जाव झियायह ।	(चरणवंदन) कृत्वा देवकीं देवी एवमवदत् अन्यदा खलु अम्ब ! त्वं मा दृष्ट्वा हृष्टा यावत् भवसि, किं खलु अम्ब ! अद्य त्व अवहता यावत् ध्यायसि ।
तएण सा देवई देवी कण्हं वासुदेव एव वयासी— एव खलु अहं पुत्ता ! सरिसए जाव समाणे	तत· खलु सा देवकी देवी कृष्ण वासुदेवं एवम् अवदत्— एव खलु अहं पुत्र ! सदृशकान् यावत् समानान्

[हिन्दी शब्दार्थ]

इनमे से मैने एक भी प्राप्त नही किया (इस प्रकार) खिन्नमन (देवकी) यावत् आर्त्तध्यान करने लगी।

[हिन्दी अर्थ]

वह इस प्रकार का चिन्तन कर ही रही थी कि

सूत्र ११

तदनन्तर वह कृष्ण वासुदेव स्नान किये हुए यावत् विभूषित हुए महारानी देवकी देवी के चरण वन्दनार्थ शीघ्रता से आये तब उस कृष्ण वासुदेव ने देवकी देवी के दर्शन किये। दर्शन करके देवकी देवी की चरण वन्दना की। वन्दना करके देवकी देवी को ऐसे बोले—हे माताजी ! पहले तो आप मुझको देखकर प्रसन्न होती थी परन्तु हे माता ! आज आप विश्रान्त की तरह यावत् विचार मग्न दिखती हो। तदनन्तर वह देवकी देवी कृष्ण वासुदेव को इस प्रकार बोली—इस प्रकार हे पुत्र ! मैने एक सी (समान) आकृति वाले सात पुत्रो को जन्म दिया। परन्तु मैने एक के भी वाल्यपन का अनुभव नही किया। हे पुत्र ! तुम भी मेरे पास

उसी समय वहा श्री कृष्ण वासुदेव स्नान कर यावत् वस्त्रालकारो से विभूपित होकर देवकी माता के चरण वदन के लिये शीघ्रतापूर्वक आये। तब वह कृष्ण वासुदेव देवकी माता के दर्शन करते है, दर्शन कर देवकी के चरणो मे वन्दन करते है।

उन्होने अपनी माता को उदास और चिन्तित देखा। तो चरण वन्दन कर देवकी देवी को इस प्रकार पूछने लगे—"हे माता ! पहले तो मै जब जब आपके चरण वन्दन के लिये आता था, तब-तब आप मुझे देखते ही हृष्ट तुष्ट यावत् आनदित हो जाती थी, पर मा ! आज आप उदास, चिन्तित यावत् आर्त्तध्यान मे निमग्न सी क्यो दिख रही हो? हे माता ! इसका क्या कारण है ? कृपा करके बतावे।"

कृष्ण द्वारा इस प्रकार का प्रश्न किये जाने पर वह देवकी देवी कृष्ण वासुदेव को इस प्रकार कहने लगी—"हे पुत्र ! वस्तुत बात यह है कि मैने समान आकार यावत् समान रूप वाले सात पुत्रो को जन्म दिया। पर मैने उनमे से किसी एक के भी बाल्यकाल अथवा बाल-लीला का अनुभव नही किया। पुत्र ! तुम भी छ छ महीनो के अन्तर से

[मूल सूत्र पाठ]

छण्हं-छण्ह मासाण अंतियं
पाय वंदए हव्वमागच्छसि,
तं धण्णाओ णं ताओ
अम्मयाओ जाव झियामि ।

[संस्कृत छाया]

षण्णां षण्णां मासाना मम अन्तिके
पादवन्दनार्थं शीघ्रमागच्छसि,
तत् धन्याः खलु ताः
अम्बाः यावत् ध्यायामि ।

सूत्र १२

तएणं से कण्हे वासुदेवे
देवई देवि एवं वयासी—
मा णं तुब्भे अम्मो !
ओहय जाव झियायह ।
अहण्णं तहा वत्तिस्सामि
जहा ण मम सहोयरे
कणीयसे भाउए भ इ
त्ति कट्टु देवई देवि ताहि
इट्ठाहि कताहि जाव
वग्गूहि समासासेइ,
समासासित्ता तओ पडिणिक इ
पडिणिक्खमित्ता जेणेव
पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ
उवागच्छित्ता जहा अभओ,
णवरं हरिणेगमेसिस्स अट्ठम
भत्त पगिण्हइ,
जाव अजलिं कट्टु एव वयासी—
इच्छामि ण देवाणुप्पिया!
सहोयरं कणीयसं भाउय विदिण्णं ।

तत. खलु सः कृष्ण. वासुदेवः
दे ीं देवीम् एवम् अवदत्—
मा त्वमम्ब !
हता यावत् ध्याय ।
अहम् खलु तथा वर्तिष्ये
यथा खलु मम सहोदरः
कनीयान् भ्राता भ ति,
इति कृत्वा देवकी देवी ताभिः
इष्टाभि. कान्ताभिः यावत्
वाग्भिः सम सयति,
समाश्वास्य ततः प्रतिनिष्क्राम्यति
प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव
पौषधशाला तत्रैव उपागच्छति
उपागत्य यथा अभय ,[19]
विशेषत हरिणैगमेषिण. अष्टम
भक्त प्रगृह्णाति
यावत् अजलिं कृत्वा एवम् अवादीत्—
इच्छामि खलु देवानुप्रिय !
सहोदर कनी भ्रातर वितीर्णम् ।

[हिन्दी शब्दार्थ]

छह-छह महीनो के बाद चरण
वन्दन के लिये शीघ्रता से आते हो,
इसलिये वे माताएं धन्य है
ि का यावत् आर्त्तध्यान करती हूँ।

[हिन्दी अर्थ]

मेरे पास चरण वदन के लिये आते हो इसलिये मै ऐसा सोच रही हू कि वे माताए धन्य है, पुण्य शालिनी है जो अपनी सन्तान को स्तनपान कराती है, यावत् उनके साथ मधुर आलाप सलाप करती है, और उनकी

सूत्र १२

तदनन्तर वह कृष्ण वासुदेव
देवकी देवी को इस प्रकार बोले—
हे माता! तुम इस प्रकार
उदास और चिन्तित मत होवो।
मै ऐसा काम करुंगा
ि से मेरे सहोदर
छोटा भाई होगा,
ऐसा करके श्री कृष्ण ने देवकी
देवी को उन इष्ट व कान्त यावत्
वचनो से आश्वस्त ि ा,
आश्वासन देकर वहां से बाहर निकले,
वहाँ से निकलकर जहाँ पर
पौषधशाला थी वहाँ आये।
वहाँ आकर अभय कुमार की तरह
विशेष रूप से हरिणैगमेषी का अष्टम
भक्त व्रत (तीन उपवास) ग्रहण किया,
यावत्दोनो हाथजोडकर इस प्रकार कहा
हे देवानुप्रिय! मेरे छोटा
सहोदर भाई हो यह मै चाहता हूँ

बाल क्रीडा के आनन्द का अनुभव करती है। मै अधन्य हू अकृत-पुण्य हू। यही सब सोचती हुई मै उदासीन होकर इस प्रकार का आर्त्तध्यान कर रही हू।"

माता की यह बात सुनकर श्री कृष्ण वासुदेव देवकी महारानी से इस प्रकार बोले- "हे माताजी! आप उदास अथवा चिन्तित हो कर अब आर्त्तध्यान मत करो।

मै ऐसा प्रयत्न करुगा कि जिससे मेरे एक सहोदर छोटा भाई उत्पन्न हो।"

इस प्रकार कह कर श्री कृष्ण ने देवकी माता को प्रिय, अभिलषित मधुर एव इष्ट यावत् कान्त वचनो से धैर्य बधाया, आश्वस्त किया।

इस प्रकार अपनी माता को आश्वस्त कर श्री कृष्ण अपनी माता के प्रासाद से निकले। निकलकर जहा पौषधशाला थी वहा आये।

पौषधशाला मे आकर जिस प्रकार अभयकुमार[१६] ने अष्टम भक्त तप (तेला) स्वीकार करके अपने मित्र-देवता की आराधना की थी, उसी प्रकार श्री कृष्ण वासुदेव भी अभय कुमार की तरह अष्टम भक्त तप यानि तेला करके हरिणगमेषी देवता की आराधना करने लगे।

आराधना से आकृष्ट होकर हरिणगमैषी देव श्री कृष्ण के सन्मुख उपस्थित हुआ

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]

सूत्र १३

तएण से हरिणेगमेसी	ततः खलु स. हरिणैगमेषी
देवे कण्ह वासुदेवं एव वयासी–	देवः कृष्णं वासुदेवम् एवम् अवदत्
होहिइ ण देवाणुप्पिया !	भविष्यति खलु देवानुप्रिय !
तव देवलोयचुए सहोयरे	तव देवलोकच्युतः सहोदरः
कणीयसे भाउए से णं	कनीयान् भ्राता स खलु
उम्मुक्क बालभावे जाव	उन्मुक्तबालभावः यावत्
जोव्वणगमणुप्पत्ते अरहओ	यौवनमनुप्राप्तः अर्हतः
अरिट्ठणेमिस्स अन्तिय	अरिष्टनेमिन अन्तिकम्
मुण्डे जाव पव्वइस्सइ ।	मुण्डो यावत् प्रव्रजिष्यति ।
कण्हं वासुदेवं दोच्चं पि	कृष्ण वासुदेव द्विवारं
तच्चं पि एव वयइ ।	त्रिवारमपि एव वदति ।
वइत्ता जामेव दिसं पाउब्भूए	वदित्वा यस्या. एव दिश.
तामेव दिस पडिगए ।	प्रादुर्भूतस्तामेव दिश प्रतिगत. ।

सूत्र १४

तएण से कण्हे वासुदेवे	ततः खलु स कृष्णः वासुदेवः
पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ	पौषधशालात प्रतिनिष्क्राम्यति
पडिणिक्खमित्ता जेणेव	प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव
देवई देवी तेणेव उवागच्छइ	देवकी देवी तत्रैव उपागच्छति
उवागच्छित्ता देवईए देवीए	उपागत्य देवक्याः देव्या
पायग्गहण करेइ,	पादग्रहण करोति,
करित्ता एव वयासी—	कृत्वा एवम् अवदत्–
होहिइ ण अम्मो ! मम	भवि ति खलु अम्ब ! मम
सहोयरे कणीयसे भाउत्ति	सहोदर. कनीयान् भ्राता,
कट्टु देवई देविं इट्ठाहिं	इति कृत्वा देवकीं देवी इष्टाभिः

[हिन्दी शब्दार्थ]　　　　[हिन्दी अर्थ]

सूत्र १३

तब वह हरिणैगमेषी
देव कृष्ण वासुदेव को इस प्रकार बोला
हे देवानुप्रिय ! होगा
देवलोक से च्युत हुआ तेरे
सहोदर छोटा भाई, वह
बाल्यकाल बीतने पर यावत्
युवावस्था प्राप्त करने पर
भगवान श्री नेमिनाथ के पास
मुंडित होकर दीक्षा ग्रहण करेगा।
कृष्ण वासुदेव को दुबारा
तिबारा भी इस प्रकार कहता है।
कहकर जिस दिशा से वह प्रकट
हुआ था उसी दिशा को चला गया।

और श्री कृष्ण वासुदेव से बोला—"हे देवानुप्रिय ! आपने मुझे क्यो याद किया है ? मै उपस्थित हूँ। कहिये आपका क्या मनोरथ है ? मै आपका क्या शुभ कर सकता हूँ ?"

तब श्री कृष्ण वासुदेव ने दोनो हाथ जोडकर उस देव से ऐसा कहा—"हे देवानुप्रिय ! मेरे एक सहोदर लघुभ्राता का जन्म हो, यह मेरी इच्छा है।"

तदनन्तर श्री कृष्ण वासुदेव द्वारा तेले की तपस्या द्वारा की गई अपनी आराधना से प्रसन्न होकर हरिणगमेषी देव श्री कृष्ण वासुदेव से इस प्रकार बोला—"हे देवानुप्रिय ! देवलोक का एक देव वहा की आयुष्य पूर्ण होने पर देवलोक से च्युत होकर आपके सहोदर छोटे भाई के रूप मे जन्म लेगा और इस तरह आपका मनोरथ अवश्य पूर्ण होगा। पर वह बाल्यकाल बीतने पर यावत् युवा-

सूत्र १४

इसके बाद श्री कृष्ण वासुदेव
पौषधशाला से निकले,
निकलकर जहाँ पर
देवकी देवी थी वहाँ आये,
आकर देवकी देवी की
चरण वन्दना की।
वन्दना करके इस प्रकार कहा—
हे माता ! मेरे सहोदर
छोटा भाई अवश्य होगा इस प्रकार
देवकी देवी को इष्ट वचनो से

वस्था प्राप्त होने पर भगवान् श्री अरिष्टनेमि के पास मुण्डित होकर श्रमण दीक्षा ग्रहण करेगा।"

श्री कृष्ण वासुदेव को उस देव ने दूसरी बार, तीसरी बार भी यही कहा और यह कहने के पश्चात् जिस दिशा की ओर से आया था उसी दिशा की ओर लौट गया।

इसके पश्चात् श्री कृष्ण-वासुदेव पौषधशाला से निकले, वहा से निकलकर देवकी माता के पास आये और आकर अपनी माता का चरण वदन किया।

चरण वदन करके वे माता से इस प्रकार बोले—'माताजी ! मेरे एक सहोदर छोटा भाई होगा। अब आप चिन्ता न करे। आपकी इच्छा पूरी होगी।"

[मूल सूत्र पाठ]	[सस्कृत छाया]
जाव आसासेइ,	(वाग्भिः) यावत् आश्वासयति,
आसासित्ता जामेव दिसं	आश्वास्य यस्या· दिशः
पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए।	प्रादुर्भूत तामेव दिशं प्रतिगतः।
तएण सा देवई देवी	ततः खलु सा देवकी देवी
अण्णया कयाइ तसि तारिसगसि	अन्यदा कदाचित् तस्मिन् तादृशके
जाव सीह सुमिणे	यावत् सिंह स्वप्ने
पासित्ता पडिबुद्धा,	दृष्ट्वा प्रतिबुद्धा,
जाव हट्ठ तुट्ठ हियया,	यावत् हृष्ट तुष्ट हृदया,
त गब्भं सुहं सुहेण परिवहइ।	त गर्भम् सुखं सुखेन परिवहति

सूत्र १५

तएण सा देवई देवी	ततः खलु सा देवकी देवी
नवण्ह मासाण जासुमणा	नवानां मासाना जपाकुसुम
रत्तबधु जीवय लक्खरस	रक्तबंधु जीव लाक्षारस
सरसपारिजातकतरुणादि र	सरसपारिजातकतरुणदिवाकर
समप्पभं, सव्वनयणकंतं	समप्रभम्, सर्वनयनकान्तम्
सुकुमाल जाव सुरूव	सुकुमारं यावत् सुरूपम्
गयतालुयसमाण दारयं पयाया।	गजतालुसमानं दारकम् प्रजाता।
जम्मण जहा मेहकुमारे।[20]	जन्म यथा मेघकुमारः।[२०]
जाव जम्हाणं अम्ह	यावत् यस्मात् (कारणात् ·) कं
इमे दारए।	अयम् दारक·।
गयतालुसमाणे तं होउण	गजतालुसमान· तद्भवतु
अम्ह एयस्स दारयस्स	यो एतस्य दारकस्य
नामधेज्जे गय-सुकुमाले,	नामधेयम् गजसुकुमाल·
तएण तस्स दारगस्स	तत· खलु दारकस्य

[हिन्दी शब्दार्थ]

यावत् आश्वस्त करता है
आश्वस्त करके जिस दिशा से
प्रकट हुए थे उसी दिशा मे
वापस चले गये ।
तदनन्तर वह देवकी देवी
अन्यदा किसी दिन पुण्यवान के
योग्य सुख शैय्या मे सोते हुए
सिंह को स्वप्न मे देखकर जग गई,
यावत् हृष्टतुष्ट हृदय होकर
सुखपूर्वक उस गर्भ को वहन करने लगी

[हिन्दी अर्थ]

ऐसा कह करके उन्होने देवकी माता को मधुर एव इष्ट वचनो से आश्वस्त किया और आश्वस्त करके जिधर से आये थे उधर ही लौट गये ।

कालान्तर मे उस देवकी माता ने, जब वह पुण्यशाली के योग्य सुख-सेज पर सोई हुई थी, तब एक दिन सिंह का स्वप्न देखा ।

स्वप्न देखकर वह जागृत हुई । पति से स्वप्न का वृत्तान्त कहा । अपने मनोरथ की पूर्णता को निश्चित समझकर यावत् हर्षित एव हृष्ट तुष्ट हृदय होती हुई वह सुखपूर्वक अपने उस गर्भ का पालन-पोषण करने लगी ।

सूत्र १५

तदनन्तर उस देवकी देवी ने
नवमास के बाद जपा कुसुम
रक्तबंधु जीवक लाक्षारस
सरसपारिजात तथा तरुण सूर्य
के समान कान्ति वाले, सभी के
नयनो को अच्छा लगने वाले, यावत् सुरूप
गजतालु के समान सुकोमल पुत्र
को जन्म दिया ।
उसका जन्म मेघकुमार की तरह समझे ।
माता पिता ने सोचा कि यह हमारा
जन्मित बालक गजतालु के
समान सुकोमल है । इस कारण
हमारे इस पुत्र का नाम
गजसुकुमाल होवे ।
इसके बाद उस बालक के

तत्पश्चात् उस देवकी देवी ने नवमास का गर्भकाल पूर्ण होने पर जवा-कुसुम, बन्धुक-पुष्प, जीवक लाक्षारस, श्रेष्ठ पारिजात एव उदीयमान सूर्य के समान कान्ति वाले, सर्वजन-नयनाभिराम, सुकुमाल यावत् गज-तालु के समान रूपवान् पुत्र को जन्म दिया । जन्म का वर्णन मेघकुमार के समान समझे ।

यावत् नामकरण के समय माता-पिता ने सोचा—"क्योकि हमारा यह बालक गज-तालु के समान सुकोमल एव सुन्दर है, इसलिये हमारे इस बालक का नाम गज सुकुमाल हो ।" इस प्रकार विचार कर उस बालक के माता-पिता ने उसका 'गज-सुकुमाल'—यह नाम रखा ।

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
अम्मापियरो नामं करेइ	अम्बापितरौ नाम कुरुत
गयसुकुमाले त्ति,	गजसुकुमालः इति,
सेस जहा मेहे जाव	शेष यथा मेघकुमारः यावत्
अलं भोगसमत्थे	भोगसमर्थश्चापि
जाए यावि होत्था ।	अभवत् ।
तत्थरण वारवईए णयरीए—	तत्र खलु द्वारावत्या नगर्या
सोमिले नाम माहणे	सोमिलो नाम ब्राह्मणः
परिवसइ, अड्ढे	परिवसति, आढ्य. (समृद्धः)
रिउव्वेय जाव सुपरिनिट्ठिए	ऋग्वेदं यावत् सुपरिनिष्ठितः,
यावि होत्था ।	चाप्यभवत् ।
तस्स सोमिलस्स माहणस्स	तस्य सोमिलस्य ब्राह्मणस्य
सोमसिरी णाम माहणी	सोमश्रीर्नाम्नी ब्राह्मणी
होत्था । सुकुमाला ।	अभवत् । सुकोमला ।
तस्स ण सोमिलस्स	तस्य खलु सोमिलस्य
माहणस्स धूया सोमसिरीए	ब्राह्मणस्य दुहिता सोमश्रियः
माहणीए अत्तया सोमा	ब्राह्मण्या. आत्मजा सोमा
णाम दारिया होत्था,	नाम्नी दारिका अभवत्,
सुकुमाला जाव सुरूवा ।	सुकुमारा यावत् सुरूपा ।
रूवेणं जाव लावण्णेण	रूपेण यावत् लावण्येन
उक्किट्ठा, उक्किट्ठसरीरा यावि होत्था ।	उत्कृष्टा, उत्कृष्टशरीरा चापि अभवत् ।

सूत्र १६

तएण सा सोमा दारिया	तत. खलु सा सोमा दारिका
अण्णया कयाइ ण्हाया	अन्यदा कदाचित् स्नाता
जाव विभूसिया वहूहि	यावत् विभूषिता वहुभि.
खुज्जाहि जाव परिक्खित्ता,	कुब्जाभि यावत् परिक्षिप्ता,

[हिन्दी शब्दार्थ]

माता-पिता ने उसका नाम करण
गजसुकुमाल किया,
शेष मेघकुमार के समान
समझना तदनुसार गजसुकुमाल
भी भोग भोगने मे समर्थ हो गया।

उस द्वारावति नगरी मे
सोमिल नामक ब्राह्मण रहता था
जो कि धनाढ्य था तथा ऋग्वेद
आदि शास्त्रो मे पूर्ण
निष्णात था।
उस सोमिल ब्राह्मण के
सोमश्री नाम वाली ब्राह्मणी
थी। वह बहुत कोमलागी थी।
उस सोमिल नामक
ब्राह्मण की पुत्री तथा सोमश्री
ब्राह्मणी की आत्मजा सोमा
नामकी लडकी (कन्या) थी,
वह सुकुमारी एव सुरूपा थी।
रूप और लावण्य-काति से
उत्कृष्ट थी और उत्कृष्ट शरीर वाली थी।

[हिन्दी अर्थ]

शेष वर्णन मेघकुमार के समान[20] समझना। क्रमश गजसुकुमाल भोग समर्थ हो गया।

उस द्वारिका नगरी मे सोमिल नामक एक ब्राह्मण रहता था, जो समृद्ध और ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद-इन चारो वेदो का सागोपाग पूर्ण ज्ञाता भी था। उस सोमिल ब्राह्मण के सोमश्री नाम की ब्राह्मणी (पत्नी) थी। सोमश्री सुकुमार एव रूपलावण्य सम्पन्न थी।

उस सोमिल ब्राह्मण की पुत्री और सोमश्री ब्राह्मणी की आत्मजा सोमा नाम की कन्या थी जो सुकुमाल यावत् बडी रूपवती थी। उसका रूप, लावण्य एव देहयष्टि का गठन भी उत्कृष्ट था।

सूत्र १६

तदनन्तर वह सोमा कन्या
किसी दिन स्नान की हुई
यावत् अलकारादि से विभूषित
अनेक कुब्जादि दासियो से घिरी हुई

तब वह सोमा कन्या अन्यदा किसी दिन स्नान कर यावत् वस्त्रालकारो से विभूषित हो, बहुत सी कुब्जा आदि दासियो के परिवार से घिरी हुई अपने घर से बाहर आई। घर से बाहर निकल कर जहाँ

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ,	स्वकात् गृहात् परिनिष्क्रामति,
पडिणिक्खमित्ता	परिनिष्क्रम्य
जेणेव रायमग्गे तेणेव	यत्रैव राजमार्ग· तत्रैव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता	उपागच्छति, उपागत्य
रायमग्गंसि कणग-तिंदूसएणं	राजमार्गे कनक गेन्दुकेन
कीलमाणी, कीलमाणी चिट्ठइ ।	क्रीडमाना, क्रीडमाना तिष्ठति ।
तेणं कालेणं तेणं समयेणं	तस्मिन् काले तस्मिन् समये
अरहा अरिट्ठणेमी समोसढे,	अर्हन् अरिष्टनेमि समवसृत ,
परिसा णिग्गया ।	परिषद् निर्गता ।
तएणं से कण्हे वासुदेवे	ततः खलु सः कृष्ण· वासुदेव·
इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे,	अस्या कथाया· लब्धार्थ· सन्
ण्हाए जाव विभूसिए	स्नात· यावत् विभूषित
गयसुकुमालेण कुमारेण	गजसुकुमालेन कुमारेन
सद्धिं हत्थिखधवरगए	सार्द्धं हस्तिस्कन्धवरगतः
सकोरंटमल्लदामेण छत्तेणं	सकोरण्टमाल्यदाम्ना छत्रेण
धरिज्जमाणेण सेयवरचामराहि	ध्रियमाणेन श्वेतवरचामरैः
उद्धुव्वमाणीहि उद्धुव्वमाणीहि	उद्धूयमानै· उद्धूयमानै
वारवईए णयरीए मज्झं मज्झेणं	द्वारावत्या· नगर्याः मध्यंमध्येन
अरहओ अरिट्ठणेमिस्स	अर्हत· अरिष्टनेमिन·
पायवदए णिगच्छमाणे	पादवदनार्थं निर्गच्छन्
सोमं दारियं पासइ,	सोमा दारिका पश्यति,
पासित्ता सोमाए दारियाए	दृष्ट्वा सोमाया दारिकाया·
रूवेण य जोव्वणेण य	रूपेण च यौवनेन च
जाव विम्हिए ।	जात विस्मित· ।

[हिन्दी शब्दार्थ]

अपने घर से बाहर निकली,
निकलकर
जहाँ पर राजमार्ग था वहाँ पर
आती है, वहा आकर
राजमार्ग मे सोने की गेंद से
खेलती हुई, खेलती हुई ठहरी ।
(या खेलती रही)
उस काल उस समय मे
भ० अरिष्ट० द्वारिका मे पधारे ।
परिषद् धर्म सुनने के लिये
आई और चली गई ।
तब उस कृष्ण वासुदेव ने
भगवान के आने की यह
कथा वार्ता श्रवण की ।
स्नान कर वस्त्रालकारादिक से
विभूषित होकर
गजसुकुमाल कुमार के
साथ हाथी के हौदे पर आरूढ़ होकर
कोरट की मालायुक्त छत्र को
धारण किये श्वेतवर चामरो से बीजे
जाते हुए, बीजे जाते हुए द्वारावती
नगरी के मध्य-मध्य से होकर
भगवान श्री नेमिनाथ के
चरणवदन को जाते हुए
सोमा नामक कन्या को देखा,
देखकर सोमा लडकी के
रूप से और यौवन से
विस्मित हुए (प्रभावित हुए) ।

[हिन्दी अर्थ]

राजमार्ग है, वहा आई और राजमार्ग मे सुवर्ण की गेद से खेल खेलती-खेलती खेल मे निमग्न हो गई ।

उस काल उस समय अरिहत अरिष्टनेमि द्वारिका नगरी पधारे । परिषद् धर्म-कथा सुनने को आई । उस समय वह कृष्ण वासुदेव भी भगवान् के शुभागमन के समाचार से अवगत हो, स्नान कर—

यावत् वस्त्रालकारो से विभूषित हो गज सुकुमाल कुमार के साथ हाथी के हौदे पर आरूढ होकर कोरट पुष्पो की माला और छत्र धारण किये हुए, श्वेत एव श्रेष्ठ चामरो से दोनो ओर से निरन्तर वीज्यमान जाते हुए, द्वारिका नगरी के मध्य भागो से होकर अर्हत् अरिष्टनेमि के चरण-वन्दन के लिये जाते हुए, राज-मार्ग मे खेलती हुई उस सोमा कन्या को देखते है । सोमा कन्या के रूप, लावण्य और कान्ति-युक्त यौवन को देखकर कृष्ण वासुदेव अत्यन्त आश्चर्यचकित हुए ।

सूत्र १७

[मूल सूत्र पाठ]	[सस्कृत छाया]
तएरग से कण्हे वासुदेवे कोडु बियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी– गच्छह रग तुब्भे देवाणुप्पिया ! सोमिल माहरग जाइत्ता सोमं दारिय गिण्हह, गिण्हित्ता कण्णतेउरसि पक्खिवह ।	ततः खलु स. कृष्णः वासुदेव. कौटुम्बिक पुरुषान् शब्दापयनि, शब्दापयित्वा एव अवदत्– गच्छत खलु यूय देवानुप्रिया. ! सोमिलं ब्राह्मण याचित्वा सोमा दारिकां गृह्णीत, गृहीत्वा कन्यान्त पुरे प्रक्षिपत ।
तएरग एसा गयसुकुमालस्स कुमारस्स भारिया भविस्सइ । तएरग ते कोडु बिय पुरिसा जाव पक्खिवति ।	ततः खलु एषा गजसुकुमालस्य कुमारस्य भार्या भविष्यति । तत ते कौटुम्बिक पुरुषा. यावत् प्रक्षिपन्ति ।
तएरग ते कोडु बिय पुरिसा जाव पच्चप्पिरगति । कण्हे वासुदेवे वारवईए रगयरीए मज्झमज्झेरगं रिगगच्छइ, रिगगच्छित्ता जेरगेव सहस्सबवरगे उज्जारगे जाव पज्जुवासइ ।	तत खलु ते कौटुम्बिक पुरुषाः यावत् प्रत्यर्पयन्ति । कृष्णः वासुदेव. द्वारावत्या. नगर्या मध्यमध्येन निर्गच्छति, निर्गत्य यत्रैव सहस्राम्रवन उद्यान यावत् पर्युपासते ।
तए रग अरहा अरिट्ठरगेमी कण्हस्स वासुदेवस्स गय- सुकुमालस्स कुमारस्स तीसे य० धम्म कहा । कण्हे पडिगए ।	तत. खलु अर्हन् अरिष्टनेमि कृष्णाय वासुदेवाय गज– सुकुमालाय कुमाराय तस्यै च धर्मकथा (उपादिशत्) कृष्ण. प्रतिगत. ।

सूत्र १७

[हिन्दी शब्दार्थ]

तदनन्तर वह कृष्ण वासुदेव
राजसेवकों को बुलाते है–
बुलाकर इस प्रकार कहते है
हे देवानुप्रिय ! तुम जाओ और
सोमिल से सोमा कन्या की याचना कर
उसे प्राप्त करो, प्राप्त कर उसे
कन्याओ के अन्तःपुर मे पहुँचा दो ।

इसके बाद यह सोमा गजसुकुमाल कुमार
की भार्या बनेगी ।
तदनन्तर उन राजसेवको ने
सोमा को अत'पुर मे पहुँचा दिया ।

तब उन कौटुम्बिक पुरुषो ने
श्री कृष्ण को वापस सूचना दी ।
कृष्ण वासुदेव द्वारावती
नगरी के मध्य-मध्य से
निकलते है, निकलकर
जहाँ पर सहस्राम्रवन बगीचा है वहाँ
पर जाकर प्रभु की सेवा करने लगे ।

तदनन्तर भगवान् अरिष्टनेमी
ने कृष्ण वासुदेव को व गज
सुकुमाल कुमार को तथा उस
सभा को धर्म का उपदेश दिया ।
श्री कृष्ण वापस लौट गये ।

[हिन्दी अर्थ]

तब वह कृष्ण-वासुदेव आज्ञाकारी पुरुषो को बुलाते है, बुलाकर इस प्रकार कहते है— "हे देवानुप्रियो ! तुम सोमिल ब्राह्मण के पास जाओ और उससे इस सोमा कन्या की याचना करो, उसे प्राप्त करो और फिर उसे लेकर कन्याओ के राजकीय अन्त पुर मे पहुँचा दो । समय पाकर यह सोमा कन्या, मेरे छोटे भाई गजसुकुमाल की भार्या होगी ।"

तदनन्तर कृष्ण की आज्ञा को शिरोधार्य कर वे राजसेवक सोमिल ब्राह्मण के पास गये और उससे उसकी कन्या की याचना की । इससे सोमिल ब्राह्मण अत्यन्त प्रसन्न हुआ और अपनी कन्या को ले जाने की स्वीकृति दे दी । उन कौटुम्बिक पुरुषो ने सोमा को उसके पिता सोमिल से प्राप्त कर यावत् अन्त पुर मे पहुँचा दिया और उन्होने श्री कृष्ण को निवेदन किया कि उनकी आज्ञा का यावत् पूर्णत पालन हो गया है ।

तत्पश्चात् कृष्ण वासुदेव द्वारिका नगरी के मध्य भाग से होते हुए निकले और निकलकर जहाँ सहस्राम्रवन उद्यान था, वहाँ पहुँच कर यावत् प्रभु को वन्दन नमस्कार करके उनकी सेवा करने लगे । उस समय भगवान् अरिष्टनेमि ने कृष्ण, वासुदेव और गजसुकुमाल कुमार प्रमुख उस सभा को धर्मोपदेश दिया । प्रभु की अमोघ वाणी सुनने के पश्चात् कृष्ण अपने आवास को लौट गये ।

सूत्र १८

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
तएण से गयसुकुमाले कुमारे अरहओ अरिट्ठणेमिस्स अंतियं धम्मं सोच्चा, ज णवर अम्मापियर आपुच्छामि, जहा मेहे,[21] ज णवर महिलिया वज्ज जाव वड्ढिय कुले ।	ततः खलु सः गजसुकुमालः कुमारः अर्हतः अरिष्टनेमिन अन्तिके धर्म श्रुत्वा, यो विशेष अम्बापितरौ आपृच्छामि, यथा मेघकुमारः यो,[21] विशेष. महिलिका वर्ज. यावत् वर्धितकुल. ।
तएण से कण्हे वासुदेवे इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे जेणेव गयसुकुमाले कुमारे तेणेव उवागच्छइ,	ततः खलु स. कृष्णः वासुदेव अस्या कथाया' लब्धार्थ सन् यत्रैव गजसुकुमाल. कुमार तत्रैव उपागच्छति,
उवागच्छित्ता गयसुकुमाल कुमारं आलिगइ, आलिगित्ता उच्छगे णिवेसेइ, णिवेसित्ता एव वयासी—	उपागत्य गजसुकुमाल कुमारम् आलिगति, आलिग्य उत्सगे निवेशयति, निवेश्य एवमवदत् —
तुम ममं सहोयरे कणीयसे भाया, त मा ण देवाणुप्पिया ! इयाणि अरहओ अरिट्ठणेमिस्स अतिय मु डे जाव पव्वयाहि ।	त्व मम सहोदर' कनीयान् भ्राता, तत् मा खलु देवानुप्रिय ! इदानी अर्हत. अरिष्टनेमिन. अतिके मु डो यावत् प्रव्रज ।

सूत्र १८

[हिन्दी शब्दार्थ]

तदनन्तर वह गजसुकुमाल कुमार भगवान श्री अरिष्टनेमी के पास धर्म कथा सुनकर विरक्त होकर बोले भगवन् ! माता-पिता को पूछकर मै आपके पास ग्रहण करूंगा, मेघकुमार की तरह, विशेष रूप से महिलाओ को छोडकर माता-पिता ने उन्हे वंशवृद्धि के बाद दीक्षा ग्रहण करने को कहा। तब श्री कृष्ण वासुदेव ने गजसुकुमाल की वैराग्यरूप यह कथा सुनी तो जहाँ गजसुकुमाल कुमार था वहाँ आये,

पास आकर गजसुकुमाल कुमार का स्नेह से आलिगन किया, आलिगन कर उसे अपनी गोदी मे बैठा लेते है, गोदी मे बैठाकर इस प्रकार कहा—"तूं मेरा सहोदर छोटा भाई है, इस कारण हे देवानुप्रिय ! इस समय भगवान नेमिनाथ के पास मुंडित होकर यावत् दीक्षा ग्रहण मत कर।

[हिन्दी अर्थ]

प्रभु का धर्मोपदेश सुनकर श्री कृष्ण तो लौट गये किन्तु वह गजसुकुमाल कुमार भगवान् नेमिनाथ के पास धर्म-कथा सुनकर ससार से विरक्त हो प्रभु नेमिनाथ से इस प्रकार बोले—"हे भगवन् ! माता पिता को पूछकर मै आपके पास श्रमणधर्म ग्रहण करुंगा।"

इस प्रकार मेघकुमार के समान भगवान् को निवेदन करके गजसुकमार अपने घर आये और माता-पिता के सामने अपने विचार प्रकट किये। माता-पिता ने दीक्षा लेने के उनके विचार सुनकर गजसुकमाल से कहा कि हे पुत्र ! तुम हमे बहुत प्रिय हो। हम तुम्हारा वियोग सहन नही कर सकेगे। अभी तुम्हारा विवाह भी नही हुआ है इसलिए तुम पहले विवाह करो। विवाह करके कुल की वृद्धि करके सतान को अपना दायित्व सौप कर फिर दीक्षा ग्रहण करना।

तदनन्तर कृष्ण-वासुदेव गजसुकुमाल के विरक्त होने की बात सुनकर गजसुकमाल के पास आये और आकर उन्होने गजसुकुमाल कुमार का स्नेह से आलिगन किया, आलिगन कर गोद मे बिठाया, गोद मे बिठाकर इस प्रकार बोले—

"हे देवानुप्रिय ! तुम मेरे सहोदर छोटे भाई हो, इसलिये मेरा तुमसे कहना है कि इस समय भगवान् अरिष्टनेमि के पास मुंडित होकर यावत् दीक्षा ग्रहण मत करो।

सूत्र १८

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
तएणं से गयसुकुमाले कुमारे अरहओ अरिट्ठणेमिस्स अंतियं धम्मं सोच्चा, जं णवरं अम्मापियरं आपुच्छामि, जहा मेहे,[21] जं णवरं महिलिया वज्जं जाव वड्ढिय कुले ।	ततः खलु सः गजसुकुमालः कुमारः अर्हतः अरिष्टनेमिनः अन्तिके धर्मं श्रुत्वा, यो विशेषः अम्बापितरौ आपृच्छामि, यथा मेघकुमारः यो,[21] विशेषः महिलिका वर्जं यावत् वर्धितकुलः ।
तएणं से कण्हे वासुदेवे इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे जेणेव गयसुकुमाले कुमारे तेणेव उवागच्छइ,	ततः खलु सः कृष्णः वासुदेवः अस्याः कथायाः लब्धार्थः सन् यत्रैव गजसुकुमालः कुमारः तत्रैव उपागच्छति,
उवागच्छित्ता गयसुकुमालं कुमारं आलिंगइ, आलिंगित्ता उच्छंगे णिवेसेइ, णिवेसित्ता एवं वयासी—	उपागत्य गजसुकुमालं कुमारम् आलिंगति, आलिंग्य उत्संगे निवेशयति, निवेश्य एवमवदत् —
तुमं मम सहोयरे कणीयसे भाया, तं मा णं देवाणुप्पिया ! इयाणिं अरहओ अरिट्ठणेमिस्स अंतिय मुंडे जाव पव्वयाहि ।	त्वं मम सहोदरः कनीयान् भ्राता, तत् मा खलु देवानुप्रिय ! इदानीं अर्हतः अरिष्टनेमिनः अंतिके मुंडो यावत् प्रव्रज ।

सूत्र १८

[हिन्दी शब्दार्थ]

तदनन्तर वह गजसुकुमाल
कुमार भगवान श्री अरिष्टनेमी
के पास धर्म कथा सुनकर
विरक्त होकर बोले
भगवन् ! माता-पिता को
पूछकर मै आपके पास व्रत ग्रहण करूंगा,
मेघकुमार की तरह,
विशेष रूप से महिलाओ को छोडकर
माता-पिता ने उन्हे वशवृद्धि के बाद
दीक्षा ग्रहण करने को कहा ।
तब श्री कृष्ण वासुदेव ने गजसुकुमाल
की वैराग्यरूप यह कथा
सुनी तो जहाँ गजसुकुमाल
कुमार था वहाँ आये,

पास आकर गजसुकुमाल
कुमार का स्नेह से आलिगन
किया, आलिगन कर उसे नी
गोदी मे बैठा लेते है,
गोदी मे बैठाकर इस प्रकार कहा—
"तूं मेरा सहोदर छोटा
भाई है, इस कारण हे देवानुप्रिय !
इस समय भगवान नेमिनाथ के
पास मु डित होकर यावत् दीक्षा
ग्रहण मत कर ।

[हिन्दी अर्थ]

प्रभु का धर्मोपदेश सुनकर श्री कृष्ण तो लौट गये किन्तु वह गजसुकुमाल कुमार भगवान् नेमिनाथ के पास धर्म-कथा सुनकर ससार से विरक्त हो प्रभु नेमिनाथ से इस प्रकार बोले—"हे भगवन् ! माता पिता को पूछकर मै आपके पास श्रमणधर्म ग्रहण करु गा ।"

इस प्रकार मेघकुमार के समान भगवान् को निवेदन करके गजसुकमार अपने घर आये और माता-पिता के सामने अपने विचार प्रकट किये । माता-पिता ने दीक्षा लेने के उनके विचार सुनकर गजसुकमाल से कहा कि हे पुत्र ! तुम हमे बहुत प्रिय हो । हम तुम्हारा वियोग सहन नही कर सकेगे । अभी तुम्हारा विवाह भी नही हुआ है इसलिए तुम पहले विवाह करो । विवाह करके कुल की वृद्धि करके सतान को अपना दायित्व सौप कर फिर दीक्षा ग्रहण करना ।

तदनन्तर कृष्ण-वासुदेव गजसुकुमाल के विरक्त होने की बात सुनकर गजसुकमाल के पास आये और आकर उन्होने गजसुकुमाल कुमार का स्नेह से आलिगन किया, आलिगन कर गोद मे बिठाया, गोद मे विठाकर इस प्रकार बोले—

"हे देवानुप्रिय ! तुम मेरे सहोदर छोटे भाई हो, इसलिये मेरा तुमसे कहना है कि इस समय भगवान् अरिष्टनेमि के पास मु डित होकर यावत् दीक्षा ग्रहण मत करो ।

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
अहण्ण वारवईए णयरीए महया महया रायाभिसेएणं अभिसिञ्चिस्सामि । तएणं से गयसुकुमाले कुमारे कण्हेणं वासुदेवेण एवं वुत्ते समाणे तुसिणीए सचिट्ठइ ।	अहं खलु द्वारावत्या. नगर्याः महता महता राज्याभिषेकेण अभिसेक्ष्यामि । ततः खलु सः गजसुकुमालः कुमारः कृष्णेन वासुदेवेन एवमुक्तः सन् तूष्णीकः सतिष्ठते ।

सूत्र १९

तएण से गयसुकुमाले कुमारे कण्ह वासुदेव अम्मापियरो य दोच्चंपि तच्चं पि एव वयासी—	तत. खलु सः गजसुकुमाल. कुमारः कृष्णं वासुदेवं अम्बापितरौ च द्वितीयमपि तृतीयमपि एवमवादीत्—
एव खलु देवाणुप्पिया ! माणुस्सया कामा असुइ, असासया, वतासवा जाव विप्पजहियव्वा भविस्संति ।	एवं खलु देवानुप्रियाः ! मानुष्यकाः कामा. अशुचयः, अशाश्वताः वान्तास्रवा. यावत् विप्रहातव्या. भविष्यन्ति ।
तं इच्छामि ण देवाणुप्पिया ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे अरहओ अरिट्ठणेमिस्स अतिए जाव पव्वइत्तए ।	तत् इच्छामि खलु देवानुप्रियाः ! युष्माभि. अभ्यनुज्ञातः सन् अर्हतः अरिष्टनेमिन. अन्तिके यावत् प्रव्रजितुम् ।
तए णं तं गयसुकुमाल कुमारं कण्हे वासुदेवे अम्मापियरो य जाहेणो सचाएइ बहुयाहिं अणुलोमाहिं जाव आघवित्तए ।	तत. खलु तं गजसुकुमालं कुमारं कृष्ण वासुदेव अम्बापितरौ च यदा न शक्नुवन्ति बहुकाभि अनुलोमाभि यावत् आख्यापयितुम् ।

[हिन्दी शब्दार्थ]

मैं तुमको द्वारावती नगरी मे बडे समारोह के साथ राज्याभिषेक से अभिषिक्त करूंगा ।" तदनन्तर वह गजसुकुमाल कुमार कृष्ण वासुदेव से इस प्रकार कहा गया होकर मौन रहा ।

[हिन्दी अर्थ]

मैं तुमको द्वारिका नगरी मे बहुत बडे समारोह के साथ राज्याभिषेक से अभिषिक्त करूगा ।" तब गजसुकुमाल कुमार कृष्ण वासुदेव द्वारा ऐसा कहे जाने पर मौन रहे ।

सूत्र १६

कुछ समय के बाद वह गजसुकुमाल कुमार कृष्ण वासुदेव और माता-पिता को दूसरी-तीसरी बार भी इस प्रकार बोले—

"इस प्रकार हे देवानुप्रिय ! मनुष्य के कामभोग अपवित्र है अस्थायी है, मलमूत्र वमन के स्रोत है ये एक दिन अवश्य छोडने होगे ।"

इसलिए हे देवानुप्रिय ! मै चाहता हूँ कि आपकी आज्ञा पाकर भगवान् अरिष्टनेमी के पास प्रव्रज्या (दीक्षा) ग्रहण करलूँ । तब उस गजसुकुमाल कुमार को कृष्ण वासुदेव और माता-पिता जब बहुत सी अनुकूल एवं स्नेहभरी युक्तियो से समझाने मे समर्थ नही हुए ।

कुछ समय मौन रहने के बाद गजसुकुमाल अपने बडे भाई कृष्ण वासुदेव एव माता-पिता को दूसरी बार और तीसरी बार भी इस प्रकार बोले—"हे देवानुप्रियो ! वस्तुत. मनुष्य के कामभोग एव देह अपवित्र, अशाश्वत क्षणविध्वसी और मल-मूत्र-कफ-वमन-पित्त-शुक्र एव शोणित के भडार है। यह मनुष्य शरीर और ये उसके कामभोग अस्थिर है, अनित्य है एव सडन-गलन एव विध्वसी होने के कारण आगे पीछे कभी न कभी अवश्य नष्ट होने वाले है। एक दिन देर अबेर ये छूटने वाले है ।"

"इसलिए हे देवानुप्रियो ! मै चाहता हू कि आपकी आज्ञा मिलने पर भगवान् अरिष्टनेमि के पास प्रव्रज्या (श्रमण दीक्षा) ग्रहण कर लू ।"

तदनन्तर उस गजसुकुमाल कुमार को कृष्ण-वासुदेव और माता-पिता जब बहुत-सी अनुकूल और स्नेह भरी युक्तियो से भी समझाने मे समर्थ नही हुए तब निराश होकर श्री कृष्ण एव माता-पिता इस प्रकार बोले—

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
ताहे अकामा चेव एवं वयासी—	तदा अकामा एव एवमवदन्
तं इच्छामो ण ते जाया !	इच्छामः ते हे जात !
एगदिवसमवि रज्जसिरिं पासित्तए ।	एकदिवसमपि राज्यश्रियम् द्रष्टुम् ।
णिक्खमणं, जहा महब्बलस्स[22] जाव तमाणाए तहा जाव संजमित्तए ।	निष्क्रमणम्, यथा महाबलस्य[22] या तदाज्ञाया यावत् संयतिव्यः ।
तए णं से गयसुकुमाले अणगारे जाए इरियासमिए जाव गुत्तबभयारी ।	ततः सः गजसुकुमालः अनगार. जातः ईर्यासमित. यावत् गुप्त ब्रह्मचारी ।

सूत्र २०

तए ण से गयसुकुमाले अणगारे ज चेव दिवसं पव्वइए तस्सेव दिवसस्स पुव्वावरण्हकालसमयंसि जेणेव अरहा अरिट्ठणेमी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, अरहं अरिट्ठणेमिं तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिण करेइ, करित्ता एवं वयासी—	ततः स· गजसुकुमालः अनगार· यस्मिन् एव दिवसे प्रव्रजितः तस्यैव दि य पूर्वापरान्हकालसमये यत्रैव अर्हन् अरिष्टनेमि· तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य, अर्हन्तमरिष्टनेमिनम् त्रि कृत्य आदक्षिण-प्रदक्षिणा करोति, कृत्वा एवमवदत्-

[हिन्दी शब्दार्थ]

तब न चाहते हुए भी इस प्रकार बोले-

"यदि ऐसा ही है तो हे पुत्र !

हम चाहते है तुम्हारी

एक दिन की राज्य लक्ष्मी को देखना"

(गजसुकुमाल ने उनकी

आज्ञा स्वीकार कर दीक्षा ग्रहण की)

दीक्षा सम्बन्धी निष्क्रमण महाबल[22]

समान यावत् आज्ञानुसार सयम पालन

मे उद्यत हुए ।

तब वह गजसुकुमाल कुमार

अनगार हो गये और इर्यासमिति

वाले यावत् गुप्त ब्रह्मचारी बन गये ।

[हिन्दी अर्थ]

"यदि ऐसा ही है तो हे पुत्र ! हम एक दिन की तुम्हारी राज्यश्री (राजवैभव की शोभा) देखना चाहते है । इसलिये तुम कम से कम एक दिन के लिये तो राजलक्ष्मी को स्वीकार करो ।"

माता-पिता एव बडे भाई के इस प्रकार अनुरोध करने पर गजसुकुमाल चुप रहे ।

इसके बाद बडे समारोह के साथ उनका राज्याभिषेक किया गया ।

गजसुकुमाल के राजगद्दी पर बैठने पर माता-पिता ने उनसे पूछा—"हे पुत्र ! अब तुम क्या चाहते हो ? बोलो ।"

गज सुकुमाल ने तब उत्तर दिया—"मै दीक्षित होना चाहता हूँ ।"

तब गजसुकुमाल की इच्छानुसार दीक्षा की सभी सामग्री मगाई गई ।

'दीक्षा सम्बन्धी निष्क्रमण' 'एव आज्ञानुसार सयम पालन मे उद्यत हुए ।' यहा तक का वर्णन महाबल के समान समझना ।[22]

अब वह गजसुकुमाल अणगार हो गये । ईर्यासमिति वाले यावत् गुप्त ब्रह्मचारी बन गये ।

सूत्र २०

तदनन्तर वह गजसुकुमाल

मुनि जिस दिन दीक्षा ग्रहण की

उसी दिन

दिन के पिछले भाग मे

जहाँ अरिहत अरिष्टनेमी थे

वहाँ आये,

वहाँ आकर भगवान् नेमिनाथ को

तीन बार दक्षिण तरफ से

प्रदक्षिणा करते है, तथा

प्रदक्षिणा करके इस प्रकार बोले—

श्रमण धर्म मे दीक्षित होने के पश्चात् वह गजसुकुमाल मुनि जिस दिन दीक्षित हुए, उसी दिन, दिन के पिछले भाग मे जहाँ अरिहत अरिष्टनेमि विराजमान थे, वहाँ आये । वहाँ आकर उन्होने भगवान् नेमिनाथ की दक्षिण की ओर से तीन बार प्रदक्षिणा की । प्रदक्षिणा करके वे इस प्रकार बोले—

[मूल सूत्र पाठ]	[सस्कृत छाया]
ताहे अकामा चेव एव वयासी—	तदा अकामा एव एवमवदन्
तं इच्छामो णं ते जाया !	तत् इच्छामः ते हे जात !
एगदिवसमवि रज्जसिरि पासित्तए ।	एकदिवसमपि राज्यश्रियम् द्रष्टुम् ।
णिक्खमणं, जहा महब्बलस्स[22] जाव तमाणाए तहा जाव सजमित्तए ।	निष्क्रमणम्, यथा महा य[22] यावत् तदाज्ञाया यावत् सयतिव्य. ।
तए णं से गयसुकुमाले अणगारे जाए इरियासमिए जाव गुत्तबभयारी ।	ततः स गजसुकुमालः अनगारः जातः इर्यासमित. यावत् गुप्त ब्रह्मचारी ।

सूत्र २०

तए णं से गयसुकुमाले अणगारे ज चेव दिवस पव्वइए तस्सेव दिवसस्स पुव्वावरण्हकालसमयसि जेणेव अरहा अरिट्ठणेमी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, अरह अरिट्ठणेमिं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ, करित्ता एवं वयासी—	ततः सः गजसुकुमालः अनगारः यस्मिन् एव दिवसे प्रव्रजित. तस्यैव दिवसस्य पूर्वापरान्हकालसमये यत्रैव अर्हन् अरिष्टनेमि. तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य, अर्हन्तमरिष्टनेमिनम् त्रि.कृत्य आदक्षिण-प्रदक्षिणा करोति, कृत्वा एवमवदत्-

[हिन्दी शब्दार्थ]

तब न चाहते हुए भी इस प्रकार बोले-

"यदि ऐसा ही है तो हे पुत्र !

हम चाहते है तुम्हारी

एक दिन की राज्य लक्ष्मी को देखना"

(गजसुकुमाल ने उनकी

आज्ञा स्वीकार कर दीक्षा ग्रहण की)

दीक्षा सम्बन्धी निष्क्रमण महाबल[२२]

समान यावत् आज्ञानुसार सयम पालन

मे उद्यत हुए ।

तब वह गजसुकुमाल कुमार

अनगार हो गये और ईर्यासमिति

वाले यावत् गुप्त ब्रह्मचारी बन गये।

[हिन्दी अर्थ]

"यदि ऐसा ही हे तो हे पुत्र ! हम एक दिन की तुम्हारी राज्यश्री (राजवैभव की शोभा) देखना चाहते हे । इसलिये तुम कम से कम एक दिन के लिये तो राजलक्ष्मी को स्वीकार करो ।"

माता-पिता एव बडे भाई के इस प्रकार अनुरोध करने पर गजसुकुमाल चुप रहे।

इसके बाद बडे समारोह के साथ उनका राज्याभिषेक किया गया।

गजसुकुमाल के राजगद्दी पर बैठने पर माता-पिता ने उनसे पूछा—"हे पुत्र ! अब तुम क्या चाहते हो ? बोलो ।"

गज सुकुमाल ने तब उत्तर दिया—"मै दीक्षित होना चाहता हूँ ।"

तब गजसुकुमाल की इच्छानुसार दीक्षा की सभी सामग्री मगाई गई।

'दीक्षा सम्बन्धी निष्क्रमण' 'एव आज्ञानुसार सयम पालन मे उद्यत हुए ।' यहा तक का वर्णन महाबल के समान समझना ।[२२]

अब वह गजसुकुमाल अणगार हो गये । ईर्यासमिति वाले यावत् गुप्त ब्रह्मचारी बन गये ।

सूत्र २०

तदनन्तर वह गजसुकुमाल

मुनि जिस दिन दीक्षा ग्रहण की

उसी दिन

दिन के पिछले भाग मे

जहॉ अरिहत अरिष्टनेमी थे

वहॉ आये,

वहॉ आकर भगवान् नेमिनाथ को

तीन बार दक्षिण तरफ से

प्रदक्षिणा करते है, तथा

प्रदक्षिणा करके इस प्रकार बोले—

श्रमण धर्म मे दीक्षित होने के पश्चात् वह गजसुकुमाल मुनि जिस दिन दीक्षित हुए, उसी दिन, दिन के पिछले भाग मे जहॉ अरिहत अरिष्टनेमि विराजमान थे, वहॉ आये । वहॉ आकर उन्होने भगवान् नेमिनाथ की दक्षिण की ओर से तीन बार प्रदक्षिणा की । प्रदक्षिणा करके वे इस प्रकार बोले—

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
'इच्छामि णं भन्ते !	इच्छामि खलु भदन्त !
तुब्भेहि अब्भणुण्णाए समाणे	युष्माभिरभ्यनुज्ञात: सन्
महाकालंसि सुसाणंसि	महाकालनामके श्मशाने
एगराइयं महापडिमं	एकरात्रिकी महाप्रतिमाम्
उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए ।'	उपसंपद्य खलु विहर्तुम्
'अहासुहं देवाणुप्पिया ! '	यथासुखं देवानुप्रिया !
तए णं से गयसुकुमाले	तत: खलु स गजसुकुमाल:
अणगारे अरहया अरिट्ठणेमिणा	अनगार: अर्हता अरिष्टनेमिना
अब्भणुण्णाए समाणे अरहं	अभ्यनुज्ञात: सन् अर्हन्तम्
अरिट्ठणेमिं वंदइ णमंसइ,	अरिष्टनेमिनं वंदति नमस्यति,
वंदित्ता णमंसित्ता	वन्दित्वा नमस्यित्वा
अरहओ अरिट्ठणेमिस्स	अर्हत: अरिष्टनेमिन:
अंतियाओ सहसंबवणाओ	अन्तिकात् सहस्राम्रवनात्
उज्जाणाओ पडिणिक्खमइ,	उद्यानात् प्रतिनिष्क्रामति,
पडिणिक्खमित्ता जेणेव	प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव
महाकाले सुसाणे	महाकालं श्मशानं
तेणेव उवागच्छइ,	तत्रैव उपागच्छति,
उवागच्छित्ता थंडिलं	उपागत्य स्थंडिलम्
पडिलेहेइ,	प्रतिलेखयति,
पडिलेहित्ता उच्चारपासवण	प्रतिलेख्य उच्चारप्रस्रवण
भूमिं पडिलेहेइ,	भूमिं प्रतिलेखयति,
पडिलेहित्ता	प्रतिलेख्य
ईसिं पब्भारगएणं काएणं	ईषत्प्राग्भारगतेनकायेन
जाव दो वि पाए साहट्टु	यावत् द्वौ अपि पादौ संहृत्य

[हिन्दी शब्दार्थ]

"हे भगवन् ! मै चाहता हूँ
आपसे आज्ञा दिया हुआ
महाकाल नामक श्मशान मे
एक रात्रि की महाप्रतिमा
धारणकर विचरण करूँ ।"
प्रभु बोले—"हे देवानुप्रिय !
जैसे सुख हो वैसा करो ।"
तब वह गजसुकुमाल
मुनि भगवान नेमिनाथ से
आज्ञा प्राप्त कर भगवान
नेमिनाथ को वन्दना नमस्कार करते है,
वन्दना नमस्कार करके
भगवान नेमिनाथ के
पाससे सह वन नामक
बगीचे से बाहर निकले ।
उद्यान से निकलकर जहाँ
महाकाल श्मशान था
वहा पर आते है ।
महाकाल श्मशान मे आकर
उन्होने भूमि की प्रतिलेखना की,
प्रतिलेखन करके उच्चार
पासवण भूमि (मलमूत्रत्यागस्थल)
का प्रतिलेखन करते है, प्रतिलेखन करके
थोडा देह को पूर्व की तरफ झुका
कर (एक पुद्गल पर दृष्टि जमाये)
दोनो पैरो को (चार अंगुल के अन्तर
मे) सिकोड

[हिन्दी अर्थ]

"हे भगवन् ! आपकी अनुज्ञा प्राप्त होने पर मैं महाकाल श्मशान मे एक रात्रि की महापडिमा (महाप्रतिमा) धारण कर विचरना चाहता हू ।"

प्रभु ने कहा—"हे देवानुप्रिय ! जिससे तुम्हे सुख प्राप्त हो वही करो ।"

तदनन्तर वह गजसुकुमाल मुनि अरिहत अरिष्टनेमि की आज्ञा मिलने पर, भगवान् नेमिनाथ को वदन नमस्कार करते है । वदन नमस्कार कर, अर्हत् अरिष्टनेमि के सान्निध्य से चलकर वे सहस्राम्र वन उद्यान से निकले वहा से निकलकर जहा महाकाल श्मशान था, वहा आते है ।

महाकाल श्मशान मे आकर प्रासुक स्थडिल भूमि की प्रतिलेखना करते है । प्रतिलेखन करने के पश्चात् उच्चार-प्रस्रवण (मल-मूत्र त्याग) के योग्य भूमि का प्रतिलेखन करते है । प्रतिलेखन करने के पश्चात् एक स्थान पर खडे हो अपनी देह यष्टि को किंचित् झुकाये हुए (एक पुद्गल पर दृष्टि जमाकर) दोनो पैरो को (चार अगुल के अन्तर से) सिकोडकर

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
एगराइय महापडिम	एकरात्रिकी महाप्रतिमाम्
उवसपज्जित्ताण विहरइ ।	उपस विहरति।

सूत्र २१

इम च णं सोमिले माहणे	अय च खलु सोमिलो ब्राह्मणः
सामिधेयस्स अट्ठाए वारवईओ	समिधाया· अर्थाय द्वारावत्याः
णयरीओ वहिया, पुव्वणिग्गए	नगर्या · बहि : पूर्वनिर्गत·
समिहाओ य	समिध च
दब्भे य कुसे य पत्तामोडय च	दर्भाश्च कुशाश्च पत्रामोट च
गिण्हइ, गिण्हित्ता तओ	गृह्णाति, गृहीत्वा तत·
पडिणियत्तइ, पडिणियत्तित्ता	प्रतिनिवर्तते, प्रतिनिवृत्य
महाकालस्स सुसाणस्स	महाकालस्य श्मशानस्य
अदूरसामतेण वीइवयमाणे	अदूरसामतेन व्यतिव्रजन्
संझाकालसमयसि	सध्याकालसमये
पविरलमणुस्ससि	प्रविरलमानुषे
गयसुकुमाल अणगारं	गजसुकुमालम् अनगारम्
पासइ, पासित्ता त वेर	पश्यति, दृष्ट्वा तत् वैर
सरइ	स्मरति,
सरित्ता आसुरुत्ते एव वयासी-	स्मृत्वा आशुरक्त· एवम् अवदत्—
एस ण भो! से गयसुकुमाले	एष खलु भो ! स गजसुकुमाल·
कुमारे अपत्थिय जाव	कुमारः अप्रार्थित· यावत्
परिवज्जिए,	परिर्वाजत ,
जे णं मम धूयं, सोमसिरीए	य खलु मम दुहितरं, सोमश्रिया·
भारियाए अत्तयं सोमदारियं	भार्याया आत्मजा सोमा दारिका
अदिट्ठदोसपइय कालवत्तिणी	अदृष्टदोषप्रकृतिम्, कालवर्तिनीम्
विप्पजहित्ता मुण्डे जाव पव्वइए ।	विप्रहाय मुण्डो यावत् प्रव्रजितः ।

[हिन्दी शब्दार्थ]	[हिन्दी अर्थ]
कर एक रात्रि की महाप्रतिमा अगीकार करके ध्यान मे खडे रहे ।	एक रात्रि की महाप्रतिमा अगीकार कर ध्यान मे मग्न हो जाते है ।

सूत्र २१

यह सोमिल ब्राह्मण हवन की लकडी के लिए द्वारावती नगरी से बाहर, पहले से निकला हुआ हवनीय काष्ठ, दर्भा कुशा और अग्रभाग मे मुडे हुए (सूखे) पत्तो को लेता है, लेकर वहाँ से वापस लौटता है, वापस लौटकर महाकाल श्मशान के निकट से जाते हुए सध्याकाल के समय मे जब कि मनुष्यो का आवागमन नही सा था गजसुकुमाल मुनि को देखता है, देखते ही सोमिल को पूर्व जन्म का वैर जागृत हो गया, वैर जागृत होते ही तत्काल क्रोधित होता हुआ इस प्रकार बोला- अरे ! यह वह गजसुकुमाल कुमार अप्रार्थनीय मृत्यु को चाहने वाला यावत् लज्जा-रहित है, जिसने मेरी पुत्री व सोमश्री ब्राह्मणी की आत्मजा सोमा कन्या को जो कि अवस्था प्राप्त और दोष रहित है छोड़कर मु डित हो साधु बन गया है ।	इधर ऐसा हुआ कि सोमिल ब्राह्मण समिधा (यज्ञ की लकडी) के लिए द्वारिका नगरी के बाहर पूर्व की ओर गज सुकुमाल अणगार के श्मशान भूमि मे जाने से पूर्व ही निकला । वह समिधा, दर्भ, कुश डाभ एव अग्र भाग मे मुडे हुए पत्तो को लेता है, उन्हे लेकर वहा से अपने घर की तरफ लौटता है । लौटते समय महाकाल श्मशान के निकट (न अति दूर न अति सन्निकट) से जाते हुए सध्या काल की वेला मे, जबकि मनुष्यो का गमनागमन नही के समान हो गया था, उसने गजसुकुमाल मुनि को वहा ध्यानस्थ खडे देखा । उन्हे देखते ही सोमिल के हृदय मे पूर्व भव का वैर जागृत हुआ । पूर्व जन्म के वैर का स्मरण हुआ । पूर्व जन्म के वैर को स्मरण करके वह क्रोध से तमतमा उठता है और इस प्रकार बुदबुदाता है— अरे ! यह तो वही अप्रार्थनीय का प्रार्थी (मृत्यु की इच्छा करने वाला) यावत् निर्लज्ज एव श्री कान्ति आदि से हीन गजसुकुमाल कुमार है, जो मेरी सोम श्री भार्या की कुक्षि से उत्पन्न यौवनावस्था को प्राप्त मेरी निर्दोष पुत्री सोमा कन्या को अकारण ही छोडकर मु डित हो यावत् श्रमण बन गया है ।

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
एगराइयं महापडिमं	एकरात्रिकी महाप्रतिमाम्
उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ।	उपसं विहरति।

सूत्र २१

इमं च णं सोमिले माहणे	अयं च खलु सोमिलो ब्राह्मणः
सामिधेयस्स अट्ठाए बारवईओ	समिधायाः अर्थाय द्वारावत्याः
णयरीओ वहिया, पुव्वणिग्गए	नगर्याः बहिः पूर्वनिर्गत.
समिहाओ य	समिधः च
दब्भे य कुसे य पत्तामोडयं च	दर्भाश्च कुशाश्च पत्रामोटं च
गिण्हइ, गिण्हित्ता तओ	गृह्णाति, गृहीत्वा ततः
पडिणियत्तइ, पडिणियत्तित्ता	प्रतिनिवर्तते, प्रतिनिवृत्य
महाकालस्स सुसाणस्स	महाकालस्य श्मशानस्य
अदूरसामंतेणं वीइवयमाणे	अदूरसामंतेन व्यति जन्
संझाकालसमयंसि	सध्याकालसमये
पविरलमणुस्संसि	प्रविरलमानुषे
गयसुकुमालं अणगारं	गजसुकुमालम् अनगारम्
पासइ, पासित्ता तं वेरं	पश्यति, दृष्ट्वा तत् वैरं
सरइ	स्मरति,
सरित्ता आसुरुत्ते एवं वयासी-	स्मृत्वा आशुरक्तः एवम् दत्—
एस णं भो! से गयसुकुमाले	एष खलु भो ! स गजसुकुमालः
कुमारे अपत्थिय जाव	कुमारः अप्रार्थितः यावत्
परिवज्जिए,	परिवर्जित ,
जे णं मम धूयं, सोमसिरीए	य खलु मम दुहितरं, सोमश्रियाः
भारियाए अत्तयं सोमदारियं	भार्यायाः आत्मजा सोमां दारिका
अदिट्ठदोसपइयं कालवत्तिणी	अदृष्टदोषप्रकृतिम्, कालवर्तिनीम्
विप्पजहित्ता मुण्डे जाव पव्वइए ।	विप्रहाय मुण्डो यावत् प्रव्र :।

[हिन्दी शब्दार्थ]

कर एक रात्रि की महाप्रतिमा अगीकार करके ध्यान मे खडे रहे ।

[हिन्दी अर्थ]

एक रात्रि की महाप्रतिमा अगीकार कर ध्यान मे मग्न हो जाते है ।

सूत्र २१

यह सोमिल ब्राह्मण हवन की लकडी के लिए द्वारावती नगरी से बाहर, पहले से निकला हुआ हवनीय काष्ठ, दर्भा कुशा और अग्रभाग मे मुडे हुए (सूखे) पत्तो को लेता है, लेकर वहाँ से वापस लौटता है, वापस लौटकर महाकाल श्मशान के निकट से जाते हुए संध्याकाल के समय मे जब कि मनुष्यो का आवागमन नही सा था गजसुकुमाल मुनि को देखता है, देखते ही सोमिल को पूर्व जन्म का वैर जागृत हो गया, वैर जागृत होते ही तत्काल क्रोधित होता हुआ इस प्रकार बोला- अरे ! यह वह गजसुकुमाल कुमार अप्रार्थनीय मृत्यु को चाहने वाला यावत् लज्जा-रहित है, जिसने मेरी पुत्री व सोमश्री ब्राह्मणी की आत्मजा सोमा कन्या को जो कि अवस्था प्राप्त और दोष रहित है छोड़कर मुडित हो साधु बन गया है ।

इधर ऐसा हुआ कि सोमिल ब्राह्मण समिधा (यज्ञ की लकडी) के लिए द्वारिका नगरी के बाहर पूर्व की ओर गज सुकुमाल अणगार के श्मशान भूमि मे जाने से पूर्व ही निकला ।

वह समिधा, दर्भ, कुश डाभ एव अग्र भाग मे मुडे हुए पत्तो को लेता है, उन्हे लेकर वहा से अपने घर की तरफ लौटता है ।

लौटते समय महाकाल श्मशान के निकट (न अति दूर न अति सन्निकट) से जाते हुए सध्या काल की बेला मे, जबकि मनुष्यो का गमनागमन नही के समान हो गया था, उसने गजसुकुमाल मुनि को वहा ध्यानस्थ खडे देखा ।

उन्हे देखते ही सोमिल के हृदय मे पूर्व भव का वैर जागृत हुआ । पूर्व जन्म के वैर का स्मरण हुआ । पूर्व जन्म के वैर को स्मरण करके वह क्रोध से तमतमा उठता है और इस प्रकार बुदबुदाता है—

अरे ! यह तो वही अप्रार्थनीय का प्रार्थी (मृत्यु की इच्छा करने वाला) यावत् निर्लज्ज एव श्री कान्ति आदि से हीन गजसुकुमाल कुमार है, जो मेरी सोम श्री भार्या की कुक्षि से उत्पन्न यौवनावस्था को प्राप्त मेरी निर्दोष पुत्री सोमा कन्या को अकारण ही छोडकर मुडित हो यावत् श्रमण बन गया है ।

सूत्र २२

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
त सेय खलु मम गयसुकुमालस्स	तत् श्रेय. खलु मम गजसुकुमालस्य
वेरणिज्जायण करित्तए,	वैर निर्यातनं कर्तुम्,
एव सपेहेइ,	एव सप्रेक्षते,
सपेहित्ता दिसापडिलेहण करेइ,	सप्रेक्ष्य दिशाप्रतिलेखन करोति,
करित्ता	कृत्वा
सरसं मट्टियं गिण्हइ,	सरसां मृत्तिका गृह्णाति,
गिण्हित्ता जेणेव गयसुकुमाले	गृहीत्वा यत्रैव गजसुकुमाल
अणगारे तेणेव उवागच्छइ,	अनगार. तत्रैव उपागच्छति,
उवागच्छित्ता गयसुकुमालस्स अणगारस्स	उपागत्य गजसुकुमालस्य अनगारस्य
मत्थए मट्टियाए पालि बधइ,	मस्तके मृत्तिकाया. पालि बध्नाति,
बधित्ता जलतीओ चिययाओ	बद्ध्वा ज्वलन्त्याश्चितिकाया.
फुल्लियकिसुय-समाणे	फुल्लितकिशुकसमानान्
खयरगारे कहल्लेण गिल्हइ,	खदिराङ्गारान् कर्परेण गृह्णाति,
गिण्हित्ता गयसुकुमालस्स	गृहीत्वा गजसुकुमालस्य
अणगारस्स मत्थए पक्खिवइ,	अनगारस्य मस्तके प्रक्षिपति,
पक्खिवित्ता भीए तओ खिप्पामेव	प्रक्षिप्य भीतः तत क्षिप्रमेव
अवक्कमइ,	अपक्रामति,
अवक्कमित्ता जामेव दिस पाउब्भूए	अपक्रम्य यस्या दिश प्रादुर्भूत
तामेव दिस पडिगए ।	तस्यामेव दिशि प्रतिगत ।

सूत्र २३

तए ण तस्स गयसुकुमालस्स	तत खलु तस्य गजसुकुमालस्य
अणगारस्स सरीरयसि वेयणा	अनगारस्य शरीरे वेदना
पाउब्भूया,	प्रादुर्भूता,
उज्जला जाव दुरहियासा	उज्ज्वला यावत् दुरधिसहा,
तएण से	तत खलु स

सूत्र २२

[हिन्दी शब्दार्थ]

इसलिये निश्चय ही मुझे गजसुकुमाल से
वैर का बदला लेना उचित है,
इस प्रकार (यह) विचार करता है,
विचार कर दिशाओ का निरीक्षण
करता है, चारो तरफ देखकर
गीली मिट्टी लेता है,
मिट्टी लेकर जहा गजसुकुमाल
मुनि थे, वहा आता है,
वहा आकर गजसुकुमाल मुनि के
मस्तक पर मिट्टी की पाल बाँधता है,
पाल बाँधकर जलती हुई चिता से
फूले हुए केसूडा के फूलो के समान
लालखेर के अगारो को खप्पर मे लेता है,
लेकर गजसुकुमाल
मुनि केमस्तक पर रख देता है,
रखकर भयभीत हुआ, वहा से शीघ्र
ही हट जाता है,
हटकर जिस दिशा से आया था,
उस ही दिशा मे चला गया ।

[हिन्दी अर्थ]

इसलिये मुझे निश्चय ही गजसुकुमाल से इस वैर का बदला लेना चाहिये । इस प्रकार वह सोमिल सोचता है और सोचकर सब दिशाओ की ओर देखता है कि कही कोई उसे देख तो नही रहा है । इस विचार से चारो ओर देखता हुआ पास के ही तालाब मे वह थोडी गीली मिट्टी लेता है । गीली मिट्टी लेकर वहा आता है । वहा आकर गजसुकुमाल मुनि के सिर पर उस मिट्टी से चारो तरफ एक पाल बाधता है ।

पाल बाधकर पास मे ही कही जलती हुई चिता मे से फूले हुए केसू के फूल के समान लाल-लाल खेर के अगारो को किसी फूटे खप्पर मे या कि किसी फूटे हुए मिट्टी के बरतन के टुकडे (ठीकरे) मे लेकर वह उन दहकते हुए अगारो को उन गजसुकुमाल मुनि के सिर पर रखने के बाद इस भय से कि कही उसे कोई देख न ले, भयभीत हो कर वह वहा से शीघ्रतापूर्वक पीछे की ओर हटता हुआ भागता है । वहा से भागता हुआ वह सोमिल जिस ओर से आया था उसी ओर चला गया ।

सूत्र २३

अगार रखने के बाद उस गजसुकुमाल
मुनि के शरीर मे तीव्र वेदना
उत्पन्न हुई, जो
अत्यन्त दु खरूप यावत् असह्य थी,
तब वह

सिर पर उन जाज्वल्यमान अगारो के रखे जाने से गजसुकुमाल मुनि के शरीर मे महा भयकर वेदना उत्पन्न हुई जो अत्यन्त दाहक दु खपूर्ण यावत् दुस्सह थी । इतना होने पर भी वे गजसुकुमाल मुनि सोमिल ब्राह्मण पर मन से भी लेश मात्र भी द्वेष नही करते

[मूल सूत्र पाठ]	[सस्कृत छाया]
गयसुकुमाले अरणगारे	गजसुकुमालः अनगार॰
सोमिलस्स माहरणस्स मरणसा	सोमिलस्य ब्राह्मणस्य मनसा
वि अप्पदुस्समारणे त उज्जलं	अपि अप्रदुष्यन् ता उज्वला
जाव अहियासेई ।	यावत् (दु.सहा वेदना) अधिसहते ।
तएरणं तस्स गयसुकुमालस्स	तत खलु तस्य गजसुकुमालस्य
अरणगारस्स त उज्जलं जाव	अनगारस्य ता उज्वलां यावत्
अहियासेमारणस्स सुभेरणं	अधिसहमानस्य शुभेन
परिरणामेरण पसत्थज्झवसारणेरणं	परिरणामेन प्रशस्ताध्यवसायेन
तयावररिणज्जारण कम्मारणं	तदावररणीयाना कर्मरणां
खएरणं कम्मरयविकिररणकरं	क्षयेन कर्मरजविकिररणकरम्
अपुव्व-कररणं अरणुप्पविट्ठस्स	अपूर्वकररणमनुप्रविष्टस्य
अरणते, अरणुत्तरे जाव	अनन्तमनुत्तरं यावत्
केवलवररणारण-दसरणे	केवलवरज्ञानदर्शनम्
समुप्पण्णे तओ पच्छा	समुत्पन्नम् ततः पश्चात्
सिद्धे जावप्पहीरणे ।	सिद्धः यावत् प्रहीरणः ।
तत्थरण अहा सरिणहिएहि	तत्र खलु यथा संनिहितै॰
देवेहि सम्मं आराहियत्ति	देवै सम्यक् आराधित इति
कट्टु दिव्वे सुरभिगंधोदए वुट्ठे,	कृत्वा दिव्यं सुरभिगन्धोदकं वृष्टम्
दसद्धवण्णे कुसुमे रिणवाइए	दशार्धवर्णानिकुमुमानि निपातितानि,
चेलुक्खेवे कए	चैलोत्क्षेप. कृत.
दिव्वे य गीय-गंधव्वरिणरणाए	दिव्य च गीत-गान्धर्वनिनाद.
कए यावि होत्था ।	कृत चापि अभूत् ।

सूत्र २४

तए रण से कण्हे वासुदेवे	तत खलु स कृष्ण वासुदेव.
कल्ल पाउप्पभायाए जाव-	कल्ये प्रादुर्भूतप्रभाते यावत्

[हिन्दी शब्दार्थ]

गजसुकुमाल मुनिवर
सोमिल ब्राह्मण पर मनसे
भी द्वेष न लाते हुए उस तीव्रतर
दु.खरूपवेदना को सहन करने लगे।
उस समय उस गजसुकुमाल
मुनि द्वारा उस तीव्र यावत् एकान्त वेदना
को सहन करते हुए प्रशस्त शुभ परिणाम
पूर्वक अध्य ाय के कारण
आवरणीय कर्म का
क्षय होने से कर्मरज को बिखेरने वाले
अपूर्व करण मे प्रविष्ट होने से
अनन्त सर्वश्रेष्ठ पूर्ण
केवल ज्ञान और केवल दर्शन
उत्पन्न हुआ। इसके बाद
वे सिद्ध बुद्ध यावत् सब दुःखो
से मुक्त हो गये।
तदनन्तर जो वहाँ समीप थे
उनदेवो ने भलीप्रकार आराधना की
तथा दिव्य सुगन्धित जल की वर्षा की
पाँचवर्ण के पुष्प गिराये
वस्त्रो की वर्षा की और
दिव्य गीत और गन्धर्व-
वाजित्र की ध्वनि भी हुई।

[हिन्दी अर्थ]

हुए उस एकान्त दु खरूप वेदना को यावत् समभावपूर्वक सहन करने लगे।

उस समय उस एकान्त दु खपूर्ण दुस्सह दाहक वेदना को समभाव से सहन करते हुए शुभ परिणामो तथा प्रशस्त शुभ अध्यवसायो (भावनाओ) के फलस्वरूप आत्मगुणो पर भिन्न-भिन्न रूपो वाले तद् तदावरणीय कर्मो के क्षय से समस्त कर्म-रज को झाडकर साफ कर देने वाले कर्म विनाशक अपूर्व-करण मे वे प्रविष्ट हुए जिससे उन गजसुकुमाल अणगार को अनत-अन्तरहित, अनुत्तर यावत् सर्वश्रेष्ठ निर्व्याघात् निरावरण एव सपूर्ण केवल ज्ञान एव केवलदर्शन की उपलब्धि हुई और तत्पश्चात् आयुष्य पूर्ण हो जाने पर वे उसी समय सिद्ध बुद्ध यावत् सब दु खो से मुक्त हो गये।

इस तरह सकल कर्मो के क्षय हो जाने से वे गजसुकुमाल अणगार कृतकृत्य बन कर 'सिद्ध' पद को प्राप्त हुए, लोकालोक के सभी पदार्थो के ज्ञान से 'बुद्ध' हुए, सभी कर्मो के छूट जाने से परिनिवृत्त यानि शीतली भूत हुए एव शारीरिक और मानसिक सभी दुखो से रहित होने से 'सर्व दुख प्रहीण' हुए अर्थात् वे गजसुकुमाल अणगार मोक्ष को प्राप्त हुए।

उस समय वहा समीपवर्ती देवो ने- "अहो! इन गजसुकुमाल मुनि ने श्रमण चारित्रधर्म की अत्यन्त उत्कृष्ट आराधना की है" यह जान कर अपनी वैक्रिय शक्ति के द्वारा दिव्य सुगन्धित अचित्त जल की तथा पाच वर्णो के दिव्य अचित्त फूलो एव वस्त्रो की वर्षा की और दिव्य मधुर गीतो तथा गन्धर्व वाद्यन्त्रो की ध्वनि से आकाश को गु जा दिया

सूत्र २४

तदनन्तर वह कृष्ण वासुदेव
दूसरे दिन प्रात काल सूर्योदय होने पर

उस रात्रि के व्यतीत होने के पश्चात् दूसरे दिन सूर्योदय की वेला मे कृष्ण वासुदेव

[मूल सूत्र पाठ]	[सस्कृत छाया]
जलते ण्हाए जाव विभूसिए,	ज्वलति स्नात यावत् विभूषितः
हत्थिक्खधवरगए,	हस्तिस्कन्धवरगतः,
सकोरटमल्लदामेण छत्त ेण	सकोरटकमाल्यदाम्ना छत्रेण
धरिज्जमाणेण सेयवरचामराहि	ध्रियमाणेन श्वेतवरचामरै.
उद्ध ुवमाणीहि	उद्ध ुवद्भि (उद्ध ूयमानै·)
महया भडचउगरपहकरवंद	महाभटचाटुकारप्रकरवृन्द
परिक्खित्ते	परिक्षिप्त
वारवई णयरी मज्झमज्झेण	द्वारावत्या· नगर्या· मध्यमध्येन
जेणेव अरहा अरिट्ठणेमी	यत्रैव अर्हन् अरिष्टनेमी
तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।	तत्रैव प्राधारयद् गमनाय ।
तएण से कण्हे वासुदेवे	तत· खलु स. कृष्णः वासुदेव·
वारवईए णयरीए मज्झंमज्झेणं	द्वारावत्या. नगर्याः मध्यमध्येन
णिग्गच्छमाणे एक्क पुरिसं	निर्गच्छन् एकं पुरुष
पासइ, जुण्ण	पश्यति, जीर्णम्
जराजज्जरिय देह जाव	जराजर्जरित देहं यावत्
किलत महई महालयाओ	क्लिन्नं (क्लान्त) महातिमहालयात्
इट्टगरासीओ एगमेग	इष्टकाराशेः एकामेकाम्
इट्टग गहाय बहिया	इष्टका गृहीत्वा बहि·
रत्थापहाओ अंतोगिह	रथ्यापथात् अन्तर्गृ हम्
अणुप्पविसमाण पासइ ।	अनुप्रवेशयन्तम् पश्यति ।
तएण से कण्हे वासुदेवे	तत· खलु स कृष्ण· वासुदेव·
तस्स पुरिसस्स अणुकपणट्ठाए,	तस्य पुरुषस्य अनुकपनार्थ
हत्थिक्खधवरगए चेव	हस्तिस्कन्धवरगतश्चैव
एग इट्टग गिण्हइ,	एकाम् इष्टका गृह् णाति,
गिण्हित्ता बहिया रत्थापहाओ	गृहीत्वा बहि·रथ्यापथात्
अतोगिह अणुप्पवेसेइ ।	अन्तर्गृ हम् अनुप्रवेशयति ।

[हिन्दी शब्दार्थ]

स्नान से निवृत्त हो यावत् वस्त्राभूषणों से भूषित हुआ
श्रेष्ठ हाथी पर सवार हुआ
कोरंट के फूलो की मालायुक्त
छत्र धारण किये हुए श्वेत चामरो से
वीजे जाते हुए तथा
बडे बडे योद्धाओ व सेवक
समूह से घिरे हुए
द्वारवती नगरी के बीचबीच से
जहाँ पर भगवान् अरिष्टनेमी थे
वहाँ ही जाने का निश्चय किया।
तदनन्तर वह कृष्ण वासुदेव
द्वारावती नगरी के मध्यभाग
से निकलते हुए एक पुरुष
को देखते है, वह अतिवृद्ध
जरा से जर्जरित देहवाला यावत्
थका हुआ था और जो बहुत
बडे ईटो के ढेर मे से एक एक
ईंट को लेकर बाहर गली के
रास्ते से घर के भीतर ले जा
रहा था, ऐसे को देखा।
तब उन कृष्ण वासुदेव ने
उस पुरुष की अनुकम्पा के लिये
हाथी पर बैठे हुए ही
एक ईट को उठाली,
उठाकर बाहर गली के रास्ते से
घर के भीतर पहुचा दी।

[हिन्दी अर्थ]

स्नान कर वस्त्रालकारो से विभूषित हो हाथी पर आरुढ होकर, कोरट पुष्पो की माला एव छत्र धारण किये हुए श्वेत एव उज्वल चामर अपने दाये बाये डुलवाते हुए अनेक बडे-बडे योद्धाओ के समूह से घिरे हुए द्वारिका नगरी के राजमार्ग से होते हुए जहा भगवान् अरिष्ट-नेमि विराजमान थे, वहा के लिए रवाना हुए।

तब उस कृष्ण वासुदेव ने द्वारिका नगरी के मध्य भाग से जाते समय एक पुरुष को देखा, जो अति वृद्ध, जरा से जर्जरित यावत् अति क्लान्त अर्थात् कुम्हलाया हुआ एव थका हुआ था। वह बहुत दुखी था। उसके घर के बाहर राजमार्ग पर ईटो का एक विशाल ढेर लाया हुआ पडा था जिसे वह वृद्ध एक-एक ईट करके अपने घर मे स्थानान्तरित कर रहा था।

उस दुखी वृद्ध पुरुष को इस तरह एक दो ईट लाते देखकर कृष्ण वासुदेव ने उस पुरुष के प्रति करुणार्द्र होकर उस पर अनुकम्पा करते हुए हाथी पर बैठे-बैठे ही उस ढेर मे से एक ईट उठाई और उसे ले जा कर उसके घर के अन्दर रख दिया तब कृष्ण वासुदेव को इस तरह ईट उठाते देखकर उनके साथ के अनेक सौ पुरुषो ने भी एक एक करके ईटो के उस सम्पूर्ण ढेर को तुरन्त बाहर से उठाकर उसके घर मे पहुचा दिया।

[मूल सूत्र पाठ]

तएणं कण्हेणं वासुदेवेणं
एगाए इट्टगाए गहियाए
समाणीए अणेगेहिं पुरिससएहिं
से महालए इट्टगस्स
रासी बहिया रत्थापहाओ
अंतोघरंसि अणुप्पवेसिए ।

[संस्कृत छाया]

ततः खलु कृष्णेन वासुदेवेन
एकस्याम् इष्टकाया गृहीताया
सत्याम् अनेकैः पुरुषशतैः
सा महती इष्टकायाः
राशिः बहिः रथ्यापथात्
अन्तर्गृहे अनुप्रवे[illegible] ।

सूत्र २५

तएणं से कण्हे वासुदेवे
बारवईए णयरीए मज्झमज्झेणं
णिग्गच्छइ, णिगच्छित्ता
जेणेव अरहा अरिट्ठणेमी
तेणेव उवागए, उवागच्छित्ता
जाव वंदित्ता णमसित्ता
गजसुकुमाल अणगार
अपासमाणे अरहं अरिट्ठणेमिं
वंदइ, णमसइ,
वंदित्ता, णमसित्ता एवं वयासी
कहिणं भंते ! से मम सहोयरे
भाया गयसुकुमाले अणगारे?
जण्णं अहं वंदामि णमसामि
तएणं अरहा अरिट्ठणेमी
कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—
साहिएणं कण्हा ! गयसुकुमालेणं
अणगारेणं अप्पणो अट्ठे ।
तएणं से कण्हे वासुदेवे
अरहं अरिट्ठणेमिं एवं वयासी—

ततः खलु सः कृष्णः वासुदेवः
द्वारावत्याः नगर्याः मध्यमध्येन
निर्गच्छति, निर्गत्य
यत्रैव अर्हन् अरिष्टनेमिः
तत्रैव उपागतः, उपागत्य
यावत् वंदित्वा नमस्यित्वा
गजसुकुमा[illegible] अनगारम्
अपश्यन् अर्हन्तम् अरिष्टनेमिनम्
वन्दते नमस्यति,
वन्दित्वा, नमस्यित्वा एवम् अवदत्
क्व खलु भदन्त ! सः मम सहोदरः
भ्राता गजसुकुमालः अनगारः
य खलु अहं वन्दे नमस्यामि
ततः खलु अर्हन् अरिष्टनेमिः
कृष्ण वासुदेवम् एवम् अवदत्
साधितः खलु कृष्ण ! गजसुकुमालेन
अनगारेन आत्मनः अर्थः ।
ततः खलु सः कृष्णः वासुदेवः
अर्हन्तम् अरिष्टनेमिनम् एवम् अवादीत्

[हिन्दी शब्दार्थ]

तब कृष्ण वासुदेव के द्वारा
एक ईट उठालेने पर
अनेक सैकडो पुरुषो द्वारा
वह बहुत बडा ईंटो का
ढेर बाहर गली मे से
घर के भीतर पहुँचा दिया गया ।

[हिन्दी अर्थ]

इस प्रकार श्री कृष्ण के एक ईट उठाने मात्र से उस वृद्ध जर्जर दुखी पुरुष का बार-बार चक्कर काटने का कष्ट दूर हो गया ।

सूत्र २५

तदनन्तर वह कृष्ण वासुदेव
द्वारिका नगरी के बीच मे से
निकल गये, निकल कर
जहाँ भगवान् अरिष्टनेमी थे
वहाँ आये, वहाँ आकर
यावत् वदना नमस्कार करके
गजसुकुमाल मुनि को नही
देखते हुए भगवान् अरिष्टनेमी को
वन्दना नमस्कार करते है
वन्दना नमस्कार करके इस प्रकार बोले
हे भगवन्! वह मेरा सहोदर
भाई गजसुकुमाल मुनि कहाँ है ?
जिसको मै वन्दना नमस्कार करूँ ।
तब भगवान् अरिष्टनेमी ने
कृष्ण वासुदेव को इस प्रकार कहा-
हे कृष्ण! गजसुकुमाल मुनि
ने अपना कार्य सिद्ध कर लिया ।
तब उस कृष्ण वासुदेव ने भगवान्
अरिष्टनेमी को इस प्रकार कहा-

तत्पश्चात् वह कृष्ण वासुदेव द्वारिका नगरी के मध्य भाग से निकलते हुए जहा भगवान् अरिष्टनेमि विराजते थे वहा आये। वहा आकर यावत् भगवान् को वन्दन नमस्कार किया तत्पश्चात् अपने सहोदर लघुभ्राता नवदीक्षित गजसुकुमाल मुनि को वन्दन नमस्कार करने के लिये उनको इधर-उधर देखा। जब उन्होने मुनि को वहा नही देखा तो भगवान् अरिष्टनेमि को पुन वन्दन-नमस्कार किया और वन्दन-नमन कर के भगवान् से इस प्रकार पूछा "प्रभो! वे मेरे सहोदर लघुभ्राता नवदीक्षित गजसुकुमाल मुनि कहा है ? मैं उनको वन्दना नमस्कार करना चाहता हू ।"

तब अर्हत् अरिष्टनेमि कृष्ण वासुदेव को इस प्रकार बोले—"हे कृष्ण! गजसुकुमाल मुनि ने जिस प्रयोजन के लिये सयम स्वीकार किया था, वह प्रयोजन, वह आत्मार्थ उन्होने सिद्ध कर लिया है ।"

यह सुनकर चकित होते हुए कृष्ण वासुदेव ने अर्हन्त प्रभु से प्रश्न किया "भगवन्!

[मूल सूत्र पाठ]

कहण्णं भन्ते ! गयसुकुमालेण
अणगारेण साहिए अप्पणो अट्ठे ।

[संस्कृत छाया]

कथ ु भदन्त! गजसुकुमालेन
अनगारेन साधितः आत्मनः अर्थ.?

सूत्र २६

तएण अरहा अरिट्ठणेमी
कण्ह वासुदेव एव वयासी—
एव खलु कण्हा! गजसुकुमालेणं
अणगारेण मम कल्ल
पुव्वावरण्ह काल समयसि
वदइ णमसइ,
वदित्ता णमसित्ता एव वयासी—
'इच्छामि णं जाव उ 'पज्जित्ताणं
विहरइ ।'
तएणं त गयसुकुमाल अणगार
एगे पुरिसे पासइ,
पासित्ता आसुरत्ते जाव सिद्धे ।
तं एव खलु कण्हा! गयसुकुमालेणं
अणगारेणं साहिए
अप्पणो अट्ठे । तएण से कण्हे
वासुदेवे अरहं अरिट्ठणेमि एव वयासी-
के स णं भते ! से पुरिसे
अप्पत्थिय पत्थए जाव परिवज्जिए,
जे ण ममं सहोदर कणीयस
भायर गयसुकुमाल अणगार
अकाले चेव जीवियाओ ववरोविए ?

तत खलु अर्हन् अरिष्टनेमी
कृष्णं वासुदेवम् एवम् अवादीत्-
एव खलु कृष्ण! गजसुकुमालेन
अनगारेन माम् कल्यं
पूर्वापराह्णकाल समये
वदते नमस्यति,
वन्दित्वा नमस्यित्वा एवम् ादीत्
इच्छामि ु यावत् उपसपद्य-
विहरति ।
ततः खलु त ! गजसुकुमालं अनगारं
एक. पुरुषः पश्यति,
दृष्ट्वा आशुरक्त. यावत् सिद्ध. ।
तदेव खलु कृष्ण ! गजसुकुमालेन
अनगारेण साधितः
आत्मन· अर्थ· । तत ु सः कृष्णः
अर्हन्तमरिष्टनेमिनं एवम् अवदत्-
(कीदृश·)क स नु भदन्त ! स पुरुषः
अप्रार्थित प्रार्थक. यावत् परिवर्जित ,
य खलु मम सहोदर कनीयास
भ्रातरं गजसुकुमालम् अनगार
अकाले चैव जीवितात् व्यपरोपित. ?

[हिन्दी शब्दार्थ]

हे भगवन् ! गजसुकुमाल मुनि
ने अपना कार्य कैसे सिद्ध कर लिया है ?

[हिन्दी अर्थ]

गजसुकुमाल मुनि ने अपना प्रयोजन, अपना आत्म कार्य सिद्ध कर लिया, यह कैसे ?"

सूत्र २६

तब भगवान् नेमीनाथ
कृष्ण वासुदेव को इस प्रकार बोले-
ऐसा है कृष्ण ! गजसुकुमाल
मुनि ने कल दिन के
पिछले भाग मे मुझको
वदन नमस्कार किया,
वन्दन नमस्कार करके इस प्रकार कहा
आपकी आज्ञा हो तो एक रात्रि की महा
प्रतिमा धारण करविचरना चाहता हूँ।
इसके बाद उस गजसुकुमाल मुनि को
एक पुरुष ने देखा, देख कर क्रुद्ध हुआ,
यावत् गजसुकुमाल मुनि
आयु पूर्ण कर सिद्ध हो गये।
इस प्रकार हे कृष्ण ! गजसुकुमाल
मुनि ने अपना कार्य
सिद्ध कर लिया। तब कृष्ण ने
भगवान् अरिष्टनेमी को इस प्रकार कहा
हे पूज्य ! वह अप्रार्थनीय-मृत्यु
को चाहने वाला यावत् लज्जारहित
कौन पुरुष है ? जिसने मेरे सहोदर
छोटे भाई गजसुकुमाल मुनि को
असमय ही जीवनसे वियुक्त कर दिया ?

अर्हत् अरिष्टनेमि ने कृष्ण वासुदेव को उत्तर दिया "हे कृष्ण ! वस्तुत कल दिन के अपराह्न काल के पूर्व भाग मे गजसुकुमाल मुनि ने मुझे वन्दन-नमस्कार किया। वन्दन-नमस्कार करके इस प्रकार निवेदन किया-"हे प्रभो ! आपकी आज्ञा हो तो मै महाकाल श्मशान मे एक रात्रि की महा भिक्षु प्रतिमा धारण करके विचरना चाहता हू।"

यावत् मेरी अनुज्ञा प्राप्त होने पर वह गजसुकुमाल मुनि महाकाल श्मशान मे जा कर भिक्षु की महाप्रतिमा धारण करके ध्यानस्थ खडे हो गये।

"इसके बाद उन गजसुकुमाल मुनि को एक पुरुष ने देखा और देखकर उन पर बडा क्रुद्ध हुआ।

पूर्व का वैर-भाव उसमे जागृत हुआ। वह क्रोध एव वैर से प्रेरित होकर पास के तालाब से गीली मिट्टी लाया और उन गज-सुकुमाल अणगार के सिर पर चारो ओर उस मिट्टी से पाल बाधी। फिर पास मे ही जलती हुई किसी की चिता से धधकते हुए लाल २ अगारो को किसी खप्पर मे या कि किसी फूटे हुए मिट्टी के बरतन के टुकडे मे भरकर उन अणगार के सिर पर बाधी गई उस मिट्टी की पाल मे डाल दिये।

इससे मुनि को असह्य वेदना हुई। परन्तु फिर भी उनने मन से भी उस घातक पुरुष

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
तएण अरहा अरिट्ठणेमी	ततः अर्हन् अरिष्टनेमिः
कण्हं वासुदेव एव वयासी–	कृष्णं वासुदेवं एवमवादीत्
मा ण कण्हा ! तुमं तस्स	मा खलु कृष्ण ! त्व तस्य
पुरिसस्स पओसमावज्जाहि,	पुरुषस्य उपरि द्वेषं कुरु
एव खलु कण्हा ! तेण पुरिसेणं	एव खलु कृष्ण ! तेन पुरुषेण
गयसुकुमालस्स अणगारस्स	गजसुकुमालाय अनगाराय
साहिज्जे दिण्णे ।	साहाय्य दत्तम् ।

सूत्र २७

कहण्ण भंते ! तेण पुरिसेणं	कथ भदन्त ! तेन पुरुषेण
गयसुकुमालस्स साहिज्जे	गजसुकुमालस्य साहाय्य
दिण्णे ? तए ण अरहा अरिट्ठणेमी	दत्तम् ? ततः खलु अर्हन् अरिष्ट
कण्हं वासुदेव एवम् वयासी—	नेमि कृष्ण वासुदेवम् एवम् अवदत्—
से णूण कण्हा ! तुम ममं	अथ नून कृष्ण ! त्व मम
पायवदए हव्वमागच्छमाणे	पादवदनाय शीघ्रमागच्छन्
बारवईए णयरीए एगं पुरिस	द्वारावत्या नगर्याम् एकं पुरुष
पाससि जाव अणुप्पवेसिए ।	पश्यसि, यावत् अनुप्रवेशित. ।

[हिन्दी शब्दार्थ]

तब अरिहंत अरिष्टनेमिनाथ

कृष्ण वासुदेव को इस प्रकार बोले-

हे कृष्ण ! तुम उस पुरुष के

ऊपर द्वेष मत करो,

हे कृष्ण ! इस प्रकार उस

पुरुष ने निश्चय ही गजसुकुमाल

मुनि को सहायता प्रदान की है।

[हिन्दी अर्थ]

के प्रति किंचित् मात्र भी द्वेष भाव नही किया। वे समभावपूर्वक उस भयकर वेदना को सहते रहे और इस तरह अत्यन्त शुभ परिणामो, शुभ भावो एव शुभ अध्यवसायो से सम्पूर्ण केवल ज्ञान और केवल दर्शन प्राप्त करके सिद्ध, बुद्ध और मुक्त हो गये। इस प्रकार हे कृष्ण ! उन गजसुकुमाल मुनि ने अपना प्रयोजन सिद्ध कर लिया। अपना आत्म कार्य सिद्ध कर लिया।"

यह सुनकर वह कृष्ण वासुदेव भगवान् नेमिनाथ को इस प्रकार पूछने लगे—

"हे पूज्य ! वह अप्रार्थनीय का प्रार्थी यानि मृत्यु को चाहने वाला यावत् निर्लज्ज पुरुष कौन है जिसने मेरे सहोदर लघु भ्राता गज-सुकुमाल मुनि का असमय मे ही प्राण-हरण कर लिया ?"

तब अर्हत् अरिष्टनेमि कृष्ण वासुदेव से इस प्रकार बोले—"हे कृष्ण ! तुम उस पुरुष पर द्वेष-रोष मत करो, क्योकि इस प्रकार उस पुरुष ने सुनिश्चितरूपेण गजसुकुमाल मुनि को अपना आत्म कार्य, अपना प्रयोजन सिद्ध करने मे सहायता प्रदान की है।"

सूत्र २७

कैसे हे पूज्य ! उस पुरुष ने

गजसुकुमाल को सहायता

दी ? तब भगवान् अरिष्टनेमी

ने कृष्ण वासुदेव कोइस प्रकार कहा—

हे कृष्ण ! मेरे चरण वन्दन को

शीघ्र आते हुए तुमने द्वारिका

नगरी मे एक वृद्ध पुरुष को देखा यावत्

ईट की ढेरी उसके घर मे रख दी।

यह सुनकर कृष्ण वासुदेव ने पुन प्रश्न किया—"हे पूज्य ! उस पुरुष ने गजसुकुमाल मुनि को सहायता दी यह कैसे ?"

इस पर अर्हत् अरिष्टनेमि ने कृष्ण वासुदेव को इस प्रकार स्पष्ट किया—

'हाँ कृष्ण ! निश्चय ही उसने सहायता की। मेरे चरण वदन हेतु शीघ्रतापूर्वक आते समय तुमने द्वारिका नगरी मे एक वृद्ध पुरुष को देखा और उसके घर के बाहर राजमार्ग पर पडी हुई ईटो की विशाल राशि मे से तुमने एक ईट उस वृद्ध के घर मे ले जाकर

[मूल सूत्र पाठ]	[सस्कृत छाया]
जहा ण कण्हा तुमं तस्स	यथा खलु कृष्ण त्वं तस्मै
पुरिसस्स साहिज्जे दिण्णे।	पुरुषाय साहाय्यं दत्तम् ।
एवमेव कण्हा ! तेण पुरिसेणं	एवमेव कृष्ण ! तेन पुरुषेण
गयसुकुमालस्स अणगारस्स	गजसुकुमालस्य अनगारस्य
अणेगभ यसहस्स-सञ्चिय	अनेक भवशतसह ंचित
कम्म उदीरेमाणेण	कर्म उदीरयता
बहुकम्मणिज्जरट्ठ साहिज्जे दिण्णे ।	बहुकर्मनिर्जरार्थं साहाय्यं दत्तम् ।
तए ण से कण्हे वासुदेवे	ततः सः कृष्णः वासुदेवः
अरह अरिट्ठणेमि एव वयासी—	अर्हन्तम् अरिष्टनेमि एवम् अवदत्
से ण भते ! पुरिसे मए कह	सः भदन्त ! पुरुष. मया कथं
जाणियव्वे ?	ज्ञातव्यः ?
तए ण अरहा अरिट्ठणेमी कण्हं	ततः अर्हन् अरिष्टनेमि.
वासुदेव एवं वयासी—	कृष्णं वासुदेवं एवमवदत्—
"जे ण कण्हा ! तुमं बारवईए	"यः खलु कृष्ण ! त्वा द्वारावत्या
णयरीए अणुप्पविसमाण	नगर्याम् अनुप्रवि न्तम्
पासित्ता ठियए चेव	दृष्ट्वा स्थित एव
ठिइभेएण काल करिस्सइ	स्थितिभेदेन काल करिष्यति
तएणं तुमं जाणिज्जासि	ततो नु त्व ज्ञास्यसि एष
एस ण से पुरिसे ।"	सः पुरुष. ।"

सूत्र २८

तए ण से कण्हे वासुदेवे अरहं	तत. कृष्णः वासुदेव. अर्हन्तम्
अरिट्ठणेमिं वदइ, णमंसइ,	अरिष्टनेमि वन्दते, नमस्यति,
वदित्ता, णमसित्ता,	वंदित्वा, नमस्यित्वा,
जेणेव	यत्रैव

[हिन्दी शब्दार्थ]

हे कृष्ण ! जैसे तुमने उस पुरुष के लिये सहायता दी, इस ही प्रकार हे कृष्ण ! उस पुरुष ने गजसुकुमाल मुनि को अनेक सैकडो-हजारो जन्मो के सचित कर्मों की उदीरणा करते हुए बहुत कर्म की निर्जरा के लिये सहयोग प्रदान किया है। फिर कृष्ण वासुदेव ने भगवान् अरिष्टनेमी को इस प्रकार कहा— हे भगवन् ! मै उस पुरुष को कैसे जान सकूँगा ? तब भगवान् अरिष्टनेमी ने कृष्ण वासुदेव को इस प्रकार कहा— हे कृष्ण ! जो तुम को द्वारिका नगरी मे प्रवेश करते हुए देखकर खड़ा-खडा ही स्थितिपूर्ण हो जाने से मृत्यु प्राप्त करेगा तब तूं जानेगा कि यह ही वह पुरुष है।

[हिन्दी अर्थ]

रख दी। तुम्हे एक ई ट रखते देखकर तुम्हारे साथ के सब पुरुषो ने भी उन ई टो को उठा उठा कर उस वृद्ध के घर मे पहुँचा दिया और ई टो की वह विशाल राशि इस तरह तत्काल राज मार्ग से उठकर उस वृद्ध के घर मे चली गई। इस तरह तुम्हारे इस सत्कर्म से उस वृद्ध पुरुष का उस ढेर की एक २ ई ट करके लाने का कष्ट दूर हो गया।"

"हे कृष्ण ! वस्तुत जिस तरह तुमने उस पुरुषका दु ख दूर करने मे उसकी सहायता की उसी तरह हे कृष्ण ! उस पुरुष ने भी अनेकानेक लाखो करोडो भवो के सचित कर्म की राशिकी उदीरणा करने मे सलग्न गजसुकुमाल मुनि को उन कर्मों की सम्पूर्ण निर्जरा करने मे सहायता प्रदान की है। तदनन्तर कृष्ण वासुदेव ने अर्हत् अरिष्टनेमि से इस प्रकार पूछा—

"हे भगवन् ! मैं उस पुरुष को किस प्रकार जान अथवा पहिचान सकूगा ?"

तब भगवान् अरिष्टनेमि कृष्ण वासुदेव से इस प्रकार बोले—"हे कृष्ण ! जो पुरुष तुम्हे द्वारिका नगरी मे प्रवेश करते हुए को देखकर खडा खडा ही आयु स्थिति पूर्ण हो जाने से मृत्यु को प्राप्त हो जाय—उसी को तुम समझ लेना कि निश्चय रूपेण यही वह पुरुष है।"

सूत्र २८

तदनन्तर कृष्ण वासुदेव भगवान् अरिष्टनेमिनाथ को वन्दना नमस्कार करता है, वन्दना नमस्कार करके जहा पर (गजराज पद पर)

तदनन्तर कृष्ण वासुदेव अरिहत अरिष्टनेमि को वन्दना नमस्कार कर जहा अभिषेक-योग्य हस्तिरत्न था वहा पहुच कर उस हाथी पर आरूढ हुए और द्वारिका नगरी मे स्थित अपने राजप्रासाद की ओर चल पडे।

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
आभिसेय हत्थिरयणं	आभिषेक्यं हस्तिरत्नं
तेणेव उवागच्छइ,	तत्रैव उपागच्छति,
उवागच्छित्ता हत्थि दुरुहइ	उपागत्य हस्तिन दूरोहति
दुरुहित्ता जेणेव वारवई णयरी, जेणेव	दुरुह्य यत्रैव द्वारावती नगरी
सए गिहे तेणेव	यत्रैव स्वक गृहम् तत्रैव
पहारेत्थ गमणाए ।	प्राधारयद् गमनाय ।
तए ण तस्स सोमिलस्स माहणस्स	तत. तस्य सोमिलस्य ब्राह्मणस्य
कल्ल जाव जलते	कल्ये यावत् ज्वलति
अयमेयारूवे अज्झत्थिए	अयमेतद्रूप. अध्याहारः
जाव समुप्पण्णे ।	यावत् समुत्पन्न. ।
एव खलु कण्हे वासुदेवे	एवं खलु कृष्णो वासुदेव
अरह अरिट्ठणेमि,	अर्हन्तम् अरिष्टनेमि
पायवदए णिग्गए	पादवंदनाय निर्गत.
त णायमेय अरहया,	तत् ज्ञातमेतद् अर्हता,
विण्णायमेय अरहया,	विज्ञातमेतत् अर्हता,
सुयमेय अरहया	श्रुतमेतद् अर्हता
सिट्ठमेय अरहया भविस्सइ	शिष्टमेतद् अर्हता भविष्यति
कण्हस्स वासुदेवस्स ।	कृष्णाय वासुदेवाय ।
त ण णज्जइ ण कण्हे वासुदेवे	तद् न ज्ञायते खलु कृष्णो वासुदेवः
मम केण वि कुमारेण मारिस्सइ	मां केनापि कुमारेण मारयिष्यति
त्ति कट्टु भीए सयाओ गिहाओ	इति कृत्वा भीतः स्वकात् गृहात्
पडिणिक्खमइ,	प्रतिनिष्क्रामति,
पडिणिक्खमित्ता कण्हस्स	प्रतिनिष्क्रम्य कृष्णस्य
वासुदेवस्स वारवई णयरी	वासुदेवस्य द्वारावत्यां नगर्याम्

[हिन्दी शब्दार्थ]

अभिषेक योग्य हस्तिरत्न था
वहाँ पर ही आता है,
आकर हाथी पर आरूढ होता है
आरूढ होकर जहाँ द्वारिका नगरी है
तथा जहाँ खुद का घर है वहाँ
जाने का निश्चय किया अर्थात् चल दिये।

उधर उस सोमिल ब्राह्मण
को (दूसरे दिन) सुबह होते ही
इस प्रकार का मानसिक सकल्प
उत्पन्न हुआ ।
निश्चय ही कृष्ण वासुदेव
अर्हन्त अरिष्टनेमि की पादवन्दना
के लिये गये होगे तब सर्वज्ञ होने
से यह सब भगवान् ने अवश्य
जान लिया होगा, विशेष रूप से
सब जान लिया होगा।
भगवान् ने यह सब सुन लिया है
और अवश्य ही कृष्णवासुदेव को
कह दिया होगा ।
तो न मालूम कृष्ण वासुदेव
मुझे किस कुमौत से मारेगे !
इस विचार से डरा हुआ अपने
घर से निकलता है,
निकलकर कृष्ण वासुदेव
के द्वारिका नगरी मे

[हिन्दी अर्थ]

उधर उस सोमिल ब्राह्मण के मन मे दूसरे दिन सूर्योदय होते ही इस प्रकार विचार उत्पन्न हुआ—निश्चय ही कृष्ण वासुदेव अरिहत अरिष्टनेमि के चरणो मे वदन करने के लिये गये होगे । भगवान तो सर्वज्ञ ह उनसे कोई बात छिपी नही है । उन प्रभु गजसुकुमाल की मृत्यु सम्बन्धी मेरे कुकृत्य का अरिष्टनेमि से उन्होने सब वृत्तान्त जान लिया होगा, (आद्योपान्त) पूर्णत विदित कर लिया होगा, यह सब भगवान से स्पष्ट समझ सुन लिया होगा । अर्हन्त अरिष्टनेमि ने अवश्यमेव कृष्ण वासुदेव को यह सब कुछ बता दिया होगा ।

"तो ऐसी स्थिति मे कृष्ण वासुदेव रुष्ट होकर मुझे न मालूम किस प्रकार की कुमौत से मारेगे ।" ऐसा विचार कर वह डरा और नगर से कही दूर भागने का निश्चय किया । उसने सोचा कि श्री कृष्ण तो राजमार्ग से लौटेगे । इसलिए मै किसी गली के रास्ते से निकल भागूँ और उनके लौटने से पूर्व ही निकल जाऊ । ऐसा सोच कर वह अपने घर से निकला और गली के रास्ते से भागा।

इधर कृष्ण वासुदेव भी अपने लघु सहोदर भाई गजसुकुमाल मुनि की अकाल-मृत्यु के शोक से विह्वल होनेके कारण राजमार्ग छोडकर उसी गली के रास्ते से लौट रहे थे।

[मूल सूत्र पाठ]	[सस्कृत छाया]
आभिसेय हत्थिरयण	आभिषेक्य हस्तिरत्नं
तेणेव उवागच्छइ,	तत्रैव उपागच्छति,
उवागच्छित्ता हत्थि दुरुहइ	उपागत्य हस्तिन दूरोहति
दुरुहित्ता जेणेव बारवई णयरी, जेणेव	दुरुह्य यत्रैव द्वारावती नगरी
सए गिहे तेणेव	यत्रैव स्वक गृहम् तत्रैव
पहारेत्थ गमणाए ।	प्राधारयद् गमनाय ।
तए ण तस्स सोमिलस्स माहणस्स	ततः तस्य सोमिलस्य ब्राह्मणस्य
कल्ल जाव जलते	कल्ये यावत् ज्वलति
अयमेयारूवे अज्झत्थिए	अयमेतद्रूप. अध्याहारः
जाव समुप्पण्णे ।	यावत् समुत्पन्नः ।
एव खलु कण्हे वासुदेवे	एवं खलु कृष्णो वासुदेव
अरह अरिट्ठणेमि,	अर्हन्तम् अरिष्टनेमि
पायवदए णिग्गए	पादवदनाय निर्गत.
त णायमेय अरहया,	तत् ज्ञातमेतद् अर्हता,
विण्णायमेय अरहया,	विज्ञातमेतत् अर्हता,
सुयमेय अरहया	श्रुतमेतद् अर्हता
सिट्ठमेय अरहया भविस्सइ	शिष्टमेतद् अर्हता भविष्यति
कण्हस्स वासुदेवस्स ।	कृष्णाय वासुदेवाय ।
त ण णज्जइ ण कण्हे वासुदेवे	तद् न ज्ञायते खलु कृष्णो वासुदेवः
मम केण वि कुमारेण मारिस्सइ	मा केनापि कुमारेण मारयिष्यति
त्ति कट्टु भीए सयाओ गिहाओ	इति कृत्वा भीत स्वकात् गृहात्
पडिणिक्खमइ,	प्रतिनिष्क्रामति,
पडिणिक्खमित्ता कण्हस्स	प्रतिनिष्क्रम्य कृष्णस्य
वासुदेवस्स बारवई णयरी	वासुदेवस्य द्वारावत्या नगर्याम्

[हिन्दी शब्दार्थ]

अभिषेक योग्य हस्तिरत्न था
वहाँ पर ही आता है,
आकर हाथी पर आरूढ होता है
आरूढ होकर जहाँ द्वारिका नगरी है
तथा जहाँ खुद का घर है वहाँ
जाने का निश्चय किया अर्थात् चल दिये।

उधर उस सोमिल ब्राह्मण
को (दूसरे दिन) सुबह होते ही
इस प्रकार का मानसिक सकल्प
उत्पन्न हुआ ।
निश्चय ही कृष्ण वासुदेव
अर्हन्त अरिष्टनेमि की पादवन्दना
के लिये गये होगे तब सर्वज्ञ होने
से यह सब भगवान् ने अवश्य
जान लिया होगा, विशेष रूप से
सब जान लिया होगा।
भगवान् ने यह सब सुन लिया है
और अवश्य ही कृष्णवासुदेव को
कह दिया होगा ।
तो न मालूम कृष्ण वासुदेव
मुझे किस कुमौत से मारेंगे !
इस विचार से डरा हुआ अपने
घर से निकलता है,
निकलकर कृष्ण वासुदेव
के द्वारिका नगरी मे

[हिन्दी अर्थ]

उधर उस सोमिल ब्राह्मण के मन मे दूसरे दिन सूर्योदय होते ही इस प्रकार विचार उत्पन्न हुआ—निश्चय ही कृष्ण वासुदेव अरिहत अरिष्टनेमि के चरणो मे वदन करने के लिये गये होगे । भगवान तो सर्वज्ञ है उनसे कोई बात छिपी नही है । उन प्रभु गजसुकुमाल की मृत्यु सम्बन्धी मेरे कुकृत्य का अरिष्टनेमि से उन्होने सब वृत्तान्त जान लिया होगा, (आद्योपान्त) पूर्णत विदित कर लिया होगा, यह सब भगवान से स्पष्ट समझ सुन लिया होगा । अर्हन्त अरिष्टनेमि ने अवश्य-मेव कृष्ण वासुदेव को यह सब कुछ बता दिया होगा ।

"तो ऐसी स्थिति मे कृष्ण वासुदेव रुष्ट होकर मुझे न मालूम किस प्रकार की कुमौत से मारेंगे ।" ऐसा विचार कर वह डरा और नगर से कही दूर भागने का निश्चय किया । उसने सोचा कि श्री कृष्ण तो राजमार्ग से लौटेंगे । इसलिए मैं किसी गली के रास्ते से निकल भागूँ और उनके लौटने से पूर्व ही निकल जाऊ । ऐसा सोच कर वह अपने घर से निकला और गली के रास्ते से भागा।

इधर कृष्ण वासुदेव भी अपने लघु सहोदर भाई गजसुकुमाल मुनि की अकाल-मृत्यु के शोक से विह्वल होनेके कारण राजमार्ग छोड़-कर उसी गली के रास्ते से लौट रहे थे।

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
अणुप्पविसमाणस्स पुरओ सपक्खिं सपडिदिसं हव्वमागए ।	अनुप्रवि न्तं पुरतः सपक्षं तिदि शीघ्रमागतः ।

सूत्र २६

तए ण से सोमिले माहणे कण्हं वासुदेवं सहसा पासित्ता भीए, ठियए चेव ठिइभेएण कालं करेइ, करित्ता धरणितलसि सव्वगेहि धसत्ति सण्णिवडिए ।	. सः सोमिलः ब्राह्मणः कृष्णं वासुदेवं सहसा दृष्ट्वा भीतः, स्थितः एव स्थितिभेदेन कालं करोति, कृत्वा धरणीतले सर्वांगैः 'धस' इति सनिपतितः ।
तएणं से कण्हे वासुदेवे सोमिलं माहण पासइ, पासित्ता एव वयासी— एस ण भो देवाणुप्पिया ! से सोमिले माहणे अपत्थिय पत्थए जाव परिवज्जिए ।	तत. स. कृष्णः वासुदेवः सोमिलं ब्राह्मण पश्यति, दृष्ट्वा एवमवादीत्— एष भो देवानुप्रिया ! सः सोमि : ब्राह्मण. अप्रार्थित प्रार्थकः यावत् परिवर्जित. ।
जेण मम सहोयरे कणीयसे भायरे गयसुकुमाले अणगारे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविए, त्ति कट्टु सोमिल माहण पाणेहि कड्ढावेइ, कड्ढावित्ता, त भूमिं पाणिएण अब्भुक्खावेइ, अब्भुक्खावित्ता, जेणेव सए	येन मम सहोदरः कनीयान् भ्राता गजसुकुमाल. अनगार अकाले चैव जीवितात् व्यपरोपित , इति उक्त्वा सोमिल ब्राह्मणं पाणै. कर्षयति, कर्षयित्वा, ता भूमिं पानीयेन अभ्युक्षयति, अभ्युक्ष्य, यत्रैव स्वकं

[हिन्दी शब्दार्थ]

प्रवेश करते हुए के सामने
बराबर दिशा और पक्ष मे
शीघ्र आ गया ।

[हिन्दी अर्थ]

जिससे सयोगवश कृष्ण वासुदेव के द्वारिका नगरी मे प्रवेश करते समय उनके सामने ही वह आ निकला ।

सूत्र २६

तब वह सोमिल ब्राह्मण कृष्ण
वासुदेव को अचानक देखकर
भयभीत हुआ
खडा-खडा ही स्थितिभेद
से मृत्यु को प्राप्त हो गया
तथा मरकर पृथ्वी पर
अंगो से 'धम' से गिर गया ।
तब कृष्ण वासुदेव ने सोमिल
ब्राह्मण को देखा
देखकर इस प्रकार कहा—
हे देवानुप्रियो ! यह वह सोमिल
ब्राह्मण र्थनीय (मृत्यु) को चाहने
वाला (लज्जा व शोभा से रहित है ।)
जिसने मेरे सहोदर छोटे भाई
गजसुकुमाल मुनि को असमय
मे ही जीवन से विमुक्त कर दिया ।
यह कह कर सोमिल ब्राह्मण को
चाडालो से घिसटवाकर हटवाया,
हटवाकर, उस भूमि को जल से
धुलवाते है
धुलवा कर जहाँ अपना

तब उस समय वह सोमिल ब्राह्मण कृष्ण वासुदेव को सहसा सम्मुख देखकर भयभीत हुआ और जहाँ-का-तहाँ स्तम्भित खडा रह गया और वही खडे-खडे ही स्थिति भेद से अपना आयुष्य पूर्ण हो जाने से सर्वांग शिथिल हो वह सोमिल 'धस' शब्द करते हुए मर कर वही भूमि-तल पर गिर पडा ।

उस समय कृष्ण वासुदेव सोमिल ब्राह्मण को मर कर गिरता हुआ देखते है और देख-कर इस प्रकार बोलते है—

"अरे ओ देवानुप्रियो ! यही वह अप्रार्थ-नीय को चाहने वाला मृत्यु की इच्छा करने वाला तथा लज्जा एव शोभा से रहित सोमिल ब्राह्मण है, जिसने मेरे सहोदर छोटे भाई गजसुकुमाल मुनि को असमय मे ही काल का ग्रास बना डाला ।" ऐसा कहकर कृष्ण वासु-देव ने सोमिल ब्राह्मण के उस शव को चाडालो के द्वारा घसीटवा कर नगर के बाहर फिकवा दिया और उसके शव को फिकवा कर उस शव से स्पर्श की गई सारी भूमि को पानी से धुलवाया । उस भूमि को पानी से धुलवाकर कृष्ण वासुदेव अपने राजप्रासाद मे पहुँचे और अपने आगार मे प्रवेश किया ।

[मूल सूत्र पाठ] [संस्कृत छाया]

गिहे तेणेव उवागए
सयं गिहं अणुप्पविट्ठे ।
एवं खलु जम्बू ! समणेणं
भगवया जाव संपत्तेणं
अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं
तच्चस्स वग्गस्स अट्ठमस्स
अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

गृह तत्रैव उपा :
स्वकं गृहं अनुप्रविष्टः ।
एवं खलु जम्बू ! श्रमणेन
भगवता त् संप्राप्तेन
अष्टमस्य अंगस्य अन्तकृद्दशानाम्
तृतीयस्य वर्गस्य अष्टमस्य
अध्ययनस्य अयमर्थः प्र : ।

इति अ ध्ययनं प्तम्
अथ न ाध्ययनम्

णवमस्स उक्खे ो ।
एवं खलु जम्बू ! तेणं कालेणं
तेणं समएणं वारवईए णयरीए
जहा पढमे जाव विहरइ ।

नवमस्य उत्क्षेपकः ।
एव खलु जम्बू ! तस्मिन् काले
तस्मिन् समये द्वारावत्या नगर्या
यथा प्रथमे यावत् विहरति ।

तत्थ ण वारवईए बलदेवे
णाम राया होत्था,
वण्णओ ।

तत्र द्वारावत्या बलदेवो
नाम राजा अभवत्,
वर्ण्य ।

तस्स ण बलदेवस्स रण्णो
धारिणी णाम देवी होत्था,
वण्णओ ।
तए ण सा धारिणी सीह

तस्य बलदेवस्य राज्ञः
धारिणी नामा देवी (राज्ञी)आसीत्,
वर्ण्या ।
तत. सा धारिणी सिंह

[हिन्दी शब्दार्थ]

घर है वहाँ आये, और
अपने घर मे (महल मे) चले गये।
इस प्रकार हे जम्बू! श्रमण भगवान्
जो मोक्ष पधारे है, उन प्रभु ने
आठवे अग अतगडदशा सूत्र
के तीसरे वर्ग के आठवे अध्य-
यन का यह अर्थ कहा है।

[हिन्दी अर्थ]

इस प्रकार हे जम्बू! श्रमण भगवान् महावीर ने, जो कि सिद्ध, बुद्ध मुक्त हुए, आठवे अङ्ग के तीसरे वर्ग के आठवें अध्याय का यह भाव श्रीमुख से कहा।

अष्टमाध्ययनम् समाप्तम्

नवमां अध्ययन

नवम अध्ययन का प्रारम्भ।
इस प्रकार हे जम्बू! उस काल व
उस समय द्वारिका नगरी मे
जैसा प्रथम अध्ययन मे कहा गया है
उसी प्रकार भगवान् नेमिनाथ
विचरण करते हुए वहाँ पधारे।
वहाँ द्वारिका नगरी मे बलदेव
नामक राजा था,
जो कि वर्णनीय था।
उस बलदेव राजा के
धारिणी नाम की रानी थी,
वह बहुत वर्णनीय थी,
फिर उस धारिणी रानी ने
सिह का स्वप्न देखा, तदनन्तर
पुत्र जन्म आदि का वर्णन

यहाँ उत्क्षेपक शब्द के प्रयोग से यह आशय समझना चाहिए कि श्री जम्बू स्वामी अपने स्वामी सुधर्मा से पूर्वानुसार फिर आगे पूछते है कि-"हे भगवन्! श्रमण भगवान् महावीर स्वामी ने अन्तगडदशाँग सूत्र के तीसरे वर्ग के आठवे अध्ययन के जो भाव कहे वे मैने आपसे सुने। हे भगवन्! अब आगे नवमे अध्ययन के उन्होने क्या भाव कहे है? यह भी मुझे बताने की कृपा करे।" श्री सुधर्मा स्वामी—हे जम्बू! उस काल उस समय मे द्वारिका नामक एक नगरी थी जिसका वर्णन पूर्व मे किया जा चुका है। एक दिन भगवान् अरिष्टनेमि तीर्थंकर परम्परा से विचरते हुए उस नगरी मे पधारे।

द्वारिका नगरी मे बलदेव नाम के एक राजा थे। उनकी रानी का नाम 'धारिणी' था, वह अत्यन्त सुकोमल, सुन्दर एव गुण सम्पन्न थी। एक समय सुकोमल शय्या पर सोई हुई उस धारिणी ने रात को स्वप्न मे सिह देखा। स्वप्न देखकर वह जग गई। उसी समय अपने पति के पास जाकर स्वप्न का वृत्तान्त उन्हे सुनाया। गर्भ समय पूर्ण होने पर स्वप्न के

[मूल सूत्र पाठ]	[सस्कत छाया]
गिहे तेणेव उवागए	गृहं तत्रैव उपागत.
सयं गिहं अणुप्पविट्ठे ।	स्वकं गृहं अनुप्रविष्टः ।
एवं खलु जम्बू ! समणेणं	एवं खलु जम्बू ! श्रमणेन
भगवया जाव सपत्तेणं	भगवता यावत् संप्राप्तेन
अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं	य अंगस्य अन्तकृद्दशानाम्
तच्चस्स वग्गस्स अट्ठमस्स	तृतीयस्य वर्गस्य अष्टमस्य
अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।	अध्ययनस्य अयमर्थः प्र : ।

इति अ ध्ययनं

अथ न ध्ययनम्

णवमस्स उक्खे ो ।	नवमस्य उत्क्षेपकः ।
एवं खलु जम्बू ! तेण कालेणं	एवं खलु जम्बू ! तस्मिन् काले
तेणं समएण वारवईए णयरीए	तस्मिन् समये द्वारावत्या नगर्या
जहा पढमे जाव विहरइ ।	यथा प्रथमे यावत् विहरति ।
तत्थ ण वारवईए बलदेवे	तत्र द्वारावत्यां बलदेवो
णाम राया होत्था,	नाम राजा अभवत्,
वण्णओ ।	वर्ण्य. ।
तस्स ण बलदेवस्स रण्णो	तस्य बलदेवस्य राज्ञः
धारिणी णाम देवी होत्था,	धारिणी नामा देवी (राज्ञी) आसीत्,
वण्णओ ।	वर्ण्या ।
तए ण सा धारिणी सीह	ततः सा धारिणी सिंहं

[हिन्दी शब्दार्थ]

घर है वहाँ आये, और
अपने घर मे (महल मे) चले गये ।
इस प्रकार हे जम्बू ! श्रमण भगवान्
जो मोक्ष पधारे है, उन प्रभु ने
आठवे अग अंतगडदशा सूत्र
के तीसरे वर्ग के आठवे अध्य-
यन का यह अर्थ कहा है ।

[हिन्दी अर्थ]

इस प्रकार हे जम्बू ! श्रमण भग
महावीर ने, जो कि सिद्ध, बुद्ध मुक्त हुए, अ
अङ्ग के तीसरे वर्ग के आठवे अध्याय क
भाव श्रीमुख से कहा ।

अष्टमाध्ययनम् समाप्तम्

नवमां अध्ययन

नवम अध्ययन का प्रारम्भ ।
इस प्रकार हे जम्बू ! उस काल व
उस समय द्वारिका नगरी मे
जैसा प्रथम अध्ययन मे कहा गया है
उसी प्रकार भगवान् नेमिनाथ
विचरण करते हुए वहाँ पधारे ।
वहाँ द्वारिका नगरी मे बलदेव
नामक राजा था ,
जो कि वर्णनीय था ।
उस बलदेव राजा के
धारिणी नाम की रानी थी,
वह बहुत वर्णनीय थी,
फिर उस धारिणी रानी ने
सिह का स्वप्न देखा, तदनन्तर
पुत्र जन्म आदि का वर्णन

यहाँ उत्क्षेपक शब्द के प्रयोग से
आशय समझना चाहिए कि श्री जम्बू स
अपने स्वामी सुधर्मा से पूर्वानुसार फिर
पूछते है कि-"हे भगवन् ! श्रमण भ
महावीर स्वामी ने अन्तगडदशांग सू
तीसरे वर्ग के आठवे अध्ययन के जो भाव
वे मैने आपसे सुने । हे भगवन् !
आगे नवमे अध्ययन के उन्होने
भाव कहे है ? यह भी मुझे बताने की
करे ।" श्री सुधर्मा स्वामी—हे जम्बू !
काल उस समय मे द्वारिका नामक एक
थी जिसका वर्णन पूर्व मे किया जा चुक
एक दिन भगवान् अरिष्टनेमि ती
परम्परा से विचरते हुए उस नगरी मे प

द्वारिका नगरी मे बलदेव नाम के
राजा थे । उनकी रानी का नाम 'धारिणी
वह अत्यन्त सुकोमल, सुन्दर एव गुण स
थी । एक समय सुकोमल शय्या पर सो
उस धारिणी ने रात को स्वप्न मे सिह
स्वप्न देखकर वह जग गई । उसी समय
पति के पास आकर स्वप्न का वृत्तान्त
सुनाया । गर्भ समय पूर्ण होने पर स्व

[मूल सूत्र पाठ]	[सस्कृत छाया]
सुमिणे, जहा गोयमे	स्वप्ने, यथा गौतमः
णवर सुमुहे णाम कुमारे,	(नवीनम्) विशेषस्तु सुमुखो नाम कुमारः
पण्णासं कण्णाओ,	पञ्चाशत् कन्यका. (परिणीतवान्)
पण्णासं दाओ,	(परिणये) पञ्चाशत् दायः,
चोद्दस पुव्वाइ अहिज्जइ,	चतुर्दश पूर्वाणि अधीते,
वीस वासाइं परियाओ,	विशति वर्षाणि (दीक्षा) पर्यायः,
सेस त चेव जाव सेत्तु जे	शेष तदेव यावत् शत्रुञ्जये
सिद्धे निक्खेवओ।	सिद्धः निक्षेपकः।

इति नवमाध्ययनम्

अथ अध्ययन १०, ११, १२, एव १३

एव दुम्मुहे वि, कूवदारए वि।	एव दुर्मुखोऽपि कूपदारकोऽपि।
दोण्ह वि बलदेवे पिया,	द्वयोरपि बलदेवः पिता,
धारिणी माया। १०-११।	धारिणी माता। १०-११।
दारुए वि एव चेव,	दारुकः अपि एवमेव
णवर वसुदेवे पिया,	विशेष. वसुदेवः पिता,
धारिणी माया। १२।	धारिणी माता। १२।
एवं अणादिट्ठी वि,	एव अनादृष्टि. अपि
वसुदेवे पिया धारिणी माया। १३।	वसुदेवः पिता धारिणी। १३।
एव खलु जम्बू !	एव खलु जम्बू !
समणेण जाव सम्पत्तेणं	श्रमणेन यावत् (मुक्ति) सम्प्राप्तेन
अट्ठमस्स अगस्स अंतगडदसाणं	मस्य अगस्य अन्तकृद्दशाना

[हिन्दी शब्दार्थ]

गौतम कुमार की तरह जानना चाहिये। विशेष, कुमार का नाम सुमुख रखा गया पचास कन्याओ का पाणिग्रहण किया, पचास (करोड) दहेज प्राप्त हुआ, चौदह पूर्व का अध्ययन किया बीस वर्ष दीक्षा पर्याय चला शेष उसी प्रकार यावत् शत्रुञ्जय पर्वत पर सिद्ध हुए। निक्षेपक।

[हिन्दी अर्थ]

अनुसार उनके यहाँ एक पुण्यशाली पुत्र उत्पन्न हुआ। इसके जन्म, बाल्यकाल आदि का वर्णन गौतम कुमार के समान समझना। विशेष मे उस बालक का नाम 'सुमुख' रखा गया। युवा होने पर पचास कन्याओ के साथ उसका पाणिग्रहण सस्कार हुआ। विवाह मे पचास-पचास करोड सोनैया आदि का दहेज उसे मिला। भ० अरिष्टनेमि के किसी समय वहाँ पधारने पर उनका धर्मोपदेश सुन-कर सुमुख कुमार उनके पास दीक्षित हो गया। दीक्षित होकर चौदह पूर्व का ज्ञान पढा। बीस वर्ष तक श्रमण दीक्षा पाली। अन्त मे गौतम कुमार की तरह सलेखणा यावत् सथारा करके शत्रु जय पर्वत पर सिद्ध हुए। हे जम्बू ! श्रमण भगवान् महावीर ने अन्तगडदशा के तीसरे वर्ग के नव मे अध्ययन का उपरोक्त भाव का।"

नवमाध्ययन समाप्त

अध्ययन १०, ११, १२, एव १३

इसी प्रकार दुर्मुख और कूपदारक कुमार का वर्णन जानना चाहिये। दोनो के भी बलदेव पिता और धारिणी माता थी। १०-११। दारुक भी इसी प्रकार है विशेष यह है कि वासुदेव पिता और धारिणी माता है। १२। इसी प्रकार अनादृष्टि कुमार भी वासुदेव पिता धारिणी माता है। १३। इस प्रकार हे जम्बू ! श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने आठवें अग अतगडदशा

जिस प्रकार प्रभु ने नवमे अध्ययन का भाव फरमाया है, उसी प्रकार दसवे 'दुर्मुख' और ग्यारहवे 'कूवदारक' का भी वर्णन समझना। फर्क इतना सा है कि दोनो के 'बलदेव' महाराज पिता और 'धारिणी' माता थी बाकी इनका सारा वर्णन 'सुमुख' के वर्णन के समान ही है।

इसी तरह बारहवे 'दारुक' और तेरहवे 'अनाहष्टि कुमार' का वर्णन भी समझना। इसमे अन्तर केवल इतना ही है कि इनके 'वसुदेव' पिता और 'धारिणी' माता थी।

श्री सुधर्मा—"इस तरह हे जम्बू ! श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने आठवे अग अतगड-

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
तच्चस्स वग्गस्स तेरसमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।	तृतीयस्य वर्गस्य त्रयोदशस्य अध्ययनस्य अयमर्थः प्रज्ञप्त. ।

तृतीय वर्गः समाप्तः

अथ चतुर्थः वर्ग :

जइण भते ! समणेण जाव संपत्तेण अट्ठमस्स अगस्स अतगडदसाण तच्चस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते । चउत्थस्स णं भते! वग्गस्स अन्तगडदसाण समणेण जाव संपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ?	यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन यावत् सप्राप्तेन मस्य अगस्य अंतकृद्दशाना तृतीयस्य वर्गस्य अयमर्थः प्रज्ञप्तः । चतुर्थस्य खलु भदन्त ! वर्गस्य अन्तकृद्दशाना श्रमणेन यावत् सप्राप्तेन कोऽर्थः प्र : ?
एव खलु जम्बू ! समणेण जाव सपत्तेण चउत्थस्स वग्गस्स अन्तगडदसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता तं जहा—	एव खलु जम्बू ! श्रमणेन यावत् सप्राप्तेन चतुर्थस्य वर्गस्य अंतकृद्दशानां दशानि अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि तानि यथा—
जालि मयालि उवयालि, पुरिससेणे य वारिसेणे य । पज्जुण्ण सब अणिरुद्धे, सच्चणेमी य दढणेमी ।१।	जालिर्मयालिरुवयालि, पुरुषसेनश्च वारिसेनश्च । ुम्नः साम्बोऽनिरुद्ध सत्यनेमिश्च दृढनेमिः ।१।
जइण भन्ते ! समणेण जाव सपत्तेणं चउत्थस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता ।	यदि भदन्त ! श्रमणेन यावत् संप्राप्तेन चतुर्थस्य वर्गस्य दशानि अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि ।

[हिन्दी शब्दार्थ]

सूत्र के तीसरे वर्ग के तेरहवे अध्ययन का यह भाव कहा है ।

[हिन्दी अर्थ]

दशा सूत्र के तीसरे वर्ग के एक से लेकर तेरह अध्ययनो कायह भाव फरमाया है ।

तृतीय वर्ग. समाप्तः

अथ चतुर्थ वर्गः

सूत्र १

यदि हे भगवन् !
श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने
आठवे अंग अतगडदशासूत्र
के तीसरे वर्ग का यह अर्थ फरमाया है ।
हे पूज्य ! श्रमण भगवान यावत् मुक्ति
प्राप्त प्रभु ने अतगडदशा सूत्र के
चतुर्थ वर्ग का क्या अर्थ (भाव) कहा है ।

इस प्रकार हे जम्बू !
श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने
अन्तगडदशासूत्र के चतुर्थ वर्ग के दस
अध्ययन कहे है । जो इस प्रकार है —

१ जालि, २ मयालि, ३ उपयालि,
४. पुरुषसेन और ५ वारिसेन ।
६ प्रद्युम्न, ७ साम्ब, ८ अनिरुद्ध,
९ सत्यनेमि और १० दृढनेमि ।

श्री जम्बू स्वामी—"हे भगवन् ! श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने आठवे अग अतकृतदशा के तीसरे वर्ग का जो वर्णन किया वह आपके श्रीमुख से सुना ।

अब अतगडदशा के चौथे वर्ग के हे पूज्य ! श्रमण भगवान् ने क्या भाव दर्शाये है यह भी मुझे बताने की कृपा करे ।"

श्री सुधर्मा—"हे जम्बू ! श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने अतगडदशा के चौथे वर्ग मे दश अध्ययन कहे है जो इस प्रकार है—

१ जालि कुमार, २ मयालि कुमार, ३ उवयालि कुमार, ४ पुरुषसेन कुमार, ५ वारिसेन कुमार, ६ प्रद्युम्न कुमार, ७ शाम्ब कुमार, ८ अनिरुद्ध कुमार, ९. सत्यनेमि कुमार, १० दृढनेमि कुमार ।

श्री जम्बू—"हे भगवन् ! श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने चौथे वर्ग मे दश अध्ययन कहे है । तो उनमे से हे पूज्य ! प्रथम

सूत्र २

हे भगवन् ! यदि
श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने
चतुर्थ वर्ग के दस अध्ययन कहे है ।

अध्ययन का श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने क्या अर्थ बताया है ।"

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
पढमस्स णं भन्ते !	प्रथमस्य खलु भदन्त !
अज्झयणस्स समणेणं	अध्ययनस्य श्रमणेन यावत्
जाव सपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?	संप्राप्तेन कः अर्थः प्रज्ञप्तः ?
एव खलु जम्बू !	एवं खलु जम्बू !
तेणं कालेणं तेणं एणं	तस्मिन् काले तस्मिन् समये
वारवई णाम णयरी होत्था,	द्वारावती नाम नगरी अभवत्,
जहा पढमे ।	यथा प्रथमे ।
कण्णे वासुदेवे आहेवच्च जाव विहरइ ।	कृष्णःवासुदेवःआधिपत्यं विहरति।

३

तत्थ णं वारवईए णयरीए	तत्र खलु द्वारावत्या नगर्या
वसुदेवे राया, धारिणी देवी ।	वसुदेवः राजा धारिणी देवी ।
वण्णओ ।	वर्ण्यः ।
जहा गोयमो,	यथा गौतमः,
णवरं जालि कुमारे	विशेषस्तु जालिकुमारः
पण्णासओ दाओ ।	पंचा दायः
वारसगी सोलस्स ।	द्वादशागी, षोडश वर्षाणि
परियाओ सेसं जहा गोयमस्स	पर्यायः शेषं यथा गौतमस्य
जाव सेत्तु जे सिद्धे ।	यावत् शत्रुंजये सिद्धः ।
एवं मयालि, उवयालि,	एव मयालिः उववालिः
पुरिससेणे, वारिसेणे य ।	पुरुषसेन. वारिसेनश्च ।

[हिन्दी शब्दार्थ]

तो हे भगवन् ! प्रथम
अध्ययन का श्रमण यावत्
मुक्ति प्राप्त प्रभु ने क्या अर्थ कहा है?
इस प्रकार हे जम्बू !
उस काल उस समय मे
द्वारिका नाम की नगरी थी,
जैसे प्रथम अध्याय मे वर्णन
किया गया है उसी प्रकार ।
कृष्ण वासुदेव वहा राज्य करते थे ।२।

[हिन्दी अर्थ]

श्री सुधर्मा स्वामी—"हे जम्बू ! उस काल व उस समय मे द्वारिका नाम की एक नगरी थी, जिसका वर्णन प्रथम वर्ग के प्रथम अध्ययन मे किया जा चुका है । श्री कृष्ण वासुदेव वहाँ राज्य कर रहे थे ।"

"उस द्वारिका नगरी मे महाराज 'वसुदेव' और रानी 'धारिणी' निवास करते थे ।

रानी धारिणी अत्यन्त सुकुमार, सुन्दर और सुशीला थी । एक समय कोमल सेज पर सोती हुई उस धारिणी रानी ने सिह का स्वप्न देखा । उस स्वप्न का वृत्तान्त अपने पतिदेव को सुनाया ।

सूत्र ३

वहा द्वारिका नगरी मे
ुदेव राजा धारिणी रानी,
जो कि वर्णन योग्य थे ।
गौतम कुमार के समान
विशेष यह कि जालिकुमार ने
युवावस्था प्राप्तकर पचास कन्याओ
से विवाह किया तथा पचास
करोड़ का दहेज मिला ।
जालि मुनि ने भी बारह अगो का
ज्ञान सीखा, सोलह वर्ष की
दीक्षा पर्याय का पालन किया,
शेष सब जैसे गौतम कुमार की
तरह यावत् शत्रु जय पर्वत
पर जाकर सिद्ध हुए ।
इसी प्रकार मयालि कुमार
उवयालि कुमार, पुरुषसेन
और वारिसेन का वर्णन
जानना चाहिये ।

इसके वाद पूर्व मे वर्णित गौतम कुमार की तरह उनके एक तेजस्वी पुत्र का जन्म हुआ, जिसका नाम 'जालि कुमार' रखा गया । जब वह युवावस्था को प्राप्त हुआ, तब उसका विवाह पचास कन्याओ के साथ किया गया और उन्हे पचास-पचास करोड सौनैया आदि का दहेज मिला ।

एक समय भगवान् अरिष्टनेमि वहाँ पधारे । उनकी अमोघ वाणी द्वारा धर्मोपदेश सुनकर जालि कुमार को ससार से विरक्ति हो गई । माता-पिता की आज्ञा लेकर उन्होने अर्हन्त अरिष्टनेमि के पास अर्हत दीक्षा अगीकार की । उन्होने बारह अगो का अध्ययन किया और १६ वर्ष पर्यन्त श्रमण दीक्षा पर्याय पाली ।

फिर गौतम कुमार की तरह इन्होने भी सलेखना आदि करके शत्रु जय पर्वत पर एक मास का सथारा किया और सब कर्मो से मुक्त होकर सिद्ध हुए ।

इसी प्रकार मयालिकुमार २, उवयालि कुमार ३, पुरुष सेन कुमार ४, और वारिसेन कुमार ५, के जीवन वर्णन भी समझने

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
पढमस्स णं भन्ते !	प्रथमस्य खलु भदन्त !
अज्झयणस्स समणेणं	अध्ययनस्य श्रमणेन यावत्
जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ?	संप्राप्तेन कः अर्थः प्रज्ञप्तः ?
एव खलु जम्बू !	एव खलु जम्बू !
तेणं कालेणं तेणं समएणं	तस्मिन् काले तस्मिन् समये
वारवई णाम णयरी होत्था,	द्वारावती नाम नगरी अभवत्,
जहा पढमे ।	यथा प्रथमे ।
कण्णे वासुदेवे आहेवच्चं जाव विहरइ ।	कृष्णःवासुदेवःआधिपत्य यावत् विहरति।

सूत्र ३

तत्थ णं वारवईए णयरीए	तत्र खलु द्वारावत्यां नगर्या
वसुदेवे राया, धारिणी देवी ।	वसुदेवः राजा धारिणी देवी ।
वण्णओ ।	वर्ण्य : ।
जहा गोयमो,	यथा गौतमः,
णवरं जालि कुमारे	विशेषस्तु जालिकुमार :
पण्णासओ दाओ ।	पचाशत् दायः
बारसगी सोलस्स वासा	द्वादशागी, षोडश वर्षाणि
परियाओ सेस जहा गोयमस्स	पर्यायः शेषं यथा गौतमस्य
जाव सेत्तु जे सिद्धे ।	यावत् ुजये सिद्धः ।
एव मयालि, उवयालि,	एव मयालिः उववालि.
पुरिससेणे, वारिसेणे य ।	पुरुषसेन. वारिसेनश्च ।

[हिन्दी शब्दार्थ]

तो हे भगवन् ! प्रथम
अध्ययन का श्रमण यावत्
मुक्ति प्राप्त प्रभु ने क्या अर्थ कहा है ?
इस प्रकार हे जम्बू !
उस काल उस समय मे
द्वारिका नाम की नगरी थी,
जैसे प्रथम अध्याय मे वर्णन
किया गया है उसी प्रकार ।
कृष्ण वासुदेव वहा राज्य करते थे ।२।

[हिन्दी अर्थ]

श्री सुधर्मा स्वामी—"हे जम्बू ! उस काल व उस समय मे द्वारिका नाम की एक नगरी थी, जिसका वणन प्रथम वर्ग के प्रथम अध्ययन मे किया जा चुका है । श्री कृष्ण वासुदेव वहाँ राज्य कर रहे थे ।"

"उस द्वारिका नगरी मे महाराज 'वसुदेव' और रानी 'धारिणी' निवास करते थे ।

रानी धारिणी अत्यन्त सुकुमार, सुन्दर और सुशीला थी । एक समय कोमल सेज पर सोती हुई उस धारिणी रानी ने सिह का स्वप्न देखा । उस स्वप्न का वृत्तान्त अपने पतिदेव को सुनाया ।

सूत्र ३

वहा द्वारिका नगरी मे
ुदेव राजा धारिणी रानी,
जो कि वर्णन योग्य थे ।
गौतम कुमार के समान
विशेष यह कि जालिकुमार ने
युवावस्था प्राप्तकर पचास कन्याओ
से विवाह किया तथा पचास
करोड का दहेज मिला ।
जालि मुनि ने भी बारह अगो का
ज्ञान सीखा, सोलह वर्ष की
दीक्षा पर्याय का पालन किया,
शेष सब जैसे गौतम कुमार की
तरह यावत् शत्रु जय पर्वत
पर जाकर सिद्ध हुए ।
इसी प्रकार मयालि कुमार
उवयालि कुमार, पुरुषसेन
और वारिसेन का वर्णन
जानना चाहिये ।

इसके बाद पूर्व मे वर्णित गौतम कुमार की तरह उनके एक तेजस्वी पुत्र का जन्म हुआ, जिसका नाम 'जालि कुमार' रखा गया । जब वह युवावस्था को प्राप्त हुआ, तब उसका विवाह पचास कन्याओ के साथ किया गया और उन्हे पचास-पचास करोड सौनेया आदि का दहेज मिला ।

एक समय भगवान् अरिष्टनेमि वहाँ पधारे । उनकी अमोघ वाणी द्वारा धर्मोपदेश सुनकर जालि कुमार को ससार से विरक्ति हो गई । माता-पिता की आज्ञा लेकर उन्होने अर्हन्त अरिष्टनेमि के पास अर्हत दीक्षा अगीकार की । उन्होने बारह अगो का अध्ययन किया और १६ वर्ष पर्यन्त श्रमण दीक्षा पर्याय पाली ।

फिर गौतम कुमार की तरह इन्होने भी सलेखना आदि करके शत्रु जय पर्वत पर एक मास का सथारा किया और सब कर्मो से मुक्त होकर सिद्ध हुए ।

इसी प्रकार मयालिकुमार २, उवयालि कुमार ३, पुरुष सेन कुमार ४, और वारिसेन कुमार ५, के जीवन वर्णन भी समझने

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
एवं पज्जुण्णे वि	एवं ुम्नोऽपि,
णवर कण्हे पिया, रुप्पिणी माया।	विशेष· कृष्णः पिता रुक्मिणी माता।
एवं सबे वि णवरं जंबवई माया।	एवं साम्बः अपि विशेष. जाम्बवती माता।
एवं अणिरुद्धे वि णवरं पज्जुण्णे पिया, वेदब्भी माया!	एवं अनिरुद्धोऽपि विशेषः ुम्न पिता वैदर्भी माता।
एव सच्चणेमी, णवरं समुद्दविजए पिया सिवा माया।	एवं सत्यनेमिः विशेषः समुद्रविजय पिता शिवा माता
एवं दढणेमी वि।	एव दृढनेमिरपि।
सव्वे एगगमा चउत्थस्स वग्गस्स णिक्खे ो।	सर्वाणि (अध्ययनानि) एकगमानि चतुर्थस्य वर्गस्य निक्षेपक।[२३]

इति चतुर्थ वर्गः

पचमः वर्ग·

सूत्र १

जइ णं भते! समणेण जाव संपत्तेणं चउत्थस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, पचमस्स ण भते! वग्गस्स अन्तगडदसाणं समणेण जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?	यदि खलु भदन्त! श्रमणेन यावत् सप्राप्तेन चतुर्थस्य वर्गस्य र्थः प्रज्ञप्त., पचमस्य भदन्त! वर्गस्य अन्तकृद्दशाना श्रमणेन यावत् संप्राप्तेन कोऽर्थ प्रज्ञप्त. ?

[हिन्दी शब्दार्थ]

इसी प्रकार छठे प्रद्युम्न कुमार का वर्णन भी जानना चाहिए। विशेष—कृष्ण पिता और रुक्मिणी देवी माता है।
इसी प्रकार साम्ब कुमार भी, विशेष—जाम्बवती माता है। ये दोनो श्री कृष्ण के पुत्र थे।
इसी प्रकार अनिरुद्धकुमार का भी है विशेष यह है कि प्रद्युम्न पिता और वैदर्भी उसकी माता है।
इसी प्रकार वर्णन सत्यनेमि कुमार का है विशेष है—समुद्र विजय पिता और शिवा देवी माता।
इसी प्रकार दृढनेमी का हाल भी समझना। ये सभी अध्ययन एक सरीखे है। इस प्रकार हे जम्बू? चौथे वर्ग का प्रभु ने यह भाव कहा है।

[हिन्दी अर्थ]

चाहिये। ये सभी 'वसुदेव' जी के पुत्र एव 'धारिणी' रानी के अगजात थे।

इसी तरह छठे प्रद्युम्न कुमार का जीवन चरित्र भी जानना चाहिये। केवल अन्तर इतना जानना कि इनके 'श्री कृष्ण' पिता और 'रुक्मिणी' माता थी।

ऐसे ही सातवे शाम्ब कुमार का जीवन वर्णन समझना। केवल अन्तर इतना कि इनके पिता 'श्री कृष्ण' एव माता 'जाम्बवती' थी।

इसी प्रकार आठवे अध्ययन मे 'अनिरुद्ध कुमार' का जीवन वर्णन समझना चाहिये इनके पिता 'प्रद्युम्न कुमार' और माता 'वैदर्भी' थी।

ऐसे ही नवमे अध्ययन मे 'सत्यनेमी कुमार' और दशवे अध्ययन मे 'दृढनेमी कुमार' का वर्णन समझना चाहिये। इनमे विशेष यह कि 'समुद्र विजय' जी इनके पिता थे और 'शिवा' इनकी माता थी।

ये सब अध्ययन समान वर्णन वाले है यह चौथे वर्ग का निक्षेपक है।[२३]

श्री सुधर्मा—"इस प्रकार हे जम्बू! दस अध्ययनो वाले इस चौथे वर्ग का श्रमण यावत् मोक्ष प्राप्त प्रभु ने यह अर्थ कहा है।"

इति चतुर्थः वर्गः

पंचमः वर्गः

सूत्र १

यदि भगवन्! श्रमण भगवान यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने चौथे वर्ग का यह भाव कहा है,तो हे भगवन्! अन्तकृतदशासूत्र के पचमवर्ग का श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने क्या अर्थ कहा है?

श्री जम्बू स्वामी—"हे भगवन्! श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने चौथे वर्ग का यह भाव फरमाया है तो अन्तगडदशा के पचम वर्ग का श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने क्या अर्थ कहा है?"

आर्य सुधर्मा—"हे जम्बू! इस प्रकार निश्चय ही श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
एव खलु जम्बू !	एवं खलु जम्बू !
समणेण जाव संपत्तेणं	श्रमणेन यावत् संप्राप्तेन
पचमस्स वग्गस्स दस	पं वर्गस्य दशानि
अज्झयणा पण्णत्ता । त जहा—	अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि । तानि यथा—
पउमावई य गोरी,	पद्म ी च गौरी,
गधारी लक्खणा ीमा य ।	गाधारी लक्ष्मणा सुषीमा च ।
जबवई सच्चभामा	ज वती सत्यभामा
रुप्पिणी मूलसिरी मूल ा य।।	रुक्मिणी मूलश्रीः मूलदत्ता च ।
जइण भन्ते ! समणेणं	यदि भदन्त ? श्रमणेन
जाव सपत्तेण	यावत् संप्राप्तेन
पंच वग्गस्स दस	पंच वर्गस्य दशानि
अज्झयणा पण्णत्ता ।	अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि ।
पढमस्स ण भते ! अज्झयणस्स	प्रथमस्य भदन्त ! अध्ययनस्य
समणेण जाव सपत्तेण	श्रमणेन यावत् सप्राप्तेन
के अट्ठे पण्णत्ते ?	कोऽर्थ. प्र . ?

सूत्र २

एव खलु !	एवं खलु ?
तेण कालेणं तेणं समयेणं	तस्मिन् काले तस्मिन् समये
वारवई णामं णयरी होत्था,	द्वारावति नामा नगरी आसीत्,
जहा पढमे,	यथा प्रथमे,
जाव कण्हे वासुदेवे आहेवच्च	यावत् कृष्ण. वासुदेव. आधिपत्य
जाव विहरइ ।	यावत् विहरति ।
तस्स ण कण्हस्स वासुदेवस्स	तस्य खलु कृष्णस्य वासुदेवस्य
पउमावई णामं देवी होत्था,	पद्मावती नाम देवी आसीत् ,
वण्णओ ।	वर्ण्या ।
तेण कालेण तेणं समएणं	तस्मिन् काले तस्मिन् समये

[हिन्दी शब्दार्थ]

इस प्रकार हे जम्बू ?
श्रमरण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने
पञ्चम वर्ग के दस अध्याय कहे है
वे इस प्रकार है--
पद्मावती और गौरी और
गाधारी लक्ष्मरणा और सुसीमा
जाम्बवती सत्यभामा
रुक्मिरणी मूलश्री और मूलदत्ता।
यदि हे भगवन् ! श्रमरण
यावत् मुक्ति को प्राप्त प्रभु ने
पंचम वर्ग के दस
अध्याय कहे है।
तो हे भगवन् ! प्रथम अध्ययन का
श्रमरण यावत् सप्राप्त प्रभु ने
क्या अर्थ कहा है ?

[हिन्दी अर्थ]

पञ्चम वर्ग के दश अध्ययन कहे है, जो इस प्रकार है "१ पद्मावती, २ गौरी, ३ गाधारी, ४ लक्ष्मरणा, ५ सुसीमा देवी, ६ जाम्बवती, ७ सत्यभामा, ८ रुक्मिणी, ९ मूलश्री, १० मूलदत्ता।"

श्री जम्बू स्वामी—"पूज्य ! श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने पञ्चम वर्ग के दश अध्ययन कहे है, तो प्रथम अध्ययन का श्रमरण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु महावीर ने क्या अर्थ कहा है ?"

सूत्र २

इस प्रकार हे जम्बू !
उस काल उस समय मे
द्वारिका नाम की नगरी थी,
जैसे पहले अध्याय मे कहा है,
यावत् वहाँ कृष्ण वासुदेव
राज्य कर रहे थे।
उस कृष्ण वासुदेव की
पद्मावती नाम की रानी थी,
जो वर्णन करने योग्य थी।
उस काल उस समय मे अर्हन्

श्री सुधर्मा स्वामी—"इस प्रकार हे जम्बू ! उस काल उस समय मे द्वारिका नाम की एक नगरी थी, जिसका वर्णन प्रथम अध्ययन मे किया जा चुका है। यावत् श्री कृष्ण वासुदेव वहा राज्य कर रहे थे। श्री कृष्ण वासुदेव की पद्मावती नाम की महारानी थी, जो अत्यन्त सुकुमार सुरूपा, और वर्णन करने योग्य थी।

उस काल उस समय मे अरिहत अरिष्टनेमि यावत् तीर्थकर परम्परा से

[मूल सूत्र पाठ]

अरहा अरिट्ठणेमी समोसढे
जाव विहरइ ।

कण्हे णिग्गए जाव पज्जुवासइ ।

तएणं सा पउमावई देवी
इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी
हट्ठतुट्ठहिअआ जहा देवई
जाव पज्जुवासइ ।

तएणं अरहा अरिट्ठणेमी
कण्हस्स वासुदेवस्स पउमावईए
देवीए जाव धम्मकहा,
परिसा पडिगया ।
तएणं कण्हे वासुदेवे अरहं
अरिट्ठणेमि वंदइ णमंसइ,
वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—

इमीसे णं भन्ते !
बारवईए णयरीए दुवालस—
जोयण आयामाए णवजोयण
वित्थिण्णाए जाव पच्चक्खं देवलोग
भूयाए किंमूलए विणासे भविस्सइ ?
कण्हाए ! अरहा अरिट्ठणेमी
कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—

[संस्कृत छाया]

अर्हन् अरिष्टनेमिः समवसृतः
यावत् विहरति ।

कृष्णः निर्गतः यावत् पर्युपासते ।

ततः खलु सा पद्मावती देवी
अस्याः कथायाः लब्धार्था सती
हृष्टतुष्टहृदया यथा देवकी
यावत् पर्युपासते ।

ततः खलु अर्हन् अरिष्टनेमिः
कृष्णस्य वासुदेवस्य पद्मावत्याः
देव्याः यावत् धर्मकथा (कथिता)
परिषद् प्रतिगता ।
ततः खलु कृष्णः वासुदेवः अर्हन्तम्
अरिष्टनेमिनम् वदते नमस्यति
वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवदत्—

अस्याः खलु भदन्त !
द्वारावत्याः नगर्याः द्वादश—
योजनायामायाः नवयोजन
विस्तीर्णायाः यावत् प्रत्यक्ष देवलोक
भूतायाः किंमूलो विनाशो भविष्यति ?
हे कृष्ण ! अर्हन् अरिष्टनेमिः
कृष्णं वासुदेवमेवमवदत्—

[हिन्दी शब्दार्थ]

अरिष्टनेमी द्वारिका नगरी मे
पधारे यावत् (सयम तप से
आत्मा को भावित करते हुए)
विचरने लगे।

श्री कृष्ण वदन को निकले यावत् वे
श्री नेमनाथ भ० की सेवा करने लगे।
उस समय पद्मावती देवी ने
भगवान के पधारने की बात
सुनी और मन मे बहुत प्रसन्न
हुई तथा जैसे देवकी महारानी वदन
करने गई वैसे ही पद्मावती भी यावत्
श्री नेमनाथ भगवानकी सेवा करने लगी।
तब अरिहंत अरिष्टनेमी ने
कृष्ण वासुदेव और पद्मावती देवी
आदि के सम्मुख धर्म कथा कही,
सभासद् कथा सुनकर चले गये।
तदनन्तर कृष्ण वासुदेव भ० श्रीनेमिनाथ
को वन्दना नमस्कार करते है,
वंदना नमस्कार करके इस प्रकार बोले-
हे पूज्य ! इस
बारह योजन लम्बी नौ योजन
फैली हुई प्रत्यक्ष देवलोक के
समान द्वारिका नगरी का
किस कारण से विनाश होगा ?
कृष्णादि को सम्बोधित कर
भ० अरिष्टनेमी ने कृष्ण वासुदेव को
इस प्रकार कहा—

[हिन्दी अर्थ]

विचरते हुए द्वारिका नगरी मे पधारे। श्री कृष्ण वदन नमस्कार करने हेतु अपने राज प्रासाद से निकल कर प्रभु के पास पहुचे यावत् प्रभु अरिष्टनेमि की पर्युपासना करने लगे।

उस समय पद्मावती देवी ने भगवान् के आने की खबर सुनी तो वह अत्यन्त प्रसन्न हुई। वह भी देवकी महारानी के समान धर्मरथ पर आरूढ होकर भगवान् को वदन करने गई। यावत् नेमिनाथ की पर्युपासना करने लगी। अरिहत अरिष्टनेमि ने कृष्ण वासुदेव, पद्मावती देवी और जन-परिषद् को धर्मोपदेश दिया, धर्मकथा कही धर्मोपदेश एव धर्मकथा सुनकर जन-परिषद् अपने अपने घर लौट गई।

तब कृष्ण वासुदेव ने भगवान् नेमिनाथ को वदन नमस्कार करके उनसे इस प्रकार पृच्छा की—"हे भगवन् बारह योजन लम्बी और नव योजन चौडी यावत् साक्षात् देवलोक के समान इस द्वारिका नगरी का विनाश किस कारण से होगा ?"

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
एवं खलु कण्हा ! इमीसे वारवईए णयरीए दुवालसजोयण आयामाए णवजोयण वित्थिण्णाए जाव पच्चक्खं देवलोगभूयाए सुरग्गिदीवायणमूलाए विणासे भविस्सइ ।	एवं खलु कृष्ण ! अस्याः द्वारावत्या नगर्याः द्वादशयोजनायामायाः नवयोजन विस्तृतायाः यावत् प्रत्यक्ष देवलोकभूतायाः सुराग्निद्वैपायनमूलकः विनाशः भविष्यति ।

३

तए णं कण्हस्स वासुदेवस्स अरहओ अरिट्ठणेमिस्स अंतिए एयमट्ठ सोच्चा मेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पण्णे— धण्णा ण ते जालि-मयालि-उवयालि-पुरिससेण-वारिसेण पज्जुण्ण-संब-अणिरुद्ध-दढणेमि-सच्चणेमिप्पभियओ कुमारा जे ण चिच्चा हिरण्णं जाव परिभाइत्ता अरहओ अरिट्ठणेमिस्स अन्तियं मुडा जाव पव्वइया । अहण्ण अधण्णे अकयपुण्णे रज्जे य जाव अन्तेउरे य माणुस्सएसु य कामभोगेसु मुच्छिए । णो संचाएमि अरहओ अरिट्ठणेमिस्स अन्तिए जाव पव्वइत्तए । कण्हाइ ! अरहा अरिट्ठणेमी	: खलु कृष्णस्य वासुदे अर्हतः अरिष्टनेमिनः अन्तिके एतदर्थ श्रुत्वा अयमेवरूपः अध्यवसायः समुत्पन्न — धन्याः खलु ते जालि, मयालिः उपयालि, पुरुषसेनः, वारिसेनः ुम्नः, साम्बः, अनिरुद्धः दृढनेमिः सत्यनेमिः प्रभृतयः कुमाराः ये खलु त्यक्त्वा हिरण्य यावत् परिभाज्य अर्हतः अरिष्टनेमिनः अन्तिके मुडा यावत् प्रव्रजिताः । अहं खलु अधन्यः अकृतपुण्यः राज्ये च यावत् अन्तःपुरे च मानुष्येषु च कामभोगेषु मूर्च्छितः (अस्मि) न संचरामि अर्हतः अरिष्ट नेमेरन्तिके यावत् प्रव्रजितुम् । कृष्ण ! (इति सबोध्य) अर्हन् अरिष्टनेमि

[हिन्नी शब्दार्थ]

हे कृष्ण ! निश्चय ही इस बारह योजन लम्बी तथा नौ योजन फैली हुई प्रत्यक्ष देव लोक के समान द्वारिका नगरी का सुरा, अग्नि और द्वैपायन के कारण विनाश होगा ।

[हिन्दी अर्थ]

कृष्ण आदि को सबोधित करते हुए अरिहत अरिष्ट नेमि प्रभु ने इस प्रकार उत्तर दिया—"हे कृष्ण ! निश्चय ही बारह योजन लम्बी और नव योजन चौडी यावत् प्रत्यक्ष स्वर्गपुरी के समान इस द्वारिका नगरी का विनाश मदिरा (सुरा), अग्नि और द्वैपायन ऋषि के कोप के कारण से होगा ।"

सूत्र ३

कृष्ण वासुदेव को भ०अरिष्टनेमी के पास से (द्वारिका के नाशरूप) इस अर्थ को सुनकर इस प्रकार का मानसिक अध्यवसाय उत्पन्न हुआ-

धन्य है वे जालि, मयालि, उपयालि, पुरुषसेन, वारिसेन, ुम्न, साम्ब, अनिरुद्ध, दृढनेमी सत्यनेमी आदि कुमार। जिन्होंने स्वर्णादि सम्पत्ति को त्यागकर यावत् देयभाग देकर भगवान अरिष्टनेमी के पास मुडित हुए यावत् दीक्षा ग्रहण की । मै निश्चय ही अधन्य हूँ, अकृत-पुण्य हूँ इसलिए कि राज्य, अन्त.पुर और मनुष्य सम्बन्धी कामभोगो मे मै मूछित हूँ । पूज्य भगवान अरिष्टनेमी के पास प्रव्रज्या लेने के लिये नही आ रहा हूँ। हे कृष्ण ! (यह सम्बोधन कर) भगवान्

अर्हन्त अरिष्टनेमि के श्री मुख से द्वारिका नगरी के विनाश का कारण जानकर श्रीकृष्ण वासुदेव के मन मे ऐसा विचार उत्पन्न हुआ कि वे जालि, मयालि, उवयालि, पुरिससेन, वीरसेन, प्रद्युम्न, शाम्ब, अनिरुद्ध, दृढनेमि और सत्यनेमि प्रभृति कुमार धन्य है जिन्होने हिरण्यादि सपदा और परिजन छोडकर यावत् देयभाग देकर, नेमिनाथ प्रभु के पास मुडित हुए यावत् प्रव्रजित हो गये । मै अधन्य हू, अकृत-पुण्य हू इसलिये कि राज्य, अन्त पुर और मनुष्य सम्बन्धी काम भोगो मे मूच्छित हू, इन्हे त्यागकर भगवान् नेमिनाथ के पास प्रव्रज्या लेने मे समर्थ नही हू ।

भगवान् नेमिनाथ प्रभु ने अपने ज्ञान बल से कृष्ण वासुदेव के मन मे आये इन विचारो को जान कर आर्त्तध्यान मे डूबे हुए कृष्ण वासुदेव से इस प्रकार कहा—

सूत्र ५

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
तए ण से कण्हे वासुदेवे अरह	ततः खलु स· कृष्णः वासुदेवः अर्ह·तम्
अरिट्ठरोमि एव वयासी—	अरिष्टनेमिनम् एवमवादीत्–
अह णं भन्ते! इओ कालमासे	अह खलु भदन्त! इतः कालमासे
काल किच्चा कहि गमिस्सामि ?	कालं कृत्वा कुत्र गमिष्यामि ?
कहि उववज्जिस्सामि ?	कुत्र च उत्पत्स्ये ?
तए णं अरहा अरिट्ठणेमी कण्ह	ततः खलु अर्हन् अरिष्टनेमी कृष्णं
वासुदेव एव वयासी—	वासुदे ्एवम् अवादीत्–
एव खलु कण्हा ! तुम वारवईए	एव खलु कृष्ण ! त्व द्वारावत्यां
रायरीए सुरग्गिदीवायण-कोव-	नगर्या सुराग्निद्वैपायन कोप–
णिद्दड्ढाए अम्मापिइणियगविप्पहूणे	निर्दग्धायाम् अम्बापितृकनिजकविप्रहीनः
रामेण बलदेवेण सद्धि दाहिणवेयालि	रामेण बलदेवेन सार्द्ध दक्षिणवेलाया
अभिमुहे जोहिट्ठिल्लपामोक्खाण	अभिमुखे युधिष्ठिर प्रमुखानाम्
पचण्हं पडवाणं पंडुरायपुत्ताणं	पंचाना पाण्डवानां पाण्डुराजपुत्राणा
पास पडुमहुरं सपत्थिए	पार्श्व पाडुमथुरा संप्रस्थितः
कोसबवणकाणणे णग्गोहवर-	कोशाम्बवन कानने न्यग्रोधवर
पायवस्स अहे पुढविसिलापट्टए	पादपस्य अधः पृथ्वी शि ट्टके
पीयवत्थपच्छाइयसरीरे	पीतवस्त्रप्रच्छादितशरीर·
जरकुमारेण त्तिक्खेण	जरकुमारेण तीक्ष्णेन
कोदड-विप्पमुक्केण इसुणा	कोदंड विप्रमुक्तेन इषुणा
वामे पाए विद्धे समाणे कालमासे	वामे पादे विद्ध सन् कालमासे
काल किच्चा तच्चाए	काल कृत्वा तृतीयस्या
वालुयप्पभाए पुढवीए जाव उववज्जिहिसि	बालुकाप्रभाया पृथिव्या यावत् उत्पत्स्यसे

[हिन्दी शब्दार्थ] [हिन्दी अर्थ]

सूत्र ५

तब कृष्ण वासुदेव ने भगवान् अरिष्टनेमी को इस प्रकार निवेदन किया—
हे भगवन् ! मै यहाँ से काल के समय काल करके कहाँ जाऊँगा ?
तथा कहा उत्पन्न होऊंगा ?
तदनन्तर भगवान् अरिष्टनेमी ने कृष्ण वासुदेव को इस प्रकार कहा—
इस प्रकार हे कृष्ण ! तुम सुरा, अग्नि और द्वैपायन के क्रोध से द्वारिका नगरी के जलने पर माता-पिता और स्वजनो से वियुक्त होकर राम बलदेव के साथ दक्षिण समुद्र तट की ओर युधिष्ठिर आदि पाडुराज के पुत्र पाचो पाण्डवो के पास पाडुमथुरा को जाते हुए कोशाबवन-उद्यान मे वटवृक्ष के नीचे पृथ्वी ि ा के पट्ट पर पीताम्बर ओढे हुए (सोओगे) तब जराकुमार के द्वारा धनुष से छोडे हुए तीक्ष्ण बाण से बायें पैर मे बीधे हुए होकर काल के समय काल करके तीसरी बालुका प्रभा पृथ्वी मे उत्पन्न होवोगे ।

तब कृष्ण वासुदेव अर्हन्त अरिष्टनेमि को इस प्रकार बोले—"हे भगवन् ! यहाँ से काल के समय काल करके मैं कहा जाऊंगा, कहा उत्पन्न होऊंगा ?"

इस पर अर्हन्त नेमिनाथ ने कृष्ण वासुदेव को इस तरह कहा—" हे कृष्ण! तुम सुरा, अग्नि और द्वैपायन के कोप के कारण इस द्वारिका नगरी के जल कर नष्ट हो जाने पर और अपने माता-पिता एव स्वजनो का वियोग हो जाने पर रामबलदेव के साथ दक्षिणी समुद्र के तट की ओर पाण्डुराजा के पुत्र युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव इन पाचो पाडवो के समीप पाण्डु मथुरा की ओर जाओगे । रास्ते मे विश्राम लेने के लिए कौशाम्ब वन-उद्यान मे अत्यन्त विशाल एक वटवृक्ष के नीचे, पृथ्वी शिलापट्ट पर पीताम्बर ओढकर तुम सो जाओगे । उस समय मृग के भ्रम मे जराकुमार द्वारा चलाया हुआ तीक्ष्ण तीर तुम्हारे बाए पैर मे लगेगा । इस तीक्ष्ण तीर से बिद्ध होकर तुम काल के समय काल करके बालुकाप्रभा नामक तीसरी पृथ्वी मे जन्म लोगे । प्रभु के श्रीमुख से अपने आगामी भव की यह बात सुनकर कृष्ण वासुदेव खिन्न मन होकर आर्त्तध्यान करने लगे ।

[मूल सूत्र पाठ] सू० ६

तएण कण्हे वासुदेवे अरहओ
अरिट्ठणेमिस्स अतिए
एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म
ओहय जाव झियाइ ।
"कण्हाइ !" अरहा अरिट्ठणेमी
कण्हं वासुदेवं एव वयासी—
"मा ण तुम देवाणुप्पिया !
ओहय जाव झियाहि ।
एवं खलु तुम देवाणुप्पिया !
तच्चाओ पुढवीओ उज्जलियाओ
अणतर उव्वट्टित्ता इहेव
जंबूद्दीवे भारहेवासे
आगमिस्साए उस्सप्पिणीए
पु डेसु जणवएसु सयदुवारे
बारसमे अममे णाम अरहा
भविस्ससि । तत्थ तुमं बहूइ वासाइ
केवलपरियाय पाउणित्ता सिज्झिहिसि"

[सस्कृत छाया]

ततः कृष्णो वासुदेवः
अर्हतः अरिष्टनेमिन. अंतिके
एतमर्थ श्रुत्वा निशम्य
अपहतो यावत् ध्यायति ।
कृष्ण ! अर्हन् अष्टिनेमिः
कृष्णं वासुदेवं एवमवदत्—
मा खलु त्वं देवानुप्रिय !
अवहत यावत् ध्यायस्व ।
एव खलु त्वं देवानुप्रिय !
तृतीयस्या. पृथिव्याः उज्ज्वलिताया
अनन्तर उद्वृत्य इहैव जम्बूद्वीपे भारते
वर्षे आगमिष्यन्त्याम् उत्सर्पिण्याम्
पुण्ड्रेषु जनपदेषु शतद्वारे (नगरे)
द्वादशमो अममो नाम अर्हन्
भविष्यसि । तत्र त्व बहूनि वर्षाणि
केवलपर्याय पालयित्वा सेत्स्यसि ।

सूत्र ७

तएण से कण्हे वासुदेवे अरहओ
अरिट्ठणेमिस्स अन्तिए
एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ०
अप्फोडइ, अप्फोडित्ता वग्गइ,
वग्गित्ता तिवइं छिदइ,
छिदित्ता सीहणाय करेइ, करित्ता
अरह अरिट्ठणेमि वदइ णमंसइ,
वदित्ता णमसित्ता तमेव
अभिसेक्कं हत्थिरयणं दुरुहइ

तत. स' कृष्णः वासुदेवः
अर्हत. अरिष्टनेमिनः अन्तिके
एतदर्थ श्रुत्वा निशम्य हृष्टतुष्ट०
ोटयति, आस्फोट्य वल्गति,
वल्गित्वा त्रिपदी छिनत्ति,
छित्वा सिंहनादं करोति, कृत्वा
अर्हन्तम् अरिष्टनेमिनम् वन्दते नमस्यति
वन्दित्वा नमस्यित्वा तदेव
आभिषेक्यं हस्तिरत्न दूरोहति,

[हिन्दी शब्दार्थ]

श्री कृष्ण वासुदेव
भगवान् अरिष्टनेमी के से
इस बात को सुनकर एवं धारण कर
उदास मन होकर आर्त्तध्यान करने लगे।
कृष्ण को सम्बोधि कर भगवान
अरिष्टनेमी ने कृष्ण वासुदेव को ऐसे कहा
हे देवानुि ! तुम उदास
होकर आर्त्तध्यान करो।
निश्चय ही हे देवानुि !
तीसरी पृथ्वी की उत्कट वेदना के अनन्तर
(वहा से) निकलकर यहाँ ही जम्बूद्वीप
मे भारत मे आनेवाली उत्सर्पिणी
काल मे पौण्ड्र जनपद मे शतद्वार नगर
मे बारहवे अमम नामक अर्हन्त बनोगे।
वहाँ पर बहुत वर्षो तक केवलीपर्याय
का पालन कर सिद्ध बुद्ध मुक्त बनोगे।

[हिन्दी अर्थ]

तब अर्हन्त अरिष्टनेमि पुन इस प्रकार बोले—"हे देवानुप्रिय ! तुम खिन्नमन होकर आर्त्तध्यान मत करो। निश्चय से हे देवानुप्रिय ! कालान्तर मे तुम तीसरी पृथ्वी से निकल कर इसी जबूद्वीप के भरत क्षेत्र मे आने वाले उत्सर्पिणी काल मे पुड्र जनपद के शत द्वार नाम के नगर मे 'अमम' नाम के बारहवे तीर्थंकर बनोगे। वहा बहुत वर्षो तक केवली पर्याय का पालन कर तुम सिद्ध-बुद्ध-मुक्त होओगे।

सूत्र ७

तदनन्तर वह कृष्ण वासुदेव भगवान
अरिष्टनेमि के पास से यह बात सुनकर
समझकर प्रसन्न होते हुए भुजाओ पर
ताल ठोकने लगे, ताल ठोक कर जयनाद
करते है, जयनाद करके समवसरण
मे त्रिपदी का छेदन करते है, पीछे
हटकर सिंहनाद करते है सिंहनाद करके
भगवान अरिष्टनेमि को वन्दना
नमस्कार करते है वन्दना नमस्कार
करके उसी अभिषेक योग्य हाथी पर

अर्हन्त प्रभु के मुखारविन्द से अपने भविष्य का यह वृत्तान्त सुनकर कृष्ण वासुदेव बडे प्रसन्न हुए, और अपनी भुजा पर ताल ठोकने लगे। जयनाद करके त्रिपदी का छेदन किया। थोडा पीछे हटकर सिंहनाद किया और फिर भगवान् नेमिनाथ को वदन नमस्कार करके अपने अभिषेक-योग्य हस्ति रत्न पर आरूढ हुए और द्वारिका नगरी के मध्य से होते हुए अपने राजप्रासाद मे आये। अभिषेक योग्य हाथी से नीचे उतरे और फिर जहा बाहर की उपस्थान शाला थी और

[मूल सूत्र पाठ]

तएणं कण्हे वासुदेवे अरहओ
अरिट्ठणेमिस्स अंतिए
एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म
ओहय जाव झियाइ ।
"कण्हाइ !" अरहा अरिट्ठणेमी
कण्हं वासुदेवं एव वयासी—
"मा ण तुमं देवाणुप्पिया !
ओहय जाव झियाहि ।
एव खलु तुमं देवाणुप्पिया !
तच्चाओ पुढवीओ उज्जलियाओ
अणतरं उव्वट्टित्ता इहेव
जबूद्दीवे भारहेवासे
आगमिस्साए उस्सप्पिणीए
पु डेसु जणवएसु सयदुवारे
बारसमे अममे णामं अरहा
भविस्ससि । तत्थ तुमं बहूइं वासाइं
केवलपरियाय पाउणित्ता सिज्झिहिसि"

[सस्कृत छाया]

ततः कृष्णो वासुदेवः
अर्हतः अरिष्टनेमिनः अंतिके
एतमर्थ श्रुत्वा निशम्य
अपहतो यावत् ध्यायति ।
कृष्ण ! अर्हन् अष्टिनेमिः
कृष्ण वासुदेवं एवमवदत्—
मा खलु त्वं देवानुप्रिय !
अवहृत यावत् ध्यायस्व ।
एव खलु त्व देवानुप्रिय !
तृतीयस्या. पृथिव्याः उज्ज्वलिताया
अनन्तर उद्वृत्य इहैव जम्बूद्वीपे भारते
वर्षे आगमिष्यन्त्याम् उत्सर्पिण्याम्
पुण्ड्रेषु जनपदेषु शतद्वारे (नगरे)
द्वादशमो अममो नाम अर्हन्
भविष्यसि । तत्र त्व बहूनि वर्षाणि
केवलपर्याय पालयित्वा सेत्स्यसि ।

सूत्र ७

तएण से कण्हे वासुदेवे अरहओ
अरिट्ठणेमिस्स अन्तिए
एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ०
अप्फोडइ, अप्फोडित्ता वग्गइ,
वग्गित्ता तिवइं छिंदइ,
छिदित्ता सीहणाय करेइ, करित्ता
अरह अरिट्ठणेमि वदइ णमंसइ,
वदित्ता णमसित्ता तमेव
अभिसेक्क हत्थिरयणं दुरुहइ

ततः सः कृष्ण. वासुदेव·
अर्हत. अरिष्टनेमिनः अन्तिके
एतदर्थं श्रुत्वा निशम्य हृष्टतुष्ट०
आस्फोटयति, आस्फोट्य वल्गति,
वल्गित्वा त्रिपदी छिनत्ति,
छित्वा सिंहनाद करोति, कृत्वा
अर्हन्तम् अरिष्टनेमिनम् वन्दते नमस्यति
वन्दित्वा नमस्यित्वा तदेव
आभिषेक्य हस्तिरत्नं दूरोहति,

[हिन्दी शब्दार्थ]

श्री कृष्ण वासुदेव
भगवान् अरिष्टनेमी के से
इस को सुनकर एव धारण कर
उदास होकर आर्त्तध्यान करने लगे।
कृष्ण को सम्बोधित कर भगवान
अरिष्टनेमी ने कृष्ण वासुदेव को ऐसे कहा
हे देवानुि ! तुम उदास
होकर आर्त्तध्यान मत करो।
निश्चय ही हे देवानुि !
तीसरी पृथ्वी की उत्कट वेदना के अनन्तर
(वहा से) निकलकर यहाँ ही द्वीप
मे भारतवर्ष मे आनेवाली उत्सर्पिणी
काल मे पौण्ड्र जनपद मे शतद्वार नगर
मे बारहवें अमम नामक अर्हन्त बनोगे।
वहाँ पर बहुत वर्षों तक केवलीपर्याय
का पालन कर सिद्ध बुद्ध मुक्त बनोगे।

[हिन्दी अर्थ]

तब अर्हन्त अरिष्टनेमि पुन इस प्रकार बोले—"हे देवानुप्रिय ! तुम खिन्नमन होकर आर्त्तध्यान मत करो। निश्चय से हे देवानुप्रिय ! कालान्तर मे तुम तीसरी पृथ्वी से निकल कर इसी जबूद्वीप के भरत क्षेत्र मे आने वाले उत्सर्पिणी काल मे पुड्र जनपद के शत द्वार नाम के नगर मे 'अमम' नाम के बारहवे तीर्थंकर बनोगे। वहा बहुत वर्षो तक केवली पर्याय का पालन कर तुम सिद्ध-बुद्ध-मुक्त होओगे।

सूत्र ७

तदनन्तर वह कृष्ण वासुदेव भगवान
अरिष्टनेमि के पास से यह बात सुनकर
समझकर प्रसन्न होते हुए भुजाओ पर
ताल ठोकने लगे, ताल ठोक कर जयनाद
करते है, जयनाद करके समवसरण
मे त्रिपदी का छेदन करते है, पीछे
हटकर सिंहनाद करते है सिंहनाद करके
भगवान अरिष्टनेमि को वन्दना
नमस्कार करते है वन्दना नमस्कार
करके उसी अभिषेक योग्य हाथी पर

अर्हन्त प्रभु के मुखारविन्द से अपने भविष्य का यह वृत्तान्त सुनकर कृष्ण वासुदेव बडे प्रसन्न हुए, और अपनी भुजा पर ताल ठोकने लगे। जयनाद करके त्रिपदी का छेदन किया। थोडा पीछे हटकर सिंहनाद किया और फिर भगवान् नेमिनाथ को वदन नमस्कार करके अपने अभिषेक-योग्य हस्ति रत्न पर आरूढ हुए और द्वारिका नगरी के मध्य से होते हुए अपने राजप्रासाद मे आये। अभिषेक योग्य हाथी से नीचे उतरे और फिर जहा बाहर की उपस्थान शाला थी और

[मूल सूत्र पाठ]

दुरुहित्ता जेणेव बारवई णयरी
जेणेव सए गिहे तेणेव उवागए,
अभिसेय हत्थिरयणाओ पच्चोरुहइ,
पच्चोरूहित्ता जेणेव बाहिरिया
उवट्ठाणसाला जेणेव सए सीहासणे
तेणेव उवागच्छइ, ागच्छित्ता
सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे णिसीयइ,
णिसीइत्ता कोडुंबियपुरिसे
सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी—
"गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया !
बारवईए णयरीए सिघाडग जाव
उग्घोसेमाणा एवं वयह—
"एव खलु देवाणुप्पिया !
बारवईए णयरीए दुवालस
जोयणआयामाए जाव
पच्चक्ख देवलोग-भूयाए
सुरग्गिदीवायणमूले विणासे
भविस्सइ तं जो णं देवाणुप्पिया
इच्छइ बारवईए, णयरीए
राया वा, जुवराया वा
ईसरे, तलवरे,
माडंबिए, कोडुंबिए,
इब्भे, सेट्ठी वा, देवी वा
कुमारो वा, कुमारी वा, अरहओ
अरिट्ठणेमिस्स अन्तिए मुंडे जाव
पव्वइत्तए, त णं
कण्हे वासुदेवे विसज्जइ,

[सस्कृत छाया]

दूरुह्य यत्रैव द्वारावती नगरी
यत्रैव स्वक गृह तत्रैव उपागच्छितः
आभिषेक्यहस्तिरत्नात् प्रत्यवरोहति,
प्रत्यवरुह्य यत्रैव बाह्या
उपस्थानशाला यत्रैव स्वक सिंहासनं
तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य
सिंहासनवरे पौरस्त्याभिमुखः निषीदति,
निषद्य कौटुम्बिकपुरुषान्
शब्दयति, शब्दयित्वा एवम् —
गच्छत खलु यूयं हे देवानुप्रियाः !
द्वारावत्या नगर्या शृंगाटक यावत्
महापथेषु उद्घोषयन्तः एवं वदत—
एव खलु देवानुप्रियाः !
द्वारावत्याः नगर्याः द्वादश—
योजनायामायाः यावत्
प्रत्यक्षं देवलोकभूतायाः
सुराग्नि द्वैपायनमूलः विनाशः
भविष्यति तत् यः खलु देवानुप्रियाः
इच्छति द्वारावत्या नगर्याः
राजा वा युवराजो वा
ईश्वर (अधिपतिः), त . सैनिकः
माडंबिकः कौटुम्बिकः
इभ्यः (आढ्यः) श्रेष्ठी वा देवी वा
कुमारः वा, कुमारी वा, अर्हतः
अरिष्टनेमिनः अन्तिके मुण्डा त्
प्रव्रजितुं त खलु
कृष्णः वासुदेवः विसर्जयति,

[हिन्दी शब्दार्थ]

होकर जहॉ द्वारिका नगरी है तथा जहॉ अपना प्रासाद है वहॉ आते है। आभिषेक्य हस्तिरत्न से उतरते है, उतरकर जहॉ बाहरी उपस्थान शाला तथा जहॉ स्वयं का सिहासन है वहॉ पर आते है, वहॉ आकर श्रेष्ठ सिहासन पर पूर्व की तरफ मुख करके विराजमान होते है, बैठ कर आज्ञाकारी पुरुषो को बुलाते है, बुलाकर कहते है— हे देवानुप्रियो! तुम लोग जाओ व द्वारिका मे शृंगाटक यावत् राजमार्ग पर घोषणा करते हुए इस प्रकार कहो— हे द्वारिकावासी देवानुप्रियो! बारह योजन मे फैली हुई प्रत्यक्ष देवलोक के समान इस द्वारिका नगरी का सुरा अग्नि व द्वैपायन के कारण नाश होगा, इस कारण हे देवानुप्रियो! जो भी कोई इस द्वारिका पुरी मे, नगरी का राजा हो या युवराज हो अधिपति हो, श्रेष्ठ तल वाला सैनिक हो, माडंबिक हो, कौटुम्बिक (घरेलू नौकर) हो, धनी हो, सेठ हो, रानी हो, कुमार हो, कुमारी हो, भगवान अरिष्ट नेमिनाथ के पास मुडित यावत् दीक्षा लेना चाहता हो, उसको कृष्ण वासुदेव विदा करते है

[हिन्दी अर्थ]

जहा अपना सिहासन था वहा आये। वे सिहासन पर पूर्वाभिमुख विराजमान हुए फिर अपने आज्ञाकारी पुरुषो राज सेवको को बुलाकर इस प्रकार बोले—"हे देवानुप्रियो! तुम द्वारिका नगरी शृगाटक यावत् चतुष्पथ आदि सभी राजमार्गो पर जाकर मेरी इस आज्ञा को प्रचारित करो कि—

"हे द्वारिकावासी नगरजनो! इस बारह योजन लम्बी यावत् प्रत्यक्ष स्वर्गपुरी के समान द्वारिका नगरी का सुरा, अग्नि एव द्वैपायन के कोप के कारण नाश होगा, इसलिये हे देवानुप्रियो! द्वारिका नगरी मे जिसकी भी इच्छा हो, चाहे वह राजा हो, युवराज हो, ईश्वर (स्वामी या मन्त्री) हो, तलवर (राजा का प्रिय अथवा राजा के समान) हो, माडम्बिक (छोटे गाव का स्वामी) हो, कौटुम्बिक (दो तीन कुटुम्बो का स्वामी) हो, इभ्य सेठ हो, रानी हो, कुमार हो, कुमारी हो, राजरानी हो, राजपुत्री हो, इन मे से जो भी प्रभु नेमिनाथ के पास मुडित होकर यावत् दीक्षा लेना चाहता हो, उसको कृष्ण वासुदेव ऐसा करने की सहर्ष आज्ञा देते हैं। दीक्षार्थी के पीछे उसके आश्रित सभी कुटुम्बीजनो की भी श्री कृष्ण यथा योग्य व्यवस्था करेगे और बडे ऋद्धि सत्कार के साथ उसका दीक्षा-महोत्सव भी वे ही सपन्न करेगे।" "इस प्रकार दो तीन बार घोषणा को दोहरा कर पुन मुझे सूचित करो।"

[मूल सूत्र पाठ]

दुरुहित्ता जेणेव वारवई णयरी
जेणेव सए गिहे तेणेव उवागए,
अभिसेय हत्थिरयणाओ पच्चोरुहइ,
पच्चोरूहित्ता जेणेव वाहिरिया
उवट्ठाणसाला जेणेव सए सीहासणे
तेणेव उवागच्छइ, गच्छित्ता
सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे णिसीयइ,
णिसीइत्ता कोडु बियपुरिसे
सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी—
"गच्छ णं तुब्भे देवाणुप्पिया !
वारवईए णयरीए सिघाडग जाव
उग्घोसेमाणा एवं वयह—
"एवं खलु देवाणुप्पिया !
वारवईए णयरीए दुवालस
जोयणआयामाए जाव
पच्च देवलोग-भूयाए
सुरग्गिदीवायणमूले विणासे
भविस्सइ तं जो ण देवाणुप्पिया
इच्छइ वारवईए, णयरीए
राया वा, जुवराया वा
ईसरे, तलवरे,
माडंबिए, कोडु बिए,
इब्भे, सेट्ठी वा, देवी वा
कुमारो वा, कुमारी वा, अरहओ
अरिट्ठणेमिस्स अन्तिए मुंडे जाव
पव्वइत्तए, त णं
कण्हे वासुदेवे विसज्जइ,

[सस्कृत छाया]

दूरुह्य यत्रैव द्वारावती नगरी
यत्रैव स्वक गृह तत्रैव उपागच्छितः
आभिषेक्यहस्तिरत्नात् प्रत्यवरोहति,
प्रत्यवरुह्य यत्रैव बाह्या
उपस्थानशाला यत्रैव स्वक सिंहासन
तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य
सिंहासनवरे पौरस्त्याभिमुखः निषीदति,
निषद्य कौटुम्बिकपुरुषान्
शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवदत्—
गच्छत खलु यूयं हे देवानुप्रिया. !
द्वारावत्यां नगर्यां शृंगाटक यावत्
महापथेषु उद्घोषयन्तः एवं वदत—
एव खलु देवानुप्रिया. !
द्वारावत्याः नगर्याः द्वादश—
योजनायामायाः यावत्
प्रत्यक्षं देवलोकभूतायाः
सुराग्नि द्वैपायनमूलः विनाशः
भवि[illegible]ति तत् यः खलु देवानुप्रिया.
इच्छति द्वारावत्या नगर्या.
राजा वा युवराजो वा
ईश्वर. (अधिपति.), तलवर. सैनिक.
माडबिक. कौटुम्बिक.
इभ्य. (आढ्यः) श्रेष्ठी वा देवी वा
कुमारः वा,कुमारी वा, अर्हतः
अरिष्टनेमिन अन्तिके मुण्डा यावत्
प्रव्रजितुं त खलु
कृष्ण. वासुदेव विसर्जयति,

[हिन्दी शब्दार्थ]

आरूढ होकर जहाँ द्वारिका नगरी है तथा जहाँ अपना प्रासाद है वहाँ आते है। आभिषेक्य हस्तिरत्न से उतरते है, उतरकर जहाँ बाहरी उपस्थान शाला तथा जहाँ स्वयं का सिहासन है वहाँ पर आते है, वहाँ आकर श्रेष्ठ सिहासन पर पूर्व की तरफ मुख करके विराजमान होते है, बैठ कर आज्ञाकारी पुरुषो को बुलाते है, बुलाकर कहते है—

हे देवानुप्रियो! तुम लोग जाओ व द्वारिका मे शृ गाटक यावत् राजमार्ग पर घोषणा करते हुए इस प्रकार कहो—

हे द्वारिकावासी देवानुप्रियो ! बारह योजन मे फैली हुई प्रत्यक्ष देवलोक के समान इस द्वारिका नगरी का सुरा अग्नि व द्वैपायन के कारण नाश होगा, इस कारण हे देवानुप्रियो ! जो भी कोई इस द्वारिका पुरी मे, नगरी का राजा हो या युवराज हो अधिपति हो, श्रेष्ठ तल वाला सैनिक हो, माडबिक हो, कौटुम्बिक (घरेलू नौकर) हो, धनी हो, सेठ हो, रानी हो, कुमार हो, कुमारी हो, भगवान अरिष्ट नेमिनाथ के पास मु डित यावत् दीक्षा लेना चाहता हो, उसको कृष्ण वासुदेव विदा करते है

[हिन्दी अर्थ]

जहा अपना सिहासन था वहा आये। वे सिहासन पर पूर्वाभिमुख विराजमान हुए फिर अपने आज्ञाकारी पुरुषो राज सेवको को बुलाकर इस प्रकार बोले-"हे देवानुप्रियो! तुम द्वारिका नगरी शृ गाटक यावत् चतुष्पथ आदि सभी राजमार्गो पर जाकर मेरी इस आज्ञा को प्रचारित करो कि—

"हे द्वारिकावासी नगरजनो ! इस बारह योजन लम्बी यावत् प्रत्यक्ष स्वर्गपुरी के समान द्वारिका नगरी का सुरा, अग्नि एव द्वैपायन के कोप के कारण नाश होगा, इसलिये हे देवानुप्रियो ! द्वारिका नगरी मे जिसकी भी इच्छा हो, चाहे वह राजा हो, युवराज हो, ईश्वर (स्वामी या मन्त्री) हो, तलवर (राजा का प्रिय अथवा राजा के समान) हो, माडम्बिक (छोटे गाव का स्वामी) हो, कौटुम्बिक (दो तीन कुटुम्बो का स्वामी) हो, इभ्य सेठ हो, रानी हो, कुमार हो, कुमारी हो, राजरानी हो, राजपुत्री हो, इन मे से जो भी प्रभु नेमिनाथ के पास मु डित होकर यावत् दीक्षा लेना चाहता हो, उसको कृष्ण वासुदेव ऐसा करने की सहर्ष आज्ञा देते है। दीक्षार्थी के पीछे उसके आश्रित सभी कुटुम्बीजनो की भी श्री कृष्ण यथा योग्य व्यवस्था करेगे और बडे ऋद्धि सत्कार के साथ उसका दीक्षा-महोत्सव भी वे ही सपन्न करेगे।" "इस प्रकार दो तीन बार घोषणा को दोहरा कर पुन मुझे सूचित करो।"

[मूल सूत्र पाठ]

दुरुहित्ता जेणेव वारवई णयरी
जेणेव सए गिहे तेणेव उवागए,
अभिसेय हत्थिरयणाओ पच्चोरुहइ,
पच्चोरूहित्ता जेणेव वाहिरिया
उवट्ठाणसाला जेणेव सए सीहासणे
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे णिसीयइ,
णिसीइत्ता कोडु बियपुरिसे
सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी—
"गच्छ णं तुब्भे देवाणुप्पिया !
वारवईए णयरीए सिघाडग जाव
उग्घोसेमाणा एव वयह—
"एव खलु देवाणुप्पिया !
वारवईए णयरीए दुवालस
जोयणआयामाए जाव
पच्चक्ख देवलोग-भूयाए
सुरग्गिदीवायणमूले विणासे
भि इ तं जो णं देवाणुप्पिया
इच्छइ वारवईए, णयरीए
राया वा, जुवराया वा
ईसरे, तलवरे,
माडंबिए, कोडुंबिए,
इब्भे, सेट्ठी वा, देवी वा
कुमारो वा, कुमारी वा, अरहओ
अरिट्ठणेमिस्स अन्तिए मुंडे जाव
पव्वइत्तए, तं णं
कण्हे वासुदेवे विसज्जइ,

[सस्कृत छाया]

दूरुह्य यत्रैव द्वारावती नगरी
यत्रैव स्वक गृहं तत्रैव उपागच्छितः
आभिषेक्यहस्तिरत्नात् प्रत्यवरोहति,
प्रत्यवरुह्य यत्रैव बाह्या
उपस्थानशाला यत्रैव स्वकं सिहासनं
तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य
सिहासनवरे पौरस्त्याभिमुखः निषीदति
नि कौटुम्बिकपुरुषान्
शब्दयति, शब्दयित्वा ए वदत्—
गच्छत खलु यूय हे देवानुप्रियाः !
द्वारावत्यां नगर्या शृंगाटक यावत्
महापथेषु उद्घोषयन्तः एव वदत—
एव खलु देवानुप्रिया. !
द्वारावत्याः नगर्याः द्वादश—
योजनायामायाः
प्रत्यक्षं देवलोकभूतायाः
सुराग्नि द्वैपायनमूलः विनाशः
भविष्यति तत् य. खलु देवानुप्रिया.
इच्छति द्वारावत्या नगर्याः
राजा वा युवराजो वा
ईश्वर. (अधिपति·), तलवर. सैनिक.
माडबिक. कौटुम्बिकः
इभ्यः (आढ्य.) श्रेष्ठी वा देवी वा
कुमारः वा,कुमारी वा, अर्हतः
अरिष्टनेमिन अन्तिके मुण्डा यावत्
प्रव्रजितु त खलु
कृष्ण. वासुदेव विसर्जयति,

[हिन्दी शब्दार्थ]

आरूढ होकर जहाँ द्वारिका नगरी है तथा जहाँ अपना प्रासाद है वहाँ आते है। आभिषेक्य हस्तिरत्न से उतरते है, उतरकर जहाँ बाहरी उपस्थान शाला तथा जहाँ स्वयं का सिहासन है वहाँ पर आते है, वहाँ आकर श्रेष्ठ सिहासन पर पूर्व की तरफ मुख करके विराजमान होते है, बैठ कर आज्ञाकारी पुरुषो को बुलाते है, बुलाकर कहते है—
हे देवानुप्रियो! तुम लोग जाओ व द्वारिका मे शृंगाटक यावत् राजमार्ग पर घोषणा करते हुए इस प्रकार कहो—
हे द्वारिकावासी देवानुप्रियो ! बारह योजन मे फैली हुई प्रत्यक्ष देवलोक के समान इस द्वारिका नगरी का सुरा अग्नि व द्वैपायन के कारण नाश होगा, इस कारण हे देवानुप्रियो ! जो भी कोई इस द्वारिका पुरी मे, नगरी का राजा हो या युवराज हो अधिपति हो, श्रेष्ठ तल वाला सैनिक हो, माडबिक हो, कौटुम्बिक (घरेलू नौकर) हो, धनी हो, सेठ हो, रानी हो, कुमार हो, कुमारी हो, भगवान अरिष्ट नेमिनाथ के पास मु डित यावत् दीक्षा लेना चाहता हो, उसको कृष्ण वासुदेव विदा करते है

[हिन्दी अर्थ]

जहा अपना सिहासन था वहा आये। वे सिहासन पर पूर्वाभिमुख विराजमान हुए फिर अपने आज्ञाकारी पुरुषो राज सेवको को बुलाकर इस प्रकार बोले–"हे देवानुप्रियो! तुम द्वारिका नगरी शृ गाटक यावत् चतुष्पथ आदि सभी राजमार्गो पर जाकर मेरी इस आज्ञा को प्रचारित करो कि—

"हे द्वारिकावासी नगरजनो! इस बारह योजन लम्बी यावत् प्रत्यक्ष स्वर्गपुरी के समान द्वारिका नगरी का सुरा, अग्नि एव द्वैपायन के कोप के कारण नाश होगा, इसलिये हे देवानुप्रियो! द्वारिका नगरी मे जिसकी भी इच्छा हो, चाहे वह राजा हो, युवराज हो, ईश्वर (स्वामी या मन्त्री) हो, तलवर (राजा का प्रिय अथवा राजा के समान) हो, माडम्बिक (छोटे गाव का स्वामी) हो, कौटुम्बिक (दो तीन कुटुम्बो का स्वामी) हो, इभ्य सेठ हो, रानी हो, कुमार हो, कुमारी हो, राजरानी हो, राजपुत्री हो, इन मे से जो भी प्रभु नेमिनाथ के पास मु डित होकर यावत् दीक्षा लेना चाहता हो, उसको कृष्ण वासुदेव ऐसा करने की सहर्ष आज्ञा देते है। दीक्षार्थी के पीछे उसके आश्रित सभी कुटुम्बीजनो की भी श्री कृष्ण यथा योग्य व्यवस्था करेगे और बडे ऋद्धि सत्कार के साथ उसका दीक्षा-महोत्सव भी वे ही सपन्न करेगे।" "इस प्रकार दो तीन बार घोषणा को दोहरा कर पुन मुझे सूचित करो।"

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
पच्छाउरस्स वि य से अहापवित्तं	पश्चादातुरस्यापि च स. यथा प्रवृत्त
विति अणुजाणइ,	वृत्ति अनुजानाति,
महया इड्ढीसक्कारसमुदएण	महता ऋद्धि सत्कार-समुदयेन च सः
य से णिक्खमण करेइ,	(तस्य) नि मण करोति (करिष्यति)
दोच्च पि तच्च पि घोसणय	द्विवारमपि त्रिवारमपि घोषणक
घोसेइ, घोसि ा	घोषयथ, घोषित्वा (उद्घोष्य)
मम एय आणत्तिय पच्चप्पिणह ।	मम एताम् प्ति प्रत्य ।
तए ण ते कोडुंबियपुरिसा	: खलु ते कौटुम्बिक पुरुषा
जाव प्पिणति ।	यावत् प्रत्यर्पयन्ति ।

सूत्र ८

तए णं सा पउमावई देवी	ततः खलु सा पद्मावती देवी
अरहओ अरिट्ठणेमिस्स	अर्हत. अरिष्टनेमिन :
अतिए धम्मं सोच्चा, णिसम्म	अन्तिके धर्मं श्रुत्वा, निशम्य
हट्ठतुट्ठ जाव हियया	हृष्टतुष्ट यावत् हृदया
अरह अरिट्ठणेमि वदइ णमसइ,	अर्हन्तम् अरिष्टनेमि वन्दते नमस्यति,
वदित्ता णमंसि ,	वन्दित्वा, नमस्यित्वा
एव वयासी—	एवमवदत्—
सद्दहामि णं भंते !	श्रद्दधे भदन्त!
णिग्गथं पावयणं से जहेयं तुब्भे	निर्ग्रन्थ प्रवचनं तद् यथैतद् यूय
वयह, जं णवरं	, यो नि : सोऽ
देवाणुप्पिया ! कण्हं वासुदेव	देवानुप्रिया ! कृष्णं वासुदेव
आपुच्छामि, तएण अह	आपृच्छामि, तत. खलु अह
देवाणुप्पियाण अतिए मु डा जाव	देवानुप्रियाणा अन्तिके मुंडा त्
पव्वयामि ।	प्रव्रजामि ।
अहासुहं देवाणुप्पिया !	यथा सुख देवानुप्रि !
मा पडिबध करेह ।	मा प्रतिबंध कुरु ।

[हिन्दी शब्दार्थ]

और दीक्षार्थों के पीछे कुटुम्बीजनों
की भी कृष्ण यथा योग्य व्यवस्था
वे पूर्ण ऋद्धिसत्कार के उसका
निष्क्रमण (दीक्षा सस्कार) करायेगे
दूसरी बार तीसरी बार भी ऐसी
घोषणा करो, घोषणा करके
मेरी को वापस ण करो
तब उन आज्ञाकारी पुरुषो ने
घोषणा कर लौटाई ।

[हिन्दी अर्थ]

कृष्ण का यह आदेश पाकर उन आज्ञाकारी राज पुरुषो ने वैसी ही घोषणा दो तीन बार करके लौट कर इसकी सूचना श्री कृष्ण को दी ।

सूत्र ८

तदनन्तर वह पद्मावती महारानी
भगवान् अरिष्टनेमि के
पास धर्मकथा सुनकर, समझकर
अत्यन्त हृदय होती हुई
भगवान नेमिनाथ को वन्दना नमस्कार करती है, वन्दना नमस्कार करके
इस प्रकार बोली–
हे भगवन्! निर्ग्रन्थ प्रवचन पर
मै श्रद्धा रखती हू जैसा आप कहते
है (वैसा ही है)। विशेष–
हे देवानुप्रिय! कृष्ण वासुदेव को
पूछूँगी, तदनन्तर मैं
देवानुप्रिय के पास मुंडित यावत्
दीक्षा ग्रहण करूँगी । (प्रभु ने कहा-)
देवानुप्रिय! जैसा सुख हो करो
धर्म कार्य मे विलम्ब मत करो

इसके बाद वह पद्मावती महारानी भगवान् नेमिनाथ से धर्मोपदेश सुनकर एव उसे हृदय मे धारण करके बडी प्रसन्न हुई, हृदय उसका प्रफुल्लित हो उठा । यावन् वह अर्हन्त नेमिनाथ को भावपूर्ण हृदय से वदना नमस्कार कर इस प्रकार बोली—

"हे पूज्य ! निर्ग्रन्थ प्रवचन पर मै श्रद्धा करती हूँ जैसा आप कहते है वह तत्व वैसा ही है। आपका धर्मोपदेश यथार्थ है। हे भगवन् ! मै कृष्ण वासुदेव की आज्ञा लेकर फिर देवानुप्रिय के पास मुण्डित होकर दीक्षा ग्रहण करना चाहती हू ।"

प्रभु ने कहा "जैसा तुम्हारी आत्मा को सुख हो वैसा करो । हे देवानुप्रिये ! धर्म-कार्य मे विलम्ब मत करो ।"

[हिन्दी शब्दार्थ] [हिन्दी अर्थ]

सूत्र ६

प्रभु के ऐसा कहने के बाद पद्मा ीदेवी धार्मिक यानप्रवर पर आरूढ होती है, आरूढ होकर जहाँ द्वारिका नगरी है जहाँ स्वय का घर है वहाँ आती है, आकर धार्मिक श्रेष्ठ रथ से उतरती है, उतरकर जहाँ कृष्ण वासुदेव थे वहाँ आती है, वहा आकर दोनो हाथ जोडकर कृष्ण वासुदेव को इस प्रकार बोली- हे देवानुप्रिय! आपकी आज्ञा हो तो मै अर्हन्त नेमिनाथ के पास मु डित होकर दीक्षा ग्रहण करना चाहती हूँ। (कृष्ण ने कहा-) हे देवानुप्रिय! जैसे सुख हो वैसा करो। तब कृष्ण वासदेव ने आज्ञाकारियो को बुलाया, बुलाकर इस प्रकार कहा— "हे देवानुप्रिय! शीघ्र ही पद्मावती महारानी के लिए बहुमूल्य दीक्षा महोत्सव की तैयारी करो, तैयारी कर, इस आज्ञापूर्ति की सूचना मुझे वापस करो।" तव आज्ञाकारियो ने वैसा ही किया।

नेमिनाथ प्रभु के ऐसा कहने के बाद पद्मावतीदेवी धार्मिक श्रेष्ठ रथ पर आरूढ होकर द्वारिका नगरी मे अपने घर आकर धार्मिक रथ से नीचे उतरी और जहा पर कृष्ण वासुदेव थे वहा आकर उनको दोनो हाथ जोडकर कृष्ण वासुदेव से इस प्रकार बोली—

"हे देवानुप्रिय! आपकी आज्ञा हो तो मै अर्हन्त नेमिनाथ के पास मु डित होकर दीक्षा ग्रहण करना चाहती हूँ।"

कृष्ण ने कहा- "हे देवानुप्रिये! जैसा तुम्हे सुख हो वैसा करो।"

तब कृष्ण वासुदेव ने अपने आज्ञाकारी पुरुषो को बुला कर इस प्रकार आदेश दिया -

"हे देवानुप्रियो! शीघ्र ही महारानी पद्मावती के लिए दीक्षा महोत्सव की विशाल तैयारी करो, और तैयारी हो जाने की मुझे वापस सूचना दो।"

तब आज्ञाकारी पुरुषो ने वैसा ही किया और दीक्षा महोत्सव की तैयारी की सूचना उनको दी।

[हिन्दी शब्दार्थ]

प्रभु के ऐसा कहने के बाद पद्मावतीदेवी धार्मि यानप्रवर पर आरूढ होती है, आरूढ होकर जहाँ द्वारिका नगरी है जहाँ स्वय का घर है वहाँ आती है, आकर धार्मिक श्रेष्ठ रथ से उतरती है, उतरकर जहाँ कृष्ण वासुदेव थे वहाँ आती है, वहा आकर दोनो हाथ जोडकर कृष्ण वासुदेव को इस प्रकार बोली- हे देवानुप्रिय! आपकी आज्ञा हो तो मै अर्हन्त नेमिनाथ के मु डित होकर दीक्षा ग्रहण करना चाहती हूँ। (कृष्ण ने कहा-) हे देवानुप्रिय! जैसे सुख हो वैसा करो। तब कृष्ण वासदेव ने आज्ञाकारियो को बुलाया, बुलाकर इस प्रकार कहा— "हे देवानुप्रिय! शीघ्र ही पद्मावती महारानी के लिए बहुमूल्य दीक्षा महोत्सव की तैयारी करो, तैयारी कर, इस आज्ञापूर्ति की सूचना मुझे वापस करो।" तव आज्ञाकारियो ने वैसा ही किया।

[हिन्दी अर्थ]

सूत्र ६

नेमिनाथ प्रभु के ऐसा कहने के बाद पद्मावतीदेवी धार्मिक श्रेष्ठ रथ पर आरूढ होकर द्वारिका नगरी मे अपने घर आकर धार्मिक रथ से नीचे उतरी और जहा पर कृष्ण वासुदेव थे वहा आकर उनको दोनो हाथ जोडकर कृष्ण वासुदेव से इस प्रकार बोली—

"हे देवानुप्रिय! आपकी आज्ञा हो तो मै अर्हन्त नेमिनाथ के पास मु डित होकर दीक्षा ग्रहण करना चाहती हूँ।"

कृष्ण ने कहा- "हे देवानुप्रिये! जैसा तुम्हे सुख हो वैसा करो।"

तब कृष्ण वासुदेव ने अपने आज्ञाकारी पुरुषो को बुला कर इस प्रकार आदेश दिया –

"हे देवानुप्रियो! शीघ्र ही महारानी पद्मावती के लिए दीक्षा महोत्सव की विशाल तैयारी करो, और तैयारी हो जाने की मुझे वापस सूचना दो।"

तब आज्ञाकारी पुरुषो ने वैसा ही किया और दीक्षा महोत्सव की तैयारी की सूचना उनको दी।

[मूल सूत्र पाठ]

सूत्र १०

तए णं से कण्हे वासुदेवे पउमावइ
देवी पट्टय दुरूहई
दुरूहित्ता अट्ठसएणं सोवण्णकलसेणं
जाव णिक्खमणाभिसेएण अभिसिचइ,
अभिसिंचित्ता, सव्वालकार
विभूसिय करेइ
करित्ता, पुरिससहस्सवाहिणीं
सिवियं दुरूहावेइ
दुरूहावित्ता वारवईए णयरीए
मज्झमज्झेणं णिगच्छइ,
णिगच्छित्ता जेणेव रेवयए पव्वए
जेणेव सहस्सबवणे उज्जाणे
तेणेव उवागच्छइ,
उवागच्छित्ता सीय ठवेइ
ठवेत्ता, पउमावई देवी
सीयाओ पच्चोरुहइ ।
तए णं से कण्हे वासुदेवे
पउमावइ देविं पुरओ कट्टु
जेणेव अरहा अरिट्ठणेमी तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
अरह अरिट्ठणेमि आयाहिणं
पयाहिण करेइ, करित्ता
वदइ णमसइ, वदित्ता णमंसित्ता
एव वयासी—
एस ण भन्ते ! मम अग्गमहिसी
पउमावई नाम देवी इट्ठा, कता

[सस्कृत छाया]

: खलु सः कृष्णः वासुदेवः पद्मावतीं
देवी पट्टक (फलकं) दूरोहति
दूरोह्य अष्टोत्तरशतसौवर्णकलशै·
यावत् निष्क्रमणाभिषेकं अभिषिचति,
अभिषिच्य सर्वालकार
विभूषिताम् कारयति,
कृत्वा पुरुष सहस्रवाहिनीं
शिविकाम् दूरोहयति,
दूरोह्य द्वारावत्याः नगर्याः
मध्य मध्येन निर्गच्छति,
निर्गत्य यत्रैव रैवतकः पर्वतः
यत्रैव सहस्राम्रवनम् उद्यानम्
तत्रैव उपागच्छति,
उपागत्य शिविका स्थायपति
स्थापयि , ी देवी
शिविकायाः प्रत्यवरोहति ।
तत·खलु सः कृष्ण· वासुदेवः
पद्मावती देवी पुरतः कृत्वा
यत्रैव अर्हन् अरिष्टनेमिस्तत्रैव
उपागच्छति, उपागत्य
अर्हन्तम् अरिष्टनेमिन आदक्षिणं
प्रदक्षिण करोति, कृत्वा
वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा
एवमदत्—
एषा खलु भदन्त ! ममाग्रमहिषी
पद्मावती नाम देवी इष्टा, काता,

[हिन्दी शब्दार्थ]

[हिन्दी अर्थ]

सूत्र १०

तदनन्तर कृष्णवासुदेव ने पद्मावती
ी को पट्टे (पाटा) पर बैठाया
बैठाकर एक सौ आठ सुवर्णकलशो से
यावत् दीक्षा सम्बन्धी अभि किया।
अभिषेक करके सर्वविध (तरह के)
ंकारो से उन्हे विभूषित कराया इस
प्रकार सजाकर हजार पुरुषो से उठाई
जाने वाली पालकी पर चढ़ाते है,
चढाकर द्वारावती नगरी के
मध्य मध्य भाग से निकले,
निकलकर जहाँ रैव पर्वत है तथा
जहा सहस्राम्रवन नामक बगीचा है
यहाँ पर आये।
आकर शिविका को रख देते है
रखने के बाद पद्मावती देवी
उस शिविका से उतरती है।
तदनन्तर कृष्ण वासुदेव
पद्मावती देवी को आगे करके
जहाँ भगवान् अरिष्ट नेमिनाथ थे वहां
आये, आकर
भगवान् नेमिनाथ को तीन बार
दक्षिण तरफ से प्रदक्षिणा करके
वन्दना नमस्कार करते है,
वन्दना नमस्कार करके इस प्रकार
बोले– हे पूज्य! यह मेरी प्रधान रानी
ी देवी जो कि मुझे इष्ट

इसके बाद कृष्ण वासुदेव ने पद्मावती-देवी को पट्ट पर बिठाया और एक सौ आठ सुवर्ण-कलशो से उसे स्नान कराया यावत् दीक्षा सम्बन्धी अभिषेक किया।

फिर सभी प्रकार के अलकारो से उसे विभूषित करके हजार पुरुषो द्वारा उठायी जाने वाली शिविका- (पालखी) मे बिठाकर द्वारिका नगरी के मध्य से होते हुए निकले और जहा रैवतक पर्वत और सहस्राम्र उद्यान था वहा आकर पालखी नीचे रक्खी। तब पद्मावती देवी पालखी से नीचे उतरी।

फिर कृष्ण वासुदेव पद्मावती महारानी को आगे करके भगवान् नेमिनाथ के पास आये और भगवान् नेमिनाथ को तीन बार दक्षिण तरफ से प्रदक्षिणा करके वदन नमस्कार किया। वन्दन नमस्कार करके इस प्रकार बोले–

"हे भगवन् यह पद्मावती देवी मेरी पटरानी है। यह मेरे लिए इष्ट है, कान्त है, प्रिय है, मनोज्ञ है, और मन के अनुकूल चलने वाली है अभिराम (सुन्दर) है। हे भगवन्! यह मेरे जीवन मे श्वासोच्छ्वास के समान मुझे प्रिय है, मेरे हृदय को आनन्द देने वाली है।

इस प्रकार का स्त्री-रत्न उदुम्बर (गूलर) के पुष्प के समान सुनने के लिए भी दुर्लभ है, तब देखने की तो बात ही क्या है? हे देवानुप्रिय! मैं ऐसी अपनी प्रिय पत्नी की भिक्षा शिष्यणी रूप मे आपको देता हूँ। आप उसे स्वीकार करे।"

[मूल सूत्र पाठ]

[सस्कृत छाया]

सूत्र १०

तए ण से कण्हे वासुदेवे पउमावइ
देवी पट्टय दुरूहई
दुरूहित्ता अट्ठसएणं सोवण्णकलसेणं
जाव णिक्खमणाभिसेएण अभिसिंचइ,
अभिसिंचित्ता, सव्वालकार
विभूसिय करेइ
करित्ता, पुरिससहस्सवाहिणीं
सिविय दुरूहावेइ
दुरूहावित्ता वारवईए णयरीए
मज्झमज्झेणं णिगच्छइ,
णिगच्छित्ता जेणेव रेवयए पव्वए
जेणेव सहस्सबवणे उज्जाणे
तेणेव उवागच्छइ,
उवागच्छित्ता सीय ठवेइ
ठवेत्ता, पउमावई देवी
सीयाओ पच्चोरुहइ ।
तए णं से कण्हे वासुदेवे
पउमावइ देविं पुरओ कट्टु
जेणेव अरहा अरिट्ठणेमी तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
अरह अरिट्ठणेमि आयाहिण
पयाहिण करेइ, करित्ता
वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता
एव वयासी—
एस ण भन्ते ! मम अग्गमहिसी
पउमावई नाम देवी इट्ठा, कता

ततः खलु सः कृष्णः वासुदेवः
देवी पट्टक (   ) दूरोहति
दूरोह्य अष्टोत्तरशतसौवर्णकलशै
यावत् निष्क्रमणाभिषेकं अभिषि
अभिषिच्य सर्वालकार
विभूषि   कारयति,
कृत्वा पुरुष सहस्रवाहिनीं
शिविकाम् दूरोहयति,
दूरोह्य द्वारावत्याः नगर्याः
मध्य मध्येन निर्गच्छति,
निर्गत्य यत्रैव रैवतकः पर्वतः
यत्रैव सहस्राम्रवनम् उद्यानम्
तत्रैव उपागच्छति,
उपागत्य शिविका स्थापयति
स्थापयित्वा, पद्मावती देवी
शिविकाया. प्रत्यवरोहति ।
तत खलु सः कृष्ण. वासुदेवः
पद्मावतीं देवीं पुरतः कृत्वा
यत्रैव अर्हन् अरिष्टनेमिस्तत्रैव
उपागच्छति, उपागत्य
अर्हन्तम् अरिष्टनेमिन आदक्षिणं
प्रदक्षिण करोति, कृत्वा
वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा
एवमदत्–
एषा खलु भदन्त ! ममाग्रमहिषी
पद्मावती नाम देवी इष्टा, काता,

[हिन्दी शब्दार्थ] [हिन्दी अर्थ]

सूत्र १०

तदनन्तर कृष्णवासुदेव ने पद्मावती
`ी को पट्ट (पाटा) पर बैठाया
बैठाकर एक सौ आठ सुवर्णकलशो से
यावत् दीक्षा सम्बन्धी अभिषेक किया।
अभिषेक करके सर्वविध (तरह के)
कारो से उन्हे विभूषित कराया इस
प्रकार सजाकर हजार पुरुषो से उठाई
जाने वाली पालकी पर चढाते है,
चढाकर द्वारावती नगरी के
मध्य मध्य भाग से निकले,
निकलकर जहाँ रैवतक पर्वत है तथा
जहा सहस्राम्रवन नामक बगीचा है
यहाँ पर आये।
आकर शिविका को रख देते है
रखने के बाद पद्मावती देवी
उस शिविका से उतरती है।
तदनन्तर कृष्ण वासुदेव
पद्मावती देवी को आगे करके
जहाँ भगवान् अरिष्ट नेमिनाथ थे वहा
आये, आकर
भगवान् नेमिनाथ को तीन बार
दक्षिण तरफ से प्रदक्षिणा करके
वन्दना नमस्कार करते है,
वन्दना नमस्कार करके इस प्रकार
बोले– हे पूज्य! यह मेरी प्रधान रानी
पद्मावती नाम की देवी जो कि मुझे इष्ट,

इसके बाद कृष्ण वासुदेव ने पद्मावती-देवी को पट्ट पर बिठाया और एक सौ आठ सुवर्ण-कलशो से उसे स्नान कराया यावत् दीक्षा सम्बन्धी अभिषेक किया।

फिर सभी प्रकार के अलकारो से उसे विभूषित करके हजार पुरुषो द्वारा उठायी जाने वाली शिविका- (पालखी) मे बिठाकर द्वारिका नगरी के मध्य से होते हुए निकले और जहा रैवतक पर्वत और सहस्राम्र उद्यान था वहा आकर पालखी नीचे रक्खी। तब पद्मावती देवी पालखी से नीचे उतरी।

फिर कृष्ण वासुदेव पद्मावती महारानी को आगे करके भगवान् नेमिनाथ के पास आये और भगवान् नेमिनाथ को तीन बार दक्षिण तरफ से प्रदक्षिणा करके वदन नमस्कार किया। वन्दन नमस्कार करके इस प्रकार बोले–

"हे भगवन् यह पद्मावती देवी मेरी पटरानी है। यह मेरे लिए इष्ट है, कान्त है, प्रिय है, मनोज्ञ है, और मन के अनुकूल चलने वाली है अभिराम (सुन्दर) है। हे भगवन्! यह मेरे जीवन मे श्वासोच्छ्वास के समान मुझे प्रिय है, मेरे हृदय को आनन्द देने वाली है।

इस प्रकार का स्त्री-रत्न उदुम्बर (गूलर) के पुष्प के समान सुनने के लिए भी दुर्लभ है, तब देखने की तो बात ही क्या है? हे देवानुप्रिय! मै ऐसी अपनी प्रिय पत्नी को भिक्षा शिष्यणी रूप मे आपको देता हूँ। आप उसे स्वीकार करे।"

[मूल सूत्र पाठ]

पिया, मणुण्णा, मणामा,
अभिरामा, जीवि ,
हिययाणंदजणिया, उंबरपुप्फविव

दुल्लहा, सवणयाए किमंग !
पुण पासणयाए ।
तएणं अहं देवाणुप्पिया !
सिस्सिणी भि दलयामि,
पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया !
सिस्सिणीभि ।

अहासुहं !
तएणं सा पउमावई देवी
उत्तरपुरच्छिमं दिसिभागं अवक्कमइ
कमित्ता सयमेव आभरणालंकारं
ओमुयइ, ओमुइत्ता सयमेव
पंचमुट्ठियं लोयं करेइ,
करित्ता जेणेव अरहा अरिट्ठणेमी
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
अरहं अरिट्ठणेमिं वंदइ णमंसइ,
वंदित्ता णमंसि एवं वयासी–

आलित्ते णं भन्ते ! जाव धम्म-
माइक्खिउं ।

[संस्कृत छाया]

प्रिया, मनोज्ञा, मनोरमा,
अभिरामा, जीवितोच्छ्वासा,
हृदयानन्दजनिका, उदम्बरपुष्पमिव

दुर्लभा श्रवणतायै किमंग!
पुनर्दर्शनतायै
खलु अह देवानुप्रिय!
शिष्या-भिक्षाम् ददामि,
प्रतीच्छन्तु खलु देवानु !
शिष्याभिक्षाम् ।

यथासुखम् !
ततः खलु सा पद्मावती देवी
उत्तरपौरस्त्यां दिग्भागम् अवक्राम्यति
क्रम्य स्वयमेव आभरणालंकारम्
अवमुंचति, अवमुच्य स्वयमेव
पंचमौष्टिकम् (लुञ्चन) लोच करोति
कृत्वा यत्रैव अर्हन् अरिष्टनेमी
तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य
अर्हन्तम् अरिष्टनेमिनम् वन्दते नमस्यति,
वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवदत्–

आलिप्तो भदन्त ! यावत् धर्म
आख्यातुम् ।

[हिन्दी शब्दार्थ]

कान्त, ि , ोज्ञ, मन के अनुकूल चलने वाली होने से सुन्दर है । यह जीवन के लिए श्वासोच्छ्वास के समान है हृदय को आनन्द देने वाली है उदम्बर पुष्प के समान जिसका नाम सुनना भी दुर्लभ है तो देखने की तो बात ही क्या? हे देवानुः ! मै उस प्रिय पत्नी की शिष्यिणी रूप भिक्षा (आपको) देता हूँ हे देवानुि ! शिष्यिणी रूप भिक्षा को ग्रहण करें ।

"जैसा सुख हो वैसा करो ।" तदनन्तर वह पद्मावती देवी ईशान कोण मे ी है तथा वहाँ जाकर खुद ही आभूषण एव ंकारो को उतारती है उतार कर खुद ही पाँच मुट्ठी का लोच करती है करके जहाँ भगवान अरिष्ठनेमी थे वहाँ आई, आकर भगवान् नेमिनाथ को वंदना नमस्कार करती है, वन्दना नमस्कार करके बोली— हे भगवन्! यह लोक जन्म मरणादि दु खो से आलिप्त है अत. यावत् सयम धर्म की दीक्षा दें ।

[हिन्दी अर्थ]

कृष्ण वासुदेव की प्रार्थना सुनकर प्रभु बोले–हे देवानुप्रिय! तुम्हे जिस प्रकार सुख हो वैसा करो ।

तव उस पद्मावती देवी ने ईशान-कोण मे जाकर स्वय अपने हाथो से अपने शरीर पर धारण किए हुए सभी आभूषण एव अलकार उतारे और स्वय ही अपने केशो का पचमौष्टिक लोच किया । फिर भगवान नेमनाथ के पास आकर वदना की । वदन नमस्कार करके इस प्रकार बोली- "हे भगवन्! यह ससार जन्म, जरा, मरण आदि दुख रूपी आग मे जल रहा है ।

अत. इन दुखो से छुटकारा पाने और जलती हुई आग से बचने के लिए, मै आपसे सयम-धर्म की दीक्षा अगीकार करना चाहती हू । अत कृपा करके मुझे प्रव्रजित कीजिये यावत् चरित्र-धर्म सुनाइये ।"

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]

सूत्र ११

तएणं अरहा अरिट्ठणेमी पउमावइं	ततः अर्हन् अरिष्टनेमि· पद्मावती
देविं सयमेव पव्वावेइ,	देवी स्वयमेव ाजयति,
सयमेव जक्खिणीए अज्जाए	स्वयमेव यक्षिण्यैः आर्यायै
सिस्सिणी दलयइ ।	ि ा ददाति ।
तएण सा जक्खिणी ा पउमावइ	: खलु सा यक्षिणी आर्या पद्मावती
देविं सयं पव्वावेइ,	देवी स्वयं ति,
जाव सजमियव्व,	यावत् संयन्तव्यम्
तएणं सा पउमावई जाव स इ ।	: सा पद्मावती यावत् सयच्छते ।
तए ण सा पउमावई अज्जा ,	: सा पद्मा ी आर्या ा,
ईरियासमिया जाव गुत्तबम्भयारिणी ।१।	ईर्यासि यावत् गुप्तब्रह्मचारिणी ।१।

सूत्र १२

तए णं सा पउमावई जक्खिणीए	ततः सा पद्मावती आर्या यि :
अज्जाए अंतिए ाइयमाइयाइं	ियाः अंतिके सामायिकादीनि
एक्कारस ं इं अहिज्जइ,	एकादशागानि अधीते,
बहूहिं चउत्थछट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं	बहुभिः चतुर्थषष्ठाष्टमदशमद्वादशभि·
द्धमासखमणेहिं	मासार्द्ध क्षपणैः
विविहेहिं तवोकम्मेहिं ण	विविधै तप· ंभि आत्मान
भावेमाणा विहरइ ।	भावयन्ती विहरति ।
तएणं सा पउमावई	तत· सा पद्मावती आर्या
बहुपडिपुण्णाइं वीस वासाइ	बहुप्रतिपूर्णानि विंशति वर्षाणि
सामण्णपरियाग पाउणित्ता,	श्रामण्य-पर्याय यित्वा

[हिन्दी शब्दार्थ]   [हिन्दी अर्थ]

सूत्र ११

इसके बाद भगवान् नेमिनाथ ने पद्मावती देवी को स्वयमेव प्रव्रज्या दी । और स्वयमेव यक्षिणी आर्या को शिष्या रूप मे प्रदान की ।

उस यक्षिणी आर्या ने पद्मावती देवी को स्वय दीक्षा दी और सयम मे यत्न करने की शिक्षा दी, तब वह पद्मावती सयम मे यत्न करने लगी । वह पद्मावती आर्या बन गई, और ईर्या समिति आदि पाँचो समितियो से युक्त हो यावत् ब्रह्मचारिणी हो गई ।

पद्मावती के ऐसा कहने पर भगवान् नेमिनाथ ने स्वयमेव पद्मावती को प्रव्रजित एव मु डित करके यक्षिणी आर्या को शिष्या रूप मे सोप दिया ।

तब यक्षिणी आर्या ने पद्मावती देवी को प्रव्रजित किया श्रमणी-धर्म की दीक्षा दी और सयम क्रिया मे सावधानी पूर्वक यत्न करते रहने की हित शिक्षा देते हुए कहा- "हे पद्मावते! तुम सयम मे सदा सावधान रहना ।" पद्मावती भी यक्षिणी गुरुणी की हित शिक्षा मानते हुए सावधानीपूर्वक सयम-पथ पर चलने का यत्न करने लगी । एव ईर्या समिति आदि पाचो समिति से युक्त होकर यावत् ब्रह्मचारिणी आर्या बन गई ।

सूत्र १२

तदनन्तर उस पद्मावती आर्या ने यक्षिणी आर्या के पास सामायिक आदि ग्यारह अंगों का अध्ययन किया बहुत से उपवास-बेले-तेले-चोले-पचोले-मास और अर्धमास आदि विविध तपस्या से आत्मा को भावित करती हुई विचरने लगी । इसके बाद वह पद्मावती आर्या पूरे बीस वर्ष श्रमणी चारित्र धर्म का पालन कर,

तत् पश्चात् उस पद्मावती आर्या ने अपनी यक्षिणी गुरुणी के पास सामायिक आदि ग्यारह अगो का अध्ययन किया, साथ ही साथ उपवास-बेले-तेले-चोले-पचोले, पन्द्रह पन्द्रह दिन और महीने महीने तक की विविध प्रकार की तपस्या से अपनी आत्मा को भावित करती हुई विचरने लगी ।

इस तरह पद्मावती आर्या ने पूरे बीस वर्ष तक चरित्र धर्म का पालन किया । अन्त मे एक मास की सलेखना की और साठ भक्त अनशन पूर्ण करके जिस कार्य (मोक्ष

[मूल सूत्र पाठ]	[सस्कृत छाया]
मासियाए सलेहणाए अप्पाणं	मासिक्या सलेखनया आत्मान
झोसेइ, झोसित्ता सट्ठिभत्ताइं	जोषयति जोषित्वा षष्ठिंभक्तानि–
अणसणाइ छेदेइ, छेदित्ता	अनशनानि छिनत्ति, छित्वा
जस्सट्ठाए कीरई णग्गभावे—	यस्यार्थाय क्रियते नग्नभाव·
जाव तमट्ठं आराहेइ	यावत् तमर्थम् आराधयति
चरिमुस्सासेहि सिद्धा ।१२।	चरमोच्छ्वासै : सिद्धा ।१२।

इति प्रथम अध्ययनम्

अध्ययन २–८

सूत्र १

उक्खेवओ य अज्झयणस्स ।	उत्क्षेपकः अध्ययनस्य ।
तेण कालेण तेण　　येण	तस्मिन् काले तस्मिन् समये
वारवई णयरी, रेवयए पव्वए	द्वारावती नगरी, रैवतकः पर्वतः
उज्जाणे णदणवणे ।	उद्यान नन्दनवनम् ।
तत्थण वारवईए णयरीए	तत्र खलु द्वारावत्याः नगर्या :
कण्हे वासुदेवे राया होत्था	कृष्ण : वासुदेव· राजा　ीत्
तस्स ण कण्हस्स वासुदेवस्स	तस्य खलु कृष्णस्य वासुदेवस्स
गोरी देवी, वण्णओ,	गौरी देवी, वर्ण्या,
अरहा अरिट्ठणेमी समोसढे ।	अर्हन् अरिष्टनेमी समवसृतः ।
कण्हे णिग्गए, गोरी जहा	कृष्ण· निर्गतः, गौरी यथा
पउमावई तहा णिग्गया,	पद्मावती तथा निर्गता,
धम्मकहा, परिसा पडिगया,	धर्मकथा, परिषद् प्रतिगता,
कण्हे वि पडिगए ।	कृष्णोऽपि प्रतिगत· ।

[हिन्दी शब्दार्थ]

एक मासकी सलेखरणासे आत्मा को युक्त कर भक्त अनशन पूर्ण कर जिस कार्य के लिये नग्नभाव अपरिग्रह रूप सयम स्वीकार किया, उसी अर्थ का आराधन कर अन्तिम श्वास से सिद्ध-बुद्ध-मुक्त हो गई ।

[हिन्दी अर्थ]

प्राप्ति के लिए सयम स्वीकार किया था, उसकी आराधना करके अन्तिम श्वास के बाद सिद्ध-बुद्ध और सब दुखो से मुक्त होकर सिद्ध पद को प्राप्त कर लिया ।

इति प्रथममध्ययनम्

अध्ययन २-८

सूत्र १

श्री जम्बू–हे भगवन् ! प्रथम अध्ययन के जो भाव कहे वे, मैने सुने । अब द्वितीय, तृतीय आदि अध्ययनो मे प्रभु ने क्या भाव कहे है सो कृपाकर फरमाइये ?

श्री सुधर्मा–उस काल उस समय हे जम्बू! द्वारिकानगरी के पास रैवतक पर्वत और नन्दन वन नामक उद्यान था। वहा द्वारिका नगरी के कृष्ण वासुदेव राजा थे उस कृष्ण वासुदेव की गौरी नामकी महारानी थी, वर्णनीया थी, किसी समय भगवान् नेमिनाथ द्वारिका के नन्दन वन उद्यान मे पधारे। श्री कृष्ण वन्दन को गये, पद्मावती की तरह गौरी भी वन्दन करने गई । भगवान ने धर्म कथा फरमाई । सभाजन लौट गये, कृष्ण भी वापस आगये ।

आर्य जम्बू- "हे भगवन् ! श्रमण भ० महावीर स्वामी ने प्रथम अध्ययन के जो भाव कहे वे आपके मुखारविन्द से मैने सुने । अब दूसरे एव उससे आगे के अध्ययनो मे क्या भाव कहे है? कृपा करके कहिये ।"

श्री सुधर्मा स्वामी- "हे जम्बू! उस काल उस समय मे द्वारिका नगरी थी। उसके समीप एक रैवतक नाम का पर्वत था। उस पर्वत पर नन्दन वन नामक एक मनोहारी एव विशाल उद्यान था। उस द्वारिका नगरी मे श्री कृष्ण वासुदेव राज्य करते थे। उन कृष्ण वासुदेव की 'गौरी' नाम की महारानी थी जो वर्णन करने योग्य थी ।

एक समय उस नन्दन वन उद्यान मे भगवान् अरिष्टनेमि पधारे। कृष्ण वासुदेव भगवान् के दर्शन करने के लिए गये। जन-परिषद् भी गई। 'गौरी' रानी भी पद्मावती' रानी के समान प्रभु-दर्शन के लिए गई। भगवान् ने धर्म-कथा धर्मोपदेश दिया। धर्मोपदेश सुनकर जन परिषद् अपने अपने घर गई। कृष्ण वासुदेव भी अपने राज भवन मे लौट गये ।

[मूल सूत्र पाठ]

तए ण सा गोरी जहा पउमावई
तहा णिक्खता जाव सिद्धा ।
एव गधारी, लक्खणा, सुसीमा,
जम्बवई, सच्चभामा, रुप्पिणी,
अट्ठवि पउमावई सरिसयाओ
अट्ठ अज्भयणा ।१।

[सम्कृत छाया]

: सा गौरी यथा पद्मावती
तथा निष्क्रान्ता ˎ सिद्धा ।
एव गाधारी, लक्ष्मणा, सुसीमा,
जाम्बवती, सत्यभामा, रुक्मिणी,
अष्टावपि पद्मावती ˎ नि
-अध नि (समाप्तानि) ।१।

२—८ अध्ययनानि प्तानि

अथ नवम अध्ययन

सूत्र २

उक्खेवओ य णव ।

उत्क्षेपकश्च ।

तेण कालेण तेणं समयेणं
वारवईए णयरीए, रेवयए पव्वए,
णदणवणे उज्जाणे, कण्हे राया ।
तत्थ ण वारवईए णयरीए
कण्हस्स वासुदेवस्स पुत्ते
जववईए देवीए अत्तए
सबे णाम कुमारे होत्था । अहीण० ।

तस्मिन् काले तस्मिन् समये
द्वारावत्या नगर्या, रैवतकः प ः,
नन्दनवनमुद्यान, कृष्णः राजा ।
तत्र खलु द्वारावत्या नगर्या
कृष्णस्य वासुदेवस्य पुत्र :
जाम्बवत्या. देव्या. आत्मजः
शाम्बः नाम कुमार. आसीत् ।
अहीन ।

ण संबस्स कुमारस्स
मूलसिरी णाम भारिया होत्था
वण्णओ,
अरहा अरिट्ठणेमी समोसढे ।

तस्य खलु शाम्बस्य कुमारस्य
ˎ श्रीः नामा भार्या आसीत्,
वर्ण्या ।
अर्हन् अरिष्टनेमि. समवसृत. ।

[हिन्दी शब्दार्थ]

गौरी पद्मा ी की तरह
दीि हुई यावत् सिद्ध हो गई ।
इसी तरह गाधारी, लक्ष्मरणा, सुसीमा
जाम्ब ी, सत्यभामा, रुक्मिरणी,
(ये) आठो अध्ययन पद्मावती के समान
समझना ।

[हिन्दी अर्थ]

तत्पश्चात् 'गौरी' देवी पद्मावती रानी की तरह दीक्षित हुई यावत् सिद्ध हो गई।

इसी तरह बाकी ३ गाधारी ४ लक्ष्मरणा, ५ सुसीमा, ६ जाम्ववती, ७ सत्यभाभा, ८ रुक्मिरणी के भी छ अध्ययन 'पद्मावती' के समान समझे।

इन आठो महारानियो का वर्णन इनके अध्ययनो मे समान रूप से जानना चाहिये । ये सभी एक समान प्रव्रजित होकर सिद्ध बुद्ध और मुक्त हुई। ये सभी श्री कृष्ण वासुदेव की पटरानिया थी।

अथ नवम अध्ययन

सूत्र २

नवम अध्ययन का उत्क्षेपक–
हे भगवन् ! श्रमण भगवान् महावीर
ने आठवे अध्ययन का भाव फरमाया
सो सुना न मे क्या अर्थ
कहा है ? कृपा कर लाइये ।
उस काल उस समय
द्वारिकानगरी, रैवतक पर्वत,
नन्दनवन नामक उद्यान, कृष्ण-
वासुदेव राजा (हुए)
वहा द्वारिका नगरी मे
कृष्ण वासुदेव का पुत्र तथा
जाम्बवती देवी का आत्मज
साम्ब नामक कुमार था ।
जो प्रतिपूर्ण इन्द्रियवाला एव सुरूप था ।
उस साम्ब कुमार की मूलश्री
नामकी पत्नी थी,
जो कि वर्णन करने योग्य थी ।
एकदा भगवान अरिष्टनेमी वहां पधारे

श्री जम्बू- "हे भगवन् ! श्रमण भगवान महावीर ने आठवे अध्ययन के जो भाव कहे- वे मैने आपके मुखारविन्द से सुने। आगे श्रमण भगवान् महावीर ने नवमे अध्ययन का क्या अर्थ बताया है। यह कृपाकर बताइये।"

श्री सुधर्मा स्वामी- "हे जम्बू! उस काल उस समय मे द्वारिका नगरी के पास एक रैवतक नाम का पर्वत था जहा एक नन्दन-वन उद्यान था। वहा कृष्ण-वासुदेव राज्य करते थे। उन कृष्ण वासुदेव के पुत्र और रानी जाम्बवती देवी के आत्मज शाम्ब-नाम के कुमार थे जो सर्वाग सुन्दर थे।

उन शाम्ब कुमार के मूलश्री नाम की भार्या थी, जो वर्णन योग्य थी, अत्यन्त सुन्दर एव कोमलागी थी।

एक समय अरिष्टनेमि वहा पधारे। कृष्ण वासुदेव उनके दर्शनार्थ गये। 'मूल श्री' देवी भी 'पद्मावती' के पूर्व वर्णन के समान प्रभु के दर्शनार्थ गई।

भगवान् ने धर्मोपदेश दिया, धर्म कथा कही। जिसे सुनने को जन परिषद् भी आई। धर्म कथा सुनकर जन परिषद् एव श्री कृष्ण तो अपने अपने घर लौट गये। मूल श्री ने वही रुककर भगवान से प्रार्थना की कि "हे भगवन्! मै कृष्ण वासुदेव की आज्ञा लेकर आपके पास श्रमण धर्म मे दीक्षित होना चाहती हू।"

[मूल सूत्र पाठ]	[सस्कृत छाया]
कण्हे रिगग्गए । मूलसिरी वि रिगग्गया ।	कृष्णः निर्गत. मूलश्रीरपि निर्गता ।
जहा पउमावई ।	यथा पद्मावती ।
रगवर देवाणुप्पिया !	विशेष. (नवीनम्) देवानुप्रिया !
कण्हं वासुदेवं आपुच्छामि	कृष्णं वासुदेवम् आपृच्छामि ।
जाव सिद्धा ।	यावत् सिद्धा ।
एव मूलदत्ता वि ।	एव मूलदत्ता अपि ।

इति पंचमः वर्गः

वर्ग.

सूत्र १

जइरगं भते ! छट्ठमस्स	यदि खलु हे भदन्त!
उक्खेवओ ।	उत्क्षेपक : ।
रगवरं	विशेषः (नवीनम्)
सो अज्झयरगा	षोडशानि अध्ययनानि
पण्णत्ता, तंजहा–	प्रज्ञप्तानि, तानि यथा—
मकाई किकमे चेव,	मङ्काई (ति) किकमश्चैव,
मोग्गरपारगी य कासवे ।	मुद्गरपारिणश्च काश्यपः ।
खेमए धितिधरे चेव,	क्षेमको धृतिधरश्चैव,
केलासे हरिचन्दरगे ।१।	कैलाशो हरिचन्दनः ।१।

[हिन्दी शब्दार्थ]

कृष्ण वन्दन करने गये, मूलश्री भी गई पद्मावती की तरह ।
विशेष- बोली- "हे देवानुप्रिय ! कृष्ण वासुदेव को पूछती हूँ" (पूछकर) (दीक्षि हुई) यावत् सिद्ध हो गई ।
इसी प्रकार मूलदत्ता भी ।

[हिन्दी अर्थ]

भगवान् ने कहा- "हे देवानुप्रिय! जैसा तुम्हे सुख हो वैसा करो ।"

इसके बाद 'मूल श्री' अपने भवन को लौटी । 'मूल श्री' के पति श्री शाम्ब कुमार चू कि पहले ही प्रभु के चरणो मे दीक्षित हो गये थे अत 'मूल श्री' अपने श्वसुर श्रीकृष्ण वासुदेव की आज्ञा लेकर 'पद्मावती' के समान दीक्षित हुई । एव उन्ही के समान तप सयम की आराधना करके सिद्ध पद को प्राप्त किया ।

'मूल श्री' के ही समान "मूल दत्ता" का भी सारा वृत्तान्त जानना चाहिये । यह शाम्ब कुमार की दूसरी रानी थी ।

इति पंचम वर्ग.

षष्ठम वर्गः

सूत्र १

"यदि खलु हे भदन्त!" छठे का प्रारम्भ है । हे भगवन्! पाँचवे वर्ग का भाव सुना अब छठे वर्ग मे श्रमण भगवान महावीर ने क्या भाव प्रकट किये है कृपाकर बतलाइये–
सुधर्मा स्वामी - हे जम्बू!
विशेष, इस वर्ग मे भगवान ने सोलह अध्ययन कहे है वे इस प्रकार है—
१. मकाई २. किकम ३. मुद्गरपाणि ४ काश्यप । ५ क्षेमक ६ धृतिधर ७ कैलाश, तथा ८. हरिचन्दन ।

श्री जम्बू- "हे भगवन्! पाचवे वर्ग का भाव सुना, अब छठे वर्ग के श्रमण भगवान् महावीर ने क्या भाव कहे है सो कृपा कर कहिये ।"

श्री सुधर्मा स्वामी- "हे जम्बू! श्रमण भगवान् महावीर स्वामी ने छठे वर्ग के सोलह अध्ययन कहे है, जो इस प्रकार है–

१ मकाई, २ किकम, ३ मुद्गरपाणि, ४ काश्यप, ५ क्षेमक, ६ धृतिधर ७ कैलाश, ८ हरिचन्दन, ९ वारत्त,

[मूल सूत्र पाठ]

वारत्तसु दसण-पुण्णभद्द,
सुमणभद्द सुपइट्ठे मेहे ।
अइमुत्ते य अलक्खे,
अज्झयणाण तु सोलसयं ।२।

जइण भन्ते! सोलस अज्झयणा
पण्णत्ता, पढमस्स अज्झयणस्स
के अट्ठे पण्णत्ते ?

एव खलु जम्बू! तेण कालेण
तेणं समएण रायगिहे णयरे ।
गुण–सिलए चेइए, सेणिए राया ।
तत्थ ण मंकाई णाम गाहावई
परिवसइ, अड्ढे जाव
अपरिभूए ।

तेण कालेण तेणं समएणं
समणे भगव महावीरे आइगरे
गुणसिलए जाव विहरइ,
परिसा णिग्गया ।

तए णं से मकाई गाहावई
इमीसे कहाए लद्धट्ठे
जहा पण्णत्तीए गगदत्ते[24] तहेव

[संस्कृत छाया]

वारत्तसुदर्शन-पुण्यभद्रः,
सुमनोभद्रः सुप्रतिष्ठः मेघः ।
अतिमुक्तश्चालक्ष्यो,
अध्ययनानां तु षोडशकम् ।२।

यदि खलु भदन्त ! षोडश अध्ययनानि
प्रज्ञप्तानि, प्रथमस्य अध्ययनस्य
कः अर्थः प्रज्ञप्तः ?

एवं खलु जम्बू ! तस्मिन् काले
तस्मिन् समये राजगृहं नगरम् ।
गुणशिलक चैत्यम्, श्रेणिकः राजा ।
तत्र खलु मकाई नाम गाथापति :
परिवसति, आढ्य. यावत्
अपरिभूत. ।

तस्मिन् काले तस्मिन् समये
श्रमणः भगवान् महावीर. आदिकरः
गुणशिलके यावत् विहरति,
परिषद् निर्गता ।

ततः स मंकाई गाथापतिः
अस्या. कथाया. लब्धार्थः
यथा प्रज्ञप्त्या गगदत्त. तथैव

[हिन्दी शब्दार्थ]

९. वारत्त, १०. सुदर्शन, ११. पुण्यभद्र
१२. सुमनभद्र, १३. सुप्रतिष्ठ
१४. मेघ १५. अतिमुक्त तथा
१६. क्ष्य। ये सोलह अध्ययन है।

यदि हे भगवन्! सोलह अध्ययन कहे
है तो पहले अध्ययन का क्या अर्थ
लाया है ? (श्री सुधर्मा)-

हे जम्बू ! उस काल
उस समय मे राजगृह नगर,
गुणशील चैत्य एव श्रेणिक राजा थे।
वहां पर मंकाई नामक गृहस्थ
रहता था जोकि ऋद्धि सम्पन्न तथा
किसी से तिरस्कार प्राप्त नही था।

उस काल उस समय श्रमण भगवान्
महावीर धर्म की आदि करने वाले
गुणशील उद्यान मे यावत् पधारे।
धर्म कथा सुनकर परिषद् लौट गई।
तब वह मकई गाथापति
प्रभु के आने का वृत्तान्त सुनकर
जैसे भगवती सूत्र मे गगदत्त, वैसे ही

[हिन्दी अर्थ]

१० सुदर्शन, ११ पुण्यभद्र, १२ सुमनभद्र, १३ सुप्रतिष्ठ, १४ मेघ कुमार, १५ अतिमुक्त-कुमार, १६ अलक्ष्य कुमार।

श्री जम्बू—"हे भगवन् ! श्रमण भगवान् महावीर ने छट्ठे वर्ग के १६ अध्ययन कहे है तो प्रथम अध्ययन का क्या अर्थ बताया है। कृपा कर कहिये।

आर्य श्री सुधर्मा स्वामी-"हे जबू ! उस काल उस समय मे राजगृह नामक नगर था। वहा गुणशीलक नाम का चैत्य-उद्यान था। उस नगर मे श्रेणिक राजा राज्य करते थे। वहा मकाई नाम का एक गाथापति रहता था, जो अत्यन्त समृद्ध यावत् अपरिभूत था यानि दूसरो से पराभूत होने वाला नही था।

उस काल उस समय मे धर्म की आदि करने वाले श्रमण भ० महावीर गुणशीलक उद्यान मे यावत् पधारे।

प्रभु महावीर का आगमन सुन कर जन परिपद् दर्शनार्थ एव धर्मोपदेश श्रवणार्थ प्रभु की सेवामे आई।

मकाई गाथापति भी भगवती सूत्र मे वर्णित गगदत्त के वर्णन के समान भगवान् के दर्शनार्थ एव धर्मोपदेश श्रवणार्थ अपने घर से निकला। भगवान् ने धर्मोपदेश दिया, जिसे सुनकर मकाई गाथापति ससार से विरक्त हो गया। उसने घर आकर अपने

[मूल सूत्र पाठ]

इमो वि
जेट्ठपुत्तं कुडुंबे ठवित्ता
पुरिससहस्सवाहिणीए सीयाए
णिक्खते ।
जाव अणगारे जाए
ईरियासमिए जाव गुत्तबंभयारी
तए णं से मकाई अणगारे
णस्स भगवओ महावीरस्स
तहारूवाणं थेराणं अंतिए
सामाइय-माइयाइ एक्कारस
अंगाइं अहिज्जइ ।
सेसं जहा खंदयस्स ।
गुणरयणं तवोकम्मं
सोलस वासाइं परियाओ,
तहेव विपुले सिद्धे ।

[सस्कृत छाया]

अयमपि
ज्येष्ठपुत्रं कुटुम्बे स्थापयित्वा
पुरुषसहस्रवाहिन्या शिविकया
निष्क्रान्त. ।
यावत् अनगारो जातः ।
ईर्यासमितो यावत् गुप्तब्रह्मचारी ।
तत. स. मंकाई अनगारः
श्रमणस्य भगवतः महावीरस्य
तथारूपाणा स्थविराणामन्तिके
सामायिकादीनि एका
दशाङ्गानि अधीते ।
शेषं यथा स्कदकस्य ।[25]
गुणरत्नं तपः कर्म
षोडश वर्षाणि पर्यायः,
तथैव विपुले सिद्धः ।

प्रथम अध्ययन समाप्त

द्वितीय अध्ययन

सूत्र २

दोच्चस्स उक्खेवओ,
किकमे वि एवं चेव ।
जाव विपुले सिद्धे ।२।

द्वितीयस्य उत्क्षेपक. ।
किकम. अपि एवम् चैव ।
यावत् विपुले सिद्धः ।२।

तृतीय अध्ययन

सूत्र १

तच्चस्स उक्खेवओ ।

तृतीयस्य उत्क्षेपकः ।

[हिन्दी शब्दार्थ]

यह भी ज्येष्ठ पुत्र को कुटुम्ब का कार्यभार सौपकर हजारपुरुषो से उठाई जाने वाली पालकी मे बैठकर दीक्षार्थ निकल पडे । यावत् अनगार हो गए ।
ईर्यासमिति युक्त यावत्
गुप्त ब्रह्मचारी बन गये ।
तब वह मंकाई अनगार श्रमरग महावीर के तथारूप स्थविरो के पास सामायिक आदि ग्यारह अगो का अध्ययन करता है। शेष वर्णन स्कदक[25] के समान जानना चाहिये । उन्होने स्कंदक के समान गुणरत्न तप का आराधन किया ।
सोलह ` की दीक्षा पाली और उसी तरह विपुल पर्वत पर सिद्ध हो गये ।

[हिन्दी अर्थ]

ज्येष्ठ पुत्र को घर का भार सौंपा और स्वय हजार पुरुषो से उठाई जाने वाली शिविका (पालखी) मे बैठकर श्रवण दीक्षा अगीकार करने हेतु भगवान् की सेवा मे आये । यावत् वे अरणगार हो गये । ईर्या आदि समितियो से युक्त एव गुप्तियो से गुप्त ब्रह्मचारी बन गये ।

इसके वाद मकाई मुनि ने श्रमण भगवान् महावीर के गुण सपन्न तथा रूप स्थविरो के के पास सामायिक आदि ग्यारह अगो का अध्ययन किया और स्कदकजी के समान, गुरग रत्न सवत्सर तप का आराधन किया । सोलह वर्ष की दीक्षा पर्याय पाली और अन्त मे विपुल गिरि पर स्कन्दकजी के समान ही सथारादि करके सिद्ध हो गये ।

प्रथम अध्ययन समाप्त

द्वितीय अध्ययन

सूत्र २

दूसरे अध्ययन का प्रारम्भ—किकम भी मकाई के समान ही दीक्षा लेकर विपुलाचल पर सिद्ध बुद्ध मुक्त हो गये ।

दूसरे अध्ययन मे 'किकम' गाथापति का वर्णन है । वे भी 'मकाई' गाथापति के समान ही प्रभु महावीर के पास प्रव्रजित होकर विपुल गिरि पर सिद्ध-बुद्ध और सर्वदुखो से मुक्त होकर सिद्ध शिला के वासी बन गये ।

तृतीय अध्ययन

सूत्र ३

तीसरे अध्ययन का प्रारम्भ—

[मूल सूत्र पाठ]

एव खलु जंबू ! तेण कालेणं तेणं
समएणं रायगिहे णयरे गुण सिलए
चेइए, सेणिए राया । चेल्लणा देवी ।
तत्थण रायगिहे णयरे अज्जुणए णामं
मालागारे
परिवसइ । अड्ढे जाव
अपरिभूए ।
तस्स णं अज्जुणयस्स बंधुमई
णाम भारिया होत्था सुकुमाल
पाणिपाया ।
तस्स णं   ुणयस्स मालागारस्स
रायगिहस्स णयरस्स बहिया
एत्थ णं महं एगे पुप्फारामे
होत्था । कण्हे जाव णिकुरबभूए
दसद्धवण्ण कुसुम कुसुमिए,
पासाइए ।
  णं पुप्फारामस्स अदूर सामते
तत्थण अज्जुणयस्स मालागारस्स
  यपज्जयपिइपज्जयागए
अणेगकुलपुरिसपरंपरागए
मोग्गरपाणिस्स जक्खस्स
जक्खाययणे होत्था ।
पोराणे दिव्वे, सच्चे जहा पुण्णभद्दे ।

[सस्कृत छाया]

एवं खलु जम्बू ! तस्मिन् काले
तस्मिन् समये राजगृहं नगरम्
गुणशिलकचैत्यम् श्रेणिको राजा,
चेल्लना देवी ।
तत्र खलु राजगृहे नगरे
अर्जुनो नाम मालाकरः
परिवसति (स्म) । आढ्यः यावत्
अपराभूतः ।
तस्य खलु अर्जुनस्य बंधुमती
नामा भार्या आसीत् सुकुमार
पाणिपादा ।
तस्य खलु अर्जुनस्य मालाकारस्य
राजगृहस्य नगराद् बहि
अत्र खलु महान् एकः पुष्पाराम·
  ीत् । कृष्णः यावत् निकुरंबभूतः
दशार्द्ध वर्णकुसुमकुसुमित·
प्रासादीयः ।
तस्य खलु पुष्पारामस्य अदूरसामन्ते
तत्र खलु अर्जुनकस्य मालाकारस्य
  क प्रार्यक पितृपर्या   म्
अनेक कुल पुरुषपरंपरागतम्
मुद्गरपाणे· य
यक्षायतनं आसीत् ।
पुराण दिव्यं सत्यं यथा पूर्णभद्रम् ।

[हिन्दी शब्दार्थ]

हे भगवन्! श्रमण भगवान् महावीर ने छठे वर्ग के दूसरे अध्ययन का जो भाव फरमाया वह सुना, अब तीसरे अध्ययन का प्रभु ने क्या भाव प्रकट किया है? इस प्रकार हे जम्बू! उस काल उस समय मे राजगृह नगर मे गुणशील उद्यान था। श्रेणिक राजा था उसकी चेलना रानी थी। वहाँ राजगृह नगर मे अर्जुन नाम वाला मालाकार रहता था। वह धन-सम्पन्न तथा अपराजित था। उस अर्जुन मालाकार के बन्धुमति नाम की भार्या थी, जो कोमल हाथ पैर (शरीर) वाली थी। उस अर्जुन मालाकार का राजगृह नगर के बाहर एक विशाल फूलो का बगीचा था। वह उद्यान काला यावत् हरा भरा था वहाँ पाँच वर्ण के फूल खिले हुए थे। वह उद्यान मन को प्रसन्न करने वाला था। उस फूलो के बगीचे के पास ही वहाँ उस अर्जुन मालाकार के पिता पितामह प्रपितामह से चला आया अनेक, कुलपुरुषो की परपरा से सेवित मुद्गरपाणियक्ष का यक्षायतन था। वह यक्षायतन प्राचीन दिव्य और सत्यप्रभाव वाला था जैसे पूर्णभद्र।[२६]

[हिन्दी अर्थ]

श्री जम्बू स्वामी—"हे भगवन्! श्रमण भगवान् महावीर ने छट्ठे वर्ग के दूसरे अध्ययन का भाव बताया सो सुना। अब तीसरे अध्ययन का प्रभु ने क्या अर्थ कहा है? कृपा कर वह भी बताइये।"

श्री सुधर्मा स्वामी—"हे जम्बू! उस काल उस समय मे राजगृह नामका एक नगर था। वहा गुणशीलक नामक एक उद्यान था। उस नगर मे राजा श्रेणिक राज्य करते थे उनकी रानी का नाम 'चेलना' था।

उस राजगृह नगर मे 'अर्जुन' नाम का एक माली रहता था। उसकी पत्नी का नाल 'बन्धुमती' था, जो अत्यन्त सुन्दर एव सुकुमार थी।

उस अर्जुनमाली का राजगृह नगर के बाहर एक बडा पुष्पाराम (फूलो का बगीचा) था। वह बगीचा नीले एव सघन पत्तो से आच्छादित होने के कारण आकाश मे चढी घनघोर घटाओ के समान श्याम कान्ति से युक्त प्रतीत होता था। उसमे पाचो वर्णो के फूल खिले हुए थे। वह बगीचा इस भाति हृदय को प्रसन्न एव प्रफुल्लित करने वाला बडा दर्शनीय था।

उस पुष्पाराम यानि फुलवाडी के समीप ही मुद्गरपाणि नामक एक यक्ष का यक्षायतन था, जो उस अर्जुन माली के पुरखाओ बाप-दादो से चली आई कुल परम्परा से सम्बन्धित था। वह 'पूर्णभद्र' चैत्य के समान पुराना, दिव्य एव सत्य प्रभाव वाला था। उसमे 'मुद्गर पाणि' नामक

[मूल सूत्र पाठ]

तत्थ णं मोग्गरपाणिस्स पडिमा
एग मह प हस्सणिप्फण्णं
अयोमयं मोग्गरं गहाय चिट्ठइ ।

[संस्कृत छाया]

खलु मुद्गरपाणेः प्रतिमा
एकं महान्त पलसहस्रनिष्
ोमयं मुद्गर गृहीत्वा तिष्ठति ।

सूत्र २

तए णं से अज्जुणए मालागारे
बालप्पभिइ चेव मोग्गरपाणि
जक्खस्स भत्ते यावि होत्था ।
कल्लाकल्लिं पच्छिपिडगाइं
गिण्हइ, गिण्हित्ता रायगिहाओ
णयराओ पडिणिव इ,
पडिणिव इत्ता जेणेव पुप्फारामे
तेणेव उवागच्छइ ।
उवागच्छित्ता पुप्फुच्चयं करेइ,
करित्ता अग्गाइ वराइ पुप्फाइ गहाय
जेणेव मोग्गरपाणिस्स जव णे
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
मोग्गरपाणिस्स जक्खस्स महरिहं
पु यणं करेइ करित्ता
जाणुपायपडिए पणाम करेइ,
करित्ता तओ पच्छा रायमग्गंसि
वित्ति कप्पेमाणे विहरइ ।

: खलु सः अर्जुनकः मालाकारः
बालप्रभृत्येव मुद्गरपाणिय य
भक्तश्चाप्यभवत्
प्रतिदिनं पच्छिपिटकानि
गृह्णाति, गृहीत्वा राजगृहात्
नगरात् प्रतिनिष्क्राम्यति,
प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव पुष्पारामः
तत्रैव उपागच्छति ।
उपागत्य पुष्पोच्चय करोति,
कृत्वा अग्राणि वराणि पुष्पाणि गृहीत्वा
तत्रैव मुद्गरपाणेः यक्षायतनम्
तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य
मुद्गरपाणेः यक्षस्य महार्हम्
पुष्पार्चनकम् करोति, कृत्वा
जानुपादपतित. प्रणामं करोति
कृत्वा तत्पश्चात् राजमार्गे
वृत्ति कल्पमान. विहरति ।

सूत्र ३

तत्थ ण रायगिहे णयरे ललिया णामं
गोट्ठी परिवसइ,

तत्र खलु राजगृहे नगरे ललिता-नाम
गोष्ठी परिवसति,

[हिन्दी शब्दार्थ]

वहाँ पर मुद्गरपाणि की प्रतिमा
एक हजार पल भार वाला
. ा लोहमय मुद्गर लिये हुए खड़ी थी।

[हिन्दी अर्थ]

यक्ष की एक प्रतिमा थी, जिसके हाथ मे एक हजार पल-परिमाण (वर्तमान तोल के अनुसार लगभग ६२।। सेर तदनुसार लगभग ५७किलो) भारवाला लोहे का एक मुद्गर था।

सूत्र २

वह अर्जुन मालाकार
बचपन से ही मुद्गरपाणि
यक्ष का भक्त हो गया था।
वह प्रतिदिन बॉस की छाबडी
उठाता तथा उठाकर राजगृह
नगर से बाहर निकलता
व निकलकर जहाँ फूलो का बगीचा है
वहाँ पर आता।
र पुष्पो का चयन करता,
करके अग्रणी श्रेष्ठ फूलो को लेकर
जहाँ पर मुद्गरपाणि का यक्षायतन था
वहाँ आता आकर
मुद्गरपाणि यक्ष का उत्तमोत्तम
फूलो से अर्चन करता, करके
पंचाङ्गप्रणाम करता,
इसके बाद राजमार्ग पर फूल बेचकर
अपनी आजीविका चलाया करता था।

वह अर्जुन माली बचपन से ही उस मुद्गर पाणि यक्ष का अनन्य उपासक था। प्रतिदिन बास की छबडी लेकर वह राजगृह नगर से बाहर स्थित अपनी उस फुलवाडी मे जाता था और फूलो को चुन-चुन कर एकत्रित करता था।

फिर उन फूलो मे से उत्तम २ फूलो को छाटकर उन्हे उस मुद्गर पाणि यक्ष के ऊपर चढाता था। इस प्रकार वह उत्तमोत्तम फूलो से उस यक्ष की पूजा अर्चना करता और भूमि पर दोनो घुटने टेककर उसे प्रणाम करता ।

इसके वाद राजमार्ग के किनारे बाजार मे बैठकर उन फूलो को बेचकर अपनी आजीविका उपार्जन करता हुआ सुखपूर्वक वह अपना जीवन बिता रहा था।

सूत्र ३

वहाँ राजगृह नगर मे ललिता नाम की
गोष्ठी (मित्र मडली) रहती थी, वह
ऋद्धि सपन्न यावत् किसी से पराभव
पाने वाली नही थी, जो राजा के

उस राजगृह नगर मे 'ललिता' नाम की एक गोष्ठी (मित्र मडली) थी। जिसके अत्यन्त समृद्ध और दूसरो से अपराभूत ऐसे कुछ व्यक्ति सदस्य थे। किसी समय नगर के राजा का कोई हित कार्य सम्पादन करने के

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
अड्ढा जाव अपरिभूया,	आढ्याः यावत् अपरिभूता,
ज कय सुकया यावि होत्था।	यत्कृतसुकृता चापि आसीत्।
तए ण रायगिहे णयरे अण्णया	तत. खलु राजगृहे नगरे अन्यदा
कयाइ पमोए घुट्ठे यावि होत्था।	कदाचित् प्रमोदोघुष्ट. चापि अभवत्।
तए ण से अज्जुणए मालागारे	तत्र खलु सः अर्जुनः मालाकारः
'कल्ल पभूयतरएहि पुप्फेहि कज्ज'	'कल्ये प्रभूततरकै पुष्पैः कार्यम्'
इति कट्टु पच्चूस काल समयसि	इति कृत्वा प्रत्यूष . काले
बधुमईए भारियाए सद्धि	बन्धुमत्या भार्यया सार्द्धम्
पच्छिपिडगाइ गिण्हइ, गिण्हित्ता,	पच्छिपिटकानि गृह्णाति, गृहीत्वा
सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ,	स्वकात् गृहात् प्रतिनिष्क्राम्यति
पडिणिक्खमित्ता रायगिह	प्रतिनिष्क्रम्य राजगृहम्
णयर मज्झ मज्झेण णिग्गच्छइ,	नगर मध्य मध्येन निर्गच्छति,
णिग्गच्छित्ता जेणेव पुप्फारामे	निर्गत्य यत्रैव पुष्पारामः
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता	तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य,
बधुमईए भारियाए सद्धि	बंधुमत्या भार्यया सार्द्धम्
पुप्फुच्चयं करेइ ।३।	पुष्पोच्चयम् करोति ।३।

सूत्र ४

तए ण तीसे ललियाए गोट्ठीए	ततः खलु ललितायाः गोष्ठ्याः
छ, गोट्ठिल्ला पुरिसा जेणेव	षड् गौष्ठिका. पुरुषा यत्रैव
मोग्गरपाणिस्स जक्खस्स	मुद्गरपाणेर्यक्षस्य
जक्खाययणे तेणेव उवागया	यक्षायतन तत्रैव उपागता',
अभिरममाणा चिट्ठंति ।	अभिरममाणा तिष्ठन्ति ।
तए ण से अज्जुणए मालागारे	ततः खलु स अर्जुन मालाकारः
बन्धुमईए भारियाए सद्धि	बन्धुमत्या भार्यया सार्द्धं
पुप्फुच्चयं करेइ, करित्ता	पुष्पोच्चय करोति, कृत्वा
अग्गाइं वराइं पुप्फाइ गहाय	अग्राणि वराणि पुष्पाणि गृहीत्वा

[हिन्दी शब्दार्थ]

अनुग्रह के कारण मनमाने काम करने मे स्वच्छन्द थी ।
फिर राजगृह नगर मे बाद मे किसी दिन प्रमोदोत्सव की घोषणा हुई ।
तत्पश्चात् अर्जुन मालाकारने सोचा "कल बहुत फूलो की माग होगी"
यह सोचकर उसने प्रातः काल जल्दी उठकर बन्धुमती भार्या को साथ लि[या],
बास की छाब (टोकरी) ली
लेकर अपने घर से निकला,
निकलकर राजगृह नगर
के मध्य-मध्य से चलता हुआ निकल जाता है तथा निकलकर जहाँ फूलो का बगीचा है वहाँ आता है, वहाँ आकर
अपनी बन्धुमती पत्नी के साथ
पुष्पो का चयन शुरु कर देता है ।३।

[हिन्दी अर्थ]

कारण राजा ने उस मित्र मडली पर प्रसन्न होकर अभयदान दे दिया कि वे अपनी इच्छानुसार कोई भी कार्य करने मे स्वतन्त्र है । राज्य की ओर से उन्हे पूरा सरक्षण था इस कारण यह गोष्ठी बहुत उच्छृखल और स्वच्छन्द बन गई ।

एक दिन राजगृह नगर मे एक उत्सव मनाने की घोषणा हुई ।

इस पर अर्जुनमाली ने अनुमान लगाया कि कल इस उत्सव के अवसर पर फूलो की भारी माग होगी । इसलिए उस दिन वह प्रात काल मे जल्दी ही उठा और बास की छबडी लेकर अपनी पत्नी बन्धुमती के साथ जल्दी घर से निकल कर नगर मे होता हुआ अपनी फुलवाडी मे पहुचा और अपनी पत्नी के साथ फूलो को चुन चुन कर एकत्रित करने लगा ।

सूत्र ४

तब उसी समय 'ललिता' मडली के
छ गौष्ठिक पुरुष, जहाँ
मुद्गरपाणि यक्ष का
यक्षायतन था वहाँ आये और
आपस मे परिहास क्रीडादि करने लगे ।
उस समय अर्जुन माली ने
बन्धुमती भार्या के साथ
पुष्पो का चयन किया करके
श्रेष्ठ फूलो को ग्रहण कर (लेकर)

उस समय पूर्वोक्त 'ललिता' गोष्ठी के छ गौष्ठिक पुरुष मुद्गरपाणि यक्ष के यक्षायतन मे आकर आमोद प्रमोद एव परस्पर खेलकूद करने लगे ।

उधर अर्जुनमाली अपनी पत्नी बन्धुमती के साथ फूल-सग्रह करके उनमे से कुछ उत्तम फूल छाटकर उनसे नित्य नियम के अनुसार मुद्गरपाणि यक्ष की पूजा करने के लिये यक्षायतन की ओर चला ।

[मूल सूत्र पाठ]

अड्ढा जाव अपरिभूया,
ज कय सुकया यावि होत्था।
तए ण रायगिहे णयरे अण्णया
कयाइ पमोए घुट्ठे यावि होत्था।
तए ण से अज्जुणए मालागारे
'कल्ल पभूयतरएहि पुप्फेहि कज्ज'
इति कट्टु पच्चूस काल समयसि
बधुमईए भारियाए सद्धि
पच्छिपिडगाइ गिण्हइ, गिण्हित्ता,
सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ,
पडिणिक्खमित्ता रायगिहं
णयर मज्झ मज्झेण णिग्गच्छइ,
णिग्गच्छित्ता जेणेव पुप्फारामे
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
बधुमईए भारियाए सद्धि
पुप्फुच्चय करेइ ।३।

[सस्कृत छाया]

आढ्याः यावत् अपरिभूता,
यत्कृतसुकृता चापि आसीत् ।
ततः खलु राजगृहे नगरे अन्यदा
कदाचित् प्रमोदोघुष्टः चापि अभवत् ।
तत्र खलु स. अर्जुनः मालाकारः
'कल्ये प्रभूततरकै पुष्पै. कार्यम्'
इति कृत्वा प्रत्यूष : काले
बन्धुमत्या भार्यया सार्द्धम्
पच्छिपिटकानि गृह्णाति, गृहीत्वा
स्वकात् गृहात् प्रतिनिष्क्राम्यति
प्रतिनिष्क्रम्य राजगृहम्
नगर मध्य मध्येन निर्गच्छति,
निर्गत्य यत्रैव पुष्पाराम.
तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य,
बंधुमत्या भार्यया सार्द्धम्
पुष्पोच्चयम् करोति ।३।

४

तए णं तीसे ललियाए गोट्ठीए
छ, गोट्ठिल्ला पुरिसा जेणेव
मोग्गरपाणिस्स जक्खस्स
जक्खाययणे तेणेव उवागया
अभिरममाणा चिट्ठ ति ।
तए णं से अज्जुणए मालागारे
बन्धुमईए भारियाए सद्धिं
पुप्फुच्चयं करेइ, करित्ता
अग्गाइं वराइं पुप्फाइ गहाय

ततः खलु ललिताया गोष्ठ्याः
षड् गौष्ठिकाः पुरुषा. यत्रैव
मुद्गरपाणेर्यक्षस्य
यक्षायतनं तत्रैव उपागता ,
अभिरममाणा. तिष्ठन्ति ।
तत. खलु स. अर्जुनः मालाकारः
बन्धुमत्या भार्यया सार्द्धं
पुष्पोच्चयं करोति, कृत्वा
अग्राणि वराणि पुष्पाणि गृहीत्वा

[हिन्दी शब्दार्थ]

अनुग्रह के कारण मनमाने काम करने मे स्वच्छन्द थी।
फिर राजगृह नगर मे बाद मे किसी दिन प्रमोदोत्सव की घोषणा हुई।
तत्पश्चात् अर्जुन मालाकारने सोचा "कल बहुत फूलो की माग होगी" यह सोचकर उसने प्रातः काल जल्दी उठकर बन्धुमती भार्या को साथ लिया, बास की छाब (टोकरी) ली लेकर अपने घर से निकला, निकलकर राजगृह नगर के मध्य-मध्य से चलता हुआ निकल जाता है तथा निकलकर जहाँ फूलो का बगीचा है वहाँ आता है, वहाँ आकर अपनी बन्धुमती पत्नी के साथ पुष्पो का चयन शुरु कर देता है।३।

[हिन्दी अर्थ]

कारण राजा ने उस मित्र मडली पर प्रसन्न होकर अभयदान दे दिया कि वे अपनी इच्छानुसार कोई भी कार्य करने मे स्वतन्त्र है। राज्य की ओर से उन्हे पूरा सरक्षण था इस कारण यह गोष्ठी बहुत उच्छृखल और स्वच्छन्द बन गई।

एक दिन राजगृह नगर मे एक उत्सव मनाने की घोषणा हुई।

इस पर अर्जुनमाली ने अनुमान लगाया कि कल इस उत्सव के अवसर पर फूलो की भारी माग होगी। इसलिए उस दिन वह प्रात काल मे जल्दी ही उठा और बास की छबडी लेकर अपनी पत्नी बन्धुमती के साथ जल्दी घर से निकल कर नगर मे होता हुआ अपनी फुलवाडी मे पहुचा और अपनी पत्नी के साथ फूलो को चुन चुन कर एकत्रित करने लगा।

सूत्र ४

तब उसी समय 'ललिता' मडली के छ गौष्ठिक पुरुष, जहाँ मुद्गरपाणि यक्ष का यक्षायतन था वहाँ आये और आपस मे परिहास क्रीडादि करने लगे। उस समय अर्जुन माली ने बन्धुमती भार्या के साथ पुष्पो का चयन किया करके श्रेष्ठ फूलो को ग्रहण कर (लेकर)

उस समय पूर्वोक्त 'ललिता' गोष्ठी के छ गौष्ठिक पुरुष मुद्गरपाणि यक्ष के यक्षायतन मे आकर आमोद प्रमोद एव परस्पर खेलकूद करने लगे।

उधर अर्जुनमाली अपनी पत्नी बन्धुमती के साथ फूल-सग्रह करके उनमे से कुछ उत्तम फूल छाटकर उनसे नित्य नियम के अनुसार मुद्गरपाणि यक्ष की पूजा करने के लिये यक्षा यतन की ओर चला।

[मूल सूत्र पाठ]

जेणेव मोग्गरपाणिस्स
खस्स   ाययणे तेणेव उवागच्छइ।
तए ण ते छ गोट्ठिल्ला पुरिसा
अज्जुणयं मालागार
बधुमईए भारियाए सद्धि
एज्जमाणं पासइ पासित्ता
अण्णमण्ण एवं वयासी
एस खलु देवाणुप्पिया !
अज्जुणए मालागारे बधुमईए
भारियाए सद्धि इह हव्व-
मागच्छइ, त सेयं खलु
देवाणुप्पिया ! ुणयं मालागारं
अवओड धणयं करित्ता
बधुमईए भारियाए सद्धि
विउलाइ भोगभोगाइ
भुंजमाणाणं विहरित्तए ।
त्तिकट्टु एयमट्ठं अण्णमण्णस्स
पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता कवाडंतरेसु
णिलुक्कंति, णिच्चला णिप्फंदा,
तुसिणीया पच्छण्णा चिट्ठंति ।४।

[सस्कृत छाया]

यत्रैव मुद्गरपाणेर्यक्षस्य
यक्षायतन तत्रैव उपागच्छति ।
ततः खलु ते षड् गौष्ठिका. पुरुषाः
अर्जुनम् मालाकारम्
बन्धुमत्या भार्यया सार्द्धम्
एजमानम् (आगच्छतं) पश्यति, दृष्ट्वा
अन्योन्यम् एवम् अवदत्
एष खलु देवानुप्रियाः !
अर्जुनः मालाकारः बन्धुमत्या
भार्यया सार्द्धम् इह हव्व
मागच्छति, तत् श्रेयः खलु
देवानुप्रिया. ! अर्जुनं मालाकारम्
अवकोटकबंधनकं कृत्वा
बन्धुमत्या भार्यया सार्द्धम्
विपुलान् भोग भोगान्
भुंजमानाना (मध्ये) विहर्तुम् ।
इति कृत्वा एनमर्थम् अन्योन्यस्य
प्रति ृण्वन्ति, प्रतिश्रुत्य कपाटान्तरेषु
निलुक्कन्ति, निश्चलाः निस्पंदाः
तूष्णीकाः प्रच्छन्नाः तिष्ठन्ति ।४।

सूत्र ५

तए णं से ुणए मालागारे
बंधुमईए भारियाए सद्धि
जेणेव मोग्गरपाणिस्स जक्खाययणे
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता,
आलोए,पणामं करेइ, करित्ता

 : खलु स अर्जुनः मालाकारः
बधुमत्या भार्यया सार्द्धम्
 मुद्गरपाणेर्य
तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य
ोकयन् प्रणामं करोति, कृत्वा

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
महरिहं पुप्फच्चयण करेइ	महार्हं पुष्पोच्चय करोति,
करित्ता, जाणुपायपडिए	कृत्वा जानुपादपतितः
पणामं करेइ ।	प्रणामम् करोति ।
तए ण ते छ गोट्ठिल्ला पुरिसा	ततः खलु ते षड् गौष्ठिकाः पुरुषाः
दवदवस्स कवाडतरेहितो	द्रुतद्रुतेन कपाटान्तरात्
णिग्गच्छति, णिग्गच्छित्ता,	निर्गच्छन्ति, निर्गत्य
अज्जुणय मालागारं गिण्हित्ता	अर्जुनं मालाकारं गृहीत्वा
अवओडयबधण करेति	अवकोटक बधन कुर्वन्ति
करित्ता, बधुमईए मालागारीए	कृत्वा बधुमत्या मालाकारिण्या
सद्धि विउलाइ भोगभोगाइं	सार्द्धम् विपुलान् भोगभोगान्
भुंजमाणा विहरति ।	भुजमानाः विहरन्ति ।
तए णं तस्स अज्जुणयस्स	ततः खलु तस्य अर्जुनस्य माला-
मालागारस्स अयमज्झत्थिए	कारस्य अयम् आध्यात्मिकः (विचारः)
समुप्पण्णे—	समुत्पन्नः—
"एवं खलु अह बालप्पभिइं	एवं खलु अहं बाल प्रभृत्यैव
चेव मोग्गरपाणिस्स भगवओ	मुद्गरपाणेः भगवतः
कल्लाकल्लि जाव वित्ति	कल्याकल्यि यावत् वृत्ति
कप्पेमाणे विहरामि ।	कल्पयन् विहरामि ।
तं जई ण मोग्गरपाणिजक्खे	तद् यदि खलु मुद्गरपाणियक्षः
इह सण्णिहिए होते	इह सन्निहितः भवेत्
सेणं कि मम एयारूवं आवत्ति	स खलु कि माम् एतद्रूपाम् आपत्तिम्
पावेज्जमाणं पासते,	प्राप्नुवन्तम् पश्येत्?
त णत्थि णं मोग्गरपाणिजक्खे	तत् नास्ति खलु मुद्गरपाणियक्षः
इह सण्णिहिए, सुव्वत्तं	इह सन्निहितः सुव्यक्त
त एस कट्ठे ।"	तत् एतत् काष्ठमेव । (न तु यक्षः)

[हिन्दी शब्दार्थ]

करता है, करके बहुमूल्य पुष्य चढाये
चढ़ाकर घुटनो के बल गिरकर
प्रणाम किया ।

वे छ ही गौष्ठिक पुरुष
जल्दी जल्दी किवाड के पीछे से
निकले और निकलकर
अर्जुन मालाकार को पकड़कर
औधी मुश्की से बाध दिया ।
बाधकर बन्धुमती मालिनी के साथ
अनेक प्रकार के भोगो को
भोगते हुए विचरण करने लगे ।
उस समय उस अर्जुन
माली के मन मे यह विचार
उत्पन्न हुआ कि—
मै अपने बचपन से ही
मुद्गरपाणि भगवान की
प्रतिदिन यावत् पूजा करके फिर
आजीविका पूरी करता आ रहा हूं ।
अत. यदि मुद्गरपाणि यक्ष
यहा मौजूद होता
तो क्या वह मुझे इस प्रकार आपत्ति
मे पडा देखता ?
इसलिये निश्चय ही यहा मुद्गरपाणि
यक्ष मौजूद नही है यह तो स्पष्ट ही
केवल काष्ठ है ।"

[हिन्दी अर्थ]

समय शीघ्रता से उन छ गौष्ठिक पुरुषो ने किवाडो के पीछे से निकल कर अर्जुनमाली को पकड लिया और उसकी औधी मुश्के बाधकर उसे एक ओर पटक दिया । फिर उसकी पत्नी बन्धुमती मालिन के साथ विविध प्रकार से काम क्रीडा करने लगे ।

यह देखकर उस समय अर्जुनमाली के मन मे यह विचार आया—"देखो मै अपने बचपन से ही इस मुद्गरपाणि को अपना इष्टदेव मानकर इसकी प्रतिदिन भक्तिपूर्वक पूजा करता आ रहा हू । इसकी पूजा करने के बाद ही इन फूलो को बेचकर अपना जीवन-निर्वाह करता रहा हू ।

तो यदि मुद्गरपाणि यक्ष देव यहा वास्तव मे ही होता तो क्या मुझे इस प्रकार विपत्ति मे पडे हुए को देखकर चुप रहता ? इसलिये यह निश्चय होता है कि वास्तव मे यह मुद्गरपाणि यक्ष नही है । यह तो मात्र काष्ठ का पुतला है ।

[मूल सूत्र पाठ] [संस्कृत छाया]

सूत्र ६

तए णं से मोग्गरपाणिजक्खे
अज्जुणयस्स मालागारस्स
अयमेवारूव अज्झत्थियं जाव
वियाणित्ता, अज्जुणयस्स माला-
गारस्स सरीरय अणुप्पविसइ,
अणुप्पविसित्ता तडतडस्स
बंधाइ छिदइ,
त पलसहस्सणिप्फण्णं अओमयं
मोग्गर गिण्हइ, गिण्हित्ता
ते इत्थिसत्तमे छ पुरिसे घाएइ।
तए णं से अज्जुणए मालागारे
मोग्गरपाणिणा जक्खेणं
अणाइट्ठे समाणे रायगिहस्स
णयरस्स परिपेरंत्ते णं
कल्लाकल्लि इत्थिसत्तमे छ पुरिसे
घाएमाणे विहरइ।

ततः खलु सः मुद्गरपाणियक्षः
अर्जुनस्य मालाकारस्य
इदम् एतद् रूपम् आध्यात्मिकम्
यावत् विज्ञाय, अर्जुनस्य माला-
कारस्य शरीरम् अनुप्रविशति,
अनुप्रविश्य, तडतड इरि ब्देन
वन्धनानि छिनत्ति,
तं पलसहस्रनिष्पन्नम् अयोमय
मुद्गरं गृह्णाति, गृहीत्वा
तान् स्त्रीसप्तमान् षट् पुरुषान् घातयति
: खलु सः अर्जुनः मालाकारः
मुद्गरपाणिना यक्षेन
अन्वाविष्ट• सन् राजगृहस्य
नगरस्य परिपर्यन्ते खलु
कल्याकल्यि स्त्रीसप्तमान् षट् पुरुषान्
घातयन् विहरति।

सूत्र ७

तए णं रायगिहे णयरे सिंघाडग
जाव महापहेसु बहुजणो
अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ
"एवं खलु देवाणुप्पिया! ुणए
मालागारे मोग्गरपाणिणा जक्खेणं
अणाइट्ठे समाणे रायगिहे
वहिया इत्थिसत्तमे छ पुरिसे
घाएमाणे विहरइ।"

ततः खलु राजगृहे नगरे शृंगाटक
यावत् महापथेषु बहुजनः
अन्योन्यस्य एवमाख्याति
"एवं खलु देवानुि ! अर्जुनः
मालाकारः मुद्गरपाणिना यक्षेन
अन्वाविष्टः सन् राजगृहात्
बहिः स्त्री सप्तमान् षट् पुरुषान्
घातयन् विहरति।"

[हिन्दी शब्दार्थ] [हिन्दी अर्थ]

सूत्र ६

उस मुद्गरपाणि यक्ष ने अर्जुन मालाकार के इस प्रकार के मनोगत भावो को यावत् जानकर, अर्जुन मालाकार के शरीर मे प्रवेश कर लिया प्रविष्ट होकर तड् तड् करके सब बन्धनो को काट दिया और उस हजार पलभार से निर्मि लोहे के मुद्गर को लेकर उन, स्त्री जिनमे सातवी है ऐसे, छओ गोष्ठी पुरुषो को मार डालता है।

वह अर्जुन मालाकार मुद्गरपाणी यक्ष से आवि होकर राजगृह नगर के आसपास चारो ओर प्रतिदिन छ पुरुषो और सातवी स्त्री को मारता हुआ विचरने लगा।

तब मुद्गरपाणि यक्ष ने अर्जुनमाली के इस प्रकार के मनोगत भावो को जानकर उस के शरीर मे प्रवेश किया और उसके बन्धनो को तडातड तोड डाला।

अब उस मुद्गरपाणि यक्ष से आविष्ट उस अर्जुन माली ने उस हजार पल भार वाले लोहमय मुद्गर को हाथ मे लेकर अपनी वसुमति भार्यासहित उन छहो गौष्ठिक पुरुषो को उस मुद्गर के प्रहार से मार डाला।

इस प्रकार इन सातो प्राणियो को मारकर मुद्गरपाणि यक्ष से आविष्ट (वशीभूत) वह अर्जुनमाली राजगृह नगर की बाहरी सीमा के आस पास चारो ओर ६ पुरुष और १ स्त्री मिला कर ७ प्राणियो की प्रतिदिन हत्या करते हुए घूमने लगा।

सूत्र ७

उस समय राजगृह नगर के शृंगाटक आदि राजमार्गो पर बहुत से लोग परस्पर इस प्रकार कहने लगे—"हे देवानुप्रियो ! अर्जुन माली मुद्गरपाणि यक्ष से आविष्ट होकर राजगृह नगर के बाहर छ पुरुषो और सातवी स्त्री को मारता हुआ विचरण कर रहा है।"

उस समय राजगृह नगर के शृंगाटकों मे राजमार्गो आदि सभी स्थानो मे बहुत से लोग परस्पर इस प्रकार बोलने लगे—'हे देवानुप्रियो ! अर्जुनमाली मुद्गरपाणि यक्ष के वशीभूत होकर राजगृह नगर के बाहर एक स्त्री और ६ पुरुष, इस प्रकार सात व्यक्तियो को प्रतिदिन मार रहा है।'

[मूल सूत्र पाठ] [संस्कृत छाया]

सूत्र ६

तए ण से मोग्गरपाणिजक्खे
अज्जुणयस्स मालागारस्स
अयमेवारूवं अज्झत्थिय जाव
वियाणित्ता, अज्जुणयस्स माला-
गारस्स सरीरय अणुप्पविसइ,
अणुप्पविसित्ता तडतडस्स
बधाइं छिंदइ,
तं पलसहस्सणिप्फण्णं अओमयं
मोग्गरं गिण्हइ, गिण्हित्ता
ते इत्थिसत्तमे छ पुरिसे घाएइ ।
तए णं से अज्जुणए मालागारे
मोग्गरपाणिणा जक्खेणं
अणाइट्ठे समाणे रायगिहस्स
णयरस्स परिपेरंत्ते णं
कल्लाकल्लिं इत्थिसत्तमे छ पुरिसे
घाएमाणे विहरइ ।

ततः खलु सः मुद्गरपाणियक्षः
अर्जुनस्य मालाकारस्य
इदम् एतद् रूपम् आध्यात्मिकम्
यावत् विज्ञाय, अर्जुनस्य माला-
कारस्य शरीरम् अनुप्रविशति,
अनुप्रविश्य, तडतड इतिशब्देन
बन्धनानि छिनत्ति,
तं पलसहस्रनिष्पन्नम् अयोमय
मुद्गरं गृह्णाति, गृहीत्वा
तान् स्त्रीसप्तमान् षट् पुरुषान् घातयति
: खलु सः अर्जुनः मालाकारः
मुद्गरपाणिना यक्षेन
अन्वाविष्ट. सन् राजगृहस्य
नगरस्य परिपर्यन्ते खलु
कल्याकल्यि स्त्रीसप्तमान् षट् पुरुषान्
घातयन् विहरति ।

सूत्र ७

तए णं रायगिहे णयरे सिंघाडग
जाव महापहेसु बहुजणो
अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ
"एवं खलु देवाणुप्पिया ! णए
मालागारे मोग्गरपाणिणा जक्खेणं
अणाइट्ठे समाणे रायगिहे
बहिया इत्थिसत्तमे छ पुरिसे
घाएमाणे विहरइ ।"

ततः खलु राजगृहे नगरे शृंगाटक
यावत् महापथेषु बहुजनः
अन्योन्यस्य एवमाख्याति
"एवं खलु देवानुप्रिया! अर्जुनः
मालाकारः मुद्गरपाणिना यक्षेन
अन्वाविष्ट. सन् राजगृहात्
बहिः स्त्री सप्तमान् षट् पुरुषान्
घातयन् विहरति ।"

[हिन्दी शब्दार्थ] [हिन्दी अर्थ]

सूत्र ६

उस मुद्गरपाणि यक्ष ने अर्जुन मालाकार के इस प्रकार के मनोगत भावो को यावत् जानकर, अर्जुन मालाकार के शरीर मे प्रवेश कर ि ा प्रविष्ट होकर तड् तड् करके सब बन्धनों को काट दिया और उस हजार पलभार से निर्ि लोहे के मुद्गर को लेकर उन, स्त्री जिनमे सातवी है ऐसे, छओ गोष्ठी पुरुषो को मार डालता है।

वह अर्जुन मालाकार मुद्गरपाणी यक्ष से आविष्ट होकर राजगृह नगर के आसपास चारो ओर प्रतिदिन छ पुरुषो और सातवी स्त्री को मारता हुआ विचरने लगा।

तब मुद्गरपाणि यक्ष ने अर्जुनमाली के इस प्रकार के मनोगत भावो को जानकर उस के शरीर मे प्रवेश किया और उसके बन्धनो को तडातड तोड डाला।

अब उस मुद्गरपाणि यक्ष से आविष्ट उस अर्जुन माली ने उस हजार पल भार वाले लोहमय मुद्गर को हाथ मे लेकर अपनी बसुमति भार्यासहित उन छहो गौष्ठिक पुरुषो को उस मुद्गर के प्रहार से मार डाला।

इस प्रकार इन सातो प्राणियो को मारकर मुद्गरपाणि यक्ष से आविष्ट (वशीभूत) वह अर्जुनमाली राजगृह नगर की बाहरी सीमा के आस पास चारो ओर ६ पुरुष और १ स्त्री मिला कर ७ प्राणियो की प्रतिदिन हत्या करते हुए घूमने लगा।

सूत्र ७

उस समय राजगृह नगर के शृंगाटक आदि राजमार्गो पर बहुत से लोग परस्पर इस प्रकार कहने लगे— "हे देवानुप्रियो ! अर्जुन माली मुद्गरपाणि यक्ष से आविष्ट होकर राजगृह नगर के बाहर छ पुरुषो और सातवी स्त्री को मारता हुआ विचरण कर रहा है।"

उस समय राजगृह नगर के शृंगाटकों मे राजमार्गो आदि सभी स्थानो मे बहुत से लोग परस्पर इस प्रकार बोलने लगे—'हे देवानुप्रियो ! अर्जुनमाली मुद्गरपाणि यक्ष के वशीभूत होकर राजगृह नगर के बाहर एक स्त्री और ६ पुरुष, इस प्रकार सात व्यक्तियो को प्रतिदिन मार रहा है।'

[मूल सूत्र पाठ]

[संस्कृत छाया]

सूत्र ६

तए ण से मोग्गरपाणिजक्खे
अज्जुणयस्स मालागारस्स
अयमेवारूव अज्झत्थिय जाव
वियाणित्ता, अज्जुणयस्स माला-
गारस्स सरीरय अणुप्पवि इ,
अणुप्पविसित्ता तडतडस्स
बधाइं छिंदइ,
तं पलसहस्सणिप्फण्णं अओमयं
मोग्गर गिण्हइ, गिण्हित्ता
ते इत्थिसत्तमे छ पुरिसे घाएइ।
तए ण से अज्जुणए मालागारे
मोग्गरपाणिणा जक्खेणं
अण्णाइट्ठे समाणे रायगिहस्स
णयरस्स परिपेरंत्ते णं
कल्लाकल्लि इत्थिसत्तमे छ पुरिसे
घाएमाणे विहरइ।

ततः खलु सः मुद्गरपाणियक्षः
अर्जुनस्य मालाकारस्य
इदम् एतद् रूपम् आध्यात्मिकम्
यावत् विज्ञाय, अर्जुनस्य माला-
कारस्य शरीरम् अनुप्रविशति,
अनुप्रविश्य, तडतड इति ब्देन
वन्धनानि छिनत्ति,
तं पलसहस्रनिष्पन्नम् अयोमयं
मुद्गरं गृह्णाति, गृहीत्वा
तान् स्त्रीसप्तमान् षट् पुरुषान् घातयति
: खलु सः अर्जुनः मालाकारः
मुद्गरपाणिना यक्षेन
अन्वावि : सन् राजगृहस्य
नगरस्य परिपर्यन्ते खलु
कल्याकल्यि स्त्रीसप्तमान् षट् पुरुषान्
घातयन् विहरति।

सूत्र ७

तए णं रायगिहे णयरे सिघाडग
जाव महापहेसु बहुजणो
अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ
"एव खलु देवाणुप्पिया! णए
मालागारे मोग्गरपाणिणा जक्खेणं
अण्णाइट्ठे समाणे रायगिहे
बहिया इत्थिसत्तमे छ पुरिसे
घाएमाणे विहरइ।"

: खलु राजगृहे नगरे शृंगाटक
यावत् महापथेषु बहुजनः
अन्योन्यस्य एवमाख्याति
"एवं खलु देवानु ! अर्जुनः
मालाकारः मुद्गरपाणिना यक्षेन
अन्वाविष्टः सन् राजगृहात्
बहिः स्त्री सप्तमान् षट् पुरुषान्
घातयन् विहरति।"

[हिन्दी शब्दार्थ] [हिन्दी अर्थ]

सूत्र ६

उस मुद्गरपाणि यक्ष ने अर्जुन मालाकार के इस प्रकार के मनोगत भावो को यावत् जानकर, अर्जुन मालाकार के शरीर मे प्रवेश कर ि ा प्रविष्ट होकर तड् तड् करके सब बन्धनों को काट दिया और उस हजार पलभार से निर्मि लोहे के मुद्गर को लेकर उन, स्त्री जिनमे सातवी है ऐसे, छओ गोष्ठी पुरुषो को मार डालता है।

वह अर्जुन मालाकार मुद्गरपाणी यक्ष से आविष्ट होकर राजगृह नगर के आसपास चारो ओर प्रतिदिन छ पुरुषो और सातवी स्त्री को मारता हुआ विचरने लगा।

तब मुद्गरपाणि यक्ष ने अर्जुनमाली के इस प्रकार के मनोगत भावो को जानकर उस के शरीर मे प्रवेश किया और उसके बन्धनो को तडातड तोड डाला।

अब उस मुद्गरपाणि यक्ष से आविष्ट उस अर्जुन माली ने उस हजार पल भार वाले लोहमय मुद्गर को हाथ मे लेकर अपनी वसुमति भार्यासहित उन छहो गौष्ठिक पुरुषो को उस मुद्गर के प्रहार से मार डाला।

इस प्रकार इन सातो प्राणियो को मारकर मुद्गरपाणि यक्ष से आविष्ट (वशीभूत) वह अर्जुनमाली राजगृह नगर की बाहरी सीमा के आस पास चारो ओर ६ पुरुष और १ स्त्री मिला कर ७ प्राणियो की प्रतिदिन हत्या करते हुए घूमने लगा।

सूत्र ७

उस समय राजगृह नगर के शृंगाटक आदि राजमार्गो पर बहुत से लोग परस्पर इस प्रकार कहने लगे— "हे देवानुप्रियो ! अर्जुन माली मुद्गरपाणि यक्ष से आविष्ट होकर राजगृह नगर के बाहर छ पुरुषो और सातवी स्त्री को मारता हुआ विचरण कर रहा है।"

उस समय राजगृह नगर के शृंगाटकों मे राजमार्गों आदि सभी स्थानो मे बहुत से लोग परस्पर इस प्रकार बोलने लगे—'हे देवानुप्रियो ! अर्जुनमाली मुद्गरपाणि यक्ष के वशीभूत होकर राजगृह नगर के बाहर एक स्त्री और ६ पुरुष, इस प्रकार सात व्यक्तियो को प्रतिदिन मार रहा है।'

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
तए णं से सेणिए राया इमीसे	ततः खलु सः श्रेणिकः राजा :
कहाए लद्धट्ठे समाणे	कथायाः लब्धार्थः सन्
कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ,	कौटुम्बिक पुरुषान् शब्दयति,
सद्दावित्ता एव वयासी—	शब्दयित्वा एवम् अवदत्—
"एवं खलु देवाणुप्पिया !	"एवं खलु देवानुप्रियाः !
अज्जुणए मालागारे जाव	अर्जुनकः मालाकारः यावत्
घाएमाणे विहरइ ।	घातयन् विहरति ।
त माणं तुब्भे केइ तणस्स वा,	तस्मात् मा खलु युष्माकं (मध्ये) कोऽपि
कट्ठस्स वा पाणियस्स वा,	तृणस्य वा काष्ठस्य वा पानीयस्य वा
पुप्फफलाण वा अट्ठाए सइरं	पुष्पफलाना वा अर्थाय सकृदपि
णिगच्छउ मा ण तस्स	निर्गच्छतु मा खलु तस्य
सरीरस्स वावत्ती भविस्सइ ।	शरीरस्य व्यापत्तिः भविष्यति ।
त्ति कट्टु दोच्च पि तच्चं पि	इति कृत्वा द्वितीयमपि तृतीयमपि
घोसण घोसेह,	घोषणाम् घोषयत,
घोसित्ता खिप्पामेव ममेयं	घोषयित्वा क्षिप्रमेव ैतामाज्ञाम्
पच्चप्पिणह ।"	प्रत्यर्पयत ।"
तए ण ते कोडुंबिय पुरिसा	ततः खलु ते कौटुम्बिक पुरुषाः
जाव पच्चप्पिणंति ।७।	यावत् प्रत्यर्पयन्ति ।७।

सूत्र ८

तत्थ णं रायगिहे णयरे सुदंसणे	तत्र खलु राजगृहे नगरे सुदर्शनः
णामं सेठ्ठी परिवसइ, अड्ढे	नाम श्रेष्ठी परिवसति, आढ्यः
जाव अपरिभूए ।	यावत् अपरिभूत ।
तए ण से सुदसणे णोवासए	तत खलु स सुदर्शन श्रमणोपासकः
यावि होत्था ।	चापि अभवत् ।
अभिगयजीवाजीवे जाव विहरइ ।	अभिगत जीवाजीवः यावत् विहरति ।
तेणं कालेण तेण समयेणं	तस्मिन् काले तस्मिन् समये

[हिन्दी शब्दार्थ]

इसके बाद राजा श्रेणिक को जब यह बात मालूम हुई उन्होने अपने सेवको को बुलाया और बुलाकर इस प्रकार कहा "हे देवानुप्रियो ! अर्जुन माली यावत् (सात जनो को) मारता हुआ घूम रहा है। इसलिये तुम मे से कोई भी घास के लिए, काष्ठ के लिये, जल के लिये अथवा फल फूलादि के लिये एकबार भी बाहर मत निकलो जिससे कि तुम्हारे शरीर का नाश न होवे। इस प्रकार दूसरी बार भी तीसरी बार भी घोषणा करो। घोषणा करके शीघ्र ही मुझे इस की वापस सूचना दो।" तदनन्तर उन आज्ञाकारी पुरुषो ने यावत् वापस सूचित कर दिया।७।

[हिन्दी अर्थ]

इसके बाद जब श्रेणिक राजा ने यह यह वात सुनी तो उन्होने अपने सेवक पुरुषो को बुलाया और उनको इस प्रकार कहा— 'हे देवानुप्रियो ! राजगृह नगर के बाहर अर्जुनमाली यावत् छ पुरुष और एक स्त्री इस प्रकार सात व्यक्तियो को प्रतिदिन मारता हुआ घूम रहा है।

इसलिये तुम सारे नगर मे मेरी आज्ञा को इस प्रकार प्रसारित करो कि यदि नागरिको की इच्छा जीवित रहने की हो तो कोई तृण के लिये काष्ठ, पानी अथवा फल फूल के लिये राजगृह नगर के बाहर न निकले। यदि वे कही बाहर निकले, तो ऐसा न हो कि उनके शरीर का विनाश हो जाय।

हे देवानुप्रियो ! इस प्रकार दो तीन बार घोषणा करके मुझे सूचित करो।'

इस प्रकार राजाज्ञा पाकर राज्याधिकारियो ने राजगृह नगर मे घूम घूम कर उपरोक्त राजाज्ञा की घोषणा की और घोषणा करके राजा को सूचित कर दिया।

सूत्र ८

वहाँ राजगृह नगर मे सुदर्शन नामक सेठ रहता था, वह धन सम्पन्न एवं यावत् अपराजित था। वह सुदर्शन श्रमणोपासक भी था। यावत् वह जीवाजीव का जानकार था उस काल उस समय मे

उस राजगृह नगर मे सुदर्शन नाम के एक धनाढ्य सेठ रहते थे, जो अपराभूत थे। श्रमणोपासक श्रावक थे और जीव अजीव आदि नवतत्वो के ज्ञाता थे। यावत् श्रमणो को प्रतिलाभ देने वाले थे।

उस काल उस समय श्रमण भगवान् महावीर स्वामी धर्मोपदेश देते हुए राजगृह पधारे और बाहर उद्यान मे ठहरे।

[मूल सूत्र पाठ]

तए णं से सेणिए राया इमीसे
कहाए लद्धट्ठे समाणे
कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ,
सद्दावित्ता एव वयासी—
"एव खलु देवाणुप्पिया !
अज्जुणए मालागारे जाव
घाएमाणे विहरइ ।
त माणं तुब्भे केइ तणस्स वा,
कट्ठस्स वा पाणियस्स वा,
पुप्फफलाण वा अट्ठाए सइर
णिगच्छउ मा ण तस्स
सरीरस्स वावत्ती भविस्सइ ।
त्ति कट्टु दोच्च पि तच्चं पि
घोसण घोसेह,
घोसित्ता खिप्पामेव ममेयं
पच्चप्पिणह ।"
तए ण ते कोडुंबिय पुरिसा
जाव पच्चप्पिणंति ।७।

[सस्कृत छाया]

ततः खलु सः श्रेणिकः राजा अस्याः
कथायाः लब्धार्थः सन्
कौटुम्बिक पुरुषान् शब्दयति,
शब्दयित्वा एवम् अवदत्—
"एवं खलु देवानुप्रियाः !
अर्जुनकः मालाकारः यावत्
घातयन् विहरति ।
तस्मात् मा खलु युष्माकं (मध्ये) कोऽपि
तृणस्य वा काष्ठस्य वा पानीयस्य वा
पुष्पफलानां वा अर्थाय सकृदपि
निर्गच्छतु मा खलु तस्य
शरीरस्य व्यापत्तिः भविष्यति ।
इति कृत्वा द्वितीयमपि तृतीयमपि
घोषणाम् घोषयत,
घोषयित्वा क्षिप्रमेव ममैतामाज्ञाम्
प्रत्यर्पयत ।"
ततः खलु ते कौटुम्बिक पुरुषाः
यावत् प्रत्यर्पयन्ति ।७।

सूत्र ८

तत्थ णं रायगिहे णयरे सुदंसणे
णाम सेठ्ठी परिवसइ, अड्ढे
जाव अपरिभूए ।
तए ण से सुदंसणे समणोवासए
यावि होत्था ।
अभिगयजीवाजीवे जाव विहरइ ।
तेण कालेणं तेण समयेणं

तत्र खलु राजगृहे नगरे सुदर्शनः
नाम श्रेष्ठी परिवसति, आढ्यः
यावत् अपरिभूतः ।
तत खलु सः सुदर्शनः श्रमणोपा :
चापि अभवत् ।
अभिगत जीवाजीवः यावत् विहरति ।
तस्मिन् काले तस्मिन् समये

[हिन्दी शब्दार्थ]

इसके बाद राजा श्रेणिक को जब
यह बात मालूम हुई तब उन्होने
अपने सेवको को बुलाया
और बुलाकर इस प्रकार कहा
"हे देवानुप्रियो !
अर्जुन माली यावत् (सात जनो को)
मारता हुआ घूम रहा है ।
इसलिये तुम मे से कोई भी घास के
लिए, काष्ठ के लिये, जल के
लिये अथवा फल फूलादि के लिये
एकबार भी बाहर मत निकलो जिससे
कि तुम्हारे शरीर का नाश न होवे ।
इस प्रकार दूसरी बार भी
तीसरी बार भी घोषणा करो ।
घोषणा करके शीघ्र ही मुझे इस की
वापस सूचना दो ।"
तदनन्तर उन आज्ञाकारी पुरुषो ने
यावत् वापस सूचित कर दिया ।७।

[हिन्दी अर्थ]

इसके बाद जब श्रेणिक राजा ने यह यह बात सुनी तो उन्होने अपने सेवक पुरुषो को बुलाया और उनको इस प्रकार कहा—'हे देवानुप्रियो ! राजगृह नगर के बाहर अर्जुनमाली यावत् छ पुरुष और एक स्त्री इस प्रकार सात व्यक्तियो को प्रतिदिन मारता हुआ घूम रहा है ।

इसलिये तुम सारे नगर मे मेरी आज्ञा को इस प्रकार प्रसारित करो कि यदि नागरिको की इच्छा जीवित रहने की हो तो कोई तृण के लिये काष्ठ, पानी अथवा फल फूल के लिये राजगृह नगर के बाहर न निकले । यदि वे कही बाहर निकले, तो ऐसा न हो कि उनके शरीर का विनाश हो जाय ।

हे देवानुप्रियो ! इस प्रकार दो तीन बार घोषणा करके मुझे सूचित करो ।'

इस प्रकार राजाज्ञा पाकर राज्याधिकारियो ने राजगृह नगर मे घूम घूम कर उपरोक्त राजाज्ञा की घोषणा की और घोषणा करके राजा को सूचित कर दिया ।

सूत्र ८

वहाँ राजगृह नगर मे सुदर्शन नामक
सेठ रहता था, वह धन सम्पन्न एवं
यावत् अपराजित था ।
वह सुदर्शन श्रमणोपासक
भी था । यावत्
वह जीवाजीव का जानकार था
उस काल उस समय मे

उस राजगृह नगर मे सुदर्शन नाम के एक धनाढ्य सेठ रहते थे, जो अपराभूत थे । श्रमणोपासक श्रावक थे और जीव अजीव आदि नवतत्वो के ज्ञाता थे । यावत् श्रमणो को प्रतिलाभ देने वाले थे ।

उस काल उस समय श्रमण भगवान् महावीर स्वामी धर्मोपदेश देते हुए राजगृह पधारे और बाहर उद्यान मे ठहरे ।

[मूल सूत्र पाठ]	[सस्कृत छाया]
समणे भगव महावीरे	श्रमणो भगवान् महावीरः
समोसढे जाव विहरइ ।	वसृतः यावत् विहरति ।
तए ण रायगिहे णयरे	ततः खलु राजगृहे नगरे
सिंघाडग जाव महापहेसु	शृंगाटक यावत् महापथेषु
बहुजणो अण्णमण्णस्स	बहुजनः अन्योन्यस्मै
एवमाइक्खइ—जाव किमंग	एवमाख्याति—यावत् किमंग ।
पुण विउलस्स अट्ठस्स	पुनः विपुलस्य अर्थस्य
गहणयाए ?	ग्रहणेन ?
तए णं तस्स सुदंसणस्स	: खलु तस्य सुदर्शनस्य
बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं	बहुजनस्य अन्तिके एतमर्थम्
सोच्चा णिसम्म अयं अज्झत्थिए	श्रुत्वा निशम्य माध्यात्मिकः
जाव समुप्पण्णे ।	यावत् समुत्पन्नः ।
एव खलु समणे भगवं महावीरे	एवं खलु श्रमणो भगवान् महावीरः
जाव विहरइ ।	यावत् विहरति ।
त गच्छामि णं समण भगवं	तत् गच्छामि खलु श्रमणं भगवन्तं
महावीरं वंदामि णमंसामि	महावीरम् वन्दामि नमस्यामि
एवं सपेहेइ, सपेहित्ता	एव सप्रेक्षते, सप्रेक्ष्य
जेणेव अम्मापियरो तेणेव	यत्रैव अम्बापितरौ तत्रैव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता	उपागच्छति, उपागत्य
करयल परिग्गहियं जाव एवं वयासी—	करतल परिगृहीत यावदेवमवदत्-
एव खलु ाओ ! णे	एवं खलु ौ ! श्रमणः
भगवं महावीरे जाव विहरइ ।	भगवान् महावीरः यावत् विहरति ।
तं गच्छामि णं ण भगवं	तत् गच्छामि खलु श्रमणं भगवन्तं
महावीरं वदामि णमंसामि	महावीरं वन्दे नमस्यामि
जाव पज्जुवासामि ।८।	यावत् पर्युपासे ।८।

[हिन्दी शब्दार्थ]

श्रमण भगवान् महावीर
पधारे यावत् विचरने लगे ।
राजगृह नगर मे
शृ ंगाटक आदि महापथो मे
बहुत से लोग परस्पर यह कहने लगे—
जिनका नाम–गोत्र श्रवण ही
महाफलदायी होता है, फिर
उनके प्ररूपित धर्म का विपुल अर्थ
ग्रहण का लाभ तो अवर्णनीय है ।
तब बहुत से व्यक्तियो के मुख से
भगवान के पधारने का वृत्तान्त
सुनकर सुदर्शन के मन मे इस प्रकार
का अध्यवसाय यावत् उत्पन्न हुआ ।
श्रमण भगवान् महावीर यावत् राजगृह
नगर के बाहर विचरण कर रहे है ।
अत. मै श्रमण भगवान् महावीर को
वन्दन नमस्कार करने हेतु जाऊँ ।
इस प्रकार विचार किया, करके
जहॉ उसके माता पिता थे वहॉ
आया, आकर दोनो हाथ
जोडकर यावत् यो कहने लगा—
हे माता पिता ! श्रमण भगवान्
महावीर यावत् पधारे हैं । इस कारण
मैं उनकी सेवा मे जाऊ और उनको
वन्दन नमस्कार करूं, यावत् सेवा करूँ
ऐसी मेरी इच्छा है ।८।

[हिन्दी अर्थ]

उनके पधारने का समाचार सुनकर राजगृह नगर के शृ गाटक राजमार्ग आदि स्थानो मे बहुत से नागरिक लोग परस्पर इस प्रकार वार्तालाप करने लगे–हे देवानुप्रियो ! श्रमण भगवान् महावीर स्वामी यहा पधारे है, जिनके नाम गोत्र के सुनने से भी महाफल होता है तो उनके दर्शन करने, वाणी सुनने तथा उनके द्वारा प्ररूपित धर्म का विपुल अर्थ ग्रहण करने से जो फल होता है उसका तो कहना ही क्या ? वह तो अवर्णनीय है ।

इस प्रकार बहुत से नागरिको के मुख से भगवान् के पधारने का समाचार सुनकर उस सुदर्शन सेठ के मन मे इस प्रकार विचार उत्पन्न हुआ–

"निश्चय ही ! श्रमण भगवान् महावीर नगर मे पधारे है और बाहर गुणशीलक उद्यान मे विराजमान है, इसलिये मै जाऊ और उन श्रमण भगवान् महावीर को वदन-नमस्कार करू ।"

ऐसा सोचकर वे अपने माता-पिता के पास आये और हाथ जोडकर इस प्रकार बोले "निश्चय ही हे माता-पिता ! श्रमण भगवान् महावीर स्वामी नगर के बाहर उद्यान मे विराज रहे है। अत मैं चाहता हू कि उनकी सेवा मे जाऊ और उन्हे वदन-नमस्कार करू ।"

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]

सूत्र ६

तए णं त सुदसणं सेट्ठि अम्मापियरो एव वयासी—	ततः खलु त सुदर्शनं श्रेष्ठिनम् अम्बापितरौ एवमवदताम्—
एव खलु पुत्ता ! अज्जुणए माला गारे जाव घाएमाणे विहरइ,	एवं खलु पुत्र ! अर्जुनकः माला-कारः यावत् घातयन् विहरति,
त मा ण तुम पुत्ता ! णं भगवं महावीर वदए णिगच्छाहि,	तद् मा खलु त्व हे पुत्र! श्रमण भगवन्तं महावीरं वन्दको निर्गच्छ,
माण तव सरीरयस्स वावत्ती भविस्सइ । तुम णं इहगए चेव समण भगव महावीरं वदाहि णमसाहि ।	मा खलु तव शरीरस्य व्यापत्तिः भवि ति । त्वं खलु इहगत एव श्रमण भगवन्त महावीरम् वन्दस्व, नमस्य ।
तए ण सुदसणे सेट्ठी अम्मापियरं एवं वयासी-	तत. खलु सुदर्शनः श्रेष्ठी अम्बापि ौ एवमवदत्—
किण्ण अहं अम्मयाओ! समणं भगवं महावीर इहमागय इह पत्त इह समोसढं इह गए चेव वदिस्सामि णमंसि ामि?	कि खलु अहं अम्बातातौ ! श्रमणं भगवन्तं महावीरम् इह आगतम्, इह प्राप्तम्, इह समवसृ , इहगतैव वन्दिष्ये नमस्यिष्यामि ?
तं गच्छामि ण अहं अम्मयाओ ! तुब्भेहि अब्भणुण्णाए णे समणं भगवं महावीर वदामि जाव पज्जुवासामि ।६।	तद् गच्छामि खलु अहम् अम्बातातौ ! युष्माभिः अभ्यनुज्ञातः सन् श्रमणं भगवन्तं महावीरं वन्दे यावत् पर्युपासे ।६।

सूत्र १०

तए ण त सुदंसण सेट्ठि अम्मापियरो जाहे णो संचायंति, बहूहि आघवणाहिं ४ जाव परूवेत्तए ।	तत. खलु त सुदर्शनं श्रेष्ठिनम् अम्बापितरौ यदा न शक्नुतः बहुभिः आख्यायनाभिः यावत् प्ररूपणाभि. ।

[हिन्दी शब्दार्थ] [हिन्दी अर्थ]

सूत्र ९

यह सुनकर माता पिता सुदर्शन सेठ को इस प्रकार बोले—

हे पुत्र ! निश अर्जुन मालाकार यावत् मारता हुआ घूम रहा है । इसलिये हे पुत्र ! तुम श्रमण भगवान् महावीर को वन्दन करने हेतु बाहर मत जाओ, कदाचित् तुम्हारे शरीर की हानि हो जाय, अतः तुम यहाँ रहते हुए ही श्रमण भगवान महावीर को वन्दना नमस्कार कर लो ।

तब सुदर्शन सेठ ने अपने माता पिता को इस प्रकार कहा—

हे माता पिता ! श्रमण भगवान् महावीर यहाँ पधारे है, यहाँ विराजे है, यहाँ समवसृत हुए है, तो मै यहाँ से ही कैसे वन्दन नमस्कार करूँ ? इसलिये हे मातापिता! आप आज्ञा दीजिये, मैं श्रमण भगवान महावीर के पास जाकर वन्दन नमस्कार करूँ और यावत् सेवा करूँ ।९।

सुदर्शन की यह बात सुनकर माता-पिता इस प्रकार बोले—"हे पुत्र ! इस नगर के बाहर अर्जुनमाली छह पुरुष और एक स्त्री इस तरह सात व्यक्तियो को नित्यप्रति मारता हुआ घूम रहा है इसलिये हे पुत्र ! तुम श्रमण भगवान् महावीर को वदन करने के लिये नगर के बाहर मत निकलो । नगर के बाहर निकलने से सम्भव है तुम्हारे शरीर को कोई हानि हो जाय । इसलिये यही अच्छा है कि तुम यही से श्रमण भगवान् महावीर को वदन-नमस्कार करलो ।"

तब सुदर्शन सेठ माता पिता से इस प्रकार बोले—" हे माता-पिता ! जब श्रमण भगवान् महावीर यहा पधारे है, यहा समवसृत हुए है और बाहर उद्यान मे विराजे है तो मै उनको यही से वदना-नमस्कार करू यह कैसे हो सकता है । इसलिए हे माता पिता ! आप मुझे आज्ञा दीजिये कि मैं वही जाकर श्रमण भगवान् महावीर को वदना करू, नमस्कार करू, यावत् उनकी पर्युपासना करू ।"

सूत्र १०

तदनन्तर उस सुदर्शन सेठ को माता-पिता जब नहीं समझा सके, अनेक प्रकार की युक्तियो से

उस सुदर्शन सेठ को माता-पिता जब अनेक प्रकार की युक्तियो से भी नही समझा सके, तब माता-पिता ने अनिच्छा

[मूल सूत्र पाठ]

[संस्कृत छाया]

सूत्र ६

तए णं त सुदंसणं सेट्ठि अम्मापियरो
एव वयासी—
एव खलु पुत्ता ! अज्जुणए माला
गारे जाव घाएमाणे विहरइ,
त मा ण तुम पुत्ता ! समण भगवं
महावीर वदए णिगच्छाहि,
माण तव सरीरयस्स वावत्ती
भविस्सइ । तुम णं इहगए
चेव समण भगव महावीर
वदाहि णमंसाहि ।
तए णं सुदंसणे सेट्ठी अम्मापियरं
एव वयासी-
किण्ण अहं अम्मयाओ! समणं
भगव महावीर इहमागय
इह पत्त इह समोसढं
इह गए चेव वदिस्सामि णमंसि   मि?
तं गच्छामि णं अहं अम्मयाओ !
तुब्भेहि अब्भणुण्णाए समाणे
समणं भगव महावीरं वदामि
जाव पज्जुवासामि ।६।

ततः खलु तं सुदर्शनं श्रेष्ठिनम्
अम्बापितरौ एवमवदताम्—
एव खलु पुत्र ! अर्जुनकः माला-
कारः यावत् घातयन् विहरति,
तद् मा खलु त्व हे पुत्र! श्रमणं भगवन्तं
महावीर वन्दको निर्गच्छ,
मा खलु तव शरीरस्य व्यापत्ति.
भविष्यति । त्व खलु इहगत
एव श्रमण भगवन्तं महावीरम्
वन्दस्व, नमस्य ।
तत. खलु सुदर्शन. श्रेष्ठी अम्बापितरौ
एवमवदत्—
कि खलु अहं अम्बातातौ !
श्रमण भगवन्त महावीरम् इह
आगतम्, इह प्राप्तम्, इह समवसृतम्,
इहगतैव वन्दिष्ये नमस्यिष्यामि ?
तद् गच्छामि खलु अहम् अम्बातातौ !
युष्माभिः अभ्यनुज्ञातः सन्
श्रमणं भगवन्तं महावीरं वन्दे
यावत् पर्युपासे ।६।

सूत्र १०

तए ण तं सुदंसण सेट्ठि
अम्मापियरो जाहे णो संचायति,
बहूहि आघवणाहि ४ जाव परूवेत्तए ।

ततः खलु तं सुदर्शनं श्रे
अम्बापितरौ यदा न शक्नुतः बहुभिः
आख्यायनाभिः यावत् प्ररूपणाभि. ।

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
तए णं से अम्मापियरो ताहे अकामया	: खलु तौ अम्बापितरौ अकामे-
चेव सुदसणं सेट्ठि एवं वयासी—	नैव सुदर्शनं श्रेष्ठिनमेव —
"अहासुहं देवाणुप्पिया !"	'यथासुखं देवानुप्रि : !"
तए णं से सुदंसणे सेट्ठि	: सः सुदर्शनः श्रेष्ठी
अम्मापिईहि अब्भणुण्णाए	अम्बापितृभ्याम् अभ्यनुज्ञातः
समाणे ण्हाए सुद्धप्पावेसाइं	सन् स्नातः शुद्धप्रावेश्यानि
जाव सरीरे, सयाओ गिहाओ	यावत् शरीरः, स्वकात् गृहात्
पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता,	प्रतिनिष्क्राम्यति, प्रतिनि
पायविहार चारेण रायगिहं	पादविहारचारेण राजगृहस्य
णयरं मज्झं मज्झेणं णिगच्छइ,	नगरस्य मध्यमध्येन निर्गच्छति
णिगच्छित्ता मोग्गरपाणिस्स	निर्गत्य मुद्गरपाणेः
जक्खस्स जक्खाययणस्स	यक्षस्य यक्षायतनस्य
अदूरसामंतेणं जेणेव	अदूरसामन्तेन यत्रैव
गुणसिलए चेइए जेणेव	गुणशिलकं चैत्यम् यत्रैव
समणे भगवं महावीरे तेणेव	श्रमणः भगवान् महावीरः तत्रैव
पहारेत्थ गमणाए।	प्राधारयत् गमनाय।
तए णं से मोग्गरपाणि जक्खे	ततः खलु स मुद्गरपाणिः यक्षः
सुदंसणं णोवासयं	सुदर्शनम् श्रमणोपासकम्
अदूर तेणं वीईवयमाण	अदूरसामन्तेन व्यतिव्रजन्तम्
पासइ, पासित्ता आसुरत्ते	पश्यति, दृष्ट्वा आशुरक्तः
तं पलसहस्सणिप्फण्णं ोमयं	तं पलसहस्र निष्पन्नम् अयो
मोग्गरं उल्लालेमाणे उल्लालेमाणे	मुद्गरम् उल्लालयन् उल्लालयन्
जेणेव सुदंसणे समणोवासए	यत्रैव सुदर्शनः श्रमणोपासकः
तेणेव पहारेत्थ गमणाए।१०।	तत्रैव प्राधारयद् गमनाय।१०।

सूत्र ११

तए णं से सुदंसणे समणोवासए	ततः खलु सः सुदर्शन- श्रमणोपासकः
मोग्गरपाणि जक्खं एज्जमाणं	मुद्गरपाणि य आगच्छन्तम्

[हिन्दी शब्दार्थ]

माता पिता ने अनिच्छापूर्वक ही सुदर्शन सेठ को इस प्रकार कहा— जैसे सुख हो वैसे ही करो।

उस सु ंन सेठ ने माता पिता की आज्ञा पाकर स्नान किया और धर्म सभा में जाने योग्य शुद्ध वस्त्र यावत् धारण किये यावत् अपने घर से निकला निकलकर पैदल चलते हुए ही राजगृह नगर के मध्य से होता हुआ निकला निकलकर मुद्गरपाणियक्ष के यक्षायतन के पास से होते हुए जहाँ पर गुणशील ना उद्यान और जहाँ श्रमण भगवान् महावीर है उस ओर जाने लगा।

उस मुद्गरपाणियक्ष ने सुदर्शन श्रमणोपासक को समीप से ही जाते हुए देखा और देखकर शीघ्र क्रुद्ध हुआ और उस हजारपल भारवाले लोहे के मुद्गर को घुमाते घुमाते जहाँ सुदर्शन श्रमणोपासक था वहाँ चलकर आने लगा।१०।

[हिन्दी अर्थ]

पूर्वक इस प्रकार कहा—"हे पुत्र! फिर जिस प्रकार तुम्हे सुख उपजे वैसा करो।"

इस प्रकार सुदर्शन सेठ ने माता-पिता से आज्ञा प्राप्त करके स्नान किया और धर्मसभा मे जाने योग्य शुद्ध वस्त्र धारण किये। फिर अपने घर से निकला और पैदल ही राजगृह नगर के मध्य से चलकर मुद्गरपाणि यक्ष के यक्षायतन के न अति दूर से और न अति निकट से ही होते हुए गुणशील उद्यान की ओर, जहा श्रमण भगवान् महावीर विराजित थे, निकलने लगे।

सुदर्शन सेठ को अपने यक्षायतन के पास से निकलते हुए देखकर वह मुद्गरपाणि यक्ष बडा क्रुद्ध हुआ और क्रुद्ध होकर उस हजार पल के वजन वाले लोह-मुद्गर को घुमाते हुए उसकी ओर दौडा।

सूत्र ११

तव सुदर्शन श्रमणोपासक ने मुद्गरपाणि यक्ष को आते हुए को

उस समय उस क्रुद्ध मुद्गरपाणि यक्ष को अपनी ओर आता हुआ देखकर वे

[मूल सूत्र पाठ]

इ, पासित्ता अभीए,
अतत्थे, अणुव्विग्गे, अक्खुभिए,
अचलिए,　भंते, वत्थं तेणं
भूमि पमज्जइ,
पमज्जित्ता करयल एवं वयासी—
णमोत्थु णं अरिहंताण
भगवंताणं जाव संपत्ताणं ।
णमोत्थुणं समणस्स जाव
सपाविउकामस्स ।
पुव्वि च णं मए भगवओ
महावीरस्स अंतिए थूलए
पाणाइवाए पच्चक्खाए
जावज्जीवाए ३
थूलए मुसावाए, थूलए
अदिण्णादाणे　रसतोसे
कए जावज्जीवाए,
इच्छा परिमाणे कए
ीवाए ।
त इयाणि पि णं तस्सेव अंतियं
सव्वं पाणाइवायं, पच्चक्खामि
जावज्जीवाए, सव्वं मुसावायं,
सव्वं अदिण्णादाणं, सव्वं मेहुणं,
सव्वं परिग्गहं पच्चक्खामि
जावज्जोवाए,
सव्वं कोहं जाव मिच्छादंसणसल्लं
पच्चक्खामि
जावज्जीवाए,

[सस्कृत छाया]

पश्यति, दृष्ट्वा अभीतः
अत्रस्त', अनुद्विग्नः, अक्षुब्धः
अचलितः,　'भ्रान्तः, वस्त्रान्तेन
भूमि प्रमार्जयति,
प्रमार्ज्य करतल परिगृहीतः एवमवदत्
नमोऽस्तु खलु अर्हद्भ्यो
भगवद्भ्यो यावत्　ाप्तेभ्यः ।
नमोऽस्तु खलु श्रमणाय यावत्
सप्राप्तुकामाय ।
पूर्वं च खलु मया भगवतः
महावीरस्य अन्तिके स्थूलकः
प्राणातिपात. प्रत्याख्यातः
यावज्जीवम् । (एवं)
स्थू　: मृषावाद., स्थू
अदत्तादानं (प्रत्याख्यातम्)
स्वदारसन्तोषः कृतः यावज्जीवम्
इच्छापरिमाणः कृतः
यावज्जीवम् ।
तदिदानीमपि खलु　अन्तिके
प्राणातिपातं प्रत्याख्यामि
ीवम्,　मृषा
सर्वमदत्तादानं, सर्व मैथुनम्
सर्व परिग्रहं प्रत्याख्यामि
यावज्जीवम्
सर्व क्रोधम् यावत् मिथ्या दर्शनशल्यम्
प्रत्याख्यामि
यावज्जीवम् ।

[हिन्दी शब्दार्थ]

देखा और देखकर वह डरा नही, त्रास, उद्वेग एवं क्षोभ रहित अ भ्रान्त हुए बिना, वस्त्र के छोर से भूमि का प्रमार्जन किया, करके दोनो हाथ जोडकर इस प्रकार बोला— नमस्कार हो अरिहंत भगवान् यावत् मोक्षप्राप्त सिद्धो को नमस्कार हो। नमस्कार हो प्रभु महावीर को। यावत् मुक्ति पाने वाले श्रमणाि ो को मैंने पहले ही श्रमण भगवान महावीर के स्थूल प्राणातिपात का आजीवन प्रत्याख्यान अर्थात् त्याग किया है। इस प्रकार स्थूल मृषावाद, स्थूल अदत्तादान का भी त्याग किया है। स्वदार सतोष और इच्छापरिमाण रूप स्थूल परिग्रह विरमण जीवन भर के लिए ग्रहण किया है। अब भी मैं उन्ही भगवान के पास (साक्षी से) सर्वथा प्राणातिपात का यावज्जीवन त्याग करता हू तथा सम्पूर्ण मृषावाद, सर्व विध अदत्तादान, सर्वविध मैथुन एव सम्पूर्ण परिग्रह का आजीवन त्याग करता हूँ। मैं सर्वथा क्रोध यावत् मिथ्या दर्शनशल्य तक के समस्त (१८) पापो का भी आजीवन त्याग करता हूँ।

[हिन्दी अर्थ]

सुदर्शन श्रमणोपासक मृत्यु की सभावना को जानकर भी किंचित् भी भय, त्रास, उद्वेग अथवा क्षोभ को प्राप्त नही हुए। उनका हृदय तनिक भी विचलित अथवा भयाक्रान्त नही हुआ।

उन्होने निर्भय होकर अपने वस्त्र के अचल से भूमि का प्रमार्जन किया और मुख पर उत्तरासग धारण किया। फिर पूर्व दिशा की ओर मु ह करके बैठ गये। बैठकर बाए घुटने को ऊचा किया और दोनो हाथ जोडकर मस्तक पर अ जुलि-पुट रक्खा।

इसके बाद इस प्रकार बोले—

"सर्वप्रथम मै उन सभी अरिहन्त भगवन्तो को, जो भूतकाल मे मोक्ष पधार गये है, एव श्रमण भगवान् महावीर स्वामी सहित उन सभी अरिहन्तो को, जो भविष्य मे मोक्ष मे पधारने वाले है, नमस्कार करता हू।"

"मैने पहले श्रमण भगवान् महावीर के पास स्थूल प्राणातिपात का आजीवन त्याग (प्रत्याख्यान) किया, स्थूल मृषावाद, स्थूल अदत्तादान का त्याग किया स्वदार सतोप और इच्छा परिमाण रूप स्थूल परिग्रह-विरमण व्रत जीवन भर के लिये ग्रहण किया, अब उन्ही भगवान् महावीर स्वामी की साक्षी से प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन और सपूर्ण-परिग्रह का सर्वथा आजीवन त्याग करता हू। क्रोध मान माया लोभ यावत् मिथ्यात्व दर्शन शल्य तक १८ पापो का भी सर्वथा आजीवन त्याग करता हू। सब प्रकार का अशन पान, खादिम और स्वादिम इन चारो प्रकार के आहार का भी त्याग करता हू।

यदि मै इस आसन्न मृत्यु उपसर्ग से बच गया तो इस त्याग का पारण करके-

[मूल सूत्र पाठ]

सव्व   णं, पाण, खाइमं,
साइमं, चउव्विह् पि आहारं
पच्चक्खामि जावज्जीवाए ।
जइण एत्तो उवसग्गाओ
मुच्चिस्सामि तो मे कप्पइ पारेत्तए,
अहणं एत्तो उवसग्गाओ
न मुच्चिस्सामि तओ मे
तहा पच्चक्खाए चेव
त्तिकट्टु सागारं पडिम पडिवज्जइ ।
तए णं से मोग्गरपाणि जक्खे तं
पलसहस्सणिप्फण्ण अयोमयं मोग्गरं
उल्लालेमाणे उल्लालेमाणे
जेणेव सुदसणे समणोवासए
तेणेव उवागच्छइ,, उवागच्छित्ता नो चेव णं
सचाएइ सुदंसणं समणोवासयं
तेयसा समभिपडित्तए ।
तए णं से मोग्गरपाणी—
जक्खे सुदंसणं समणोवासयं
सव्वओ   ताओ परिघोलेमाणे
परिघोलेमाणे जाहे नो चेव
णं सचाएइ सुदंसणं समणोवासयं
तेयसा समभिपडित्तए ।
ताहे सुदंसणस्स समणोवासयस्स
पुरओ सपक्खि सपडिदिसिं ठिच्चा
सुदंसण समणोवासय अणिमिसाए
दिट्ठीए सुचिरं णिरिक्खइ,

[संस्कृत छाया]

सर्वम् अशनम्, पानम्, खाद्यम्,
स्वाद्यम्, चतुर्विधमपि आहारं
प्रत्याख्यामि यावज्जीवम् ।
यदि खलु एतस्मादुपसर्गात्
मोक्ष्यामि तदा मम कल्पते पारयितुम्,
यदि च एतस्मादुपसर्गात्
न मुक्तो भविष्यामि तदा मे
तथा प्रत्याख्यातमेव (पूर्वोक्तम्)
इति कृत्वा साकारा प्रतिमां प्रतिपद्यते ।
  : खलु स. मुद्गरपाणि. यक्षः तं
प हस्रनिष्पन्नम् अयोमयं मुद्गरं
उल्लालयन् उल्लालयन्
यत्रैव सुदर्शनः श्रमणोपासक.
तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य न   खलु
शक्नोति सुदर्शनम् श्रमणोपासकं
तेजसा समभिपतितुम् ।
ततः खलु स. मुद्गरपाणिः
यक्षः सुदर्शनं श्रमणोपासकं
 तः समन्तात् परिघूर्णन्
परिघूर्णन यदा न चैव
खलु शक्नोति सुदर्शनं श्रमणोपासकं
ते । समभिपतितुम् ।
तदा सुदर्शनस्य श्रमणोपासकस्य
पुरतः सपक्षं सप्रतिदिक् स्थित्वा
सुदर्शनं श्रमणोपासकम् अनिमिषया
दृष्ट्या सुचिरं निरीक्षते,

[हिन्दी शब्दार्थ]

मैं ` प्रकार के
अशन, पान, खाद्य व स्वाद्य चारो ही
आहार को भी आजीवन छोडता हूँ ।
यदि इस उपसर्ग से छूटता हूँ तो मुझे
पारना आहारादि करना कल्पता है ।
पर यदि इस उपसर्ग से मुक्त न होऊँ तो
मुझे इस प्रकार का सम्पूर्ण त्याग है ।
ऐसा विचार करके सागारी पडिमा
(अनशन) धारण कर लिया ।
तदनन्तर वह मुद्गरपाणियक्ष उस
हजार पल भारी लोहे के मुद्गर को
घुमाता घुमाता हुआ जहाँ पर सुदर्शन
श्रमणोपासक था वहाँ आया, (परन्तु
वहाँ) आकर (भी) वह सुदर्शन श्रमणो-
पासक को किसी भी प्रकार अपने तेज से
विचलित करने मे समर्थ नही हुआ ।
फिर वह मुद्गरपाणि
यक्ष सुदर्शन श्रमणोपासक के
चारो ओर घूमते हुए
घूमते हुए जब नही
सुदर्शन श्रमणोपासक को
अपने तेज से पराजित कर सका,
तब सुदर्शन श्रमणोपासक के
सामने खडा रहकर उस
सुदर्शन श्रमणोपासक को अनिमेष
दृष्टि से चिरकाल तक देखता रहा ।

[हिन्दी अर्थ]

आहारादि ग्रहण करुगा । पर यदि इस उपसर्ग से मुक्त न होऊ न बचू तो मुझे इस प्रकार का सपूर्ण त्याग यावज्जीवन है ।

ऐसा निश्चय करके उन सुदर्शन सेठ ने उपरोक्त प्रकार से सागारी पडिमा—अनशन व्रत-धारण कर लिया ।

इधर वह मुद्गरपाणि यक्ष उस हजार पल के लोहमय मुद्गर को घुमाता हुआ जहा सुदर्शन श्रमणोपासक था वहा आया । परन्तु सुदर्शन श्रमणोपासक को अपने तेज से अभिभूत नही कर सका अर्थात् उसे किसी प्रकार से कष्ट नही पहुचा सका ।

मुद्गरपाणि यक्ष सुदर्शन श्रावक के चारो ओर घूमता रहा और जब उसको अपने तेज से पराजित नही कर सका तब सुदर्शन श्रमणोपासक के सामने आकर खडा हो गया और अनिमेष दृष्टि से बहुत देर तक उन्हे देखता रहा ।

इसके बाद उस मुद्गरपाणि यक्ष ने अर्जुनमाली के शरीर को छोड दिया और

[हिन्दी शब्दार्थ]

देखकर अर्जुन मालाकार के शरीर को छोड़ दिया, छो. र (शरीर से निकल कर) उस सह ल भारवाले लोहे के मुद्गर को लेकर ि दिशा से आया था उसी ि ा की ओर चला गया।

[हिन्दी अर्थ]

उस हजार पल भार वाले लौहमय मुद्गर को लेकर जिस दिशा से आया था, उसी दिशा की ओर चला गया।

सूत्र १३

तदनन्तर वह अर्जुनमाली मुद्गरपाणि यक्ष से मुक्त होने पर 'धस्' ऐसी ाज के साथ सर्वांग से भूमि पर गिर पडा। तब सुदर्शन श्रावक ने अपने को निरुपसर्ग जानकर अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण की (ध्यान खुला किया) इधर वह अर्जुन मालाकार मुहूर्त्त भर के पश्चात् स्वस्थ होकर वहा से उठा, उठकर सुदर्शन श्रावक से यो बोला—"हे देवानुप्रिय! आप कौन हो और कहाँ जा रहे हो?" तब सुदर्शन श्रावक ने अर्जुनमाली को इस प्रकार कहा—"हे देवानुप्रिय! मैं सुदर्शन नामक श्रमणोपासक जीवाजीवादि का जानने वाला गुणशिलक उद्यान मे श्रमण

मुदगरपाणि यक्ष से मुक्त होते ही वह अर्जुन मालाकार 'धस' इस प्रकार के शब्द के साथ भूमि पर गिर पडा।

तब सुदर्शन श्रमणोपासक ने अपने को उपसर्ग रहित हुआ जानकर अपनी सागारी त्याग प्रत्याख्यान रूपी प्रतिज्ञा को पाला और अपना ध्यान खोला।

इधर वह अर्जुनमाली मुहूर्त्त भर (कुछ समय) के पश्चात् आश्वस्त एव स्वस्थ होकर उठा और सुदर्शन श्रमणोपासक को सामने देखकर इस प्रकार बोला- "हे देवानुप्रिय! आप कौन हो, तथा कहाँ जा रहे हो?"

यह सुनकर सुदर्शन श्रमणोपासक अर्जुनमाली से इस तरह बोला– "हे देवानुप्रिय! मै जीवादि नौ तत्वो का ज्ञाता सुदर्शन नाम का श्रमणोपासक हू और गुणशील उद्यान मे

[मूल सूत्र पाठ]

णिरिक्खित्ता अज्जुणयस्स मालागारस्स
सरीरं विप्पजहाइ, विप्पज्जहित्ता
तं पलसहस्सणिप्फण्णं
ोमय मोग्गरं गहाय
जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव
दिसं पडिगए ।१२।

[संस्कृत छाया]

निरीक्ष्य, अर्जुनस्य मालाकारस्य
शरीर विप्रजहाति, विप्रजहाय
तं पलसहस्रनिष्पन्नम्
अयोमयं मुद्गरं गृहीत्वा
यस्याः दि . प्रादुर्भूतः तामेव
दिशं प्रतिगतः ।

सूत्र १३

तए णं से ुणए मालागारे
मोग्गरपाणिणा जक्खेणं
विप्पमुक्के समाणे धसत्ति
धरणियलंसि सव्वंगेहिं
णिवडिए । तए णं से सुदंसणे
णोवासए णिरुवसग्गमि
त्ति कट्टु पडिमं पारेइ ।
तए णं से अज्जुणए मालागारे
तओ मुहुत्तंतरेणं आसत्थे
समाणे उट्ठेइ, उट्ठित्ता सुदंसणं
समणोवासयं एवं वयासी—
"तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! के ?
कहिं वा संपत्थिया ?"
तए णं से सुदंसणे समणोवासए
अज्जुणयं मालागारं एवं वयासी—
"एवं खलु देवाणुप्पिया !
अहं सुदंसणे णामं समणोवासए
अभिगय-जीवाजीवे
गुणसिलए चेइए समणं

· खलु सः अर्जुनः मालाकारः
मुद्गरपाणिना यक्षेण
विप्रमुक्तः सन् 'धस्' इति
(शब्देन सह) धरणीतले सर्वाङ्गैः
निपति : । : खलु सः सुदर्शनः
श्रमणोपासकः 'निरुपसर्गम्'
इति कृत्वा प्रतिमां पारयति ।
: खलु सः अर्जुनः मालाकारः
ततः मुहूर्तान्तरेण आ :
सन् उत्तिष्ठति, उत्थाय सुदर्शनं
श्रमणोपासकम् एवमवदत्—
"यूयं खलु देवानुप्रि : ! के ?
क्व वा संप्रस्थिताः ?"
ततः खलु सः सुदर्शनः श्रमणोपासकः
अर्जुनकं मालाकारमेवमवादीत्—
"एवं खलु देवानुप्रिय!
अहं सुदर्शनो नाम श्रमणोपासकः
अभिगतजीवाजीवः
गुणशिलके चैत्ये श्रमणं

[हिन्दी शब्दार्थ]

देखकर अर्जुन मालाकार के शरीर को छोड़ दिया, छो . र (शरीर से निकल कर) उस सहस्रपल भारवाले लोहे के मुद्गर को लेकर जिस दिशा से आया था उसी दिशा की ओर चला गया।

[हिन्दी अर्थ]

उस हजार पल भार वाले लौहमय मुद्गर को लेकर जिस दिशा से आया था, उसी दिशा की ओर चला गया।

१३

तदनन्तर वह अर्जुनमाली मुद्गरपाणि यक्ष से मुक्त होने पर ' . ' ऐसी ाज के साथ सर्वांग से भूमि पर गिर पडा। तब सुदर्शन श्रावक ने अपने को निरुपसर्ग जानकर अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण की (ध्यान खुला किया) इधर वह अर्जुन मालाकार मुहूर्त भर के पश्चात् स्वस्थ होकर वहा से उठा, उठकर सुदर्शन श्रावक से यो बोला—
"हे देवानुप्रिय ! आप कौन हो और कहाँ जा रहे हो?"
तब सुदर्शन श्रावक ने अर्जुनमाली को इस प्रकार कहा—
"हे देवानुप्रिय !
मैं सुदर्शन नामक श्रमणोपासक जोवाजीवादि का जानने वाला गुणशिलक उद्यान मे श्रमण

मुदगरपाणि यक्ष से मुक्त होते ही वह अर्जुन मालाकार 'धस' इस प्रकार के शब्द के साथ भूमि पर गिर पडा।

तब सुदर्शन श्रमणोपासक ने अपने को उपसर्ग रहित हुआ जानकर अपनी सागारी त्याग प्रत्याख्यान रूपी प्रतिज्ञा को पाला और अपना ध्यान खोला।

इधर वह अर्जुनमाली मुहूर्त भर (कुछ समय) के पश्चात् आश्वस्त एव स्वस्थ होकर उठा और सुदर्शन श्रमणोपासक को सामने देखकर इस प्रकार बोला- "हे देवानुप्रिय! आप कौन हो, तथा कहाँ जा रहे हो?"

यह सुनकर सुदर्शन श्रमणोपासक अर्जुनमाली से इस तरह बोला- "हे देवानुप्रिय! मै जीवादि नो तत्वो का ज्ञाता सुदर्शन नाम का श्रमणोपासक हू और गुणशील उद्यान मे

[मूल सूत्र पाठ]

भगव महावीरं वदिउं
संपत्थिए" ।१३।

[सस्कृत छाया]

भगवन्तं महावीर वन्दितुम्
सप्रस्थितः ।१३।

सूत्र १४

तए ण से अज्जुणए मालागारे सुदंसणं
समणोवासयं एवं वयासी—
"तं इच्छामि ण देवाणुप्पिया !
अहमवि तुमए सद्धि समणं
भगवं महावीर वदित्तए
जाव पज्जुवासित्तए।"
'अहासुह देवाणुप्पिया !'
तए ण से सुदसणे समणोवासए
अज्जुणएणं मालागारेणं सद्धि
जेणेव गुणसिलए चेइए
जेणेव समणे भगवं महावीरे
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
अज्जुणएण मालागारेणं सद्धि
समणं भगवं महावीरं
तिक्खुत्तो जाव पज्जुवासइ ।
तए णं समणे भगवं महावीरे
सुदसणस्स समणोवासयस्स
अज्जुणयस्स मालागारस्स तीसे
य धम्मकहा ।
सुदसणे पडिगए ।१४।

ततः खलु सः अर्जुनः मालाकारः सुदर्शनं
श्रमणोपासकं एवमवदत्—
तत्-इच्छामि खलु देवानुप्रिय !
अहमपि त्वया सार्द्धं श्रमणं
भगवन्तं महावीरं वन्दितुं
यावत् पर्युपासितुम् ।
'यथा सुखं देवानुप्रिय !'
ततः खलु स. सुदर्शनः श्रमणोपासकः
अर्जुनकेन मालाकारेण सार्द्धं
यत्रैव गुणशिलकः चैत्यः
यत्रैव श्रमणो भगवान् महावीरः
तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य
अर्जुनकेन मालाकारेण सार्द्धं
श्रमणं भगवन्तं महावीरं
त्रिः कृत्वा यावत् पर्युपासते ।
ततः खलु श्रमणः भगवान् महावीरः
सुदर्शनाय श्रमणोपासकाय
अर्जुनाय मालाकाराय तस्यै
च धर्मकथा
सुदर्शनः प्रतिगत. ।१४।

सूत्र १५

तए णं से अज्जुणए मालागारे
समणस्स भगवओ महावीरस्स

ततः खलु सः अर्जुनः मालाकारः
श्रमणस्य भगवतः महावीरस्य

[हिन्दी शब्दार्थ] [हिन्दी अर्थ]

भगवान महावीर को वन्दना नमस्कार करने के लिये जा रहा हूं।

श्रमण भगवान् महावीर को वदन नमस्कार करने जा रहा हू।"

सूत्र १४

वह अर्जुन माली सुदर्शन श्रमणोपासक से इस प्रकार बोला— हे देवानुप्रिय! मै भी चाहता हूं तुम्हारे साथ श्रमण भगवान महावीर को वन्दन नमस्कार यावत् उनकी सेवा करने के लिए जाना। "हे देवानुप्रिय! जैसे सुख हो वैसे करो" इसके बाद वह सुदर्शन श्रमणोपासक अर्जुन मालाकार के साथ जहॉ गुणशिलक उद्यान था, जहां श्रमण भगवान विराजते थे वहॉ आया और आकर अर्जुन मालाकार के साथ श्रमण भगवान महावीर को तीन बार वदन करके सेवा करने लगा। उस समय श्रमण भगवान महावीर ने सुदर्शन श्रमणोपासक अर्जुन माली और उस विशाल सभा के सम्मुख धर्म कथा कही। धर्मकथा सुनकर सुदर्शन वापस लौट गया।१४।

यह सुनकर अर्जुनमाली सुदर्शन श्रमणोपासक से इस प्रकार वोला– हे देवानुप्रिय! मै भी तुम्हारे साथ श्रमण भगवान् महावीर की वदना नमस्कार करना यावत् सेवा करना चाहता हू।"

श्रीसुदर्शन—"हे देवानुप्रिय! जैसा तुम्हे सुख हो वैसा करो।"

इसके वाद वह सुदर्शन श्रमणोपासक अर्जुनमाली के साथ जहा गुणशील उद्यान मे श्रमण भगवान् महावीर विराजमान थे, वहा आया और अर्जुनमाली के साथ श्रमण भगवान् महावीर को तीन बार प्रदक्षिणा पूर्वक वदन-नमस्कार कर उनकी सेवा करने लगा।

उस समय श्रमण भगवान् महावीर ने सुदर्शन श्रमणोपासक, अर्जुनमाली और उस विशाल सभा के सम्मुख धर्म कथा कही। सुदर्शन धर्म कथा सुनकर अपने घर लौट गया।

सूत्र १५

तब वह अर्जुन मालाकार श्रमण भगवान महावीर के पास

इधर अर्जुनमाली श्रमण भगवान् महावीर के पास धर्मोपदेश सुनकर एव धारण

[मूल सूत्र पाठ]

अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म
हट्ठतुट्ठ एवं वयासी—
सद्दहामि णं भन्ते !
णिग्गथं पावयणं जाव
अब्भुट्ठेमि ।
'अहासुह देवाणुप्पिया !'
तए ण से ुणए मालागारे
उत्तरपुरच्छिमे दिसिभाए अ मइ,
अवक्कमित्ता सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं
करेइ, करित्ता जाव अणगारे
जाए जाव विहरइ ।
तएण से अज्जुणए अणगारे
जच्चेव दि मुंडे जाव पव्वइए
तं चेव दि समणं भगवं
महावीरं वंदइ णमंसइ
वदित्ता णमंसि ा इमं एयारूवं
अभिग्गहं उग्गिण्हइ—
कप्पइ मे जावज्जीवाए छट्ठं-
छट्ठेण अणिक्खि ेणं तवोकम्मेणं
अप्पाण भावेमाणस्स
विहरित्तए तिकट्टु अयमेवारूवं
अभिग्गह उग्गिण्हइ, उग्गिण्हित्ता
जावज्जीवाए जाव विहरइ ।

[सस्कृत छाया]

अन्तिके धर्मं श्रुत्वा, निशम्य
हृष्टतुष्टः एवमवदत्—
श्रद्दधामि खलु भदन्त !
नैर्ग्रन्थ्य प्रवचनं यावत्
अभ्युत्तिष्ठामि ।
यथासुखं देवानुप्रिय !
: खलु सः अर्जुनः मालाकारः
उत्तरपौरस्त्याम् दिग्भागम् अपक्राम्यति,
क्रम्य स्वयमेव पंचमुष्टिकं लोचं
करोति, कृत्वा यावत् अनगारः
जातः यावद् विहरति ।
: खलु सः अर्जुनः अनगारः
यस्मिन्नेव दिवसे मुण्डो यावत् प्रव्रजितः
तस्मिन्नेव दिवसे श्रमणं भगवन्तं
महावीरं वन्दते नमस्यति,
वन्दित्वा नमस्यित्वा इममेतद्रूप
मभिग्रहम् अभिगृह्णाति-
कल्पते मम यावज्जीवं षष्ठं
षष्ठेन अनिक्षिप्तेन तप. ेण
आत्मान भावयतः
विहर्तुम् इति (मनसि) कृत्वा इम
मेतद्रूपम् अभिग्रहमभिगृह्णाति,
अभिगृह्य ीव यावत् विहरति ।

सूत्र १६

तए णं से ुणए अणगारे
छट्ठक्खमणपारणयंसि पढम-

: खलु सः अर्जुनः अनगारः
क्षपणपारणके प्रथम—

[हिन्दी शब्दार्थ]

ोंपदेश सुनकर एवं धारणकर बड़ा प्रसन्न हुआ और इस प्रकार बोला—
हे भगवन ! मै ि न्थ प्रवचन पर श्रद्धा रुचि करता हूँ यावत् आपके चरणो मे लेना चाहता हूँ ।
"हे देवानुप्रिय! जैसे सुख हो वैसा करो"
तदनन्तर वह अर्जुन माली ईशान कोण मे गया जाकर स्वयं ही पाँचमुट्ठियो का लोच किया और यावत् अनगार हो गये और संयम तप से वे विचरने लगे ।
इसके पश्चात् अर्जुन मुनि ने ि दिन मुंडित हो प्रव्रज्या ग्रहण की उसी दिन श्रमण भगवान महावीर को वदन नमस्कार किया । वंदन नमस्कार करके इस प्रकार का अभिग्रह स्वीकार किया—
आज से मै निरन्तर बेले बेले की तपस्या से आजीवन आत्मा को भावित करते हुए विचरूँगा ।
यह मन मे सोचकर तथा इस प्रकार के अभिग्रह को लेकर जीवन भर के लिए यावत् विचरण करने लगे ।

[हिन्दी अर्थ]

कर बडा प्रसन्न हुआ और प्रभु महावीर से इस प्रकार बोला– "हे भगवन ! मै आप द्वारा कहे हुए निर्ग्रन्थ प्रवचन पर श्रद्धा करता हू, रुचि करता हू, यावत् आपके चरणो मे व्रत लेना चाहता हू ।"

प्रभु महावीर– "हे देवानुप्रिय ! जैसा तुम्हे सुख हो, वैसा करो ।"

तब उस अर्जुनमाली ने ईशान कोण मे जाकर स्वय ही पचमौष्टिक लुचन किया, लुचन करके वे अनगार हो गये और सयम व तप से विचरने लगे । अर्जुन माली अब अर्जुन मुनि हो गये ।

इसके पश्चात् अर्जुन मुनि ने जिस दिन मुडित हो प्रव्रज्या ग्रहण की, उसी दिन श्रमण भगवान् महावीर को वदना नमस्कार करके इस प्रकार का अभिग्रह धारण किया- "आज से मै निरतर बेले बेले की तपस्या से आजीवन आत्मा को भावित करते हुए विचरूगा ।"

ऐसा अभिग्रह जीवन भर के लिए स्वीकार कर अर्जुन मुनि विचरने लगे ।

सूत्र १६

इसके वाद वह अर्जुन मुनि वेले की तपस्या के पारणे के दिन प्रथम

इसके पश्चात् अर्जुन मुनि बेले की तपस्या के पारणे के दिन प्रथम प्रहर मे

[हिन्दी शब्दार्थ]

ॉपदेश सुनकर एव धारणकर बड़ा प्रसन्न हुआ और इस प्रकार बोला— हे भगवन ! मै निर्ग्रन्थ प्रवचन पर श्रद्धा रुचि करता हूँ यावत् आपके चरणो मे लेना चाहता हूँ ।
"हे देवानुप्रिय! जैसे सुख हो वैसा करो"
तदनन्तर वह अर्जुन माली ईशान कोण मे गया जाकर स्वय ही पाँचमुट्ठियो का लोच किया और यावत् अनगार हो गये और सयम तप से वे विचरने लगे ।
इसके पश्चात् अर्जुन मुनि ने ि दिन मु डित हो प्रव्रज्या ग्रहण की उसी दिन श्रमण भगवान महावीर को वंदन नमस्कार किया । वंदन नमस्कार करके इस प्रकार का अभिग्रह स्वीकार किया—
आज से मै निरन्तर बेले बेले की तपस्या से आजीवन आत्मा को भावित करते हुए विचरूँगा ।
यह मन मे सोचकर तथा इस प्रकार के अभिग्रह को लेकर जीवन भर के लिए यावत् विचरण करने लगे ।

[हिन्दी अर्थ]

कर बडा प्रसन्न हुआ और प्रभु महावीर से इस प्रकार बोला– "हे भगवन! मै आप द्वारा कहे हुए निर्ग्रन्थ प्रवचन पर श्रद्धा करता हू, रुचि करता हू, यावत् आपके चरणो मे व्रत लेना चाहता हू।"

प्रभु महावीर– "हे देवानुप्रिय! जैसा तुम्हे सुख हो, वैसा करो।"

तब उस अर्जुनमाली ने ईशान कोण मे जाकर स्वय ही पचमौष्टिक लु चन किया, लु चन करके वे अनगार हो गये और सयम व तप से विचरने लगे। अर्जुन माली अब अर्जुन मुनि हो गये।

इसके पश्चात् अर्जुन मुनि ने जिस दिन मु डित हो प्रवृज्या ग्रहण की, उसी दिन श्रमण भगवान् महावीर को वदना नमस्कार करके इस प्रकार का अभिग्रह धारण किया- "आज से मै निरतर बेले बेले की तपस्या से आजीवन आत्मा को भावित करते हुए विचरू गा।"

ऐसा अभिग्रह जीवन भर के लिए स्वीकार कर अर्जुन मुनि विचरने लगे।

सूत्र १६

इसके बाद वह अर्जुन मुनि बेले की तपस्या के पारणे के दिन प्रथम

इसके पश्चात् अर्जुन मुनि बेले की तपस्या के पारणे के दिन प्रथम प्रहर मे

[मूल सूत्र पाठ]

पोरिसीए सज्झायं करेइ,
जहा गोयमसामी जाव अडइ ।
तए णं त अज्जुणयं अणगारं
रायगिहे णयरे उच्चणीय जाव
 माण बहवे इत्थिओ य
पुरिसा य डहरा य महल्ला य
जुवाणा य एव वयासी—
"इमेणं मे पिया मारिए,
इमेणं मे माया मारिया,
भाया मारिए, भगिणी मारिया,
भज्जा मारिया, पुत्ते मारिए,
धूया मारिया, सुण्हा मारिया
इमेणं मे अण्णयरे सयण-
सबधि-परियणे मारिए ।"
त्तिकट्टु अप्पेगइया अक्कोसंति,
अप्पेगइया हीलंति, णिदति,
खिसति, गरिहति, तज्जेति,
तालेति ।

[सस्कृत छाया]

पौरुष्या स्वाध्याय करोति,
यथा गौतम स्वामी यावदटति ।
ततः खलु त अर्जुनकं अनगार
राजगृहे नगरे उच्चनीचं यावत्
अटन्त बहव· स्त्रियश्च
पुरुषाश्च डहराश्च महान्तश्च
युवानश्च एवमवदन्—
"अनेन खलु मे पिता मारितः,
अनेन मे माता मारिता,
भ्राता मारितः, भगिनी मारिता,
भार्या मारिता, पुत्रः मारितः
दुहिता मारिता, स्नुषा मारिता,
अनेन खलु मे अन्यतरः स्वजन-
सम्बन्धि-परिजन मारितः ।"
इति कृत्वा अप्येके आक्रोशन्ति
अप्येके हीलन्ति, निन्दन्ति,
खिसन्ति, गर्हन्ते, तर्जयन्ति,
ताडयन्ति ।

सूत्र १७

तए ण से अज्जुणए अणगारे
तेहि बहूहि इत्थीहि य पुरिसेहि य
डहरेहि य महल्लेहि य
जुवाणएहि य ओसेज्जमाणे
जाव तालेज्जमाणे तेसि मणसा
वि अप्पउस्समाणे सम्म सहइ,
सम्मं खमइ, सम्मं तितिक्खइ,
सम्मं अहियासेइ,

ततः खलु सः अर्जुन· अनगारः
तैः बहुभिः स्त्रीभिश्च पुरुषैश्च
डहरैश्च महद्भिश्च
युवभिश्च श्यमानः
यावत् ताड्यमानः तेभ्यः मनसा
अपि अप्रदुष्यन् सहते,
सम्यक् क्षमते, सम्यक् तिति ,
सम्यक् अधिसहते,

[हिन्दी शब्दार्थ]

प्रहर मे स्वाध्याय करते, गौतम स्वामी
के न यावत् भ्रमण करते
उस समय अर्जु न मुनि को
राजगृह नगर मे उच्चनीच कुलो मे यावत्
घूमते हुए को बहुत सी स्त्रिया,
पुरुष, छोटे े, बडे बूढे
और जवान इस प्रकार कहने लगे—
"इसने मेरे पिता को मारा है,
इसने मेरी माता को मारा है,
भाई को मारा है, बहिन को मारा है,
पत्नी को मारा है, पुत्र को मारा है,
लड़की को मारा है, पुत्रवधु को मारा है,
इसने मेरे अमुक स्वजन
सम्बन्धी परिजन को मारा है
ऐसा कहकर कोई गाली देते,
कोई हीलना या निन्दा करते,
खिजाते, गर्हा करते, तर्जना करते,
कोई ताडना भी कर देते ।

[हिन्दी अर्थ]

ध्यान करते एव तीसरे प्रहर मे राजगृह नगर मे भिक्षार्थ भ्रमण करते ।

उस समय उस अर्जु न मुनि को राजगृह नगर मे उच्च-नीच मध्यम कुलो मे भिक्षार्थ घूमते हुए देखकर नगर के अनेक नागरिक स्त्री पुरुष आबाल वृद्ध इस प्रकार कहते—

"इसने मेरे पिता को मारा है, इसने मेरी माता को मारा है, भाई को मारा है, बहन को मारा है, भार्या को मारा है, पुत्र को मारा है, कन्या को मारा है, पुत्र वधू को मारा है, एव इसने मेरे अमुक स्वजन सबधी को मारा है ।"

ऐसा कहकर कोई गाली देता, कोई हीलना करता, अनादर करता, निन्दा करता, कोई जाति आदि का दोष बताकर गर्हा करता, कोई भय बताकर तर्जना करता, और कोई थप्पड, ई ट, पत्थर, लाठी आदि से भी मारता ।

सूत्र १७

तब वह अर्जु न अनगार
उन बहुत सी स्त्रियो से, पुरुषो से,
बच्चो से, वृद्धो से
और तरुणो से तिरस्कृत यावत्
ताडित होने पर भी उन पर मन से
भी द्वेष नही करते हुए सम्यक् प्रकार से
सहते, क्षमा करते, तितिक्षा रखते,
निर्जरा समझकर हर्षानुभव करते ।

इस प्रकार उन बहुत से स्त्री पुरुष, बच्चे बूढे और जवानो से आक्रोश-गाली, एव विविध प्रकार की ताडना तर्जना आदि पाकर के भी वह अर्जु न मुनि उन पर मन से भी द्वेष नही करते हुए उनके द्वारा दिये गये सभी परीषहो को समभावपूर्वक सहन करते, प्रतिकार कर सकने की स्थिति मे होते हुए भी क्षमाभाव धारण करते हुए उन कष्टो को प्रसन्नतापूर्वक झेल लेते एव निर्जरा का लाभ समझकर हर्षानुभव करते । सम्यग्

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
पोरिसीए सज्झायं करेइ,	पौरुष्यां स्वाध्याय करोति,
जहा गोयमसामी जाव अडइ ।	यथा गौतम स्वामी यावदटति ।
तए ण त अज्जुणय अणगारं	तत. खलु त अर्जुनकं अनगार
रायगिहे णयरे उच्चणीय जाव	राजगृहे नगरे उच्चनीचं यावत्
अडमाण बहवे इत्थिओ य	अटन्त बहव स्त्रियश्च
पुरिसा य डहरा य महल्ला य	पुरुषाश्च डहराश्च महान्तश्च
जुवाणा य एव वयासी—	युवानश्च एवमवदन्—
"इमेणं मे पिया मारिए,	"अनेन खलु मे पिता मारितः,
इमेणं मे माया मारिया,	अनेन खलु मे माता मारिता,
भाया मारिए, भगिणी मारिया,	भ्राता मारितः, भगिनी मारिता,
भज्जा मारिया, पुत्ते मारिए,	भार्या मारिता, पुत्रः मारितः
धूया मारिया, सुण्हा मारिया	दुहिता मारिता, स्नुषा मारिता,
इमेण मे अण्णयरे सयण-	अनेन खलु मे अन्यतरः स्वजन-
संबधि-परियणे मारिए ।"	सम्बन्धि-परिजन मारित. ।"
त्तिकट्टु अप्पेगइया अक्कोसंति,	इति कृत्वा अप्येके आक्रोशन्ति
अप्पेगइया हीलति, णिदति,	अप्येके हीलन्ति, निन्दन्ति,
खिसति, गरिहति, तज्जेंति,	खिसन्ति, गर्हन्ते, तर्जयन्ति,
तालेति ।	ताडयन्ति ।

सूत्र १७

तए ण से अज्जुणए अणगारे	तत. खलु सः अर्जुनः अनगारः
तेहिं बहूहिं इत्थीहि य पुरिसेहि य	तै. बहुभिः स्त्रीभिश्च पुरुषैश्च
डहरेहिं य महल्लेहिं य	डहरैश्च महद्‌भिश्च
जुवाणएहि य आओसेज्जमाणे	युवभिश्च आक्रुश्यमान.
जाव तालेज्जमाणे तेसिं मणसा	यावत् ताड्यमान. तेभ्यः मनसा
वि अप्पउस्समाणे सम्म सहइ,	अपि अप्रदुष्यन् सम्यक् सहते,
सम्म खमइ, सम्म तितिक्खइ,	सम्यक् क्षमते, सम्यक् तिति ं,
सम्मं अहियासेइ,	सम्यक् अधिसहते,

[हिन्दी शब्दार्थ]

प्रहर मे स्वाध्याय करते, गौतम स्वामी
के न यावत् भ्रमण करते
उस समय अर्जुन मुनि को
राजगृह नगर मे उच्चनीच कुलो मे यावत्
घूमते हुए को बहुत सी स्त्रिया,
पुरुष, छोटे , बडे बूढ़े
और जवान इस प्रकार कहने लगे—
"इसने मेरे पिता को मारा है,
इसने मेरी माता को मारा है,
भाई को मारा है, बहिन को मारा है,
पत्नी को मारा है, पुत्र को मारा है,
लड़की को मारा है, पुत्रवधु को मारा है,
इसने मेरे अमुक स्वजन
सम्बन्धी परिजन को मारा है
ऐसा कहकर कोई गाली देते,
कोई हीलना या निन्दा करते,
खिजाते, गर्हा करते, तर्जना करते,
कोई ताडना भी कर देते ।

[हिन्दी अर्थ]

ध्यान करते एव तीसरे प्रहर मे राजगृह नगर मे भिक्षार्थ भ्रमण करते ।

उस समय उस अर्जुन मुनि को राजगृह नगर मे उच्च-नीच मध्यम कुलो मे भिक्षार्थ घूमते हुए देखकर नगर के अनेक नागरिक स्त्री पुरुष आबाल वृद्ध इस प्रकार कहते—

"इसने मेरे पिता को मारा है, इसने मेरी माता को मारा है, भाई को मारा है, बहन को मारा है, भार्या को मारा है, पुत्र को मारा है, कन्या को मारा है, पुत्र वधू को मारा है, एव इसने मेरे अमुक स्वजन सबधी को मारा है ।"

ऐसा कहकर कोई गाली देता, कोई हीलना करता, अनादर करता, निन्दा करता, कोई जाति आदि का दोष बताकर गर्हा करता, कोई भय बताकर तर्जना करता, और कोई थप्पड, ईट, पत्थर, लाठी आदि से भी मारता ।

सूत्र १७

तब वह अर्जुन अनगार
उन बहुत सी स्त्रियो से, पुरुषो से,
बच्चो से, वृद्धो से
और तरुणो से तिरस्कृत यावत्
ताडित होने पर भी उन पर मन से
भी द्वेष नही करते हुए सम्यक् प्रकार से
सहते, क्षमा करते, तितिक्षा रखते,
निर्जरा समझकर हर्षानुभव करते ।

इस प्रकार उन बहुत से स्त्री पुरुष, बच्चे बूढे और जवानो से आक्रोश-गाली, एव विविध प्रकार की ताडना तर्जना आदि पाकर के भी वह अर्जुन मुनि उन पर मन से भी द्वेष नही करते हुए उनके द्वारा दिये गये सभी परीषहो को समभावपूर्वक सहन करते, प्रतिकार कर सकने की स्थिति मे होते हुए भी क्षमाभाव धारण करते हुए उन कष्टो को प्रसन्नतापूर्वक झेल लेते एव निर्जरा का लाभ समझकर हर्षानुभव करते । सम्यग्

[मूल सूत्र पाठ]

सम्म सहमाणे, खममाणे
तितिक्खमाणे, अहियासमाणे
रायगिहे णयरे उच्चणीयमज्झिम
कुलाइ अडमाणे जइ
भत्त लभइ तो पाण ण लभइ,
जइ पाणं लभइ तो भत्त ण लभइ ।
तए ण से अज्जुणए अणगारे
अदीणे, अविमणे, लुसे,
अणाइले, अविसाई, अपरितं-
तजोगी अडइ, अडित्ता
रायगिहाओ णयराओ पडिणि-
क्खमइ, पडिणिक्खमित्ता
जेणेव गुणसिलए चेइए, जेणेव
समणे भगव महावीरे जहा
गोयमसामी जाव पडिदसेइ,
पडिदसित्ता समणेणं भगवया
महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे,
अमुच्छिए बिलमिव पण्णगभूएण
अप्पाणेणं तमाहारं आहारेइ ।

[सस्कृत छाया]

सम्यक् सहमानः, क्षममाणः
तितिक्षमाणः, अधिसहमानः,
राजगृहे नगरे उच्चनीचमध्यम
कुलेषु अटमानः यदि
भक्तं लभते तदा पानं न लभते,
यदि पान लभते तर्हि भक्तं न लभते ।
ततः खलु सः अर्जुनकः गारः
ीनः, अविमनाः, अकलुषः
अनाविलः अविषादी, अपरि-
तान्तयोगी अटति, अटित्वा
राजगृहान्नगरात् प्रतिनिष्क्रा
म्यति, प्रतिनिष्क्रम्य
यत्रैव गुणशिलकं चैत्यं, यत्रैव
श्रमणः भगवान् महावीरः यथा
गौतमस्वामी यावत् प्रतिदर्शयति,
प्रतिदर्श्य श्रमणेन भगवता
महावीरेण अभ्यनुज्ञातः सन्
ूर्च्छितः बिलमिव पन्नगभूतेन
आत्मना तमाहारमाहारयति ।

सूत्र १८

तए णं समणे भगवं महावीरे
अण्णया कयाइं रायगिहाओ णयराओ
पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता
वहिं जणवय विहार विहरइ ।
तए ण से अज्जुणए अणगारे
तेण ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं
पग्गहिएणं महाणुभागेण तवो-

ततः खलु श्रमणो भगवान् महावीरः
अन्यदा कदाचित् राजगृहात्
नगरात् प्रतिनिष्क्राम्यति, प्रतिनिष्क्रम्य
बहिः जनपद विहारं विहरति ।
ततः खलु स. अर्जुनः अनगारः
तेन उदारेण विपुलेन प्रयत्नेन
परिगृहीतेन महानुभागेन तपः-

[हिन्दी शब्दार्थ]

इस प्रकार सहते । करते,
तितिक्षा रखते और अध्यास लाभ मानते
हुए राज गृह नगर मे छोटे-बड़े मध्यम
कुलो मे भ्रमण करते हुए उन्हे यदि
भोजन मिलता तो पानी नही मिलता
ी मिलता तो भोजन नही मिलता ।

तब वे अर्जुन मुनि ऐसी स्थिति मे भी
अदीन उदासी-मलिन भाव, आकुल
व्याकुलपन और खेद रहित योगो से
थकान रहित भ्रमण करते करते राजगृह
नगर से बाहर निकलकर जहाँ
गुणशिलक उद्यान था, जहां श्रमण
भगवान महावीर विराजमान थे वहाँ
र गौतम स्वामी की तरह आहार
दिखाते और दिखाकर श्रमण भगवान
महावीर की आज्ञा प्राप्त कर
मूर्च्छा रहित हो, बिल मे जैसे सर्प सीधा
प्रवेश करता है उसी तरह रागद्वेष रहित
आत्मा से उस आहार का सेवन कर लेते।

[हिन्दी अर्थ]

ज्ञानपूर्वक उन सभी सकटो को सहन करते, क्षमा करते, तितिक्षा रखते और उन कष्टो को भी लाभ का हेतु मानते हुए राजगृह नगर के छोटे-बडे मध्य कुलो मे भिक्षा हेतु भ्रमण करते हुए अर्जुन मुनि को कही कभी भोजन मिलता तो पानी नही मिलता और पानी मिलता तो भोजन नही मिलता ।

वैसी स्थिति मे जो भी और जैसा भी अल्प स्वल्प मात्रा मे प्रासुक भोजन उन्हे मिलता उसे वे सर्वथा अदीन, अविमन, अकलुष, अमलिन, आकुल-व्याकुलता रहित अखेद-भाव से ग्रहण करते, थकान अनुभव नही करते ।

इस प्रकार वे भिक्षार्थ भ्रमण करते । भ्रमण करके वे राजगृह नगर से निकलते और गुणशील उद्यान मे, जहा श्रमण भगवान् महावीर विराजमान थे, वहा आते और वहा आकर गौतम स्वामी की तरह भिक्षा मे मिले उस आहार-पानी को प्रभु महावीर को दिखाते और दिखाकर उनकी आज्ञा पाकर मूर्च्छा रहित जिस प्रकार बिल मे सर्प सीधा ही प्रवेश करता है उस प्रकार राग-द्वेष भाव से रहित होकर उस आहार-पानी का वे सेवन करते ।

सूत्र १८

फिर श्रमण भगवान महावीर ने अन्य
किसी दिन राजगृह नगर से बिहार किया,
बिहार कर बाहर जनपद देश
मे विहार करने लगे ।

तब वह अर्जुन मुनि उस उदार,
श्रेष्ठ पवित्र भाव से ग्रहण किये
महालाभकारी विपुल तप से आत्मा को

भगवती सूत्र मे जैसे प्रभु महावीर से पूछकर श्री गौतम स्वामी द्वारा भिक्षार्थ जाने का विस्तृत वर्णन किया गया है, वैसा ही अर्जुन माली द्वारा भिक्षार्थ जाने का वर्णन यहा समझना चाहिये ।

फिर श्रमण भगवान् महावीर किसी दिन राजगृह नगर के उस गुणशील उद्यान से निकल कर बाहर जनपदो मे विहार करने लगे ।

[मूल सूत्र पाठ]	[सस्कृत छाया]
कम्मेरण अप्पारणं भावेमारणे	कर्मरणा आत्मान भावयन्
बहुपडिपुण्णे छम्मासे सामण्ण-	बहुपरिपूर्णान् षण्मासान्
परियाग पाउरणइ,	श्रामण्यपर्यायम् पालयति,
अद्धमासियाए सलेहरणाए	अर्द्धमासि सले या
अप्पारण झूसेइ, तीसं भत्ताइं	आत्मान जोषयति, त्रिशद् नि
अरणसरणाए छेदेइ, छेदित्ता	अनशनेन छिनत्ति, छित्वा
जस्सट्ठाए कीरइ जाव सिद्धे ।१८।	यस्यार्थाय क्रियते यावत् सिद्धः ।१८।

तृतीय अध्ययन प्त

चतुर्थ अध्ययन

उक्खेवओ चउत्थस्स अज्झयरणस्स ।	उत्क्षेपकः चतुर्थस्य अध्य य ।
एव खलु जम्बू! तेरण कालेरणं	एव खलु जम्बू ! तस्मिन् काले
तेरण समएरण रायगिहे रणयरे	तस्मिन् समये राजगृह नगरं
गुरणसिलए चेइए ।	गुरणशि चैत्यम् ।
तत्थरणं सेरिणए राया । कासवे	तत्र खलु श्रेरिणकः राजा । काश्यपः
रणाम गाहावई परिवसइ,	नाम गाथापतिः परि ति,
जहा मंकाई	यथा मकाई
सोलसवासा परियाओ,	षोडश वर्षारिण पर्याय,
विपुले सिद्धे ।४।	(यावत्) विपुले सिद्धः ।४।

अध्ययन ५

एव खेमए वि गाहावई,	एवं क्षेमकः अपि गाथापतिः,
रणवर काकदी रणयरी	(नवीनं) विशेषः काकंदी नगरी
सोलसवासा परियाओ	षोडशवर्षारिण पर्यायः
विपुले पव्वए सिद्धे ।५।	विपुले पर्वते सिद्धः ।५।

[हिन्दी शब्दार्थ]

भावित करते हुए छ महीने चारित्र का पालन किया, आधे मास की सलेखना से आत्मा को जोड़कर तीस भक्त के शन को पूर्णकर जिस कार्य के लिये ग्रहण किया था उसको पूर्णकर यावत् सिद्ध हो गये ।

[हिन्दी अर्थ]

उस महाभाग अर्जुन मुनि ने उस उदार, श्रेष्ठ, पवित्र भाव से ग्रहण किये गये, महालाभकारी, विपुल तप से अपनी आत्मा को भावित करते हुए पूरे छ महीने मुनि चारित्र धर्म का पालन किया ।

इसके बाद आधे मास की सलेखना से अपनी आत्मा को जोडकर तीस भक्त के अनशन को पूर्ण कर जिस कार्य के लिए व्रत ग्रहण किया उसको पूर्ण कर वे अर्जुन मुनि यावत् सिद्ध बुद्ध और मुक्त हो गये ।

तृतीय अध्ययन ाप्त

अथ चतुर्थ अध्ययन

चौथे अध्ययन का उत्क्षेपक ।[२७]

सुधर्मा स्वामी ने कहा—हे जम्बू ! उस काल उस य मे राजगृह नगर था वहाँ गुणशिलक उद्यान था । वहां श्रेणिक राजा के राज्य मे काश्यप नाम का गाथापति भी रहता था उसने मंकाई की तरह सोलह वर्ष की दीक्षा पर्याय का पालन किया और विपुल पर्वत पर सिद्ध हो गये ।

जम्बू स्वामी-" हे भगवन् ! छठे वर्ग के तीसरे अध्ययन मे प्रभु ने जो भाव कहे वे सुने । अब चौथे अध्ययन मे क्या भाव कहा है वह कृपया कहिये ।"

श्री सुधर्मा स्वामी-" हे जम्बू ! उस काल उस समय राजगृह नगर मे गुणशील नामक उद्यान था । वहा श्रेणिक राजा राज्य करता था । वहा काश्यप नाम का एक गाथापति रहता था । उसने मकाई की तरह सोलह वर्ष तक दीक्षा पर्याय का पालन किया और अन्त समय मे विपुल गिरि पर्वत पर जाकर सथारा आदि करके सिद्ध बुद्ध और मुक्त हो गये ।

अध्ययन ५

इसी प्रकार क्षेमक गाथापति भी, विशेष बात यह है कि ये काकदी नगरी के थे सोलह वर्ष दीक्षा पर्याय का पालन कर वे विपुल पर्वत पर सिद्ध हुए ।

इसी प्रकार क्षेमक गाथापति का वर्णन समझे । विशेष इतना है कि काकदी नगरी के वे निवासी थे और सोलह वर्ष का उनका दीक्षा काल रहा । यावत् वे भी विपुल गिरि पर सिद्ध हुए ।

[मूल सूत्र पाठ] [संस्कृत छाया]

अध्ययन ६

एवं धितिहरे वि गाहावई,
काकंदी णयरी सोलसवासा
परियाओ जाव विपुले सिद्धे ।६।

एवं धृतिधरोऽपि गाथापतिः,
काकंदी नगरी, षोडशवर्षाणि
पर्यायः यावत् विपुले सिद्धः। ६ ।

अध्ययन ७

एवं केलासे वि गाहावई,
णवरं सागेए णयरे, वारस
वासाइं परियाओ, विपुले सिद्धे ।७।

एवं केलासोऽपि गाथापतिः,
नवीनं साकेतं नगरं, द्वादश
वर्षाणि पर्यायः, विपुले सिद्धः । ७ ।

अध्ययन ८

एवं हरिचदणे वि गाहावई,
सागेए णयरे, वारस
वासा परियाओ, विपुले सिद्धे ।८।

एवं हरिचदनः अपि गाथापतिः,
साकेत नगरं, द्वादश
वर्षाणि पर्यायः, विपुले सिद्धः । ८ ।

अध्ययन ९

एवं वारत्तए वि गाहावई,
णवरं रायगिहे णयरे, वारसवासा
परियाओ, विपुले सिद्धे ।९।

एवं वारत्तकः अपि गाथापतिः,
विशेषः राजगृहं नगरं द्वादश
वर्षाणि पर्यायः, विपुले सिद्धः । ९ ।

अध्ययन १०

एवं सुदसणे वि गाहावई,
णवरं वाणियगामे णयरे,
दूइपलासए चेइए, पचवासा
परियाओ, विपुले सिद्धे ।१०।

एवं सुदर्शन. अपि गाथापतिः,
विशेष —वाणिज्यग्रामं नगरं,
द्युतिपलाशकं , पंचवर्षाणि
पर्यायः, विपुले सिद्धः ।१०।

[हिन्दी शब्दार्थ]   [हिन्दी अर्थ]

अध्ययन ६

इसी प्रकार धृतिधर गाथापति दी के निवासी सोलह ˚ दीक्षा पालकर यावत् विपुल प˚ पर सिद्ध हो गये ।

ऐसे ही धृतिधर गाथापति का भी वर्णन समझे । वे काकदी के निवासी थे सोलह वर्ष तक मुनि चारित्र पालकर वह भी विपुलगिरि पर सिद्ध हुए ।

अध्ययन ७

इसी प्रकार के गाथापति, साकेत नगर ी, १२ ˚ दीक्षा पर्याय का पालन कर विपुलगिरि पर सिद्ध हुए ।

ऐसे ही कैलाश गाथापति भी थे । विशेष यह था कि ये साकेत नगर के रहने वाले थे, इन्होने बारह वर्ष की दीक्षा पर्याय पाली और विपुलगिरि पर्वत पर से सिद्ध हुए ।

अध्ययन ८

इसी र हरि˚ गाथापति, साकेत नगर वासी बारह ˚ तक दीक्षा पालन कर विपुल पर्वत पर सिद्ध हुए ।

ऐसे ही आठवे हरिचन्दन गाथापति भी थे। वे भी साकेत नगर के निवासी थे। उन्होने भी बारह वर्ष तक श्रमण चारित्र का पालन किया और अन्त मे विपुलगिरि पर से सिद्ध हुए ।

अध्ययन ९

इसी प्रकार वारत्त गाथापति, राजगृह नगर वासी बारह ˚ दीक्षा, अन्त मे विपुल पर्वत पर सिद्ध हो गये ।९।

इसी तरह नवमे वारत्त गाथापति थे । विशेष यह था कि ये राजगृह नगर के रहने वाले थे । बारह वर्ष का चारित्र पालन कर वे विपुलगिरि पर सिद्ध हुए ।

अध्ययन १०

इसी प्रकार सुदर्शन गाथापति, वाणिज्य ग्राम वासी, द्युतिपलाश उद्यान, पाँच वर्ष दीक्षा पाल कर विपुलगिरि पर सिद्ध हुए ।१०।

दशवे सुदर्शन गाथापति का वर्णन भी इसी प्रकार समझे । विशेष यह था कि वाणिज्य ग्राम नगर के बाहर द्युतिपलाश नाम का उद्यान था । वहा दीक्षित हुए । पाच वर्ष वे चारित्र पालकर विपुलगिरि से सिद्ध हुए ।

[मूल सूत्र पाठ] [संस्कृत छाया]

अध्ययन ६

एवं धितिहरे वि गाहावई,
काकंदी णयरी सो वासा
परियाओ जाव विपुले सिद्धे ।६।

एवं धृतिधरोऽपि गाथापतिः,
काकदी नगरी, षोडशवर्षाणि
पर्यायः यावत् विपुले सिद्धः। ६ ।

अध्ययन ७

एव केलासे वि गाहावई,
णवरं सागेए णयरे, वारस
वासाइं परियाओ, विपुले सिद्धे ।७।

एवं केलासोऽपि गाथापतिः,
नवीनं साकेतं नगरं, द्वादश
रिणि पर्यायः, विपुले सिद्धः । ७ ।

अध्ययन ८

एव हरिचंदणे वि गाहावई,
सागेए णयरे, वारस
वासा परियाओ, विपुले सिद्धे ।८।

एव हरिचदनः अपि गाथापतिः,
साकेतं नगरं, द्वादश
वर्षाणि पर्यायः, विपुले सिद्धः । ८ ।

अध्ययन ९

एवं वारत्तए वि गाहावई,
णवर रायगिहे णयरे, बारसवासा
परियाओ, विपुले सिद्धे ।९।

एवं वारत्तकः अपि गाथापतिः,
विशेषः राजगृहं नगरं द्वा
वर्षाणि पर्यायः, विपुले सिद्धः । ९ ।

अध्ययन १०

एवं सुदसणे वि गाहावई,
णवरं वाणियगामे णयरे,
दूइपलासए चेइए, पंचवासा
परियाओ, विपुले सिद्धे ।१०।

एव सुदर्शनः अपि गाथापतिः,
विशेष.—वाणिज्यग्रामं नगरं,
द्युतिपलाशकं चैत्यम्, पचवर्षाणि
पर्याय', विपुले सिद्धः ।१०।

[हिन्दी शब्दार्थ]	[हिन्दी अर्थ]

अध्ययन ६

इसी प्रकार धृतिधर गाथापति काकदी के निवासी सोलह ˊ दीक्षा पालकर यावत् विपुल पˊ पर सिद्ध हो गये ।	ऐसे ही धृतिधर गाथापति का भी वर्णन समझे। वे काकदी के निवासी थे सोलह वर्ष तक मुनि चारित्र पालकर वह भी विपुलगिरि पर सिद्ध हुए।

अध्ययन ७

इसी प्रकार के गाथापति, साकेत नगरवासी, १२ ˊ दीक्षा पर्याय का पालन कर विपुलगिरि पर सिद्ध हुए।	ऐसे ही कैलाश गाथापति भी थे। विशेष यह था कि ये साकेत नगर के रहने वाले थे, इन्होने बारह वर्ष की दीक्षा पर्याय पाली और विपुलगिरि पर्वत पर से सिद्ध हुए।

अध्ययन ८

इसी ार हरि ˙ गाथापति, साकेत नगर वासी बारह ˊ दीक्षा पालन कर विपुल पर्वत पर सिद्ध हुए।	ऐसे ही आठवे हरिचन्दन गाथापति भी थे। वे भी साकेत नगर के निवासी थे। उन्होने भी बारह वर्ष तक श्रमण चारित्र का पालन किया और अन्त मे विपुलगिरि पर से सिद्ध हुए।

अध्ययन ९

इसी प्रकार वारत्त गाथापति, राजगृह नगर वासी बारह वर्ष दीक्षा, अन्त मे विपुल पर्वत पर सिद्ध हो गये ।९।	इसी तरह नवमे वारत्त गाथापति थे। विशेष यह था कि ये राजगृह नगर के रहने वाले थे। बारह वर्ष का चारित्र पालन कर वे विपुलगिरि पर सिद्ध हुए।

अध्ययन १०

इसी प्रकार सुदर्शन गाथापति, वाणिज्य ग्राम वासी, द्युतिपलाश उद्यान, ˇ ˊ दीक्षा पाल कर विपुलगिरि पर सिद्ध हुए ।१०।	दशवे सुदर्शन गाथापति का वर्णन भी इसी प्रकार समझे। विशेष यह था कि वाणिज्य ग्राम नगर के बाहर द्युतिपलाश नाम का उद्यान था। वहा दीक्षित हुए। पाच वर्ष वे चारित्र पालकर विपुलगिरि से सिद्ध हुए।

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]

अध्ययन ११

एवं पुण्णभद्दे वि गाहावई, वाणियगामे णयरे, पंचवासा परियाओ, विपुले सिद्धे ।११।	एव पूर्णभद्रोऽपि गाथापतिः वाणिज्यग्रामं नगरं प णि पर्यायः, विपुले सिद्धः ।११।

अध्ययन १२

एवं सुमणभद्दे वि गाहावई, सावत्थी णयरी, बहुवासा परि ो, विपुले सिद्धे ।१२।	एवं सुमनभद्रोऽपि गाथापतिः, श्रावस्ती नगरी, बहुवर्षाणि पर्यायः, विपुले सिद्धः ।१२।

अध्ययन १३

एवं सुपइट्ठे वि गाहावई, सावत्थी णयरी, सत्तावीसं वासा परियाओ, विपुले सिद्धे ।१३।	एवं सुप्रतिष्ठोऽपि गाथापतिः, श्रावस्ती नगरी, सप्तविं ति वर्षाणि पर्यायः, विपुले सिद्धः ।१३।

अध्ययन १४

एव मेहे वि गाहावई, रायगिहे णयरे बहूहिं वासाइं परियाओ, विपुले सिद्धे ।१४।	एवं मेघोऽपि गाथापतिः, राजगृहं नगरं, बहूनि वर्षाणि पर्याय॰, विपुले सिद्धः ।१४।

चतुर्दश अध्ययनानि समाप्तानि

अथ पंचदशम अध्ययन

सूत्र १

उक्खेवओ पण्णरसमस्स अज्झयणस्स ।	उत्क्षेपकः पंचदशमस्य अध्ययनस्य ।

[हिन्दी शब्दार्थ]   [हिन्दी अर्थ]

अध्ययन ११

इसी प्रकार पूर्णभद्र गाथापति वाणिज्य-ग्राम नगर वासी, पाँच वर्ष चारित्र पालन कर विपुलगिरि पर सिद्ध हुए।

पूर्णभद्र गाथापति का वर्णन भी ऐसे ही समझे। विशेष यह था कि वे वाणिज्य ग्राम नगर के रहने वाले थे। पाच वर्प का चारित्र पालन कर वह भी विपुलाचल पर्वत पर सिद्ध हुए।

अध्ययन १२

इसीप्रकार सुमनभद्र गाथापति, श्रावस्ती नगरी। बहुत र्षों तक दीक्षा पालन कर विपुलाचल पर सिद्ध हुए।१२।

सुमनभद्र गाथापति का वर्णन भी ऐसे ही समझे। ये श्रावस्ती नगरी के निवासी थे। बहुत वर्प तक मुनि चारित्र का पालन कर विपुलगिरि पर सिद्ध हुए।

अध्ययन १३

इसीप्रकार सुप्रति गाथापति। श्रावस्ती नगरी। सत्ताईस वर्ष चारित्र पालकर विपुलगिरि पर सिद्ध हुए।१३।

ऐसे ही सुप्रतिष्ठ गाथापति को भी समझे। ये भी श्रावस्ती नगरी के रहने वाले थे और सत्ताईस वर्ष का श्रमण चारित्रपालन पर विपुलगिरि पर सिद्ध हुए।

अध्ययन १४

इसी प्रकार मेघ गाथापति। राजगृह वासी। बहुत वर्ष चारित्र पालकर विपुलगिरि पर सिद्ध हुए।१४।

मेघ गाथापति को भी ऐसे ही समझे। ये राजगृह नगर के निवासी थे। बहुत वर्ष चारित्र धर्म का पालन कर विपुलगिरि पर सिद्ध हुए।

चौदह अध्ययन समाप्त

पन्द्रहवां अध्ययन

सूत्र १

पन्द्रहवे अध्ययन का उत्क्षेपक।[२८]

श्री जम्बू स्वामी—"हे भगवन्! चौदह अध्ययनो का भाव मैंने सुना। अब पन्द्रहवे अध्ययन मे प्रभु ने क्या भाव कहा है कृपा कर बतलावे।" आर्य सुधर्मा कहते हैं–

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
एवं खलु जबू ! तेणं कालेणं	एवं खलु जम्बू ! तस्मिन् काले
तेणं समयेण पोलासपुरे	तस्मिन् समये पोलासपुरम्
णयरे, सिरीवणे उज्जाणे ।	नगरम् श्रीवनम् ानम् ।
तत्थ ण पोलासपुरे णयरे	तत्र खलु पोलासपुरे नगरे
विजए णाम राया होत्था ।	विजयो नाम राजा अभवत्,
तस्स णं विजयस्स रण्णो	तस्य खलु वि राज्ञः
सिरी णाम देवी होत्था,	श्री नाम देवी आसीत् ।
वण्णओ ।	वर्ण्या ।
तस्सण विजयस्स रण्णोपुत्ते	खलु विज राज्ञः पुत्रः
सिरीए देवीए अत्तए अइमुत्ते	श्रीदेव्याः आत्मजः अति ः
णाम कुमारे होत्था ।	नाम कुमार. आसीत् ।
सुकुमाले ।	सुकोमलः ।
तेण कालेणं तेणं एणं	तस्मिन् काले तस्मिन् समये
समणे भगव महावीरे जाव	श्रमणो भगवान् महावीरः यावत्
सिरीवणे विहरइ । तेणं	श्रीवने विहरति । तस्मिन्
कालेण तेणं समएणं समणस्स	काले तस्मिन् समये श्रमणस्य
भगवओ महावीरस्स जेट्ठे	भगवतः महावीरस्य ज्येष्ठः
अतेवासी इदभूई, जहा	अन्तेवासी इन्द्रभूति, यथा
पण्णत्तीए जाव पोलासपुरे	प्रज्ञप्त्याम् तथा पोलासपुरे
णयरे उच्चणीय जाव अडइ ।१।	नगरे उच्चनीचं यावत् अटति ।१।

सूत्र २

इम च णं अइमुत्ते कुमारे	अस्मिन् च खलु (काले) अतिमुक्तः
ण्हाए जाव विभूसिए	कुमारः स्नातः यावत् विभूषित.
वहूहि दारएहि य दारियाहि	बहुभिः दारकैश्च दारिकाभिश्च
य, डिभएहि य डिभियाहि य,	डिंभकैश्च डिंभिकाभिश्च

[हिन्दी शब्दार्थ]

हे जम्बू ! उस काल उस समय मे पोलासपुर नामक नगर व श्रीवन नामक उद्यान था । उस पोलासपुर नामक नगर मे विजय नामक राजा राज्य करता था उसकी श्रीदेवी नाम की महारानी थी, जो कि वर्णन करने योग्य थी । महाराज विजय का पुत्र और श्री देवी का आत्मज अतिमुक्त नामक कुमार था, जो कि सुकोमल था । उस काल उस समय मे श्रमण भगवान महावीर विचरते हुए श्रीवन मे पधारे । उस काल उस समय श्रमण भगवान् महा-वीर के ज्येष्ठ शिष्य इन्द्रभूति भगवती सूत्र के वर्णन के अनुसार यावत् पोलासपुर नगर मे बडे छोटे कुलो मे भ्रमण करने लगे ।

[हिन्दी अर्थ]

'निश्चय ही हे जबू' उस काल उस समय मे पोलासपुर नामक नगर था, वहा श्रीवन नामक उद्यान था। उस नगर मे विजय नाम का राजा था जिस की श्रीदेवी नाम की महारानी थी, जो वर्णन योग्य थी ।

महाराजा विजय का पुत्र और श्रीदेवी का आत्मज अतिमुक्त नाम का एक कुमार था जो बडा सुकुमाल था ।

उस काल उस समय श्रमण भगवान् महावीर विचरते हुए श्रीवन उद्यान मे पधारे ।

उस काल उस समय श्रमण भगवान् महावीर के ज्येष्ठ शिष्य इन्द्रभूति भगवती सूत्र मे जैसे भगवान से पूछकर भिक्षार्थ जाने का वर्णन किया गया वैसे ही यावत् उस पोलासपुर नगर मे छोटे बडे कुलो मे सामूहिक भिक्षा हेतु भ्रमण करने लगे ।

सूत्र २

इधर अतिमुक्त कुमार स्नान करके यावत् विभूषित होकर बहुत से लडके लडकियो, बालक बालिकाओ एव कुमार

इधर अति मुक्त कुमार स्नान करके यावत्, शरीर की विभूषा करके बहुत से लडके लडकियो, बालक बालिकाओ और कुमार कुमारिकाओ के साथ अपने घर से

[मूल सूत्र पाठ]

कुमारएहि य कुमारियाहि य
सद्धि संपरिवुडे सयाओ गिहाओ
पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता
जेणेव इदट्ठाणे तेणेव
उवागए । तेहि बहूहि
दारएहि य दारियाहि य
डिभएहि य डिभियाहि य
कुमारएहि य कुमारियाहि य
सद्धि सपरिवुडे अभिरममाणे
अभिरममाणे विहरइ ।
तएण भगव गोयमे पोलासपुरे
णयरे उच्चणीय जाव अडमाणे
इदट्ठाणस्स अदूरसामन्तेण
वीइवयइ ।
तए ण से अइमुत्ते कुमारे
भगव गोयम अदूरसामतेणं
वीईवयमाण पासइ, पासित्ता
जेणेव भगव गोयमे तेणेव
उवागए । भगवं गोयम
एवं वयासी—के ण भते !
तुब्भे, कि वा अडह ? ।२।

[सस्कृत छाया]

कुमारैश्च कुमारिकाभिश्च
सार्द्धं सपरिवृत्तः स्वकाद् गृहात्
प्रतिनिष्क्राम्यति, प्रतिनिष्क्रम्य
यत्रैव इन्द्रस्थानं तत्रैव
उपागतः । तत्र बहुभिः
दारकैश्च दारिकाभिश्च
डिभकैश्च डिभिकाभिश्च
कुमारकैश्च कुमारिकाभिश्च
सार्द्धं संपरिवृतः अभिरममाणः
अभिरममाण. विहरति ।
तदा खलु भगवान् गौतमः पोलासपुरे
नगरे उच्चनीच यावत् अटमानः
इन्द्रस्थानस्य अदूरसामन्तेन
व्यतिव्रजति ।
तत खलु सः अतिमुक्त. कुमारः
भगवन्तं गौतमं अदूरसामन्तेन
व्यतिव्रजन्तं पश्यति, दृष्ट्वा
यत्रैव भगवान् गौतमः तत्रैव
उपागतः । भगवन्त गौतमं
एवमवदत्—"के खलु हे भदन्त
यूयम् ? कि वा अटथ ?"

सूत्र ३

तए ण भगव गोयमे अइमुत्तं
कुमार एवं वयासी—
"अम्हे ण देवाणुप्पिया !
समणा णिग्गंथा इरियासमिया

ततः खलु भगवान् गौतम. अतिमुक्तं
कुमारमेवमवदत्—
"वय खलु हे देवानुप्रिय !
श्रमणाः निर्ग्रन्थाः ईर्यासमिता.

[हिन्दी शब्दार्थ]

कुमारिकाओ के साथ घिरा हुआ
अपने घर से निकला,
निकलकर जहाँ इन्द्र का स्थान
(क्रीड़ा स्थान) है वहाँ पर
आये। वहाँ आकर उन बहुत से
बच्चे बच्चियो
लड़के लड़कियो एवं
कुमार कुमारिकाओ के
साथ उनसे घिरा हुआ प्रेम पूर्वक
खेलते हुए विचरण करने लगा।
तभी भगवान गौतम पोलास
पुर नगर मे छोटे ` कुलो में
यावत् भ्रमण करते हुए क्रीड़ास्थल
के पास से जारहे थे।
इसी समय अ‍ि ुक्त कुमार ने
भगवान् गौतम को पास से ही
जाते हुए देखा, देखकर
जहाँ भगवान गौतम थे वहाँ
आये और भगवान् गौतम से
इस प्रकार बोले—"हे पूज्य! आप
कौन है और क्यो घूम रहे है?"

[हिन्दी अर्थ]

निकले और निकल कर जहा इन्द्र-स्थान यानि क्रीडास्थल है वहा आये वहा उन बालक बालिकाओ के साथ वे प्रेम पूर्वक खेलने लगे।

उस समय भगवान् गौतम पोलासपुर नगर मे छोटे बडे कुलो मे यावत् भ्रमण करते हुए उस क्रीडा स्थल के पास से जा रहे थे, अब अतिमुक्त कुमार ने उन को पास से जाते हुए देखकर उनके पास आये और उनसे इस प्रकार बोले– "हे पूज्य! आप कौन है और इस तरह क्यो घूम रहे है?"

तब भगवान् गौतम ने अतिमुक्तकुमार को उत्तर देते हुए इस तरह कहा– "हे देवानु-

सूत्र ३

तब भगवान् गौतम ने अतिमुक्त
कुमार को इस प्रकार कहा—
"हे देवानुप्रिय! हम श्रमण निर्ग्रन्थ
है, ईर्यासमिति आदि सहित यावत्

प्रिय! हम श्रमण-निर्ग्रन्थ, ईर्यासमिति के धारक गुप्त ब्रह्मचारी है और छोटे बडे कुलो मे भिक्षार्थ भ्रमण करते है।"

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
कुमारएहि य कुमारियाहि य	कुमारैश्च कुमारिकाभिश्च
सर्द्धि संपरिवुडे सयाओ गिहाओ	सार्द्ध संपरिवृत्तः स्वकाद् गृहात्
पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता	प्रतिनिष्क्राम्यति, प्रतिनिष्क्रम्य
जेणेव इंदट्ठाणे तेणेव	यत्रैव इन्द्रस्थान तत्रैव
उवागए। तेहिं बहूहि	उपागतः। तत्र बहुभि.
दारएहि य दारियाहि य	दारकैश्च दारिकाभिश्च
डिंभएहि य डिंभियाहि य	डिभकैश्च डिभिकाभिश्च
कुमारएहि य कुमारियाहि य	कुमारकैश्च कुमारिकाभिश्च
सर्द्धि सपरिवुडे अभिरममाणे	सार्द्ध सपरिवृतः अभिरममाणः
अभिरममाणे विहरइ।	अभिरममाणः विहरति।
तएण भगव गोयमे पोलासपुरे	तदा खलु भगवान् गौतमः पोलासपुरे
णयरे उच्चणीय जाव अडमाणे	नगरे उच्चनीच यावत् अटमानः
इंदट्ठाणस्स अदूरसामन्तेण	इन्द्रस्थानस्य अदूरसामन्तेन
वीइवयइ।	व्यतिव्रजति।
तए ण से अइमुत्ते कुमारे	तत खलु स. अतिमुक्तः कुमारः
भगव गोयम अदूरसामतेणं	भगवन्तं गौतमं अदूरसामन्तेन
वीईवयमाणं पासइ, पासित्ता	व्यतिव्रजन्तं पश्यति, दृष्ट्वा
जेणेव भगवं गोयमे तेणेव	यत्रैव भगवान् गौतम तत्रैव
उवागए। भगव गोयम	उपागतः। भगवन्त गौतमं
एव वयासी—के ण भते!	एवमवदत्—"के खलु हे भदन्त
तुब्भे, कि वा अडह? ।२।	यूयम्? कि वा अटथ?"

सूत्र ३

तए ण भगव गोयमे अइमुत्तं	तत. खलु भगवान् गौतमः अतिमुक्तं
कुमार एवं वयासी—	कुमारमेवमवदत्—
"अम्हे णं देवाणुप्पिया!	"वय खलु हे देवानुप्रिय!
समणा णिग्गथा इरियासमिया	श्रमणा निर्ग्रन्थाः ईर्यासमिताः

[हिन्दी शब्दार्थ]

कुमारिकाओ के साथ घिरा हुआ
अपने घर से निकला,
निकलकर जहाँ इन्द्र का स्थान
(क्रीडा स्थान) है वहाँ पर
आये । वहाँ आकर उन बहुत से
बच्चे बच्चियो
लड़के लडकियो एव
कुमार कुमारिकाओ के
साथ उनसे घिरा हुआ प्रेम पूर्वक
खेलते हुए विचरण करने लगा ।
तभी भगवान गौतम पोलास
पुर नगर मे छोटे बड़े कुलों में
यावत् भ्रमण करते हुए क्रीड़ास्थल
के पास से जारहे थे ।
इसी समय अति[illegible]ुक्त कुमार ने
भगवान् गौतम को पास से ही
जाते हुए देखा, देखकर
जहाँ भगवान गौतम थे वहाँ
आये और भगवान् गौतम से
इस प्रकार बोले—"हे पूज्य ! आप
कौन है और क्यो घूम रहे है ?"

[हिन्दी अर्थ]

निकले और निकल कर जहा इन्द्र-स्थान यानि क्रीडास्थल है वहा आये वहा उन बालक बालिकाओ के साथ वे प्रेम पूर्वक खेलने लगे ।

उस समय भगवान् गौतम पोलासपुर नगर मे छोटे बडे कुलो मे यावत् भ्रमण करते हुए उस क्रीडा स्थल के पास से जा रहे थे, अब अतिमुक्त कुमार ने उन को पास से जाते हुए देखकर उनके पास आये और उनसे इस प्रकार बोले– "हे पूज्य ! आप कौन है और इस तरह क्यो घूम रहे है ?"

तब भगवान् गौतम ने अतिमुक्तकुमार को उत्तर देते हुए इस तरह कहा– "हे देवानु-

सूत्र ३

तब भगवान् गौतम ने अतिमुक्त
कुमार को इस प्रकार कहा—
"हे देवानुप्रिय ! हम श्रमण निर्ग्रन्थ
है, ईर्यासमिति आदि सहित यावत्

प्रिय ! हम श्रमण-निर्ग्रन्थ, ईर्यासमिति के धारक गुप्त ब्रह्मचारी है और छोटे बडे कुलो मे भिक्षार्थ भ्रमण करते है ।"

[मूल सूत्र पाठ]

कुमारएहि य कुमारियाहि य
सद्धि संपरिवुडे सयाओ गिहाओ
पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता
जेणेव इंदट्ठाणे तेणेव
उवागए। तेहिं बहूहि
दारएहि य दारियाहि य
डिंभएहि य डिंभियाहि य
कुमारएहि य कुमारियाहि य
सद्धि सपरिवुडे अभिरममाणे
अभिरममाणे विहरइ।
तएण भगव गोयमे पोलासपुरे
णयरे उच्चणीय जाव अडमाणे
इंदट्ठाणस्स अदूरसामन्तेण
वीइवयइ।
तए ण से अइमुत्ते कुमारे
भगव गोयम अदूरसामतेणं
वीईवयमाण पासइ, पासित्ता
जेणेव भगवं गोयमे तेणेव
उवागए। भगव गोयम
एव वयासी—के ण भते!
तुब्भे, कि वा अडह? ।२।

[संस्कृत छाया]

कुमारैश्च कुमारिकाभिश्च
सार्द्धं संपरिवृत्तः स्वकाद् गृहात्
प्रतिनिष्क्राम्यति, प्रतिनिष्क्रम्य
यत्रैव इन्द्रस्थानं तत्रैव
उपागतः। तत्र बहुभिः
दारकैश्च दारिकाभिश्च
डिंभकैश्च डिंभिकाभिश्च
कुमारकैश्च कुमारिकाभिश्च
सार्द्धं संपरिवृतः अभिरममाणः
अभिरममाणः विहरति।
तदा खलु भगवान् गौतमः पोलासपुरे
नगरे उच्चनीच यावत् अटमानः
इन्द्रस्थानस्य अदूरसामन्तेन
व्यतिव्रजति।
तत खलु सः अतिमुक्तः कुमारः
भगवन्तं गौतमं अदूरसामन्तेन
व्यतिव्रजन्तं पश्यति, दृष्ट्वा
यत्रैव भगवान् गौतम. तत्रैव
उपागत.। भगवन्तं गौतम
एवमवदत्—"के खलु हे भदन्त
यूयम्? कि वा अटथ?"

सूत्र ३

तए ण भगव गोयमे अइमुत्तं
कुमार एव वयासी—
"अम्हे ण देवाणुप्पिया!
समणा णिग्गथा इरियासमिया

ततः खलु भगवान् गौतम. अतिमुक्तं
कुमारमेवमवदत्—
"वयं खलु हे देवानुप्रिय!
श्रमणा निर्ग्रन्थाः ईर्यासमिता.

[हिन्दी शब्दार्थ]

कुमारिकाओ के साथ घिरा हुआ
अपने घर से निकला,
निकलकर जहाँ इन्द्र का स्थान
(क्रीड़ा स्थान) है वहाँ पर
आये। वहाँ आकर उन बहुत से
बच्चे बच्चियो
लड़के लड़कियो एवं
कुमार कुमारिकाओ के
साथ उनसे घिरा हुआ प्रेम पूर्वक
खेलते हुए विचरण करने लगा।
तभी भगवान गौतम पोलास
पुर नगर मे छोटे ` कुलो मे
यावत् भ्रमण करते हुए क्रीडास्थल
के पास से जारहे थे।
इसी समय अति ुक्त कुमार ने
भगवान् गौतम को पास से ही
जाते हुए देखा, देखकर
जहाँ भगवान गौतम थे वहाँ
आये और भगवान् गौतम से
इस प्रकार बोले—"हे पूज्य! आप
कौन है और क्यो घूम रहे है?"

[हिन्दी अर्थ]

निकले और निकल कर जहा इन्द्र-स्थान यानि क्रीडास्थल है वहा आये वहा उन बालक बालिकाओ के साथ वे प्रेम पूर्वक खेलने लगे।

उस समय भगवान् गौतम पोलासपुर नगर मे छोटे बडे कुलो मे यावत् भ्रमण करते हुए उस क्रीडा स्थल के पास से जा रहे थे, अब अतिमुक्त कुमार ने उन को पास से जाते हुए देखकर उनके पास आये और उनसे इस प्रकार बोले- "हे पूज्य! आप कौन है और इस तरह क्यो घूम रहे है?"

तब भगवान् गौतम ने अतिमुक्तकुमार को उत्तर देते हुए इस तरह कहा- "हे देवानु-

सूत्र ३

तब भगवान् गौतम ने अतिमुक्त
कुमार को इस प्रकार कहा—
"हे देवानुप्रिय! हम श्रमण निर्ग्रन्थ
है, ईर्यासमिति आदि सहित यावत्

प्रिय! हम श्रमण-निर्ग्रन्थ, ईर्यासमिति के धारक गुप्त ब्रह्मचारी है और छोटे बडे कुलो मे भिक्षार्थ भ्रमण करते है।"

[मूल सूत्र पाठ]

जाव बंभयारी उच्चणीय जाव
अडामो ।"
तए णं अइमुत्ते कुमारे
भगव गोयम एवं वयासी—
"एह णं भन्ते ! तुब्भे, जण्णं अह
तुब्भ भिक्ख दवावेमि ।"
त्ति कट्टु भगव गोयम अंगुलीए
गिण्हइ, गिण्हित्ता, जेणेव सए गिहे
तेणेव उवागए ।
तए ण सा सिरीदेवी भगवं गोयमं
एज्जमाणं पासइ, पासित्ता, हट्ठतुट्ठ
जाव आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भु-
ट्ठित्ता, जेणेव भगव गोयमे
तेणेव उवागया ।
भगव गोयमं तिक्खुत्तो-आयाहिण
पयाहिण करेइ, करित्ता, वंदइ,
णमंसइ, वंदित्ता, णमंसित्ता
विउलेण असणपाणखाइमसाइमेणं
पडिलाभेइ जाव पडिविसज्जेइ ।३।

[सस्कृत छाया]

यावत् ब्रह्मचारिणः उच्चनीच
यावदटामः ।"
ततः खलु अतिमुक्त कुमार.
भगवन्तं गौतममेवमवदत्—
"इह खलु (आगच्छत) भदन्त! यूयं येनाहं
युष्मभ्य भिक्षां दापयामि ।"
इति कृत्वा भगवन्त गौतमं अंगुल्याम्
गृह्णाति, गृहीत्वा यत्रैव स्वक गृहम्
तत्रैव उपागतः ।
तत खलु सा श्रीदेवी भगवन्तं गौतमं
आगच्छतं पश्यति, दृष्ट्वा, हृष्टतुष्टा
यावत् आसनादभ्युत्तिष्ठति,
अभ्युत्थाय, यत्रैव भगवान् गौतम.
तत्रैव उपागता ।
भगवन्त गौतमं त्रि कृत्वा आदक्षिण
प्रदक्षिणां करोति, कृत्वा, वदते,
नमस्यति, वन्दित्वा, नमस्यित्वा
विपुलेन अशनपानखाद्यस्वाद्येन
प्रतिलभ्यति यावत् प्रतिविसर्जयति ।३।

सूत्र ४

तए ण से अइमुत्ते कुमारे भगवं
गोयम एव वयासी—
"कहिण भन्ते! तुब्भे परिवसह ?"
तए ण भगव गोयमे अइमुत्तं
कुमार एव वयासी—
"एव खलु देवाणुप्पिया ! मम

तत खलु स. अतिमुक्त. कुमार. भगवन्तं
गौतमम् एवमवदत्—
"क्व नु भदन्त ! यूयं परिवसथ ?"
तत. खलु भगवान् गौतम अतिमुक्तं
कुमारं एवमवदत्—
"एवं खलु देवानुप्रिय ! मम

[हिन्दी शब्दार्थ]	[हिन्दी अर्थ]
ब्रह्मचारी है छोटे बडे कुलो मे भिक्षार्थ भ्रमण करते है।" अतिमुक्त कुमार भगवान गौतम से इस प्रकार कहने लगे— "हे भगवन् ! आप इधर पधारे जिससे मैं आपको भिक्षा दिलाता हूँ।" ऐसा कहकर भगवान गौतम की अंगुली पकडी, पकड़कर जहाँ अपना घर था वहाँ पर ही ले आये। फिर उस श्री देवी ने भगवान् गौतम को आते हुए देखा, देख कर हृष्टतुष्ट बनी यावत् अपने आसन से उठी, उठकर जहाँ भगवान गौतम थे वहाँ आई। भगवान गौतम को तीन बार दक्षिण तरफ से प्रदक्षिणा करती है करके वन्दन नमस्कार करती है, करके बहुत से अशन पान खाद्य स्वाद्य से प्रतिलाभ दिया यावत् विसर्जित कि ा।	यह सुनकर अतिमुक्तकुमार भगवान् गौतम से इस प्रकार बोले-"हे भगवन्! आप आओ! मै आपको भिक्षा दिलाता हू।" ऐसा कहकर अतिमुक्तकुमार ने भगवान् गौतम की अगुली पकडी और उनको जहा अपना घर था वहा ले आये। श्रीदेवी महारानी भगवान् गौतम को आते देखकर वहुत ही प्रसन्न हुई यावत् आसन से उठकर जहा भगवान् गौतम थे उनके सम्मुख आई, और भगवान् गौतम को तीन वार दक्षिण तरफ से प्रदक्षिणा करके वदना की, नमस्कार किया। फिर विपुल अशन-पान खादिम और स्वादिम से प्रतिलाभ दिया यावत् विधि पूर्वक विसर्जित किया।

सूत्र ४

इसके बाद अतिमुक्त कुमार भगवान गौतम से इस प्रकार बोले— "हे देवानुप्रिय ! आप कहाँ रहते है ?" गौतम स्वामी ने इस पर अतिमुक्त कुमार से कहा— "हे देवानुप्रिय ! मेरे धर्माचार्य	इसके बाद भ० गौतम से अतिमुक्तकुमार यो बोले-"हे देवानुप्रिय! आप कहा रहते है?" इस पर भगवान् गौतम ने अतिमुक्तकुमार को उत्तर दिया- "हे देवानुप्रिय! मेरे धर्माचार्य और धर्मोपदेशक भगवान् महावीर धर्म की आदि करने वाले

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
धम्मायरिए धम्मोवएसए भगवं	धर्माचार्यो धर्मोपदेशको भगवान्
महावीरे आइगरे जाव संपाविउकामे,	महावीरः आदिकरः यावत् संप्राप्तुकामः
इहेव पोलासपुरस्स णयरस्स बहिया	इहैव पौलासपुरात् नगरात् बहिः
सिरिवणे उज्जाणे अहापडिरूवं	श्रीवने उद्याने यथाप्रतिरूपं
उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा	अवग्रहमवगृह्य संयमेन तपसा
अप्पाणं भावेमाणे विहरइ,	आत्मानं भावमानः विहरति,
तत्थ णं अम्हे परिवसामो ।"	तत्र खलु वयं परिवसामः ।"
तए णं से अइमुत्ते कुमारे भगवं	ततः खलु सः अतिमुक्तः कुमारः भगवन्तं
गोयमं एवं वयासी—	गौतमम् एवमवदत्—
"गच्छामि णं भन्ते ! अहं तुब्भेहिं	"गच्छामि खलु भदन्त ! अहं युष्माभिः
सद्धिं समणं भगवं महावीरं	सार्द्धं श्रमणं भगवन्तं महावीरं
पायवंदए ?"	पादवन्दितुम् ?"
"अहासुहं देवाणुप्पिया !"	"यथासुखं देवानुप्रिय !"

सूत्र ५

तए णं से अइमुत्ते कुमारे	ततः सोऽतिमुक्तः कुमारः
गोयमेणं सद्धिं जेणेव समणे	गौतमेन सार्द्धं यत्रैव श्रमणः
भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ,	भगवान् महावीरः तत्रैव उपागच्छति,
उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं	उपागत्य श्रमणं भगवन्तं महावीरं
त्तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं	त्रिः कृत्वा आदक्षिण-प्रदक्षिणां
करेइ, करित्ता वंदइ जाव	करोति, कृत्वा वन्दते यावत्
पज्जुवासइ ।	पर्युपासते ।
तए णं भगवं गोयमे जेणेव समणे	ततः खलु भगवान् गौतमः यत्रैव श्रमणः
भगवं महावीरे तेणेव उवागए ।	भगवान् महावीरः तत्रैव उपागतः ।
जाव पडिदंसेइ, पडिदंसित्ता,	यावत् प्रतिदर्शयति, प्रतिदर्श्य,
संजमेणं तवसा अप्पाणं-भावेमाणे	संयमेन तपसा आत्मानं भावमानः
विहरइ ।	विहरति ।

[हिन्दी शब्दार्थ]

धर्मोपदेशक धर्म के आदिकर यावत् मोक्षकेकामी भगवान् महावीर इसी पोलासपुर नगर के बाहर श्रीवन नामक उद्यान मे यथाकल्प अवग्रह लेकर सयम एवं तप से आत्मा को भावित करते हुए विचरण कर रहे है। हम वहाँ पर ही रहते है।"

अतिमुक्त कुमार भगवान गौतम से इस प्रकार बोले—
"हे पूज्य ! मै भी चलूँ आपके साथ श्रमण भ० महावीर को वन्दन करने?"
"हे देवानुप्रिय ! जैसे सुख हो वैसे करो।"

[हिन्दी अर्थ]

यावत् मोक्ष के कामी ! इसी पोलासपुर नगर के बाहर श्रीवन उद्यान मे मर्यादानुसार अवग्रह लेकर सयम एव तप मे आत्मा को भावित कर विचरते है, हम वही रहते है।"

अतिमुक्त कुमार– "हे पूज्य ! क्या में भी आपके सग श्रमण भगवान् महावीर को वदन करने चलू ?

श्री गौतम– "हे देवानुप्रिय ! जैसा तुम्हे सुख हो।"

सूत्र ५

इसके बाद वह अतिमुक्त कुमार गौतम स्वामी के साथ जहा श्रमण भगवान महावीर थे वहा आये, आकर श्रमण भगवान महावीर को तीन बार दक्षिण तरफ से प्रदक्षिणा करते है, करके यावत् वन्दन नमस्कार करके उनकी सेवा करने लगे। तभी भगवान गौतम श्रमण भगवान महावीर के समीप आये यावत् आहार दिखाया दिखाकर सयम तप से आत्मा को भावित करते हुए विचरने लगे।

तब अतिमुक्तकुमार गौतम स्वामी के साथ श्रमण भगवान् महावीर स्वामी के पास आये और आकर श्रमण भगवान् महावीर को तीन बार दक्षिण तरफ से प्रदक्षिणा की और वदना करके पर्युपासना करने लगे।

इधर भगवान् गौतम भगवान् महावीर के समीप आये और उन्हे लाया हुआ आहार पानी दिखा कर सयम तथा तप से अपनी आत्मा को भावित करते हुए विचरने लगे।

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
धम्मायरिए धम्मोवएसए भगवं	धर्माचार्यो धर्मोपदेशको भगवान्
महावीरे आइगरे जाव संपाविउकामे,	महावीरः आदिकरः यावत् संप्राप्तुकामः
इहेव पोलासपुरस्स णयरस्स बहिया	इहैव पौलासपुरात् नगरात् बहिः
सिरिवणे उज्जाणे अहापडिरूवं	श्रीवने उद्याने यथाप्रतिरूपं
उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा	अवग्रहं गृहीत्वा संयमेन तपसा
अप्पाणं भावेमाणे विहरइ,	आत्मानं भावयन् विहरति,
तत्थ णं अम्हे परिवसामो।"	तत्र खलु वयं परिवसामः।"
तए णं से अइमुत्ते कुमारे भगवं	ततः खलु सः अतिमुक्तः कुमारः भगवन्तं
गोयमं एवं वयासी—	गौतमम् एवमवदत्—
"गच्छामि णं भन्ते! अहं तुब्भेहिं	"गच्छामि खलु भदन्त! अहं युष्माभिः
सद्धिं समणं भगवं महावीरं	सार्द्धं श्रमणं भगवन्तं महावीरं
पायवंदए?"	पादवन्दितुम्?"
"अहासुहं देवाणुप्पिया!"	"यथासुखं देवानुप्रिय!"

सूत्र ५

तए णं से अइमुत्ते कुमारे	ततः सोऽतिमुक्तः कुमारः
गोयमेण सद्धिं जेणेव समणे	गौतमेन सार्द्धं यत्रैव श्रमणः
भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ,	भगवान् महावीरः तत्रैव उपागच्छति,
उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं	उपागत्य श्रमणं भगवन्तं महावीरं
तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं	त्रिः कृत्वा आदक्षिण-प्रदक्षिणां
करेइ, करित्ता वंदइ जाव	करोति, कृत्वा वन्दते यावत्
पज्जुवासइ।	पर्युपासते।
तए णं भगवं गोयमे जेणेव समणे	ततः खलु भगवान् गौतमः यत्रैव श्रमणः
भगवं महावीरे तेणेव उवागए।	भगवान् महावीरः तत्रैव उपागतः।
जाव पडिदंसेइ, पडिदंसित्ता,	यावत् प्रतिदर्शयति, प्रतिदर्श्य,
संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे	संयमेन तपसा आत्मानं भावयन्
विहरइ।	विहरति।

[हिन्दी शब्दार्थ]

धर्मोपदेशक धर्म के आदिकर
या ` मोक्षकेकामो भगवान् महावीर
इसी पोलासपुर नगर के बाहर
श्रीवन नामक उद्यान मे यथाकल्प
अवग्रह लेकर सयम एव तप से
आत्मा को भावित करते हुए विचरण
कर रहे है । हम वहाँ पर ही रहते है ।"
अतिमुक्त कुमार भगवान गौतम
से इस प्रकार बोले—
"हे पूज्य ! मै भी चलूँ आपके साथ
श्रमण भ० महावीर को
वन्दन करने?"
"हे देवानुप्रिय! जैसे सुख हो वैसे करो ।"

[हिन्दी अर्थ]

यावत् मोक्ष के कामी! इसी पोलासपुर नगर के बाहर श्रीवन उद्यान मे मर्यादानुसार अवग्रह लेकर सयम एव तप मे आत्मा को भावित कर विचरते हैं, हम वही रहते है ।"

अतिमुक्त कुमार– "हे पूज्य! क्या मै भी आपके सग श्रमण भगवान् महावीर को वदन करने चलूं ?

श्री गौतम– "हे देवानुप्रिय ! जेसा तुम्हे सुख हो ।"

सूत्र ५

इसके बाद वह अतिमुक्त कुमार
गौतम स्वामी के साथ जहा श्रमण
भगवान महावीर थे वहा आये,
आकर श्रमण भगवान महावीर को
तीन बार दक्षिण तरफ से प्रदक्षिणा
करते है, करके यावत् वन्दन नमस्कार
करके उनकी सेवा करने लगे ।
तभी भगवान गौतम श्रमण भगवान
महावीर के समीप आये यावत्
आहार दिखाया दिखाकर
सयम तप से आत्मा को भावित
करते हुए विचरने लगे ।

तब अतिमुक्तकुमार गौतम स्वामी के साथ श्रमण भगवान् महावीर स्वामी के पास आये और आकर श्रमण भगवान् महावीर को तीन बार दक्षिण तरफ से प्रदक्षिणा की और वदना करके पर्युपासना करने लगे ।

इधर भगवान् गौतम भगवान् महावीर के समीप आये और उन्हे लाया हुआ आहार पानी दिखा कर सयम तथा तप से अपनी आत्मा को भावित करते हुए विचरने लगे ।

(मूल सूत्र पाठ)	(संस्कृत छाया)
तएरण समणे भगवं महावीरे	ततः खलु श्रमणो भगवान् महावीरः
अइमुत्तस्स कुमारस्स	अतिमुक्ताय कुमाराय
धम्मकहा ।	धर्मकथां (कथितवान्)।
तएरण से अइमुत्ते कुमारे समणस्स	ततः खलु सः अतिमुक्तः कुमारः
भगवओ महावीरस्स अंतिए	श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य अंतिके
धम्म सोच्चा रिणसम्म	धर्म श्रुत्वा, निशम्य
हट्ठतुट्ठ	हृष्ट तुष्टः
"ज णवरं देवाणुप्पिया !	"यो विशेष हे देवानुप्रिय !"
अम्मापियरो आपुच्छामि ।	अम्बापितरौ आपृच्छामि ।
तएरण अहं देवाणुप्पियाणं	ततः खलु अहं देवानुप्रियाणा-
अंतिए जाव पव्वयामि ।"	मन्तिके यावत् प्रव्रजामि ।"
"अहासुहं देवाणुप्पिया !	"यथासुखं देवानुप्रिय !
मा पडिबध करेह !" ।५।	मा प्रतिबंधं कुरु ।"

सूत्र ६

तएरण से अइमुत्ते कुमारे	ततः खलु सः अतिमुक्तः कुमारः
जेरणेव अम्मापियरो तेरणेव	यत्रैव अम्बापितरौ तत्रैव
उवागए जाव पव्वइत्तए ।	उपागतः यावत् प्रव्रजितुम् ।
अइमुत्त कुमार अम्मापियरो	अतिमुक्तं कुमार अम्बापितरौ
एवं वयासी—	एवमवदताम्—
"बाले सि ताव तुम पुत्ता !	"बालः असि तावत् त्व पुत्र !
असबुद्धे सि तुमं पुत्ता !	असंबुद्धः असि त्वं पुत्र !
किण्णं तुमं जाणासि धम्मं ?"	किं खलु त्वं जानासि धर्मम् ?"
तए ण से अइमुत्ते कुमारे	ततः खलु सः अतिमुक्तः कुमारः
अम्मापियरो एव वयासी—	अम्बापितरौ एवमवदत्—
"एव खलु अहं अम्मयाओ	"एवं खलु अहं मातापितरौ !
जं चेव जाणामि, त चेव ण	यत् चैव अह जानामि तत् चैव न

(हिन्दी शब्दार्थ)

तब श्रमण भगवान महावीर ने
अतिमुक्त कुमार को
(उद्देश्य करके) धर्मकथा सुनाई।
वह अतिमुक्त कुमार श्रमण
भगवान महावीर के पास
धर्मकथा सुनकर और उसे
धारण कर बहुत प्रसन्न हुआ।
"यह विशेष (बोले) हे देवानुप्रिय!
मैं माता-पिता से पूछता हूं।
तब मै देवानुप्रिय के पास यावत्
दीक्षा ग्रहण ंगा।"
"हे देवानु ! जैसे सुख हो वैसे करो
परन्तु धर्मकार्य मे प्रमाद मत करो।"

(हिन्दी अर्थ)

तब श्रमण भगवान् महावीर ने अतिमुक्त कुमार को धर्म कथा सुनाई। धर्म कथा सुनकर और उसे धारण कर अतिमुक्त कुमार बडे प्रसन्न हुए और बोले– "हे देवानुप्रिय! मै अपने माता पिता को पूछकर फिर आपकी सेवा मे श्रमण दीक्षा ग्रहण करूंगा।"

भगवान् बोले– 'हे देवानुप्रिय! जैसे तुम्हे सुख हो वैसे करो। पर धर्म कार्य मे प्रमाद मत करो।"

सूत्र ६

तब वह अतिमुक्त कुमार जहा अपने
माता-पिता थे वहां आये और
यावत् दीक्षा लेने की आज्ञा मागी।
अतिमुक्त कुमार को माता-पिता
ने इस प्रकार कहा—
"हे पुत्र! अभी तुम बालक हो।
हे पुत्र! अभी तुम असबुद्ध हो।
तुम धर्म को क्या जानो?"
तब अतिमुक्त कुमार ने
माता पिता से इस प्रकार कहा—
"हे माता पिता! मै जिसको जानता
हू उसी को नही जानता हूं

इसके पश्चात् अतिमुक्तकुमार अपने माता-पिता के पास आकर बोले– "अम्ब! आपकी आज्ञा पाकर मैं दीक्षा लेना चाहता हू।"

इस पर माता-पिता अतिमुक्तकुमार से इस प्रकार बोले– "हे पुत्र! अभी तुम बालक हो, असबुद्ध हो। अभी धर्म को तुम क्या जानो?"

अतिमुक्तकुमार– 'हे माता पिता! मैं जिसको जानता हू, उस को नही जानता। और जिसको नही जानता हू उसको जानता हू।"

[मूल सूत्र पाठ]

जाणामि, जं चेव ण जाणामि
तं चेव जाणामि ।"
तए णं तं अइमुत्तं कुमारं
अम्मापियरो एवं वयासी—
"कहं णं तुम पुत्ता ! ज चेव
जाणासि त चेव ण जाणासि,
जं चेव ण जाणासि त चेव जाणासि?"

[संस्कृत छाया]

जानामि, ैव न जानामि
ैव जानामि ।"
: खलु तं अतिमुक्तं कुमारं
अम्बापितरौ एवमवदताम्—
"कथ खलु त्वं पुत्र ! यच्चैव
जानासि तच्चैव न जानासि,
यच्चैव न जानासि तच्चैव जानासि ?"

सूत्र ७

तए ण से अइमुत्ते कुमारे अम्मा-
पियरो एवं वयासी—
"जाणामि अह अम्मयाओ !
जहा जाएणं अवस्सं मरियव्वं,
ण जाणामि अह अम्मयाओ !
काहे वा कहि वा कह वा
केवच्चिरेण वा ?
ण जाणामि अहं अम्मयाओ !
केहिं कम्माययणेहिं जीवा
णेरइयतिरिक्खजोणिय-
मणुस्सदेवेसु उववज्ज ति,
जाणामि ण अम्मयाओ !
जहा सएहिं कम्माययणेहिं
जीवा णेरइय जाव उववज्जंति ।
एवं खलु अहं अम्मयाओ !
ज चेव जाणामि त चेव ण
जाणामि, ज चेव ण जाणामि
त चेव जाणामि ।

तत. खलु सः अतिमुक्त. कुमारः
अम्बापितरौ एवमवदत्—
"जानामि अहम् अम्बतातौ !
यथा जातेन अवश्यं मर्तव्यम्,
न जानामि अहम् अम्बतातौ !
कदा वा कुत्र वा कथं वा
कियच्चिरेण वा ?
न जानामि अहम् अम्बतातौ !
कैः कर्मायतनै. जीवा.
नैरयिकतिर्यग्योनिक
मनुष्यदेवेषु उपपद्य ते (उत्पद्यन्ते)?
जानामि खलु अम्बतातौ !
यथा स्वकै. कर्मायतनै.
जीवाः नैरयिक यावद् उपपद्यंते ।
एव खलु अहं अम्बतातौ !
यच्चैव जानामि, ैव न
जानामि, यच्चैव न जानामि
ैव जानामि ।

[हिन्दी शब्दार्थ]

जिसको नही जानता हूं
उसी को जानता हूं ।"
उस अतिमुक्त कुमार से
माता पिता इस प्रकार बोले—।
"हे पुत्र ! यह कैसे है कि तुम जिसको
जानते हो उसीको नही जानते हो
जिसे नही जानते हो उसको जानते हो?"

[हिन्दी अर्थ]

माता पिता– "पुत्र ? तुम जिसको जानते हो उसको नही जानते और जिसको नही जानते उसको जानते हो, यह कैसे ?"

सूत्र ७

वह अतिमुक्त कुमार
माता पिता से इस ार बोले—
"हे माता पिता ! मै इतना जानता हूं
कि जो जन्मा है वह अवश्य मरेगा
परन्तु मै यह नही जानता कि
, कहाँ, कैसे तथा
कितने समय बाद मरेगा ?
मैं नही जानता हे माता पिता !
किन कर्मो द्वारा जीव नरक, तिर्यच
मनुष्य और देव योनियो मे
उत्पन्न होते है ? परन्तु यह मै
श्य जानता हूं कि जीव अपने
कर्मो से नरक आदि योनियो
को प्राप्त होते है ।
हे माता-पिता ! इसीलिए मैने कहा
कि जिसको जानता हूं उसको नही
जानता हूं तथा जिसको नही जानता हूं
उसी को जानता हू ।

अतिमुक्तकुमार– "हे माता पिता ! मैं जानता हू कि जो जन्मा है उसको अवश्य मरना होगा, पर यह नही जानता कि कब, कहा, किस प्रकार और कितने दिन बाद मरना होगा । फिर मै यह भी नही जानता कि जीव किन कर्मो के कारण नरक, तिर्यच, मनुष्य और देवयोनि मे उत्पन्न होते है, पर इतना जानता हू कि जीव अपने ही कर्मों के कारण नरक यावत् देवयोनि मे उत्पन्न होते है ।"

इस प्रकार निश्चय ही हे माता पिता ! मै जिसको जानता हू उसी को नही जानता और जिसको नही जानता उसी को जानता हू । अत हे माता पिता ! मै आपकी आज्ञा होने पर यावत् प्रव्रज्या लेना चाहता हू ।"

[मूल सूत्र पाठ]

तं इच्छामि णं अम्मयाओ !
तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए जाव
पव्वइत्तए ।"
तए ण तं अइमुत्तं कुमारं
अम्मापियरो जाहे णो सचाएति
बहूहि आघवणाहि
जाव त इच्छामो ते जाया !
एगदिवसमवि रायसिरि
पासेत्तए ।
तए ण से अइमुत्ते कुमारे
अम्मापिउवयणमणुवत्तमाणे
तुसिणीए सचिट्ठइ ।
अभिसेओ जहा महाबलस्स[२६]
णिक्खमण जाव सामाइयमाइ-
याइं एक्कारस अगाइ अहिज्जइ,
बहूइ वासाइं सामण्ण
परियाओ, गुणरयणं जाव
विपुले सिद्धे ।७।

[सस्कृत छाया]

तद् इच्छामि खलु अम्बतातौ!
युवाभ्यामभ्यनुज्ञातो यावत्
प्रव्रजितुम् ।"
ततः खलु तं अति ु ं कुमारं
अम्बापितरौ यदा न शक्नुवन्तः
बहुभि आख्यायनाभिः
यावत् तत् इच्छावः ते पुत्र !
एक दिवसमपि राज्यश्रियं
द्रष्टुम् ।
ततः खलु स॰ अतिमुक्तः कुमारः
मातापितृवचनमनुवर्तमानः
तूष्णीकः सतिष्ठते ।
अभिषेको यथा महाबलस्य[२६]
निष्क्रमण यावत् सामायि-
काद्येकादश-अंगानि अधीते,
बहूनि वर्षाणि श्रामण्य
पर्यायः, गुणरत्ननामकं तपः
यावत् विपुले सिद्धः ।

इति पंचदशाध्ययनम्

षोडशमाध्ययनम्

सूत्र १

उक्खेवओ सोलसमस्स अज्झयणस्स
एव खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं
समएणं वाणारसीए णयरीए,

उत्क्षेपकः षोडशमस्य अध्ययनस्य
एवं खलु जम्बू ! तस्मिन् काले
तस्मिन् समये वाणारस्या नगर्यां

[हिन्दी शब्दार्थ]

इसलिए मेरी इच्छा है कि मै आपकी आज्ञा लेकर भगवान् महावीर प्रभु के पास प्रव्रजित हो जाऊँ ।" तब अतिमुक्त कुमार को माता-पिता बहुत सी युक्ति प्रयुक्तियो से समझाने मे समर्थ नही हुए तब बोले—"हे पुत्र ! हम एकदिन के लिए तुम्हारी राज्यलक्ष्मी देखना चाहते है ।" तब अतिमुक्तकुमार माता-पिता के वचन का अनुवर्तन करते हुए मौन रहे । तब महाबल[30] के समान उनका राज्याभिषेक हुआ और निष्क्रमण हुआ यावत् सामायिक आदि ग्यारह अंग पढ़े । बहुत वर्षो तक चारित्र पाला, गुण रत्न तप का आराधन किया, यावत् विपुलाचल पर सिद्ध हुए ।

[हिन्दी अर्थ]

अतिमुक्तकुमार को माता पिता जब बहुत सी युक्ति-प्रयुक्तियो से समझाने मे समर्थ नही हुए, तो बोले—"हे पुत्र! हम एक दिन के लिए तुम्हारी राज्यलक्ष्मी की शोभा देखना चाहते है ।"

तब अतिमुक्तकुमार माता पिता के वचन का अनुवर्तन करके मौन रहे ।

तब महाबल[30] के समान उनका राज्याभिषेक हुआ । फिर भगवान् के पास दीक्षा लेकर सामायिक आदि ग्यारह अगो का अध्ययन किया । बहुत वर्षो तक श्रमण चारित्र का पालन किया । गुण रत्न तप का आराधन किया । यावत् विपुलाचल पर्वत पर सिद्ध हुए ।

श्री जम्बू—"हे भगवन्! पन्द्रहवे अध्ययन का भाव सुना । अब सोलहवे अध्ययन मे प्रभु ने क्या अर्थ कहा है ? कृपा कर बताइये ।"

इति पंचदशाध्ययनम्

सोलहवां अध्ययन

सूत्र १

सोलहवे अध्ययन का उत्क्षेपक हे जम्बू! उस काल उस समय मे वाणारसी नगरी मे

श्री सुधर्मा स्वामी—"हे जबू! उस काल उस समय वाणारसी नगरी मे काम महावन

[मूल सूत्र पाठ]

काममहावणे चेइए तत्थ ण
वाणारसीए अलक्खे णामं राया होत्था ।
तेण कालेणं तेणं समएणं
समणे भगव महावीरे जाव
विहरइ ।
परिसा णिग्गया ।
तए णं अलक्खे राया इमीसे
कहाए लद्धट्ठे समाणे
हट्ठतुट्ठ जहा कूणिए[31] जाव
पज्जुवासइ,
धम्मकहा । तए ण से अलक्खे राया
समणस्स भगवओ महावीरस्स
अंतिए जहा उदायणे[32] तहा
णिक्खते, णवरं जेट्ठं पुत्तं
रज्जे अहिसिचइ,
एक्कारस अंगाइं,
बहुवासा परियाओ,
जाव विपुले सिद्धे ।

एव खलु जंबू !
समणेणं जाव छट्ठमस्स
वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।१।

[सस्कृत छाया]

काममहावन चैत्यं तत्र खलु वाणा-
रस्यां अलक्षः नाम राजा अभवत् ।
तस्मिन् काले तस्मिन् समये
श्रमणः भगवान् महावीरः यावत्
विहरति ।
परिषद् निर्गता ।
ततः खलु अलक्षो राजा अस्याः
कथायाः लब्धार्थः सन्
हृष्टः तुष्टः यथा कूणिको[31] यावत्
पर्युपासते । (भगवता क्षमुद्दिश्य)
धर्मकथाकथिता । ततः सःअलक्षः
राजा श्रमणस्य भगवतः महावीरस्य
अतिके यथा उदायनः[32] तथा
निष्क्रान्त, विशेष ज्येष्ठं पुत्रं
राज्ये अभिषिचति,
एकादशागानि अधीते
बहुवर्षाणि पर्याय,
यावत् विपुले सिद्ध. ।

एव खलु जम्बू !
श्रमणेन यावत् षष्ठमस्य
वर्गस्य अयमर्थ. प्रज्ञप्त. ।१।

इति षष्टमः वर्गः

सप्तम. वर्ग

सूत्र १

जइ ण भन्ते ! सत्तमस्स
वग्गस्स उक्खेवओ,[33]

यदि खलु भदन्त ! सप्तमस्य
वर्गस्य उत्क्षेपक ,[33]

[हिन्दी शब्दार्थ]

काम महावन नामक उद्यान था । उस वाराणसी मे अलक्ष नामक राजा था । उस काल उस समय मे श्रमण भगवान महावीर प्रभु यावत् विचरण करते हुए उद्यान मे पधारे । परिषद् वन्दन करने को निकली ।

राजा अलक्ष भगवान के पधारने का सवाद सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ और कूणिक[३४] के समान यावत् भगवान की सेवा करने लगा । प्रभु ने धर्मकथा कही । तब अलक्ष राजा ने श्रमण भगवान महावीर के पास उदायन राजा की तरह दीक्षा ग्रहण की । विशेष :—ज्येष्ठ पुत्र को राज्य पर आरूढ़ किया उन्होने ग्यारह अगो का अध्ययन किया, बहुत वर्षो तक चारित्र पालकर यावत् विपुल गिरि पर सिद्ध हुए ।

इस प्रकार हे जम्बू ! श्रमण भगवान् महावीर ने यावत् षष्ठम वर्ग का यह अर्थ कहा है ।

[हिन्दी अर्थ]

नामक उद्यान था । उस वाराणसी नगरी का अलक्ष नाम का राजा था ।

उस काल उस समय श्रमण भगवान् प्रभु महावीर यावत उस उद्यान मे पधारे । जन परिषद् प्रभु-वन्दन को निकली । राजा अलक्ष भी प्रभु महावीर के पधारने की बात सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ और कौणिक[३४] राजा के समान वह भी यावत् प्रभु की सेवा उपासना करने लगा । प्रभु ने धर्म कथा कही ।

तब अलक्ष राजा ने श्रमण भगवान महावीर के पास 'उदायन' की तरह[३५] श्रमण दीक्षाग्रहण की ।

विशेष बात यह रही कि उन्होने अपने ज्येष्ठ पुत्र को राज्य सिहासन पर बिठाया । ग्यारह अगो का अध्ययन किया । बहुत वर्षों तक श्रमण चारित्र का पालन किया यावत् विपुलगिरी पर्वत पर जाकर सिद्ध हुए ।

इस प्रकार हे जबू ! श्रमण भगवान महावीर ने छट्ठे वर्ग का यह अर्थ कहा है ।"

॥ इति षष्ठमः वर्गः ॥

सप्तम वर्ग

उत्क्षेपक[३३] यदि छठे वर्ग का भाव प्रभु ने कहा तो "हे भगवन् सातवे वर्ग का

श्री जम्बू स्वामी– "हे भगवन् ! छट्ठे वर्ग का भाव सुना । अब सातवे वर्ग का प्रभु

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
काममहावणे चेइए तत्थ णं	काममहावनं चैत्य तत्र खलु वाणा-
वाणारसीए अलक्खे णामं राया होत्था ।	रस्यां क्ष. नाम राजा अभवत् ।
तेणं कालेणं तेणं समएणं	तस्मिन् काले तस्मिन् समये
समणे भगवं महावीरे जाव	श्रमणः भगवान् महावीर. यावत्
विहरइ ।	विहरति ।
परिसा णिग्गया ।	परिषद् निर्गता ।
तए णं अलक्खे राया इमीसे	ततः खलु अलक्षो राजा अस्याः
कहाए लद्धट्ठे समाणे	कथायाः लब्धार्थः सन्
हट्ठतुट्ठ जहा कूणिए[31] जाव	हृष्टः तुष्टः यथा कूणिको[31] यावत्
पज्जुवासइ,	पर्युपासते । (भगवता अलक्षमुद्दिश्य)
धम्मकहा । तए णं से अलक्खे राया	धर्मकथाकथिता । ततः स. क्षः
समणस्स भगवओ महावीरस्स	राजा श्रमणस्य भगवतः महावीरस्य
अंतिए जहा उदायणे[32] तहा	अन्तिके यथा उदायनः[32] तथा
णिक्खते, णवरं जेट्ठं पुत्तं	निष्क्रान्तः, विशेषः ज्येष्ठं पुत्रं
रज्जे अहिंसिचइ,	राज्ये अभिषिचति,
एक्कारस अंगाइं,	एकादशागानि अधीते
बहुवासा परियाओ,	बहुवर्षाणि पर्याय ,
जाव विपुले सिद्धे ।	यावत् विपुले सिद्ध. ।
एव खलु जंबू !	एवं खलु जम्बू !
समणेणं जाव छट्ठ	श्रमणेन यावत् षष्ठमस्य
वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।१।	वर्गस्य अयमर्थ· प्रज्ञप्त· ।१।

इति षष्टमः वर्गः

सप्तम वर्गः

सूत्र १

जइ णं भन्ते ! मस्स	यदि खलु भदन्त ! सप्तमस्य
वग्गस्स उक्खेवओ,[33]	वर्गस्य उत्क्षेपक ,[33]

[हिन्दी शब्दार्थ]

प्रभु ने क्या भाव कहा है ?
श्री सुधर्मा स्वामी—"यावत् १३ अध्ययन कहे है। वे इस प्रकार है—
१. नन्दा २. नन्दवती ३. नन्दोत्तरा ४. नन्दश्रेणिका ५. मरुता ६. सुमरुता ७. महामरुत्ता ८. मरुदेवा, ९. भद्रा और १०. सुभद्रा ११. सुजाता १२ सुमनायिका और १३. भूतदत्ता। ये सब श्रेणिक राजा की भार्याओ के नाम समझे।"

[हिन्दी अर्थ]

ने क्या अर्थ कहा है ? कृपा कर कहिये।"

श्री सुधर्मा स्वामी- "सातवे वर्ग के तेरह अध्ययन कहे गये है, जो इस प्रकार है —

१ नन्दा, २ नन्दवती, ३, नन्दोत्तरा, ४ नन्दश्रेणिका, ५ मरुता, ६ सुमरुता, ७ महामरुता, ८ मरुद्देवा, ९ भद्रा १० सुभद्रा, ११ सुजाता, १२ सुमनायिका, १३ भूतदत्ता।

ये सब श्रेणिक राजा की रानिया थी।"

सूत्र २

"हे भगवन्! यदि सातवे वर्ग के तेरह अध्ययन बतलाये है तो हे पूज्य! प्रथम अध्ययन का श्रमण भगवान यावत् मुक्ति को प्राप्त प्रभु ने क्या अर्थ फरमाया है?"
"हे जम्बू! उस काल उस समय मे राजगृह नगर मे गुणशिलक नाम का उद्यान था। श्रेणिक राजा थे जो वर्णन करने योग्य थे। उस श्रेणिक राजा के नन्दा नाम की रानी थी जो कि वर्णन करने योग्य थी।

श्री जम्बू- "हे भगवन्! प्रभु ने सातवे वर्ग के तेरह अध्ययन कहे है, तो प्रथम अध्ययन का हे पूज्य! श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने क्या अर्थ कहा है?"

श्री सुधर्मा स्वामी- "इस प्रकार निश्चय हे जबू! उस काल उस समय मे राजगृह नामका एक नगर था। उसके बाहर गुणशील नामक एक उद्यान था। वहा श्रणिक राजा राज्य करता था। वह वर्णन योग्य था। उस श्रेणिक राजा की नदा नाम की रानी थी, जो वर्णन योग्य थी।

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
जाव तेरस अज्झयणा	यावत् त्रयोदशानि अध्ययनानि
पण्णत्ता । तं जहा—	प्रज्ञप्तानि । तानि यथा—
नंदा तह नदवई,	नन्दा तथा नन्दवती,
नंदोत्तर-नदसेणिया चेव ।	नन्दोत्तरा नन्दश्रेणिका चैव ।
मरुया सुमरुया महमरुया,	मरुता सुमरुता महामरुता,
मरुद्देवा य अट्ठमा ।१।	मरुद्देवा च अष्टमी ।१।
भद्दा (य) सुभद्दा य,	भद्रा च सुभद्रा च,
सुजाया सुमणाइया ।	सुजाता सुमनातिका ।
भूयदिण्णा य बोद्धव्वा,	भूतदत्ता च बोद्धव्या,
सेणिय-भज्जाण णामाइं ।२।	श्रेणिक-भार्याणा नामानि ।२।

सूत्र २

जइ ण भंते ! तेरस	यदि खलु भदन्त ! त्रयोदशानि
अज्झयणा पण्णत्ता,	अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि,
पढमस्स णं भंते !	प्रथमस्य खलु भदन्त !
अज्झयणस्स समणेण	अध्ययनस्य श्रमणेन
जाव संपत्तेण के अट्ठे	यावत् सप्राप्तेन कः अर्थः
पण्णत्ते ?	प्रज्ञप्त ?
एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं	एवं खलु जम्बू ! तस्मिन्
तेण समएणं रायगिहे णयरे	काले तस्मिन् समये
गुणसिलए चेइए,	राजगृहे नगरे, गुणशिलकं
सेणिए राया, वण्णओ ।	चैत्यम्, श्रेणिकः राजा, वर्ण्यः
तस्स ण सेणियस्स रण्णो	तस्य खलु श्रेणिकस्य राज्ञः
णदा णाम देवी होत्था ।	नन्दा नाम देवी अभवत् ।
वण्णओ ।	वर्ण्या (वर्णक·) । (तत्र नगरे)

[हिन्दी शब्दार्थ]

प्रभु ने क्या भाव कहा है ?
श्री सुधर्मा स्वामी—"यावत् १३ अध्ययन कहे है। वे इस प्रकार है—
१. नन्दा २. नन्दवती ३. नन्दोत्तरा ४. नन्दश्रेणिका ५. मरुता ६. सुमरुता ७. महामरुता ८ मरुदेवा, ६. भद्रा और १०. सुभद्रा ११. सुजाता १२ सुमनायिका और १३. भूतदत्ता। ये सब श्रेणिक राजा की भार्याओ के नाम समझे।"

[हिन्दी अर्थ]

ने क्या अर्थ कहा है ? कृपा कर कहिये।"

श्री सुधर्मा स्वामी- "सातवे वर्ग के तेरह अध्ययन कहे गये है, जो इस प्रकार है —

१ नन्दा, २ नन्दवती, ३, नन्दोत्तरा, ४ नन्दश्रेणिका, ५ मरुता, ६ सुमरुता, ७ महामरुता, ८ मरुदेवा, ६ भद्रा १० सुभद्रा, ११ सुजाता, १२ सुमनायिका, १३ भूतदत्ता।

ये सब श्रेणिक राजा की रानिया थी।"

सूत्र २

"हे भगवन्! यदि सातवे वर्ग के तेरह अध्ययन बतलाये है तो हे पूज्य! प्रथम अध्ययन का श्रमण भगवान यावत् मुक्ति को प्राप्त प्रभु ने क्या अर्थ फरमाया है ?"
"हे जम्बू! उस काल उस समय मे राजगृह नगर मे गुणशिलक नाम का उद्यान था। श्रेणिक राजा थे जो वर्णन करने योग्य थे। उस श्रेणिक राजा के नन्दा नाम की रानी थी जो कि वर्णन करने योग्य थी।

श्री जम्बू- "हे भगवन्! प्रभु ने सातवे वर्ग के तेरह अध्ययन कहे है, तो प्रथम अध्ययन का हे पूज्य! श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने क्या अर्थ कहा है?"

श्री सुधर्मा स्वामी- "इस प्रकार निश्चय हे जबू! उस काल उस समय मे राजगृह नामका एक नगर था। उसके बाहर गुणशील नामक एक उद्यान था। वहा श्रेणिक राजा राज्य करता था। वह वर्णन योग्य था। उस श्रेणिक राजा की नदा नाम की रानी थी, जो वर्णन योग्य थी।

[मूल सूत्र पाठ]

जाव तेरस अज्झयणा
पण्णत्ता । त जहा—
नंदा तह नदवई,
नदोत्तर-नदसेणिया चेव ।
मरुया सुमरुया महमरुया,
मरुद्देवा य अट्ठमा ।१।
भद्दा य सुभद्दा य,
सुजाया सुमणाइया ।
भूयदिण्णा य बोद्धव्वा,
सेणिय-भज्जाण णामाइं ।२।

[संस्कृत छाया]

यावत् त्रयोदशानि अध्ययनानि
प्रज्ञप्तानि । तानि यथा—
नन्दा तथा नन्दवती,
नन्दोत्तरा नन्दश्रेणिका चैव ।
मरुता सुमरुता महामरुता,
मरुद्देवा च अष्टमी ।१।
भद्रा च सुभद्रा च,
सुजाता सुमनातिका ।
भूतदत्ता च बोद्धव्या,
श्रेणिक-भार्याणा नामानि ।२।

सूत्र २

जइ ण भते ! तेरस
अज्झयणा पण्णत्ता,
पढमस्स णं भते !
अज्झयणस्स समणेणं
जाव सपत्तेण के अट्ठे
पण्णत्ते ?
एव खलु जबू ! तेणं कालेणं
तेण समएणं रायगिहे णयरे
गुणसिलए चेइए,
सेणिए राया, वण्णओ ।
तस्स ण सेणियस्स रण्णो
णदा णाम देवी होत्था ।
वण्णओ ।

यदि खलु भदन्त ! त्रयोदशानि
अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि,
प्रथमस्य खलु भदन्त !
अध्ययनस्य श्रमणेन
यावत् सप्राप्तेन कः अर्थः
प्रज्ञप्तः ?
एव खलु जम्बू ! तस्मिन्
काले तस्मिन् समये
राजगृहे नगरे, गुणशिलक
चैत्यम्, श्रेणिक. राजा, वर्ण्यः
तस्य खलु श्रेणिकस्य राज्ञः
नन्दा नाम देवी अभवत् ।
वर्ण्या (वर्णक.) । (तत्र नगरे)

[हिन्दी शब्दार्थ]

प्रभु ने क्या भाव कहा है ?
श्री सुधर्मा स्वामी—"यावत् १३ अध्ययन कहे है। वे इस प्रकार है—
१. नन्दा २. नन्दवती ३. नन्दोत्तरा ४. नन्दश्रेणिका ५. मरुता ६. सुमरुता ७. महामरुता ८. मरुदेवा, ९. भद्रा और १० सुभद्रा ११. सुजाता १२ सुमनायिका और १३. भूतदत्ता। ये सब श्रेणिक राजा की भार्याओ के नाम समझे।"

[हिन्दी अर्थ]

ने क्या अर्थ कहा है ? कृपा कर कहिये।"

श्री सुधर्मा स्वामी– "सातवे वर्ग के तेरह अध्ययन कहे गये है, जो इस प्रकार है —

१ नन्दा, २ नन्दवती, ३, नन्दोत्तरा, ४ नन्दश्रेणिका, ५ मरुता, ६ सुमरुता, ७ महामरुता, ८ मरुद्देवा, ९ भद्रा १० सुभद्रा, ११ सुजाता, १२ सुमनायिका, १३ भूतदत्ता।

ये सब श्रेणिक राजा की रानिया थी।"

सूत्र २

"हे भगवन् ! यदि सा ेवर्ग के तेरह अध्ययन बतलाये है तो हे पूज्य ! प्रथम अध्ययन का श्रमण भगवान यावत् मुक्ति को प्राप्त प्रभु ने क्या अर्थ फरमाया है ?"
"हे जम्बू ! उस काल उस समय मे राजगृह नगर मे गुणशिलक नाम का उद्यान था। श्रेणिक राजा थे जो वर्णन करने योग्य थे। उस श्रेणिक राजा के नन्दा नाम की रानी थी जो कि वर्णन करने योग्य थी।

श्री जम्बू– "हे भगवन् ! प्रभु ने सातवे वर्ग के तेरह अध्ययन कहे है, तो प्रथम अध्ययन का हे पूज्य ! श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने क्या अर्थ कहा है?"

श्री सुधर्मा स्वामी– "इस प्रकार निश्चय हे जबू! उस काल उस समय मे राजगृह नामका एक नगर था। उसके बाहर गुणशील नामक एक उद्यान था। वहा श्रेणिक राजा राज्य करता था। वह वर्णन योग्य था। उस श्रेणिक राजा की नदा नाम की रानी थी, जो वर्णन योग्य थी।

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
सामी समोसढे ।	स्वामी समवसृतः ।
परिसा णिग्गया ।	परिषद् निर्गता ।
तएणं सा णंदा देवी इमीसे	: खलु सा नंदा देवी अस्याः
कहाए लद्धट्ठा समाणा जाव	कथाया. लब्धार्था ी यावत्
हट्ठतुट्ठा कोडुंबिय पुरिसे	हृष्टतुष्टा कौटुम्बिक पुरुषान्
सद्दावेइ,	शब्दयति ।
सद्दावित्ता,	शब्दयित्वा
जाण जहा पउमावई ।	यानं यथा पद्मावती ।
जाव एक्कारस अगाइं अहिज्जित्ता	यावद् एकादशाङ्गानि अधीत्य,
वीस वासाइ परियाओ,	विंशति िणि पर्यायः,
जाव सिद्धा ।	यावत् सिद्धा ।
एवं तेरस वि णंदागमेण	एवं त्रयोदशापि देव्यः नंदा-
णेयव्वाओ ।	गमेन नेतव्याः ।
णिक्खे ो ।२।	निक्षेपकः ।

इति सप्तमः वर्गः

अथ मः वर्ग.

सूत्र १

जइ ण भन्ते ! समणेण	यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन
जाव सपत्तेण अट्ठमस्स	यावत् सप्राप्तेन अष्टमस्य
अगस्स अंतगडदसाणं	अगस्य अंतकृद्द
सत्तमस्स वग्गस्स अयमट्ठे	सप्तमस्य वर्गस्य र्थः
पण्णत्ते । अट्ठमस्स ण	प्रज्ञप्त. । अष्टमस्य खलु
भते ! वग्गस्स अंतगडदसाणं	भदन्त ! वर्गस्य अंतकृद्दशानां
समणेण जाव सपत्तेण	श्रमणेन यावत् सप्राप्तेन
के अट्ठे पण्णत्ते ?	कः अर्थः प्रज्ञप्तः?

[हिन्दी शब्दार्थ]

उस नगर मे स्वामी महावीर पधारे । परिषद् वन्दन करने को गई ।

वह नंदा महारानी भगवान महावीर के पधारने का समाचार सुनकर यावत् हृष्टतुष्ट हुई और आज्ञाकारी सेवको को बुलाया । बुलाकर पद्मावती की तरह धार्मिक यान लाने की आज्ञा दी । यावत् ग्यारह अंगो का अध्ययन किया, बीस ` चारित्र्य पालनकर यावत् सिद्ध हुई । इसी प्रकार नन्दवती आदि १२ ही अध्ययन नन्दा के ान जाने । निक्षेपक यानि भगवान ने सातवे वर्ग का यह भाव फरमाया है ।

[हिन्दी अर्थ]

प्रभु महावीर राजगृह नगर के उद्यान मे पधारे । जन परिषद वदन करने को गयी ।

उस समय नदा देवी भगवान् के आने की खबर सुनकर वहुत प्रसन्न हुई और आज्ञाकारी सेवक को बुलाकर धार्मिक रथ लाने की आज्ञा दी । पद्मावती की तरह इसने भी दीक्षा ली यावत् ग्यारह अगो का अध्ययन किया । बीस वर्ष तक चारित्र पर्याय का पालन किया यावत् अन्त मे सिद्ध हुई ।

इसी प्रकार नन्दवती आदि बाकी १२ ही अध्ययन नदा के समान है । यह निक्षेपक है ।[३६]

इस प्रकार है जम्बू ! भगवान् ने सातवे वर्ग का यह भाव कहा है ।

इति सप्तमः वर्गः

अथ अष्टमः वर्गः

सूत्र १

श्री जबू–"यदि हे भगवन् ! श्रमण यावत् मोक्ष को प्राप्त प्रभु ने आठवे अंग अंतगडदशा के सातवे वर्ग का यह अर्थ फरमाया है । तो हे भगवन् ! अंतकृतदशा के आठवे वर्ग का श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने क्या अर्थ फरमाया है ?

श्री जम्बू स्वामी– "हे भगवन् ! श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने आठवे अग अन्तगडदशा के सातवे वर्ग का यह भाव कहा है तो अब अन्तगडदशा सूत्र के आठवे वर्ग का श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने क्या अर्थ कहा है ? कृपा कर बताइये ।"

[मूल सूत्र पाठ]

एव खलु जंबू ! समणेणं
जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अं
अंतगडदसाणं अट्ठमस्स
वग्गस्स दस अज्झयणा
पण्णत्ता । तं जहा—
काली, सुकाली, महाकाली,
कण्हा, सुकण्हा, महाकण्हा ।
वीरकण्हा य बोद्धव्वा,
रामकण्हा तहेव य ।
पिउसेण कण्हा णवमी,
दसमी महासेणकण्हा य ।
जइ ण भंते ! अट्ठमस्स
वग्गस्स दस अज्झयणा
पण्णत्ता, पढमस्स ण
भंते ! अज्झयणस्स
णेणं जाव सपत्तेणं
के अट्ठे पण्णत्ते ?

[सस्कृत छाया]

एवं खलु जम्बू ! श्रमणेन
यावत् संप्राप्तेन
अष्टमस्य अंगस्य अंतकृद्दशानाम्
अष्टमस्य वर्गस्य दशअध्ययनानि
प्रज्ञप्तानि । तानि यथा—
काली, सुकाली, महाकाली,
कृष्णा, सुकृष्णा, महाकृष्णा ।
वीरकृष्णा च बोद्धव्या,
रामकृष्णा तथैव च ।।
पितृसेन कृष्णा नवमी,
दशमी महासेन कृष्णा च ।।
यदि खलु भदन्त ! अष्टमस्य
वर्गस्य दशाध्ययनानि
प्रज्ञप्तानि, प्रथमस्य खलु
भदन्त ! अध्ययनस्य
श्रमणेन यावत् संप्राप्तेन
कः अर्थः प्रज्ञप्त· ?

सूत्र २

एव खलु जबू ! तेणं कालेणं
तेण समएणं चपा णामं
णयरी होत्था, पुण्णभद्दे
चेइए ।
तत्थण चम्पाए णयरीए
सेणियस्स रण्णो भज्जा
कोणियस्स रण्णो चुल्लमाउया,

एव खलु ! तस्मिन् काले
तस्मिन् समये चपा नाम्नी
नगरी आसीत्, पूर्णभद्र
चैत्यमासीत् ।
तत्र खलु चपायां नगर्या
श्रेणिकस्य राज्ञ· भार्या
कूणिकस्य राज्ञः क्षुल्ल-

[हिन्दी शब्दार्थ]

हे . ! श्रमण भगवान
यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने आठवे
अंग अन्तगडदशा सूत्र के
आठवे वर्ग के दस अध्ययन कहे है ।
जो कि इस प्रकार है—
काली, सुकाली, महाकाली,
कृष्णा, सुकृष्णा और महाकृष्णा,
वीरकृष्णा और रामकृष्णा
नवमी पितृसेन कृष्णा और
दसवी महासेन कृष्णा
जानना चाहिये ।"
यदि हे भगवन् ! आठवे वर्ग
के दस अध्ययन कहे है
तो ! प्रथम अध्ययन
का श्रमण यावत्
मुक्ति को प्राप्त प्रभु ने क्या
अर्थ फरमाया है ?

[हिन्दी अर्थ]

श्री सुधर्मा- "हे जबू ! श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने आठवे अग अगगड दशा के आठवे वर्ग मे दश अध्ययन कहे है, जो इस प्रकार है—

१ काली, २ सुकाली, ३ महाकाली, ४ कृष्णा, ५ सुकृष्णा, ६ महाकृष्णा, ७ वीर कृष्णा, ८ रामकृष्णा, ९ पितृसेन कृष्णा और १० महासेन कृष्णा ।"

श्री जम्बू स्वामी- "हे भगवन् ! जब आठवे वर्ग के दस अध्ययन कहे है, तो प्रभो! प्रथम अध्ययन का श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने अपने श्रीमुख से क्या अर्थ कहा है ?"

सूत्र २

हे जम्बू ! उस काल उस
समय मे चपा नाम की
नगरी थी, वहा पूर्णभद्र नाम
का बगीचा था ।
वहा चम्पा नगरी मे श्रेणिक
राजा की भार्या एवं कूणिक
राजा की छोटी माता

श्री सुधर्मा स्वामी-"हे जम्बू ! उस काल उस समय चपा नाम की एक नगरी थी । वहाँ पूर्णभद्र नाम का एक उद्यान था । कोणिक राजा राज करता था । उस चपा नगरी मे श्रेणिक राजा की रानी और महाराज कोणिक की छोटी माता काली नाम की देवी थी, जो वर्णन करने योग्य थी ।

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
एवं खलु ू ! समणेणं	एवं खलु जम्बू ! श्रमणेन
जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अं	यावत् संप्राप्तेन
अंतगडदसाणं अट्ठमस्स	अष्टमस्य अंगस्य अंतकृद्दशानाम्
वग्गस्स दस अज्झयणा	अष्टमस्य वर्गस्य दशअध्ययनानि
पण्णत्ता । तं जहा—	प्रज्ञप्तानि । तानि यथा—
काली, सुकाली, महाकाली,	काली, सुकाली, महाकाली,
कण्हा, सुकण्हा, महाकण्हा ।	कृष्णा, सुकृष्णा, महाकृष्णा ।
वीरकण्हा य बोद्धव्वा,	वीरकृष्णा च बोद्धव्या,
रामकण्हा तहेव य ।	रामकृष्णा तथैव च ।।
पिउसेण कण्हा णवमी,	पितृसेन कृष्णा नवमी,
दसमी महासेणकण्हा य ।	दशमी महासेन कृष्णा च ।।
जइ ण भंते ! अट्ठमस्स	यदि खलु भदन्त ! अष्टमस्य
वग्गस्स दस अज्झयणा	वर्गस्य दशाध्ययनानि
पण्णत्ता, पढमस्स णं	प्रज्ञप्तानि, प्रथमस्य खलु
भंते ! अज्झयणस्स	भदन्त ! अध्ययनस्य
समणेण जाव संपत्तेणं	श्रमणेन यावत् संप्राप्तेन
के अट्ठे पण्णत्ते ?	कः अर्थः प्रज्ञप्तः ?

सूत्र २

एवं खलु जंबू ! तेण कालेणं	एवं खलु जम्बू ! तस्मिन् काले
तेण समएण चपा णामं	तस्मिन् समये चपा नाम्नी
णयरी होत्था, पुण्णभद्दे	नगरी आसीत्, पूर्णभद्रं
चेइए ।	चैत्यमासीत् ।
तत्थण चम्पाए णयरीए	तत्र खलु चपाया नगर्या
सेणियस्स रण्णो भज्जा	श्रेणिकस्य राज्ञः भार्या
कोणियस्स रण्णो चुल्लमाउया,	कूणिकस्य राज्ञः क्षुल्ल-

[हिन्दी शब्दार्थ]

काली नाम की देवी थी, जो कि वर्णन करने योग्य थी। काली रानी ने नन्दा देवी के समान ही प्रभु महावीर के पास प्रव्रज्या लेकर सामायिकादि ग्यारह अगो का अध्ययन किया। बहुत से उपवास, बेले तेले आदि तपस्या के द्वारा आत्मा को भावि करती हुई यावत् विचरण करने लगी।

[हिन्दी अर्थ]

नदा देवी के समान काली रानी ने भी प्रभु महावीर के समीप श्रमण दीक्षा ग्रहण करके सामायिक आदि ग्यारह अगो का अध्ययन किया एव बहुत से उपवास वेले, तेले आदि तपस्या से अपनी आत्मा को भावित करती हुई विचरने लगी।२।

एक दिन वह काली आर्या आर्यचन्दना आर्या के समीप आयी और आकर हाथ जोड कर विनयपूर्वक इस प्रकार बोली–"हे आर्ये!

सूत्र ३

तदनन्तर वह काली आर्या अन्य किसी दिन जहां पर आर्या चन्दनबाला थी वहां आई, और आकर इस प्रकार बोली "हे आर्ये! आपकी आज्ञा हो तो मैं रत्नावली तप अगीकार करके विचरण करना चाहती हूं।"
"हे देवानुप्रिय! जैसे सुख हो वैसे करो परन्तु धर्मकार्य मे विलम्ब मत करो।"
तब वह काली आर्या, आर्या चन्दन बाला की आज्ञा प्राप्त हो जाने पर रत्नावली तप को अगीकार करके विचरने लगी जो इस प्रकार है—

आपकी आज्ञा प्राप्त हो तो मैं रत्नावली तप को अगीकार करके विचरना चाहती हू।"

महासती आर्या चन्दना–"हे देवानुप्रिये! जैसा सुख हो, करो, धर्म साधना के कार्य मे प्रमाद मत करो।"

तब काली आर्या, महासती चन्दना की आज्ञा पाकर रत्नावली तप को अगीकार करके विचरने लगी, जो इस प्रकार है—

सूत्र ४

उन्होंने उपवास किया और इच्छानुसार विगय से पारणा किया, करके वेला किया, करके इच्छानुसार विगय से पारणा किया, पारणा करके

काली आर्या ने पहले उपवास किया और इच्छानुसार विगय से पारणा किया, फिर वेला किया और सर्वकामगुण– विगय सहित पारणा किया।

[मूल सूत्र पाठ]

कालो णाम देवी
होत्था, वण्णओ ।
जहा णंदा सामाइयमाइयाइं
एक्कारस अंगाइ अहिज्जइ,
बहूहि चउत्थ छट्ठट्ठमेहि जाव
अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।

[संस्कृत छाया]

माता काली नाम देवी
अभवत्, वर्ण्या ।
यथा नंदा सामायिकादीनि
एकादश-अगानि अधीते,
बहुभि चतुर्थषष्टाष्टमैः यावत्
आत्मान भावयन्ती विहरति ।

३

तएणं सा काली ।
अण्णया कयाइं जेणेव
अज्जचंदणा अज्जा तेणेव
उवागया, उवागच्छित्ता
एव वयासी—
"इच्छामि णं ओ !
तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणी
रयणावलि तवोकम्मं पि णं
विहरित्तए ।"
"अहासुह देवाणुप्पिया !
मा पडिबधं करेह ।"
तए ण सा काली अज्जा
अज्ज चदणाए अब्भणुण्णाया
समाणी रयणावलि तवोकम्मं
उवसपज्जित्ताणं विहरइ ।

ततःखलु सा काली आर्या
अन्यदा कदाचिद् यत्रैव
आर्यचन्दना आर्या तत्रैव
उपागता, उपागत्य
एवमवदत्—
इच्छामि खलु आर्या !
युष्माभिः अभ्यनुज्ञाता ी
रत्नावली तप कर्म उपसंपद्यन्तं
विहर्तुम् ।
यथा सुख देवानुप्रिया !
मा प्रतिबन्ध कुरुष्व ।
ततः खलु सा काली आर्या
आर्यया चन्दनया अभ्यनुज्ञाता
सती रत्नावली तपः
उपसंपद्य विहरति ।

सूत्र ४

त जहा—चउत्थ करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
छट्ठं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता

था—चतुर्थं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा,

[हिन्दी शब्दार्थ]

काली नाम की देवी थी,
जो कि वर्णन करने योग्य थी।
काली रानी ने नन्दा देवी
के समान ही प्रभु महावीर
के पास प्रव्रज्या लेकर सामायिकादि
ग्यारह अगो का अध्ययन किया।
बहुत से उपवास, बेले तेले आदि
तपस्या के द्वारा आत्मा को भावि
करती हुई यावत् विचरण करने लगी।

[हिन्दी अर्थ]

नदा देवी के समान काली रानी ने भी प्रभु महावीर के समीप श्रमण दीक्षा ग्रहण करके सामायिक आदि ग्यारह अगो का अध्ययन किया एव बहुत से उपवास बेले, तेले आदि तपस्या से अपनी आत्मा को भावित करती हुई विचरने लगी।२।

एक दिन वह काली आर्या आर्यचन्दना आर्या के समीप आयी और आकर हाथ जोड कर विनयपूर्वक इस प्रकार बोली–"हे आर्ये! आपकी आज्ञा प्राप्त हो तो मै रत्नावली तप को अगीकार करके विचरना चाहती हू।"

सूत्र ३

तदनन्तर वह काली आर्या अन्य किसी
दिन जहां पर आर्या चन्दनबाला थी
वहा आई, और आकर इस प्रकार बोली
"हे आर्ये! आपकी आज्ञा हो तो मै
रत्नावली तप ीकार करके विचरण
करना चाहती हूं।"
"हे देवानुप्रिय! जैसे सुख हो वैसे करो
परन्तु धर्मकार्य मे विलम्ब मत करो।"
तब वह काली आर्या, आर्या चन्दन
बाला की आज्ञा प्राप्त हो जाने पर
रत्नावली तप को अगीकार करके
विचरने लगी जो इस प्रकार है—

महासती आर्या चन्दना–"हे देवानुप्रिये! जैसा सुख हो, करो, धर्म साधना के कार्य मे प्रमाद मत करो।"

तब काली आर्या, महासती चन्दना की आज्ञा पाकर रत्नावली तप को अगीकार करके विचरने लगी, जो इस प्रकार है—

सूत्र ४

उन्होने उपवास किया और इच्छा-
नुसार विगय से पारणा किया, करके
बेला किया, करके इच्छानुसार
विगय से पारणा किया, पारणा करके

काली आर्या ने पहले उपवास किया और इच्छानुसार विगय से पारणा किया, फिर बेला किया और सर्वकामगुण– विगय सहित पारणा किया।

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
अट्ठम करेइ, करित्ता	अष्टमं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
अट्ठछट्ठाइ करेइ, करित्ता	ै षष्ठानि करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	ैकामगुणित पारयति, पारयित्वा
चउत्थ करेइ, करित्ता	चतुर्थ करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
छट्ठ करेइ करित्ता	षष्ठ करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
अट्ठमं करेइ, करित्ता	अष्टमं करोति, कृत्वा
सव्व कामगुणिय पारेइ, पारित्ता	ैकामगुणित पारयति पारयित्वा
दसम करेइ, करित्ता	दशम करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	ैकामगुणित पारयति, पारयित्वा।
दुवालसम करेइ, करित्ता	द्वादशम् करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणित पारयति पारयित्वा
चोद्दसम करेइ, करित्ता	चतुर्दशं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
सोलसम करेइ, करित्ता	षोडश करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
अट्ठारसम करेइ, करित्ता	अष्टादश करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
वीसइम करेइ, करित्ता	विशतितमं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	ैकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
बावीसइम करेइ, करित्ता	द्वाविंशतितमं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चउवीसइम करेइ, करित्ता	चतुर्विशति ॑ करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा

[हिन्दी शब्दार्थ]

तेला किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
आठ बेले किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
उपवास किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
बेला किया, करके
ँकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
तेले का तप किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
चौला (चार उपवास) ि ा, करके
ँकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
पाच उपवास किये, करके
ँकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
छ उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
सात उपवास किये, करके
ँकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
आठ उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
नौ उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
दस उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
ग्यारह उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके

[हिन्दी अर्थ]

तेला किया, सर्वकामगुणयुक्त अर्थात् इच्छानुसार विगय सहित पारणा किया,

फिर आठ बेले किये और सर्वकामगुण-युक्त पारणा किया,

फिर उपवास किया और सर्वकामगुण-युक्त पारणा किया,

बेले की तपस्या की और सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया,

तेला किया और सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया,

दशम अर्थात् चोले की तपस्या की और सर्वकामगुण पारणा किया,

द्वादशम– पचोला किया और सर्वकाम-गुण पारणा किया,

चतुर्दश– छः का तप किया और सर्व-कामगुण पारणा किया,

षोडशम– सात का तप किया और सर्व-कामगुण पारणा किया,

अष्टादश– आठ का तप किया और सर्व-कामगुण पारणा किया,

नव का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

दस का तप किया, और सर्वकामगुण पारणा किया,

ग्यारह का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

[मूल सूत्र पाठ]

छव्वीसइम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
अट्ठावीसइम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
तीसइमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
बत्तीसइम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
चोत्तीसइम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
चोत्तीस छट्ठाइ करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
चोत्तीसइम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
ीसइम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
तीसइमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
अट्ठावीसइम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
छव्वीसइम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
चउवीसइम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
बावीसइम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेड, पारित्ता
वीसइम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता

[सस्कृत छाया]

षड्विशति करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
अष्टाविशति करोति, कृत्वा
कामगुणितं पारयति, पारयित्वा
त्रिशतितम करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
द्वात्रिसत्तमं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
स्त्रिंशत्तम करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चतुस्त्रिशतषष्ठानि करोति, कृत्वा
कामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चतुस्त्रिंश करोति, कृत्वा
कामगुणितं पारयति, पारयित्वा
द्वात्रिशत्तम करोति, कृत्वा
कामगुणितं पारयति, पारयित्वा
त्रिशत्तमं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
अष्टाविंशतितमं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
षड्विशतितमं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चतुर्विशतितम करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
द्वाविशतितमं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
विंशतितम करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा

[हिन्दी शब्दार्थ]

बारह का तप किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
तेरह उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
चौदह उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
पन्द्रह उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
सोलह उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
चौतीस बेले किये, करके
गुणयुक्त पारणा किया, करके
सोलह की तपस्या की, करके
कामगुणयुक्त पारणा किया, करके
पन्द्रह की तपस्या की, करके
कामगुणयुक्त पारणा किया, करके
चौदह की तपस्या की, करके
कामगुणयुक्त पारणा किया, करके
तेरह की तपस्या की, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
बारह उप किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
ग्यारह उपवास का तप किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
दस का तप किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
नौ उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके

[हिन्दी अर्थ]

बारह का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

तेरह का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

चौदह का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

पन्द्रह का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

सोलह का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

चौतीस बेले किए और सर्वकामगुण पारणा किया,

फिर सोलह का तप किया और सर्वकाम-गुण पारणा किया,

पद्रह का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

चौदह का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

तेरह का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

बारह का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

ग्यारह का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

दस का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

नव का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

[मूल सूत्र पाठ]

छव्वीसइम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
अट्ठावीसइम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
तीसइम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
बत्तीसइम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
चोत्तीसइम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
चोत्तीस छट्ठाइं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चोत्तीसइमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
बत्तीसइमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
तीसइमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
अट्ठावीसइम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
छव्वीसइम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउवीसइम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
बावीसइम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
वीसइम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता

[संस्कृत छाया]

षड्विशति करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
अष्टाविशति करोति, कृत्वा
कामगुणितं पारयति, पारयित्वा
त्रिशतितम करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
द्वात्रिंसत्तम करोति, कृत्वा
कामगुणित पारयति, पारयित्वा
स्त्रि शत्तमं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चतुस्त्रिशत्षष्ठानि करोति, कृत्वा
कामगुणित पारयति, पारयित्वा
चतुस्त्रिश करोति, कृत्वा
कामगुणितं पारयति, पारयित्वा
द्वात्रिशत्तमं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
ि त्तमं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
अष्टाविंशति करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
षड्विशति करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चतुर्विशतितमं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
द्वाविशतितम करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
विंशतितम करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा

[हिन्दी शब्दार्थ]

बारह का तप किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
तेरह उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
चौदह उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
पन्द्रह उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
सोलह उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
चौतीस बेले किये, करके
कामगुणयुक्त पारणा किया, करके
सोलह की तपस्या की, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
पन्द्रह की तपस्या की, करके
कामगुणयुक्त पारणा किया, करके
चौदह की तपस्या की, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
तेरह की तपस्या की, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
बारह उप किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
ग्यारह उपवास का तप किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
दस का तप किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
नौ उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके

[हिन्दी अर्थ]

बारह का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

तेरह का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

चौदह का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

पन्द्रह का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

सोलह का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

चौतीस बेले किए और सर्वकामगुण पारणा किया,

फिर सोलह का तप किया और सर्वकाम-गुण पारणा किया,

पद्रह का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

चौदह का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

तेरह का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

बारह का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

ग्यारह का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

दस का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

नव का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

[मूल सूत्र पाठ]

अट्ठारसम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
सोलसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
चोद्दसम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
बारसम करेइ, करित्ता,
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
दसम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
अट्ठम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
छट्ठं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
चउत्थ करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
अट्ठछट्ठाइ करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
अट्ठमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
छट्ठ करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
चउत्थ करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
एव खलु एसा रयणावलीए
तवोकम्मस्स पढमा परिवाडी,
एगेणं सवच्छरेण तिहिं मासेहिं

[सस्कृत छाया]

अष्टादशं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
षोडशं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
चतुर्दश करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
द्वादश करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
दशम करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
अष्टम करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
षष्ठं करोति, कृत्वा
ˎकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चतुर्थ करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
अष्टषष्ठानि करोति, कृत्वा
ˎकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
अष्टम करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
षष्ठं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चतुर्थ करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
एव खलु एषा रत्नावल्याः
तपः कर्मणः प्रथमा परिपाटी,
एकेन सवत्सरेण त्रिभिर्मासैः

[हिन्दी शब्दार्थ]

आठ उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
सात का तप किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
छः उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
पाच उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
चार का तप किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
तीन उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
बेले का तप किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
उपवास किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा ि ा, करके
आठ बेले किये, करके
ˊकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
तेला किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
बेला किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
उपवास किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया।
इस प्रकार इस रत्नावली
तपः कर्म की प्रथम परिपाटी की
एक वर्ष तीन महीने

[हिन्दी अर्थ]

आठ का तप किया और सर्वकाम गुण पारणा किया,

सात का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

छ का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

पचोले का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

चोले का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

तेले का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

बेले का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

उपवास का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

आठ बेले किये और सर्वकामगुण पारणा किया,

तेला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

षष्ठ– बेला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

उपवास किया और सर्वकामगुण पारणा किया।

इस प्रकार इस रत्नावली तप. कर्म की प्रथम परिपाटी की काली आर्या ने आराधना की।

सूत्रानुसार रत्नावली तप की इस आराधना की प्रथम परिपाटी (लडी) एक वर्ष

(मूल सूत्र पाठ)

बावीसाए य अहोरत्तेहि
अहासुत्तं जाव आराहिया भवइ ।४।

(सस्कृत छाया)

द्वाविंशतिभिश्च अहोरात्रैः
यथासूत्र यावत् आराधिता भवति ।४।

सूत्र ५

तयाणतर च ण दोच्चाए
परिवाडीए चउत्थं करेइ,
करित्ता विगइवज्जं पारेइ, पारित्ता
छट्ठ करेइ, करित्ता
विगइवज्ज पारेइ, पारित्ता
एवं जहा पढमाए, णवरं
सव्व पारणए विगइवज्जं
पारेइ जाव आराहिया भवइ ।
तयाणंतरं च णं तच्चाए परिवाडीए
चउत्थ करेइ, करित्ता अलेवाड
पारेइ,
सेसं तहेव ।
एव चउत्था परिवाडी,
णवर सव्वपारणए आयबिल
पारेइ, सेस त चेव ।
पढमम्मि सव्वकामपारणय,
बीइयाए विगइवज्ज ।
तइयम्मि अलेवाड,
आयबिलओ चउत्थम्मि ।।
तए ण सा काली अज्जा रयणावली
तवोकम्म पंचहिं सवच्छरेहि
दोहि य मासेहिं अट्ठावीसाए
य दिवसेहि अहासुत्त

तदनन्तरं च खलु द्वितीयस्यां
परिपाट्याम् चतुर्थ करोति,
कृत्वा विकृतिवर्ज पारयति, पारयित्वा
षष्ठं करोति, कृत्वा
विकृतिवर्ज पारयति, पारयित्वा
एवं यथा प्रथमायाम्, विशेषः
सर्वपारणाया विकृतिवर्ज
पारयति यावत् आराधिता भवति
तदनंतरं च खलु तृतीयायां
परिपाट्या चतुर्थ करोति, कृत्वा
अलेपकृतं पारयति,
शेष तथैव ।
एवम् चतुर्था परिपाटी,
विशेषतः सर्वपारणा दिने आचामाम्लं
पारयति, शेषं तदेव ।
प्रथमायां सर्वकामपारणकम्,
द्वितीयायां विकृतिवर्जम् ।
तृतीयायाम् अलेपकृतम्,
आचामाम्लम् च चतुर्थ्याम् ।
तत खलु सा काली आर्या रत्ना-
वली तप. कर्म पचभि. संवत्सरैः
द्वाभ्याम् मासाभ्याम् अष्टा
विंशत्या च दिवसै यथासूत्रं

[हिन्दी शब्दार्थ]

व बावीस अहोरात्रि से सूत्रानुसार यावत् आराधना की जाती है।

[हिन्दी अर्थ]

तीन महीने और बावीस अहोरात्र मे पूर्ण की जाती है।

सूत्र ५

नन्तर द्वितीय परिपाटी मे उपवास किया, करके विगयरहित पारणा किया, करके बेले का तप किया, करके विगय रहित पारणा किया। शेष प्रथम परिपाटी के समान। विशेष यह कि सब पारणे विगय रहित पालते यावत् आराधते है। तदनन्तर वह तृतीय परिपाटी मे उपवास करती, करके लेपरहित पारणा करती है। शेष पहले की तरह। इसी प्रकार चौथी परिपाटी मे, विशेष, पारणे आयबिल से करती है। शेष उसी प्रकार। पहली परिपाटी मे सर्वकामगुणयुक्त पारणा, द्वितीय मे विगयरहित तीसरी मे लेपरहित और चौथी मे आयबिल से पारणा किया। इस प्रकार उस काली आर्या ने रत्नावली तप. कर्म की पॉच वर्ष दो मास व अट्ठाईस दिनो मे सूत्रानुसार

इस एक परिपाटी मे तीन सौ चौरासी दिन तपस्या के एव अठासी दिन पारणा के होते है। इस प्रकार कुल चारसौ बहत्तर दिन होते है।४।

इसके पश्चात् दूसरी परिपाटी मे काली आर्या ने उपवास किया और विगय रहित पारणा किया, बेला किया और विगय रहित पारणा किया।

इस प्रकार यह भी पहली परिपाटी के समान है। इसमे केवल यह विशेष (अन्तर) है कि पारणा विगय रहित होता है। इस प्रकार सूत्रानुसार इस दूसरी परिपाटी का आराधन किया जाता है।

इसके पश्चात् तीसरी परिपाटी मे वह काली आर्या उपवास करती है और लेप रहित पारणा करती है। शेष पहले की तरह है।

ऐसे ही काली आर्या ने चौथी परिपाटी की आराधना की। इसमे विशेषता यह है कि सब पारणे आयबिल से करती है। शेष उसी प्रकार है।

प्रथम परिपाटी मे सर्वकामगुण एव दूसरी मे विगय रहित पारणा किया। तीसरी मे लेप रहित और चौथी परिपाटी मे आय-बिल से पारणा किया।

(मूल सूत्र पाठ)	(संस्कृत छाया)
बावीसाए य अहोरत्तेहि	द्वा तिभिश्च अहोरात्रैः
अहासुत्तं जाव आराहिया भवइ ।४।	यथासूत्र यावत् आराधिता भवति ।४।

सूत्र ५

तयाणतर च णं दोच्चाए	तदनन्तरं च खलु द्वितीयस्यां
परिवाडीए चउत्थं करेइ,	परिपाट्याम् चतुर्थं करोति,
करित्ता विगइवज्जं पारेइ, पारित्ता	कृत्वा विकृतिवर्जं पारयति, पारयित्वा
छट्ठ करेइ, करित्ता	करोति, कृत्वा
विगइवज्जं पारेइ, पारित्ता	विकृतिवर्जं पारयति, पारयित्वा
एव जहा पढमाए, णवरं	एवं यथा प्रथमायाम्, विशेषः
सव्व पारणए विगइवज्जं	सर्वपारणाया विकृतिवर्जं
पारेइ जाव आराहिया भवइ ।	पारयति यावत् आराधिता भवति
तयाणंतरं च ण तच्चाए परिवाडीए	तदनंतरं च खलु तृतीयायां
चउत्थ करेइ, करित्ता अलेवाडं	परिपाट्या चतुर्थं करोति, कृत्वा
पारेइ,	अलेपकृतं पारयति,
सेसं तहेव ।	शेष तथैव ।
एवं चउत्था परिवाडी,	एवम् चतुर्थी परिपाटी,
णवर सव्वपारणए आयबिलं	विशेषत सर्वपारणा दिने आचामाम्लं
पारेइ, सेस तं चेव ।	पारयति, शेष तदेव ।
पढमम्मि सव्वकामपारणय,	प्रथमाया सर्वकामपारणकम्,
बीइयाए विगइवज्जं ।	द्वितीयाया विकृतिवर्जम् ।
तइयम्मि अलेवाडं,	तृतीयायाम् अलेपकृतम्,
आयबिलओ चउत्थम्मि ॥	आचामाम्लम् च चतुर्थ्याम् ।
तए ण सा काली अज्जा रयणावली	तत॰ खलु सा काली र्रत्ना-
तवोकम्म पचहि सवच्छरेहिं	वली तप॰ कर्म पंचभि॰ संवत्सरैः
दोहि य मासेहिं अट्ठावीसाए	द्वाभ्याम् मासाभ्याम् अष्टा
य दिवसेहिं अहासुत्त	विंशत्या च दिवसैः यथासूत्रं

[हिन्दी शब्दार्थ]

व बावीस अहोरात्रि से सूत्रानुसार यावत् आराधना की जाती है ।

[हिन्दी अर्थ]

तीन महीने और बावीस अहोरात्र मे पूर्ण की जाती है ।

सूत्र ५

तदनन्तर द्वितीय परिपाटी मे उपवास किया, करके विगयरहित पारणा किया, करके बेले का तप किया, करके विगय रहित पारणा किया । शेष प्रथम परिपाटी के समान । विशेष यह कि सब पारणे विगय रहित पालते यावत् आराधते है । तदनन्तर वह तृतीय परिपाटी मे उ करती, करके लेपरहित पारणा करती है । शेष पहले की तरह । इसी प्रकार चौथी परिपाटी मे, विशेष, पारणे आयबिल से करती है । शेष उसी प्रकार । पहली परिपाटी मे सर्वकामगुणयुक्त पारणा, द्वितीय मे विगयरहित तीसरी मे लेपरहित और चौथी मे आयबिल से पारणा किया । इस प्रकार उस काली आर्या ने रत्नावली तपः कर्म की पाँच वर्ष दो मास व अट्ठाईस दिनो मे सूत्रानुसार

इस एक परिपाटी मे तीन सो चौरासी दिन तपस्या के एव अठासी दिन पारणा के होते है । इस प्रकार कुल चारसौ बहत्तर दिन होते है ।४।

इसके पश्चात् दूसरी परिपाटी मे काली आर्या ने उपवास किया और विगय रहित पारणा किया, बेला किया और विगय रहित पारणा किया ।

इस प्रकार यह भी पहली परिपाटी के समान है । इसमे केवल यह विशेष (अन्तर) है कि पारणा विगय रहित होता है । इस प्रकार सूत्रानुसार इस दूसरी परिपाटी का आराधन किया जाता है ।

इसके पश्चात् तीसरी परिपाटी मे वह काली आर्या उपवास करती है और लेप रहित पारणा करती है । शेष पहले की तरह है ।

ऐसे ही काली आर्या ने चौथी परिपाटी की आराधना की । इसमे विशेषता यह है कि सब पारणे आयबिल से करती है । शेष उसी प्रकार है ।

प्रथम परिपाटी मे सर्वकामगुण एव दूसरी मे विगय रहित पारणा किया । तीसरी मे लेप रहित और चौथी परिपाटी मे आयबिल से पारणा किया ।

[मूल सूत्र पाठ]

जाव आराहित्ता जेणेव
चंदणा   । तेणेव
उवागया, उवागच्छित्ता
चदणा, वदइ णमंसइ,
वदित्ता णमसित्ता,
बहूहि चउत्थछट्ठट्ठम-
दसमदुवालसेहि तवोकम्मेहि
अप्पाणं भावेमाणी विहरइ ।५।

[संस्कृत छाया]

यावत् आराध्य यत्रैव
आर्यचंदना आर्या तत्रैव
उपागता, उपागत्य
आर्याचन्दनां वन्दते नमस्यति
वन्दित्वा नमस्यित्वा,
बहुभिः चतुर्थषष्ठाष्टम-
दशमद्वादशभिः तपः कर्मभिः
आत्मानं भावयन्ती विहरति ।५।

सूत्र ६

तए णं सा काली   ।
तेणं ओरालेणं जाव धम-
णिसतया जाया यावि होत्था ।
से जहा णामए इंगाल सगडी
वा जाव सुहुयहुयासणे
इव भासरासिपलिच्छण्णा
तवेणं तेएणं तवतेयसिरीए
अईव अईव उवसोभेमाणी
चिट्ठइ ।६।

ततः खलु सा काली आर्या
तेन उदारेण या धमनि-
संतता जाता चाप्यभवत् ।
तद् यथा नाम अंगार टी
वा यावत् सुहुतहुताशन
इव भस्मराशिप्रतिच्छन्ना
तपसा तेजसा तपस्तेजः
च अतीव अतीव उपशोभमाना
तिष्ठति ।६।

सूत्र ७

तए णं तीसे कालीए अज्जाए
अण्णया कयाइं पुव्वरत्ता-
वरत्तकाले अयमज्झत्थिए,
जहा खंदयस्स चिता
जाव अत्थि उट्ठाणे कम्मे,
बले, वीरिए पुरिसक्कार-पर-
क्कमे, सद्धाधिई-सवेगे वा

ततः खलु तस्या. काल्याः
आर्याया. अन्यदा कदाचित् पूर्व-
रात्रापररात्रिकाले अयमध्यासः संजातः
यथा स्कंदकस्य
यावदस्ति उत्थानं कर्म,
बल वीर्यम् पुरुषकार. परा-
क्रम श्रद्धाधृतिः संवेग. वा

(हिन्दी शब्दार्थ)

यावत् आराधना की, करके जहाँ
आर्यचदना आर्या थी वहाँ
वह आई, आकर आर्या चदना
को उसने वन्दना नमस्कार
किया, वन्दन नमस्कार करके
बहुत से उपवास बेले, तेले,
चौले पंचोले आदि तप से आत्मा को
भावित करती हुई विचरने लगी ।५।

(हिन्दी अर्थ)

इस भाति काली आर्या ने रत्नावली तप की पाच वर्ष दो महीने और अठावीस दिनो मे सूत्रानुसार यावत् आराधना पूर्ण करके जहाँ आर्या चदना थी वहाँ आई और आर्या चदना को वदना नमस्कार किया ।

फिर बहुत से उपवास, बेले, तेले, चार पाँच आदि तप से अपनी आत्मा को भावित करती हुई विचरने लगी ।५।

सूत्र ६

तपस्या के बाद वह काली आर्या
उस प्रधान तपस्या से यावत् सूख गई
और उसकी धमनियां दीखने लगी ।
जैसे कोयले की भरी गाडी मे चलते
हुए आवाज निकलती है वैसे ही उनकी
हड्डिया कड कड बोलने लगी, यावत्
भस्म से ढ़की हुई सुहुत अग्नि
के समान तपस्या के तेज
से अतीव शोभायमान थी ।६।

इतनी तपस्या करने के बाद काली आर्या उस प्रधान तपस्या से यावत् सूख गई और उसकी खुली नसे दिखने लगी । जैसे कोयले से भरी गाडी मे चलते समय आवाज निकलती है वैसे उठते बैठते चलते फिरते काली आर्या की हड्डिया भी कड कड बोलने लगी यावत् फिर भी होम की हुई अग्नि के समान एव भस्म से ढकी हुई आग जैसे भीतर से प्रज्ज्वलित रहती है, वैसे तपस्या के तप तेज की शोभा से आर्या काली का शरीर अत्यन्त शोभायमान हो रहा था ।६।

सूत्र ७

फिर उसी काली आर्या को अन्य
किसी दिन रात्रि के पिछले प्रहर
मे यह विचार उत्पन्न हुआ
स्कदक के समान चिन्तन हुआ कि
जब तक शरीर मे उत्थान कर्म, बल,
वीर्य और पुरुषाकार पराक्रम है
(मन मे) श्रद्धा धैर्य एवं वैराग्य

फिर एक दिन रात्रि के पिछले प्रहर मे काली आर्या के हृदय मे स्कन्दक मुनि के समान इस प्रकार विचार उत्पन्न हुआ—"इस कठोर तप साधना के कारण मेरा शरीर अत्यन्त कृश हो गया है तथापि जब तक मेरे इस शरीर मे उत्थान, कर्म, बल, वीर्य और पुरुषाकार पराक्रम है, मन मे श्रद्धा, धैर्य एव वैराग्य है तब तक मेरे लिए उचित है कि कल सूर्योदय होने के पश्चात आर्य चदना

[मूल सूत्र पाठ] [संस्कृत छाया]

जाव आराहित्ता जेणेव चंदणा अज्जा तेणेव उवागया, उवागच्छित्ता चंदणं, वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता, बहूहिं चउत्थछट्ठट्ठम- दसमदुवालसेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणी विहरइ ।५।	यावत् आराध्य यत्रैव आर्यचंदना आर्या तत्रैव उपागता, उपागत्य आर्याचन्दनां वन्दते नमस्यति वन्दित्वा नमस्यित्वा, बहुभिः चतुर्थषष्ठाष्टम- दशमद्वादशभिः तप. कर्मभिः आत्मानं भावयन्ती विहरति ।५।

सूत्र ६

तए णं सा काली । तेणं ओरालेणं जाव धम- णिसतया जाया यावि होत्था । से जहा णामए इंगाल सगडी वा जाव सुहुयहुयासणे इव भासरासिपलिच्छण्णा तवेणं तेएण तवतेयसिरीए अईव अईव उवसोभेमाणी चिट्ठइ ।६।	ततः खलु सा काली आर्या तेन उदारेण यावत् धमनि- संतता जाता चाप्यभवत् । तद् यथा नाम अंगारशकटी वा यावत् सुहुतहुताशन इव भस्मराशिप्रतिच्छन्ना तपसा तेजसा तपस्तेजः ि च अतीव अतीव उपशोभमाना तिष्ठति ।६।

सूत्र ७

तए ण तीसे कालीए अज्जाए अण्णया कयाइं पुव्वरत्ता- वरत्तकाले अयमज्झत्थिए, जहा खंदयस्स चिंता जाव अत्थि उट्ठाणे कम्मे, बले, वीरिए पुरिसक्कार-पर- क्कमे, सद्धाधिई-संवेगे वा	ततः खलु तस्याः काल्याः आर्यायाः अन्यदा कदाचित् पूर्व- रात्रापररात्रिकाले अयमध्यासः सं : यथा स्कंदकस्य चिंता यावदस्ति उत्थान कर्म, बलं वीर्यम् पुरुषकार. परा- क्रम. श्रद्धाधृतिः संवेग. वा

(हिन्दी शब्दार्थ)

यावत् आराधना की, करके जहाँ आर्यचदना आर्या थी वहाँ वह आई, आकर आर्या चंदना को उसने वन्दना नमस्कार किया, वन्दन नमस्कार करके बहुत से उपवास बेले, तेले, चौले पंचोले आदि तप से आत्मा को भावित करती हुई विचरने लगी ।५।

(हिन्दी अर्थ)

इस भाति काली आर्या ने रत्नावली तप की पाच वर्ष दो महीने और अठावीस दिनों मे सूत्रानुसार यावत् आराधना पूर्ण करके जहाँ आर्या चदना थी वहाँ आईं और आर्या चदना को वदना नमस्कार किया ।

फिर बहुत से उपवास, बेले, तेले, चार पाँच आदि तप से अपनी आत्मा को भावित करती हुई विचरने लगी ।५।

सूत्र ६

तपस्या के बाद वह काली आर्या उस प्रधान तपस्या से यावत् सूख गई और उसकी धमनिया दीखने लगी । जैसे कोयले की भरी गाडी मे चलते हुए आवाज निकलती है वैसे ही उनकी हड्डिया कड कड बोलने लगी, यावत् भस्म से ढकी हुई सुहुत अग्नि के समान तपस्या के तेज से अतीव शोभायमान थी ।६।

इतनी तपस्या करने के बाद काली आर्या उस प्रधान तपस्या से यावत् सूख गई और उसकी खुली नसे दिखने लगी । जैसे कोयले से भरी गाडी मे चलते समय आवाज निकलती है वैसे उठते बैठते चलते फिरते काली आर्या की हड्डिया भी कड कड बोलने लगी यावत् फिर भी होम की हुई अग्नि के समान एव भस्म से ढकी हुई आग जैसे भीतर से प्रज्ज्वलित रहती है, वैसे तपस्या के तप तेज की शोभा से आर्या काली का शरीर अत्यन्त शोभायमान हो रहा था ।६।

सूत्र ७

फिर उसी काली आर्या को अन्य किसी दिन रात्रि के पिछले प्रहर मे यह विचार उत्पन्न हुआ स्कदक के समान चिन्तन हुआ कि जब तक शरीर मे उत्थान कर्म, बल, वीर्य और पुरुषाकार पराक्रम है (मन मे) श्रद्धा धैर्य एव वैराग्य

फिर एक दिन रात्रि के पिछले प्रहर मे काली आर्या के हृदय मे स्कन्दक मुनि के समान इस प्रकार विचार उत्पन्न हुआ–"इस कठोर तप साधना के कारण मेरा शरीर अत्यन्त कृश हो गया है तथापि जब तक मेरे इस शरीर मे उत्थान, कर्म, बल, वीर्य और पुरुषाकार पराक्रम है, मन मे श्रद्धा, धैर्य एव वैराग्य है तब तक मेरे लिए उचित है कि कल सूर्योदय होने के पश्चात आर्य चदना

[मूल सूत्र पाठ]

ताव मे सेयं कल्ल जाव
जलते अज्जचंदणं अज्जं
आपुच्छित्ता अज्जचदणाए
अज्जाए अब्भणुण्णायाए
समाणीए सलेहणा झूसणा-
झूसियाए भत्तपाणपडियाइ
क्खियाए कालं अणवकखमाणीए
विहरित्तए त्तिकट्टु,
एव सपेहेइ, सपेहित्ता
कल्ल जेणेव अज्जचंदणा
अज्जा तेणेव उवागच्छइ,
उवागच्छित्ता
अज्जचदणं अज्ज वंदइ,
णमंसइ, वंदित्ता णमंसि ा
एव वयासी—
"इच्छामि णं अज्जाओ !
तुब्भेहि अब्भणुण्णायाए
समाणीए सलेहणा जाव
विहरित्तए ।"
"अहासुह देवाणुप्पिया !
मा पडिबंध करेह ।"
तओ काली अज्जा अज्जचंदणाए
अज्जाए अब्भणुण्णाया
समाणी सलेहणाझूसणा
झूसिया जाव विहरइ ।
सा काली अज्जा अज्जचदणाए
अज्जाए अतिए सामाइय-

[सस्कृत छाया]

तावत् मे श्रेयः कल्ये यावत्
ज्वलति आर्यचदनाम् आर्याम्
आपृच्छ्य आर्यचंदनया
आर्यया अभ्यनुज्ञातायाः
सत्याः सलेखना जोषणा-
जुष्टाया भक्तपान प्रत्याख्या-
तायाः कालमनवकांक्षन्त्याः
विहर्तुम् इति कृत्वा
एवं सप्रेक्षते, संप्रेक्ष्य
कल्यं यत्रैव आर्यचंदना
आर्या तत्रैव उपागच्छति,
उपागत्य
आर्यचंदनाम् आर्याम् वन्दते
नमस्यति, वदित्वा नमस्यित्वा
एवमवादीत्—
"इच्छामि खलु हे आर्या !
युष्माभिः अभ्यनुज्ञाता
सती सलेखना यावत्
विहर्तुम् ।"
"यथासुख देवानुप्रिया !
मा प्रतिबंध कुरु ।"
ततः काली आर्या आर्यचदनया
आर्यया अभ्यनुज्ञाता
सती सलेखना जोषण-
जुष्टा यावद् विहरति ।
सा काली आर्या आर्यचंदनायाः
आर्याया. अन्तिके

[हिन्दी शब्दार्थ]

है तब तक
मुझे योग्य है कि कल
सूर्योदय के पश्चात् आर्यचदना
आर्या को पूछकर आर्य चन्दना
की आज्ञा प्राप्त होने पर
संलेखना झूसरणा को
सेवन करती हुई भक्त-
पान का त्याग करके मृत्यु को
नही चाहती हुई विचरण करूँ, यह
विचार किया, करके सूर्योदय होते
ही जहाँ पर आर्यचंदना आर्या
थी वहाँ पर आई, और आकर
आर्यचदना आर्या को वंदना नमस्कार
करती है। करके इस प्रकार बोली—
"हे आर्ये! आपकी आज्ञा प्राप्तकर मैं
संलेखना करती हुई विचरण करना
चाहती हू।" (तब आर्य चंदना
आर्या ने कहा)-"हे देवानुप्रिये !
जिस प्रकार सुख हो वैसे
करो। सत्कार्य साधन मे
विलम्ब मत करो।"
तब काली आर्या आर्यचंदना
आर्या से आज्ञा प्राप्त होने पर
सलेखना झूसरणा को सेवन
करती हुई यावत् विचरण करने लगी।
उस काली आर्या ने आर्यचदना
आर्या के पास सामायिकादि

[हिन्दी अर्थ]

आर्या को पूछकर उनकी आज्ञा प्राप्त होने पर सलेखना झूपणा का सेवन करती हुई भक्तपान का त्याग करके मृत्यु को नही चाहती हुई विचरण करू।"

ऐसा सोचकर वह अगले दिन सूर्योदय होते ही जहा आर्यचदना थी वहा आई और आर्यचदना को वन्दना नमस्कार कर इस प्रकार बोली—

"हे आर्ये! आपकी आज्ञा हो तो मै सले-खना झूषणा करते हुए विचरना चाहती हू।"

आर्यचदना–"हे देवानुप्रिये! जैसा तुम्हे सुख हो, वैसा करो। सत्कार्य साधन मे विलम्ब मत करो।"

तब आर्य चदना की आज्ञा पाकर काली आर्या सलेखना झूषणा से यावत् विचरने लगी।

[मूल सूत्र पाठ]	[सस्कृत छाया]
माइयाइ एक्कारस अगाइं	सामायिकादीनि एकादशांगानि
अहिज्जित्ता बहुपडिपुण्णाइं	अधीत्य बहुप्रतिपूर्णान्
अट्ठ संवच्छराइं सामण्ण-	अष्टसंवत्सरान् (यावत्) श्रामण्य
परियाग पाउणित्ता मासियाए	पर्यायं पालयित्वा मासिक्या
सलेहणाए अप्पाणं झूसित्ता	संलेखनया आत्मान जुष्ट्वा
सट्ठि भत्ताइ अणसणाए	षष्ठि भक्तानि अनशनेन
छेदित्ता जस्सट्ठाए कीरइ	छित्वा यस्यार्थाय क्रियते
णग्गभावे जाव चरिमुस्सास	नग्नभाव. (स्थविरकल्पित्वं) यावत्
णीसासेहि सिद्धा ।७।	चरमैरुच्छ्‌वासनिश्वासैः सिद्धा ।७।

इति प्रथम अध्ययन

द्वितीय अध्ययन

उक्खेवओ बी अज्झयणस्स ।	उत्क्षेपकः द्वितीयस्य अध्ययनस्य ।
एवं खलु ! तेण कालेणं	एवं खलु ! तस्मिन् काले
तेणं समएणं चंपा णामं	तस्मिन् समये चम्पा नामा
णयरी, पुण्णभद्दे चेइए,	नगरी पूर्णभद्रं चैत्यम्
कोणिए राया ।	कूणिको राजा (ीत्) ।
तत्थ णं सेणियस्स रण्णो	तत्र खलु श्रेणिकस्य राज्ञः
भज्जा कोणियस्स रण्णो	भार्या कोणिकस्य राज्ञ
चुल्लमाउया सुकाली	क्षुल्लमाता सुकाली
णामं देवी होत्था ।	नामा देवी अभवत् ।
जहा काली तहा	यथा काली तथा सुकाली
सुकाली वि णिक्खंता,	अपि निष्क्रान्ता
जाव बहूहिं चउत्थ जाव	यावत् बहुभि. चतुर्थं. यावत्
अप्पाण भावेमाणी विहरइ ।	आत्मानं भावयन्ती विहरति ।
तएण सा सुकाली अज्जा	तत खलु सा सुकाली आर्या
अण्णया कयाइ जेणेव अज्जचंदणा	अन्यदा कदाचित् यत्रैव आर्यचन्दना

[हिन्दी शब्दार्थ]

ग्यारह अंगो का अध्ययन करके पूरे आठ वर्ष तक श्रमरण पर्याय का पालन करके एक मास की संलेखना से आत्मा को भूषित करके साठ भक्त का अनशन पूर्णकर जिस हेतु से सयम ग्रहरण किया अपरिग्रह भाव से यावत् उसको अन्तिम श्वासोच्छ्‌वास से पूर्णकर सिद्ध-बुद्ध मुक्त हो गई ।७।

[हिन्दी अर्थ]

काली आर्या ने आर्य चन्दनबाला आर्या के पास सामायिक आदि ग्यारह अगो का अध्ययन किया और पूरे आठ वर्ष तक चारित्र धर्म का पालन करके एक मास की सलेखना से आत्मा को भूषित कर साठ भक्त का अन-शन पूर्ण कर जिस हेतु से सयम ग्रहण किया था अपरिग्रह भाव से यावत् उसको अन्तिम श्वासोच्छ्‌वास तक पूर्ण कर वह काली आर्या सिद्ध-बुद्ध और मुक्त हो गई ।७।

इति प्रथम अध्ययन

द्वितीय अध्ययन

दूसरे अध्ययन का उत्क्षेपक है । इस प्रकार हे ! उस काल उस समय मे चम्पा नाम की नगरी, पूर्णभद्र नामक उद्यान और कौणिक राजा थे । उस नगरी मे श्रेणिक राजा की भार्या और कौणिक राजा की छोटी माता सुकाली नाम की रानी थी । काली की तरह सुकाली भी प्रव्रजित हुई तथा बहुत सारे उपवास आदि तप से आत्मा को भावित करती हुई विचरने लगी । तब वह सुकाली आर्या अन्य किसी दिन जहाँ आर्यचन्दना

दूसरे अध्ययन का उत्क्षेपक ।

श्री जम्बू स्वामी–"हे पूज्य ! आठवे वर्ग के दूसरे अध्ययन मे प्रभु महावीर ने क्या भाव कहे है ? कृपाकर बताइये ।"

श्री सुधर्मा स्वामी-"हे जम्बू! इस प्रकार उस काल उस समय मे चपा नाम की एक नगरी थी वहा पूर्णभद्र उद्यान था और कौणिक नाम का राजा वहा राज्य करता था । उस नगरी मे श्रेणिक राजा की रानी और कौणिक राजा की छोटी माता सुकाली नाम की देवी थी ।

काली की तरह सुकाली भी प्रव्रजित हुई और बहुत से उपवास आदि तप से आत्मा को भावित करती हुई विचरने लगी ।

फिर वह सुकाली आर्या अन्यदा किसी दिन आर्य चन्दना के पास आकर इस प्रकार

[हिन्दी शब्दार्थ]

आर्या थी वहाँ आई
और कहने लगी—"हे आर्ये !
मै चाहती हूँ कि आपकी आज्ञा
प्राप्तकर कनकावली तप को
अंगीकर करके विचरण करूं ।"
जैसे आर्या ने रत्नावली तप किया
वैसे ही कनकावली तप भी किया ।
विशेषता यह कि तीनो स्थानो पर
तेले का व्रत किया । जैसे रत्नावली
तप मे जहाँ बेले किये जाते है ।
एक परिपाटी मे एक वर्ष पाँच
महीने बारह अहोरात्र लगते है ।
चारो, परिपाटियो मे, पाँच वर्ष
नव मास ारह दिन लगते है ।
शेष वैसे ही । नौ वर्ष पर्याय, यावत्
सिद्ध हो गई ।

[हिन्दी अर्थ]

बोली– 'हे आर्ये ! आपकी आज्ञा होने पर मै कनकावली तप को अगीकार करके विचरना चाहती हूँ ।'

सती चदना की आज्ञा पाकर रत्नावली के समान सुकाली ने कनकावली तप का आरावन किया । विशेषता इसमे यह थी कि तीनो स्थानो पर अष्टम=तेले किये जबकि रत्नावली मे षष्ठ=बेले किये जाते है । एक परिपाटी मे एक वर्ष पाच महीने और बारह अहोरात्रिया लगती है । इस एक परिपाटी मे ८८ दिन का पारणा और १ वर्ष २ मास १४ दिन का तप होता है । चारो परिपाटी का काल-पाच वर्ष, नव महीने और अठारह दिन होते है । शेष वर्णन काली आर्या के समान है । नव वर्ष तक चारित्र का पालन कर यावत् वह भी सिद्ध, बुद्ध और मुक्त हो गई ।

इति द्वितीय अध्ययन

तृतीय अध्ययन

इसी तरह महाकाली भी
विशेष यह-लघुसिहनिष्क्रीडित
तप को अंगीकार करके
विचरने लगी । जैसे कि
उपवास किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
वेला किया, करके

श्री जम्बू स्वामी– "भगवन् ! आठवे वर्ग के तीसरे अध्ययन का प्रभु महावीर ने क्या भाव बताया है ?"

आर्य सुधर्मा– "तीसरे अध्ययन मे महाकाली का वर्णन है । उसने भी काली के समान दीक्षा ली, इसमे विशेषता इतनी है कि महाकाली ने लघुसिह निष्क्रीडित तप की आराधना की, जो इस प्रकार है—

[मूल सूत्र पाठ]

सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउत्थं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
अट्ठमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
छट्ठं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
दसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
ठमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ पारित्ता
दुवालसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
दसम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
चउद्दसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
बारसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
सोलसम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
चउद्दसम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
अट्ठारसम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
सोलसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता

[सस्कृत छाया]

कामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चतुर्थ करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
अष्टमं करोति, कृत्वा
कामगुणितं पारयति, पारयित्वा
षष्ठं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
दशमं करोति, कृत्वा
कामगुणितं पारयति, पारयित्वा
अष्टमं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
द्वादशं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
दशम करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चतुर्दशं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
द्वादशम् करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
षोडशं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
चतुर्दश करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
अष्टादश करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
षोडशं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा

[हिन्दी शब्दार्थ]	[हिन्दी अर्थ]
'कामगुणयुक्त पारणा किया, करके उपवास किया, करके सर्वकामगुणित पारणा किया, करके	उपवास किया और सर्वकामगुण पारणा किया।
तेला किया, करके सर्वकामगुणित पारणा किया, करके	बेला किया और सर्वकामगुण पारणा किया।
बेला किया, करके सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके	उपवास किया और सर्वकामगुण पारणा किया।
चौला किया, करके सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके	तेला किया और सर्वकामगुण पारणा किया।
तेला किया, करके सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके	बेला किया और सर्वकामगुण पारणा किया।
पंचौला किया, करके सर्वकामगुणित पारणा किया, करके	चौला किया और सर्वकामगुण पारणा किया।
चार उपवास किये, करके सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके	तेला किया और सर्वकामगुण पारणा किया।
छ उपवास किये, करके सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके	पाँच का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया।
पाच उपवास किये, करके सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके	चौला किया और सर्वकामगुण पारणा किया।
सात उपवास किये, करके सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके	छ किये और सर्वकामगुण पारणा किया।
छ' उपवास किये, करके सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके	पाँच किये और सर्वकामगुण पारणा किया।
आठ उपवास किये, करके सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके	सात किये और सर्वकामगुण पारणा किया।
सात उपवास किये, करके सर्वकामगुणित पारणा किया, करके	छह किये और सर्वकामगुण पारणा किया।
	आठ का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया।

[मूल सूत्र पाठ]

बीसइमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
अट्ठारसम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
बीसइमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
सोलसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
अट्ठारसम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
चउद्दसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
सोलसम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
बारसम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउद्दसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
दसम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
बारसम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
अट्ठम करेइ करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
दसम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
छट्ठ करेइ, करित्ता

[सस्कृत छाया]

विशतितमं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
अष्टादशं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
विशतितमं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
षोडशं करोति, कृत्वा
'कामगुणितं पारयति, पारयित्वा
अष्टादश करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
चतुर्दशं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
षोडश करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
द्वादशम् करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
चतुर्दशम् करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
दशमं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
द्वादश करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
अष्टमं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
दशम करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
षष्ठ करोति, कृत्वा

[हिन्दी शब्दार्थ]

नौ का तप कि , करके
र्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
उपवास किये, करके
र्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
नौ उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
सात उपवास किये, करके
र्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
आठ उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
छः उपवास किये, करके
र्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
सात उपवास किये, करके
र्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
पाच उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
छ. उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
चार उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
पाच किये, करके
सर्वकामगुण पारणा किया, करके
तेला किया, करके
सर्वकामगुण पारणा किया, करके
चार किये, करके
सर्वकामगुण पारणा किया, करके
वेला किया, करके

[हिन्दी अर्थ]

सात किये और सर्वकामगुण पारणा किया।

नव किया और सर्वकामगुण पारणा किया।

आठ किया और सर्वकामगुण पारणा किया।

नव किया और सर्वकामगुण पारणा किया

सात किया और सर्वकामगुण पारणा किया

आठ किया और सर्वकामगुण पारणा किया

छह किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

सात किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

पाँच किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

छह किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

चौला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

पॉच किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

तेला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

चौला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

(मूल सूत्र पाठ)	(संस्कृत छाया)
सव्वकामगुणियं पारेइ पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
अट्ठमं करेइ, करित्ता	अष्टमं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चउत्थं, करेइ करित्ता	चतुर्थं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ पारित्ता	सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
छट्ठ करेइ करित्ता	षष्ठं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चउत्थं करेइ करित्ता	चतुर्थं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ पारित्ता[३७]	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
तहेव चत्तारि परिवाडीओ,	तथैव चतस्र॰ परिपाट्यः,
एक्काए परिवाडीए	एकस्या परिपाट्याम् (कालः)
छम्मासा सत्त य दिवसा ।	षण्मासा॰ सप्त च दिवसाः ।
चउण्हं दो वरिसा, अट्ठावीसा	चतसृणां (परिपाटीनां कालः)
य दिवसा ।	द्वे वर्षे अष्टाविंशतिः च दिवसाः
जाव सिद्धा ।३।	(भवन्ति) यावत् सिद्धा ।३।

इति तृतीयमध्ययनम्

अथ चतुर्थमध्ययनम्

एव कण्हा वि ।	एव कृष्णापि ।
णवरं महासीहणिक्कीलिय तवोकम्मं	विशेषः (एषा) महासिंहनिष्क्रीडित तपः
जहेव खुड्डागं ।	कर्म (करोति) यथा क्षुल्लकः ।
णवर चोत्तीसइम जाव णेयव्वं,	विशेष॰ चतुस्त्रिंशद् यावन्नेतव्यम्,
तहेव ऊसारेयव्वं,	तथैव उत्सारयितव्यम् ।
एक्काए परिवाडीए एगं	एकस्या परिपाट्या एकम्
वरिसं, छम्मासा अट्ठारस य दिवसा ।	वर्ष षण्मासा॰ अष्टादश च दिवसा॰ ।

[हिन्दी शब्दार्थ]

सर्वकामगुण पारणा किया, करके
तेला ि ा, करके
ʻकामगुण पारणा किया, करके
उपवास किया, करके
सर्वकामगुण पारणा किया, करके
बेला किया, करके
सर्वकामगुण पारणा किया, करके
उपवास किया, करके
सर्वकामगुण पारणा किया, करके
इसी प्रकार चारो परिपाटियां है ।
एक परिपाटी मे छः
महीने और सात दिन का समय लगा ।
चारो परिपाटी का काल दो
वर्ष और अट्ठावीस दिन
होते है । यावत् सिद्ध हुई ।३।

[हिन्दी अर्थ]

बेला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

तेला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

उपवास किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

बेला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

उपवास किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

इसी प्रकार चारो परिपाटिया समझनी चाहिये । एक परिपाटी मे छह महीने और सात दिन लगे । चारो परिपाटियो का काल दो वर्ष और अट्ठावीस दिन होते है । इस प्रकार तप करती हुई अन्त मे आर्या महाकाली भी सलेखना करके सिद्ध बुद्ध और मुक्त हो गई ।

तीसरा अध्ययन समाप्त

चौथा अध्ययन

इसी प्रकार कृष्णा रानी भी
विशेष—महासिह निष्क्रीडित व्रत
किया लघुसिह निष्क्रीडित के समान
विशेष–१६ तक तप किया जाता है
और उसी प्रकार उतारा जाता है ।
एक परिपाटी मे एक वर्ष छः महीने
और अट्ठारह दिन लगे ।

इसी प्रकार कृष्णा रानी का भी चौथा अध्ययन समझना चाहिये ।

महाकाली से इसमे विशेषता यह है कि इन्होने महासिहनिष्क्रीडित तप किया । लघुसिह निष्क्रीडित तप से इसमे इतनी विशेषता

[मूल सूत्र पाठ]	[सस्कृत छाया]
चउण्हं छ वरिसा, दो मासा	चतसृणा परिपाटीना (कालः)
बारस य अहोरत्ता,	वर्षाणि द्वौ मासौ-द्वादश च अहोरात्राः
सेसा जहा कालीए,	शेषं यथा काल्याः
जाव सिद्धा ।४।	यावत् सिद्धा ।४।

इति चतुर्थाध्ययनम्

अथ पंचमाध्ययनम्

एवं सुकण्हा वि,	एवं सुकृष्णापि,
णवर सत्तसत्तमियं भिक्खु-	विशेषः—सप्तसप्तमिकां भिक्षु
पडिमं उवसपज्जित्ताणं विहरइ।	प्रतिमाम् उपसं विहरति ।
पढमे सत्तए एक्केक्कं भोयणस्स	प्रथमे सप्तके एकैका भोजनस्य
दत्ती पडिगाहेइ,	दत्ति प्रतिगृह्णाति,
एक्केक्कं पाणगस्स ।	तथा एकैकां पानीयस्य ।
दोच्चे सत्तए दो दो भोयणस्स	द्वितीये सप्तके द्वे द्वे भोजनस्य
दो दो पाणगस्स ।	द्वे द्वे पानीयस्य ।
तच्चे सत्तए तिण्णि भोयणस्स	तृतीये सप्तके तिस्रः भोजनस्य
तिण्णि पाणगस्स ।	तिस्र. च पानकस्य ।
चउत्थे चउ, पचमे पच,	चतुर्थ चतस्रः, पंचमे पच,
छट्ठे छ, सत्तमे सत्तए	षट्, सप्तमे सप्तके
सत्तदत्तीओ भोयणस्स पडिग्गाहेइ,	सप्तदत्ती. भोजनस्य प्रतिगृह्णाति,
सत्तपाणगस्स ।	सप्त पानकस्य ।
एव खलु सत्तसत्तमिय	एव खलु सप्तसप्तमिकां
भिक्खुपडिमं एगूणपण्णाए	भिक्षुप्रतिमा एकोनपचाशत्
राइंदिएहिं, एगेण य	रात्रिन्दिवै, एकेन च
छण्णउएण भिक्खासएण	षण्णवत्या भिक्षाशतेन
अहासुत्त जाव आराहित्ता जेणेव	यथासूत्रं यावद् आराध्य यत्रैव
अज्जचंदणा अज्जा तेणेव उवागया ।	आर्यचंदना आर्या तत्रैव उपागता ।
अज्जचदण वंदइ,	आर्यचंदनां आर्या वन्दते

[हिन्दी शब्दार्थ]

चारो परिपाटियो मे ६ ˚ दो महीने और बारह अहोरात्र लगते हैं । शेष काली की तरह । अन्त मे सलेखना करके यह भी सिद्ध हो गई ।४।

[हिन्दी अर्थ]

है कि इसमे एक से लेकर १६ तक तप किया जाता है और उसी प्रकार उतारा जाता है। एक परिपाटी मे एक वर्ष छह महीने और अठारह दिन लगते है । चारो परिपाटियो मे छह वर्ष दो महीने और बारह अहोरात्र लगते हैं ।

इति चतुर्थाध्ययनम्

अथ पंचमाध्ययनम्

इस प्रकार सुकृष्णा भी
विशेष—सप्त सप्तमिका
भिक्षु प्रति ा ग्रहण करके विचरने लगी।
प्रथम सप्तक मे एक एक दत्ती भोजन की और एक एक दत्ती पानी की ग्रहण की ।
द्वितीय सप्तक मे दो दो भोजन की और दो दो पानी की ।
तीसरे सप्तक मे तीन तीन दत्ती भोजन की और तीन तीन पानी की ।
चौथे सप्तक मे चार, पाचवे मे पाँच, छठे मे छ और सातवे सप्तक मे सात दाती भोजन की और सात ही पानी की ग्रहण की । इस प्रकार सप्त सप्तमिका भिक्षु प्रतिमा उनपचास दिनो मे एक सौ छियानवे भिक्षा दातियो से सूत्रानुसार आराधना करके जहाँ पर आर्यचन्दना आर्या थी वहाँ पर आई ।
आर्यचन्दना आर्या को वन्दना

शेष वर्णन काली आर्या की तरह है। अन्त मे सलेखना करके यह कृष्णा आर्या भी सिद्ध बुद्ध और मुक्त हो गई ।

इसी प्रकार पाचवे अध्ययन मे सुकृष्णा देवी का भी वर्णन समझना चाहिये ।

यह भी श्रेणिक राजा की रानी और कौणिक राजा की छोटी माता थी । भगवान् का उपदेश सुनकर श्रमण दीक्षा अगीकार की । इसमे विशेषता यह है कि आर्य चन्दन-बाला आर्या की आज्ञा प्राप्त कर आर्या सुकृष्णा 'सप्त सप्तमिका' भिक्षु प्रतिमा रूप तप अगीकार करके विचरने लगी, जिसकी विधि इस प्रकार है—प्रथम सप्ताह मे एक एक दत्ति (दाती) भोजन की और एक ही दत्ति पानी की ग्रहण की जाती है । दूसरे सप्ताह मे दो-दो दत्ति भोजन की और दो पानी की, तीसरे सप्ताह मे तीन दत्ति भोजन की और तीन पानी की, चौथे सप्ताह मे चार चार, पाचवे सप्ताह (सप्तक) मे पाच पाच छठे मे छह छह, और सातवे सप्ताह मे सात दत्ति भोजन की ली जाती है और सात ही पानी की ग्रहण की जाती है ।

[मूल सूत्र पाठ]

चउण्हं छ वरिसा, दो मासा
बारस य अहोरत्ता,
सेसा जहा कालीए,
जाव सिद्धा ।४।

[संस्कृत छाया]

चतसृणां परिपाटीनां (कालः) षड्
वर्षाणि द्वौ मासौ-द्वा च अहोरात्राः
शेषं यथा काल्याः
यावत् सिद्धा ।४।

इति चतुर्थाध्ययनम्

अथ ध्ययनम्

एवं सुकण्हा वि,
णवरं सत्तमियं ि
पडिमं पज्जित्ताणं विहरइ।
पढमे सत्तए एक्केक्कं भोयणस्स
दत्तीं पडिगाहेइ,
एक्केक्कं पाणगस्स ।
दोच्चे सत्तए दो दो भोयणस्स
दो दो पाणगस्स ।
तच्चे सत्तए तिण्णि भोयणस्स
तिण्णि पाणगस्स ।
चउत्थे चउ, पचमे पच,
छट्ठे छ, सत्तमे ए
सत्तदत्तीओ भोयणस्स पडिग्गाहेइ,
सत्तपाणगस्स ।
एव खलु सत्तसत्तमिय
भिक्खुपडिमं एगूणपण्णाए
राइदिएहि, एगेण य
छण्णउएण भिक्खासएण
अहासुत्तं जाव आराहित्ता जेणेव
अज्जचदणा अज्जा तेणेव उवागया ।
अज्जचंदणं वंदइ,

एवं सुकृष्णापि,
विशेष.—सप्तसप्तमिकां भिक्षु
प्रति उपसं विहरति ।
प्रथमे सप्तके एकैकां भो य
दत्ति प्रतिगृह्णाति,
तथा एकैका पानीयस्य ।
द्वितीये सप्तके द्वे द्वे भोजनस्य
द्वे द्वे पानीयस्य ।
तृतीये सप्तके तिस्रः भो
तिस्र' च पानकस्य ।
चतुर्थ चतस्रः, पंचमे पच,
षष्ठे षट्, सप्तमे सप्तके
सप्तदत्तीः भोजनस्य प्रतिगृह्णाति,
सप्त पानकस्य ।
एव खलु सप्तसप्तमिका
भिक्षुप्रतिमा एकोनपचाशत्
रात्रिन्दिवै, एकेन च
षण्णवत्या भिक्षाशतेन
यथासूत्र यावद् आराध्य यत्रैव
चंदना आर्या ।
चदना आर्या वन्दते

[हिन्दी शब्दार्थ]

चारो परिपाटियो मे ६ दो महीने और बारह अहोरात्र लगते है। शेष काली की तरह। अन्त मे संलेखना करके यह भी सिद्ध हो गई।४।

[हिन्दी अर्थ]

है कि इसमे एक से लेकर १६ तक तप किया जाता है और उसी प्रकार उतारा जाता है। एक परिपाटी मे एक वर्ष छह महीने और अठारह दिन लगते है। चारो परिपाटियो मे छह वर्ष दो महीने और बारह अहोरात्र लगते है।

इति चतुर्थाध्ययनम्

अथ पंचमाध्ययनम्

इस प्रकार सुकृष्णा भी
विशेष—सप्त सप्तमिका
भिक्षु प्रतिमा ग्रहण करके विचरने लगी।
प्रथम सप्तक मे एक एक दत्ती भोजन की और एक एक दत्ती पानी की ग्रहण की।
द्वितीय सप्तक मे दो दो भोजन की और दो दो पानी की।
तीसरे सप्तक मे तीन तीन दत्ती भोजन की और तीन तीन पानी की।
चौथे सप्तक मे चार, पाचवे मे पॉच, छठे मे छ और सातवे सप्तक मे सात दाती भोजन की और सात ही पानी की ग्रहण की। इस प्रकार सप्त सप्तमिका भिक्षु प्रतिमा उनपचास दिनो मे एक सौ छियानवे भिक्षा दातियो से सूत्रानुसार आराधना करके जहॉ पर आर्यचन्दना आर्या थी वहॉ पर आई।
आर्यचन्दना आर्या को वन्दना

शेष वर्णन काली आर्या की तरह है। अन्त मे सलेखना करके यह कृष्णा आर्या भी सिद्ध बुद्ध और मुक्त हो गई।

इसी प्रकार पाचवे अध्ययन मे सुकृष्णा देवी का भी वर्णन समझना चाहिये।

यह भी श्रेणिक राजा की रानी और कौणिक राजा की छोटी माता थी। भगवान् का उपदेश सुनकर श्रमण दीक्षा अगीकार की। इसमे विशेषता यह है कि आर्य चन्दन-बाला आर्या की आज्ञा प्राप्त कर आर्या सुकृष्णा 'सप्त सप्तमिका' भिक्षु प्रतिमा रूप तप अगीकार करके विचरने लगी, जिसकी विधि इस प्रकार है—प्रथम सप्ताह मे एक एक दत्ति (दाती) भोजन की और एक ही दत्ति पानी की ग्रहण की जाती है। दूसरे सप्ताह मे दो-दो दत्ति भोजन की और दो पानी की, तीसरे सप्ताह मे तीन दत्ति भोजन की और तीन पानी की, चौथे सप्ताह मे चार चार, पाचवे सप्ताह (सप्तक) मे पाच पाच छठे मे छह छह, और सातवे सप्ताह मे सात दत्ति भोजन की ली जाती है और सात ही पानी की ग्रहण की जाती है।

[मूल सूत्र पाठ]

णमसइ, वंदित्ता णमसित्ता
एवं वयासी—
"इच्छामि णं अज्जाओ !
तुब्भेहि अब्भणुण्णाया समाणी
अट्ठट्ठमिय भिक्खुपडिमं
उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए ।"
"अहासुहं देवाणुप्पिए !
मा पडिबधं करेह ।"
तएणं सा सुकण्हा अज्जा
अज्जचदणाए अज्जाए अब्भ-
णुण्णाया समाणी अट्ठट्ठमियं
भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं
विहरइ ।
पढमे अट्ठए एक्केक्क भोयणस्स
दत्ति पडिगाहेइ, एक्केक
पाणगस्स दत्ति जाव अट्ठमे
अट्ठए अट्ठट्ठ भोयणस्स दत्ति
पडिगाहेइ, अट्ठ पाणगस्स ।
एव खलु अट्ठट्ठमियं भिक्खु-
पडिम चउसट्ठीए राइदिएहि
दोहि य अट्ठासीएहिं भिक्खा-
सएहिं अहासुत्तं जाव आराहित्ता,
णवणवमिय भिक्खु-
पडिम उवसपज्जित्ताण
विहरइ ।
पढमे णवए एक्केक्कं भोयणस्स
दत्ति पडिगाहेइ एक्केक्कं

[सस्कृत छाया]

नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा
एवं वादीत्—
"इच्छामि खलु हे आर्याः !
युष्माभिः अभ्यनुज्ञाता सती
अष्ट अष्टमिका भिक्षुप्रतिमाम्
उपसंपद्य विहर्तुम् ।"
"यथासुख देवानुप्रिये !
मा प्रतिबन्धं कुरु ।"
ततः खलु सा सुकृष्णा आर्या
आर्यचन्दनया आर्यया अभ्य-
नुज्ञाता सती अष्ट अष्टमिका
भिक्षु प्रतिमाम् उपसंपद्य खलु
विहरति ।
प्रथमे अष्टके एकैका भोजनस्य
दत्ति प्रतिगृह्णाति, एकैका
पानकस्य दत्ति यावत् अष्टमे
अष्टके अष्टाष्ट भोजनस्य दत्तीः
प्रतिगृह्णाति, अष्ट पानकस्य ।
एवं खलु अष्ट अष्टमिकां भिक्षु-
प्रतिमा चतुष्षष्ठ्या रात्रिन्दिवैः
द्वाभ्या च अष्टाशीत्या भिक्षा
शतै यथासूत्र यावत् आराध्य
नवनव मिकां भिक्षु
प्रतिमाम् उपसपद्य
विहरति ।
प्रथमे नवके एकैकां भोजनस्य
दत्ति प्रतिगृह्णाति एकैकां

[हिन्दी शब्दार्थ]

नमस्कार की, वन्दन नमस्कार करके इस प्रकार बोली—
"हे आर्ये ! आपकी आज्ञा प्राप्त होने पर मै 'अष्ट अष्टमिका' भिक्षु प्रतिमा अंगीकार करके विचरना चाहती हू।"
"हे देवानुप्रिये ! जैसे सुख हो वैसे ही करो। धर्म कार्य मे प्रतिबन्ध मत करो।" ।१।
तदनन्तर वह सुकृष्णा आर्या आर्य-चन्दना आर्या की आज्ञा प्राप्तकर अष्ट मिका भिक्षु प्रतिमा अंगीकार करके विचरने लगी।
प्रथम क मे एक एक भोजन की दत्ति ग्रहण की और एक एक दत्ति जल की यावत् आठवे क मे आठ दत्ति भोजन की और आठ दत्ति जल की ग्रहण की।
इस प्रकार अष्ट अष्टमिका भिक्षु प्रतिमा चौसठ रात दिनो मे दो सौ अट्ठासी भिक्षा दत्तियो से सूत्रानुसार यावत् आराधना करके आर्या सुकृष्णा नव-नवमिका भिक्षु प्रतिमा को अगीकर करके विचरने लगी।
प्रथम नवक मे एक एक भोजन की दत्ति और एक एक पानी की दत्ति

[हिन्दी अर्थ]

इस प्रकार उनपचास (४९) रात-दिन मे एक सौ छियानवे (१९६) भिक्षा की दत्तिया होती है।

सुकृष्णा आर्या ने सूत्रोक्त विधि के अनुसार इसी 'सप्त सप्तमिका' भिक्षु प्रतिमा तप की सम्यग् आराधना की। इसमे आहार-पानी की सम्मिलित रूप से प्रथम सप्ताह मे सात दत्तिया हुई, दूसरे सप्ताह मे चौदह, तीसरे सप्ताह मे इक्कीस, चौथे मे अट्ठाईस, पाचवे मे पैतीस, छठे मे बयालीस, और सातवे सप्ताह मे उनपचास दत्तिया हुई। इस प्रकार सभी मिलाकर कुल एक सौ छियानवे (१९६) दत्तिया हुई।

इस तरह सूत्रानुसार इस प्रतिमा का आराधन करके सुकृष्णा सती आर्या चन्दन-बाला के पास आई और उन्हे वन्दना नम-स्कार करके इस प्रकार बोली—

"हे आर्ये ! आपकी आज्ञा हो तो म 'अष्ट-अष्टमिका' भिक्षु प्रतिमा का तप अगीकार करके विचरू।

आर्य चन्दना —"हे देवानुप्रिये ! जैसा तुम्हे सुख हो वैसा करो। धर्म कार्य मे प्रमाद मत करो।"

फिर वह सुकृष्णा आर्या आर्य चदना आर्या की आज्ञा प्राप्त होने पर 'अष्ट-अष्टमिका' भिक्षु प्रतिमा अगीकार करके विचरने लगी।

इस तप मे प्रथम अष्टक मे एक-एक दत्ति भोजन की और एक-एक दत्ति पानी की ग्रहण की जाती है यावत् इसी क्रम से दूसरे अष्टक मे प्रति दिन दो दत्तिया आहार की और दो ही दत्तिया पानी की ली जाती है,

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
णमंसइ, वदित्ता णमसित्ता	नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा
एवं वयासी—	एवमवादीत्—
"इच्छामि णं अज्जाओ !	"इच्छामि खलु हे आर्याः !
तुब्भेहि अब्भणुण्णाया समाणी	युष्माभिः अभ्यनुज्ञाता सती
अट्ठट्ठमियं भिक्खुपडिमं	अष्ट अष्टमिकां भिक्षुप्रतिमाम्
उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए ।"	उपसंपद्य विहर्तुम् ।"
"अहासुहं देवाणुप्पिए !	"यथासुखं देवानुप्रिये !
मा पडिबधं करेह ।"	मा प्रतिबन्ध कुरु ।"
तएण सा सुकण्हा अज्जा	ततः खलु सा सुकृष्णा आर्या
अज्जचंदणाए अज्जाए अब्भ-	आर्यचन्दनया आर्यया अभ्य-
णुण्णाया समाणी अट्ठट्ठमियं	नुज्ञाता सती अष्ट अष्टमिकां
भिक्खुपडिमं उवसपज्जित्ताणं	भिक्षु प्रतिमाम् उपसंपद्य खलु
विहरइ ।	विहरति ।
पढमे अट्ठए एक्केक्क भोयणस्स	प्रथमे अष्टके एकैका भोजनस्य
दत्ति पडिगाहेइ, एक्केक	दत्ति प्रतिगृह्णाति, एकैकां
पाणगस्स दत्ति जाव अट्ठमे	पानकस्य दत्ति यावत् अष्टमे
अट्ठए अट्ठट्ठ भोयणस्स दत्ति	अष्टके अष्टाष्ट भोजनस्य दत्तीः
पडिगाहेइ, अट्ठ पाणगस्स ।	प्रतिगृह्णाति, अष्ट पानकस्य ।
एव खलु अट्ठट्ठमिय भिक्खु-	एव खलु अष्टाष्टमिकां भिक्षु-
पडिम चउसट्ठीए राइदिएहि	प्रतिमा चतुष्षष्ठ्या रात्रिन्दिवैः
दोहि य अट्ठासीएहि भिक्खा-	द्वाभ्यां च अष्टाशीत्या भिक्षा
सएहि अहासुत्त जाव आराहित्ता,	शतै. यथासूत्र यावत् आराध्य
णवणवमिय भिक्खु-	नवनव मिका भिक्षु
पडिम उवसंपज्जित्ताण	प्रतिमाम् उपसपद्य
विहरइ ।	विहरति ।
पढमे णवए एक्केक्क भोयणस्स	प्रथमे नवके एकैकां भोजनस्य
दत्ति पडिगाहेइ एक्केक्क	दत्ति प्रतिगृह्णाति एकैका

[हिन्दी शब्दार्थ]

नमस्कार की, वन्दन नमस्कार करके इस प्रकार बोली—

"हे आर्ये ! आपकी आज्ञा प्राप्त होने पर मै 'अष्ट अष्टमिका' भिक्षु प्रतिमा अगीकार करके विचरना चाहती हूं।"

"हे देवानुप्रिये ! जैसे सुख हो वैसे ही करो। धर्म कार्य मे प्रतिबन्ध मत करो।" ।१।

तदनन्तर वह सुकृष्णा आर्या आर्य-चन्दना आर्या की आज्ञा प्राप्तकर अष्टमिका भिक्षु प्रतिमा अंगीकार करके विचरने लगी।

प्रथम क मे एक एक भोजन की दत्ति ग्रहण की और एक एक दत्ति जल की यावत् आठवे अष्टक मे आठ दत्ति भोजन की और आठ दत्ति जल की ग्रहण की।

इस प्रकार अष्ट अष्टमिका भिक्षु प्रतिमा चौसठ रात दिनो मे दो सौ अट्ठासी भिक्षा दत्तियो से सूत्रानुसार यावत् आराधना करके आर्या सुकृष्णा नव-नवमिका भिक्षु प्रतिमा को अगीकार करके विचरने लगी।

प्रथम नवक मे एक एक भोजन की दत्ति और एक एक पानी की दत्ति

[हिन्दी अर्थ]

इस प्रकार उनपचास (४९) रात-दिन मे एक सौ छियानवे (१९६) भिक्षा की दत्तिया होती है।

सुकृष्णा आर्या ने सूत्रोक्त विधि के अनुसार इसी 'सप्त सप्तमिका' भिक्षु प्रतिमा तप की सम्यग् आराधना की। इसमे आहार-पानी की सम्मिलित रूप से प्रथम सप्ताह मे सात दत्तिया हुई, दूसरे सप्ताह मे चौदह, तीसरे सप्ताह मे इक्कीस, चौथे मे अट्ठाईस, पाचवे मे पैंतीस, छठे मे बयालीस, और सातवे सप्ताह मे उनपचास दत्तिया हुई। इस प्रकार सभी मिलाकर कुल एक सौ छियानवे (१९६) दत्तिया हुई।

इस तरह सूत्रानुसार इस प्रतिमा का आराधन करके सुकृष्णा सती आर्या चन्दन-बाला के पास आई और उन्हे वन्दना नमस्कार करके इस प्रकार बोली—

"हे आर्ये ! आपकी आज्ञा हो तो म 'अष्ट-अष्टमिका' भिक्षु प्रतिमा का तप अगीकार करके विचरू।

आर्य चन्दना —"हे देवानुप्रिये ! जैसा तुम्हे सुख हो वैसा करो। धर्म कार्य मे प्रमाद मत करो।"

फिर वह सुकृष्णा आर्या आर्य चदना आर्या की आज्ञा प्राप्त होने पर 'अष्ट-अष्टमिका' भिक्षु प्रतिमा अगीकार करके विचरने लगी।

इस तप मे प्रथम अष्टक मे एक-एक दत्ति भोजन की और एक-एक दत्ति पानी की ग्रहण की जाती है यावत् इसी क्रम से दूसरे अष्टक मे प्रति दिन दो दत्तिया आहार की और दो ही दत्तिया पानी की ली जाती है,

[मूल सूत्र पाठ]

पाणगस्स, जाव णवमे णवए
णवणव दत्ती भोयणस्स
पडिगाहेइ णव पाणगस्स ।
एव खलु णवणवमियं भिक्खु-
पडिम एकासीइ राइदिएहि
चउहि पंचोत्तरेहि, भिक्खासएहि
अहासुत्त जाव आराहित्ता ।
दसदसमिय भिक्खुपडिम उव-
संपज्जित्ताण विहरइ ।
पढमे दसए एक्केक्कं भोयणस्स
दत्ति पडिगाहेइ एक्केक्कं पाण-
गस्स जाव दसमे दसए दस-
दस भोयणस्स, दसदस पाणगस्स ।
एव खलु एयं दसदसमियं
भिक्खुपडिमं एक्केणं राइदिय-
सएणं अद्धछट्ठेहि भिक्खा-
सएहि अहासुत्तं जाव आराहेइ ।
आराहित्ता बहूहि चउत्थ जाव
मासद्धमासविविह तवोकम्मेहिं
अप्पाणं भावेमाणी विहरइ ।
तए णं सा सुकण्हा ।
तेणं ओरालेणं जाव सिद्धा ।५।

[संस्कृत छाया]

पानकस्य यावत् नवमे नवके
नवनव दत्तीः भोजनस्य प्रति-
गृह्णाति नव च पानकस्य ।
एवं खलु नवनवमिकां भिक्षु-
प्रतिमा एकाशीत्या रात्रिन्दिवैः
चतुर्भिः पचोत्तरैः भिक्षा ैः
यथासूत्रं यावदाराध्य
दशदशमिका भिक्षुप्रतिमाम्
उपसंपद्य विहरति ।
प्रथमे दशके एकैका भोजनस्य
दत्ति प्रतिगृह्णाति एकैकां पान-
कस्य यावत् दशमे दशके
भोजनस्य दश दश च पानकस्य ।
एवं खलु एतां दशदशमिका
भिक्षुप्रतिमा एकेन रात्रिन्दिव-
शतेन अर्द्धषष्ठै. भि तैः
यथासूत्रं यावत् आराधयति ।
आराध्य बहुभिः चतुर्थ यावत्
मासार्द्धमासविविधतपः कर्मभिः
आत्मान भावयन्ती विहरति ।
तत. खलु सा सुकृष्णा आर्या
तेन उदारेण (तपसा) यावत् सिद्धा ।५।

इति पंचमाध्ययनम्

षष्ठमध्ययनम्

एवं महाकण्हा वि । णवरं
खुड्डागं सव्वओभद्दं पडिमं

एव महाकृष्णापि । विशेषस्तु
क्षुल्लका सर्वतोभद्र-प्रतिमा

[हिन्दी शब्दार्थ]

ग्रहण करती यावत् नवमे नवक मे प्रतिदिन नव दत्ती भोजन की और नव दत्ती पानी की ग्रहण करती। इस प्रकार नवनवमिकाभिक्षुप्रतिमा इक्यासी दिनो मे चार सौ पॉच भिक्षादत्तियो से सूत्रानुसार यावत् आराधना करके फिर दशदशमिका भिक्षुप्रतिमा अगीकार करके विचरने लगी। प्रथम दशक मे एक एक भोजन की दत्ति ग्रहण करती और एक एक पानी की। यावत् दसवे दशक मे दस दस दत्ती भोजन की और दस दस पानी की ग्रहण की।

इस प्रकार यह दशदशमिका भिक्षु प्रतिमा एक सौ रात-दिनो मे पॉच सौ पचास भिक्षादत्तियों से सूत्रानुसार यावत् आराधना करके बहुत से उपवास यावत् मास अर्द्ध मास आदि विविध तप. कर्म से आत्मा को भावि करती हुई विचरने लगी।

फिर वह सुकृष्णा आर्या उस उदार श्रेष्ठ तप से यावत् शुद्ध बुद्ध मुक्त हो गई।

[हिन्दी अर्थ]

इस तप मे प्रथम नवक मे प्रतिदिन वे एक एक दत्ति भोजन की और एक एक पानी की ग्रहण करती यावत् क्रम से बढते बढते नवमे नवक मे प्रतिदिन नौ दत्तिया भोजन की और नव ही पानी की दत्तिया ग्रहण करती। इस प्रकार इकासी दिनो मे चारसौ पाच भिक्षा दत्तियो से 'नवनवमिका' भिक्षु प्रतिमा पूरी हुई, जिसकी सूत्रोक्त विधि के अनुसार सम्यग् आराधना करती हुई आर्या सुकृष्णा विचरने लगी।

इसके पश्चात् पूर्व की तरह यावत् अपनी गुरुणीजी की आज्ञा प्राप्तकर सुकृष्णा आर्या ने 'दश दशमिका' भिक्षु प्रतिमा रूप तप स्वीकार किया। इस तप के आराधना काल मे वे प्रथम दशक मे प्रतिदिन एक एक दत्ति भोजन की और एक एक दत्ति पानी की यावत् इसी क्रम से बढाते बढाते दसवे दशक मे प्रतिदिन दस दत्तिया भोजन की और दस ही दत्तिया पानी की ग्रहण करती।

इस प्रकार उन आर्या सुकृष्णा ने इस 'दश दशमिका' भिक्षु प्रतिमा रूप तप को एक सौ रात दिनो मे पाच सौ पचास भिक्षा दत्तियो से पूर्ण किया।

सूत्रानुसार इस 'दश दशमिका' भिक्षु प्रतिमा तप की आराधना करके बहुत से यावत् मास, अर्द्धमास आदि विविध तप-कर्म से आर्या सुकृष्णा अपनी आत्मा को भावित करती हुई विचरने लगी।

इति पंचम अध्ययन

छठा अध्ययन

इसी प्रकार महासेन कृष्णा का भी (अध्ययन समझना चाहिए)। विशेष

इस तरह वह सुकृष्णा आर्या उन उदार श्रेष्ठ तपो की आराधना करते करते शरीर से

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
उवसंपज्जित्ताणं विहरइ । तं जहा-	उपसं　विहरति, तद् यथा-
चउत्थ करेइ, करित्ता	चतुर्थं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
छट्ठं करेइ, करित्ता	षष्ठ करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
अट्ठम करेइ, करित्ता	अष्टमं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
दसमं करेइ, करित्ता	दशमं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
दुवालसमं करेइ, करित्ता	द्वादश करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
अट्ठम करेइ, करित्ता	अष्टमं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
दसम करेइ, करित्ता	दशमं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
दुवालसम करेइ, करित्ता	द्वादश करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चउत्थ करेइ, करित्ता	चतुर्थ करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
छट्ठं करेइ, करित्ता	षष्ठ करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
दुवालसम करेइ, करित्ता	द्वादशं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
चउत्थ करेइ, करित्ता	चतुर्थं करोति, कृत्वा

[हिन्दी शब्दार्थ]

(यह कि वह आर्यचन्दना आर्या की आज्ञा प्राप्त कर) लघुसर्वतोभद्र प्रतिमा अंगीकार करके विचरने लगी, जो इस प्रकार है—

उसने उपवास किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
बेला किया, करके
सर्वकामगुणित पारणा किया, करके
तेला किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
चौला किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
पाँच उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
तेला किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
चौला किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
पाँच उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
उपवास किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
बेला किया, करके
सर्वकामगुणित पारणा किया, करके
पाँच उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
उपवास किया, करके

[हिन्दी अर्थ]

अत्यन्त कृश हो गयी एव अन्त मे सलेखना सथारा करके सम्पूर्ण कर्मो का क्षय कर वे सिद्ध-बुद्ध एव मुक्त हो गयी ।

इसी प्रकार छठा महासेन कृष्णा का अध्ययन भी समझना चाहिये ।

ये राजा श्रेणिक की रानी एव राजा कोणिक की छोटी माता थी । इन्होने भी यावत् भगवान के पास दीक्षा ली ।

विशेष, आर्या चन्दनबाला की आज्ञा प्राप्त कर आर्या महासेन कृष्णा लघु (क्षुद्र-क्षुल्लक) सर्वतोभद्र प्रतिमा का तप अंगीकर करके विचरने लगी । इस तप की विधि इस प्रकार है—

इसमे सर्व प्रथम उपवास किया, करके सर्वकामगुण पारणा किया, करके
बेला किया करके सर्वकामगुण पारणा किया
तेला करके सर्वकामगुण पारणा किया
चौला करके सर्वकामगुण पारणा किया
पचोला करके सर्वकामगुण पारणा किया
तेला करके सर्वकामगुण पारणा किया
चौला करके सर्वकामगुण पारणा किया
पचोला करके सर्वकामगुण पारणा किया
उपवास करके सर्वकामगुण पारणा किया
बेला करके सर्वकामगुण पारणा किया
पचोला करके सर्वकामगुण पारणा किया
उपवास करके सर्वकामगुण पारणा किया

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
उवसंपज्जित्ताणं विहरइ । तं जहा-	उपस विहरति, तद् यथा-
चउत्थ करेइ, करित्ता	चतुर्थं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
छट्ठं करेइ, करित्ता	षष्ठ करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
अट्ठम करेइ, करित्ता	अष्टम करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
दसम करेइ, करित्ता	दशमं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
दुवालसम करेइ, करित्ता	द्वादश करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
अट्ठम करेइ, करित्ता	अष्टमं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
दसम करेइ, करित्ता	दशम करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
दुवालसमं करेइ, करित्ता	द्वादश करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चउत्थ करेइ, करित्ता	चतुर्थ करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
छट्ठं करेइ, करित्ता	षष्ठ करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
दुवालसम करेइ, करित्ता	द्वादश करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चउत्थ करेइ, करित्ता	चतुर्थं करोति, कृत्वा

[हिन्दी शब्दार्थ]

(यह कि वह आर्यचन्दना आर्या की आज्ञा प्राप्त कर) लघुसर्वतोभद्र प्रतिमा अंगीकार करके विचरने लगी, जो इस प्रकार है—
उसने उपवास किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
बेला किया, करके
सर्वकामगुणित पारणा किया, करके
तेला किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
चौला किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
पॉच उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
तेला किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
चौला किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
पॉच उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
उपवास किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
बेला किया, करके
सर्वकामगुणित पारणा किया, करके
पॉच उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
उपवास किया, करके

[हिन्दी अर्थ]

अत्यन्त कृश हो गयी एव अन्त मे सलेखना सथारा करके सम्पूर्ण कर्मो का क्षय कर वे सिद्ध-बुद्ध एव मुक्त हो गयी।

इसी प्रकार छठा महासेन कृष्णा का अध्ययन भी समझना चाहिये।

ये राजा श्रेणिक की रानी एव राजा कोणिक की छोटी माता थी। इन्होने भी यावत् भगवान के पास दीक्षा ली।

विशेष, आर्या चन्दनबाला की आज्ञा प्राप्त कर आर्या महासेन कृष्णा लघु (क्षुद्र-क्षुल्लक) सर्वतोभद्र प्रतिमा का तप अगीकर करके विचरने लगी। इस तप की विधि इस प्रकार है—

इसमे सर्व प्रथम उपवास किया, करके सर्वकामगुण पारणा किया, करके
बेला किया करके सर्वकामगुण पारणा किया
तेला करके सर्वकामगुण पारणा किया
चोला करके सर्वकामगुण पारणा किया
पचोला करके सर्वकामगुण पारणा किया
तेला करके सर्वकामगुण पारणा किया
चोला करके सर्वकामगुण पारणा किया
पचोला करके सर्वकामगुण पारणा किया
उपवास करके सर्वकामगुण पारणा किया
बेला करके सर्वकामगुण पारणा किया
पचोला करके सर्वकामगुण पारणा किया
उपवास करके सर्वकामगुण पारणा किया

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
छट्ठं करेइ, करित्ता	षष्ठं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
अट्ठम करेइ, करित्ता	अष्टम करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
दसमं करेइ, करित्ता	दशम करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
छट्ठं करेइ, करित्ता	षष्ठं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
अट्ठम करेइ, करित्ता	अष्टम करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
दसमं करेइ, करित्ता	दशमं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
दुवालसम करेइ, करित्ता	द्वादश करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
चउत्थ करेइ, करित्ता	चतुर्थ करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
दसमं करेइ, करित्ता	दशमं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
दुवालसम करेइ, करित्ता	द्वादशं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
चउत्थ करेइ, करित्ता	चतुर्थ करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
छट्ठं करेइ, करित्ता	षष्ठ करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
अट्ठमं करेइ, करित्ता	अष्टम करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा

[हिन्दी शब्दार्थ]	[हिन्दी अर्थ]
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके बेला किया, करके	बेला करके सर्वकामगुण पारणा किया,
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके तेला किया, करके	तेला करके सर्वकामगुण पारणा किया,
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके चौला किया, करके	चोला करके सर्वकामगुण पारणा किया,
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके बेला किया, करके	बेला करके सर्वकामगुण पारणा किया,
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके तेला किया, करके	तेला करके सर्वकामगुण पारणा किया,
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके चौला किया, करके	चोला करके सर्वकामगुण पारणा किया,
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके पाँच उपवास किये, करके	पचोला करके सर्वकामगुण पारणा किया,
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके उपवास किया, करके	उपवास करके सर्वकामगुण पारणा किया,
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके चौला किया, करके	चोला करके सर्वकामगुण पारणा किया,
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके पाँच उपवास किये, करके	पचोला करके सर्वकामगुण पारणा किया,
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके उपवास किया, करके	उपवास करके सर्वकामगुण पारणा किया,
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके बेला किया, करके	बेला करके सर्वकामगुण पारणा किया,
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके तेला किया, करके	तेला करके सर्वकामगुण पारणा किया,
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके	

[मूल सूत्र पाठ]

एवं खलु एयं खुड्डागसव्व-
ओभद्दस्स तवोकम्मस्स
पढम परिवाडि तिहि
मासेहि दसहि दिवसेहि
अहासुत्तं जाव आराहित्ता
दोच्चाए परिवाडिए
चउत्थं करेइ, करित्ता
विगइवज्ज पारेइ, पारित्ता
जहा रयणावलीए तहा
एत्थ वि चत्तारि परिवाडीओ ।
पारणा तहेव ।
चउण्हं कालो सवच्छरो
मासो दस य दिवसा ।
सेस तहेव जाव सिद्धा ।६।

[सस्कृत छाया]

एवं खलु एतां क्षुल्लकसर्वतो-
भद्रस्य तप कर्मणः
प्रथमां परिपाटी त्रिभिः
मासै. दशभिः दिवसैः
यथासूत्र यावदाराध्य
द्वितीयस्या परिपाट्याम्
चतुर्थ करोति, कृत्वा
विकृतिवर्ज पारयति, पारयित्वा
यथा रत्नावल्यां तथा
अत्रापि चतस्त्रः परिपाट्य. ।
पारणा तथैव ।
चतसृणां कालः संवत्सरः ।
मासः दश च दिवसा. ।
शेष तथैव यावत् सिद्धा ।६।

इति षष्ठमध्ययनम्

अथ सप्तमध्ययनम्

सूत्र १

एवं वीरकण्हा वि ।
णवर महालयं सव्वओभद्द
तवोकम्म उवसपज्जित्ताणं
विहरइ । त जहा—
चउत्थ करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
छट्ठ करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
अट्ठम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता

एवं वीरकृष्णा अपि ।
विशेष·—(एषा) महत् ˋतोभद्रं
तपः कर्म उपसंपद्य
विहरति । तद् यथाः—
चतुर्थ करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
अष्टम करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा

[हिन्दी शब्दार्थ]

इस ार इस लघुस ोभद्र तपः कर्म की प्रथम परिपाटी की तीन महीने और दस दिनो मे सूत्रानुसार आराधना करके दूसरी परिपाटी मे उपवास किया, करके विगय रहित पारणा किया ।
जैसे रत्नावली तप मे चार परिपाटी कही गई है वैसे ही यहाँ पर भी चार परिपाटियाँ होती है ।
पारणा उसी प्रकार करना चाहिये ।
चारो का काल एक एक मास और दस दिन है ।
अन्त मे सलेखना करके महासेन कृष्णा भी सिद्ध बुद्ध मुक्त हो गई ।

[हिन्दी अर्थ]

इस प्रकार यह लघु (क्षुद्र-क्षुल्लक) सर्वतोभद्र तप-कर्म की प्रथम परिपाटी तीन महीने और दस दिनो मे पूर्ण होती है । इसकी सूत्रानुसार सम्यग् रीति (विधि) से आराधना करके आर्या महासेन कृष्णा ने इसकी दूसरी परिपाटी मे उपवास किया और विगयरहित पारणा किया ।

जैसे रत्नावली तप मे चार परिपाटियाँ बताई गई वैसे ही इस मे भी चार परिपाटियाँ होती है । पारणा भी उसी प्रकार समझना चाहिये ।

इसकी पहली परिपाटी मे पूरे सौ दिन लगे, जिसमे पच्चीस दिन पारणे के और पिचहत्तर दिन तपस्या के हुए । क्रम से इतने ही दिन दूसरी, तीसरी एव चौथी परिपाटी के हुए । इस तरह इन चारो परिपाटियो का सम्मिलित काल एक वर्ष, एक मास और दस दिन का हुआ ।

छठा अध्ययन समाप्त

सातवां अध्ययन

सूत्र १

इसी प्रकार वीरकृष्णा का अध्ययन भी समझना चाहिये ।
विशेष—यह महत् सर्वतोभद्र तपः कर्म को अगीकार करके विचरने लगी । वह जैसे —उपवास किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
बेला किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
तेला किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके

पहली एव दूसरी परिपाटी मे पारणे मे विगय का त्याग कर दिया । तीसरी परिपाटी मे पारणे मे विगय के लेप मात्र का भी त्याग कर दिया । चौथी परिपाटी मे आयम्बिल किया ।

इस प्रकार इस तप की सूत्रोक्त विधि से आर्या महासेन कृष्णा ने आराधना की और अन्त मे सलेखना-सथारा करके सभी कर्मों का क्षय कर वे सिद्ध-बुद्ध और मुक्त हो गई ।

इसी प्रकार सातवा अध्ययन वीर सेन कृष्णा आर्या का भी समझना चाहिये । यह भी श्रेणिक राजा की छोटी रानी एव कौणिक

[मूल सूत्र पाठ]

दसम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
दुवालसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउद्दसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
सोलसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
पढमा लया ।१।

[संस्कृत छाया]

दशम करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
द्वादशम् करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चतुर्दश करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
षोडशं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
(एषा) प्रथमा लता ।१।

सूत्र २

दसम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
दुवालसम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
चउद्दसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
सोलसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
चउत्थं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
छट्ठं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
अट्ठम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चीया लया ।२।

दशमं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
द्वादशं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चतुर्दशं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
षोडशं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चतुर्थं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
षष्ठ करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
अष्टमं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
(एवं) द्वितीया लता ।२।

(हिन्दी शब्दार्थ)

चौला ि ा, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
पाच उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
छः उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
सात उपवास किये, करके
ˋकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
यह प्रथम लता हुई ।१।

(हिन्दी अर्थ)

राजा की माता थी। इन्होने भी भगवान् महावीर का धर्मोपदेश सुनकर एव ससार से विरक्त होकर श्रमणी-दीक्षा अगीकार की।

विशेष यह है कि वह अपनी गुरुणीजी आर्या चन्दन बाला की आज्ञा लेकर 'महा सर्वतोभद्र' तप को अगीकार करके विचरने लगी।

इस 'महा सर्वतोभद्र' की आराधना करने की विधि इस प्रकार है—

सर्व प्रथम उपवास किया और सर्वकाम-गुण पारणा किया,

बेला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

सूत्र २

चार उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
पॉच उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
छः उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
सात उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
उपवास किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
बेला किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
तेला किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
इस प्रकार दूसरी लता पूर्ण की ।२।

तेला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

चोला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

पचोला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

छह किये, और सर्वकामगुण पारणा किया,

सात किये, और सर्वकामगुण पारणा किया,

यह प्रथम लता हुई।

चोला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

पचोला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

छह किये, और सर्वकामगुण पारणा किया,

सात किये, और सर्वकामगुण पारणा किया,

उपवास किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

सूत्र ३

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
सोलसमं करेइ, करित्ता	षोडशं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	कामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चउत्थ करेइ, करित्ता	चतुर्थ करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	स ामगुणितं पारयति, पारयित्वा
छट्ठं करेइ, करित्ता	षष्ठं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
अट्ठम करेइ, करित्ता	अष्टमं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
दसम करेइ, करित्ता	दशमं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	कामगुणित पारयति, पारयित्वा
दुवालसम करेइ, करित्ता	द्वादशम् करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चउद्दसम करेइ, करित्ता	चतुर्दशं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
तइया लया ।३।	तृतीया लता ।३।

सूत्र ४

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
अट्ठमं करेइ, करित्ता	अष्टमं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
दसम करेइ, करित्ता	दशमं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
दुवालसम करेइ, करित्ता	द्वादश करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चउद्दसमं करेइ, करित्ता	चतुर्दशम् करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
सोलसमं करेइ, करित्ता	षोडश करोति, कृत्वा

[हिन्दी शब्दार्थ] [हिन्दी अर्थ]

सूत्र ३

फिर सात उपवास किये, करके
सर्वकामगुणित पारणा किया, करके
उपवास किया, करके
सर्वकामगुणित पारणा किया, करके
बेला किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
तेला किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
चार उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
पाच उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
छः उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
इस प्रकार तृतीय लता पूर्ण हुई ।३।

बेला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,
तेला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,
यह दूसरी लता हुई ।
सात किये, और सर्वकामगुण पारणा किया,
उपवास किया और सर्वकामगुण पारणा किया,
बेला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,
तेला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,
चोला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,
पचोला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,
छह किये और सर्वकामगुण पारणा किया,
यह तीसरी लता हुई ।

सूत्र ४

तेला किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
चौला किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
पाच उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
छ उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
सात उपवास किये, करके

तेला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,
चोला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,
पचोला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,
छह किये, और सर्वकामगुण पारणा किया,
सात किये, और सर्वकामगुण पारणा किया,

(मूल सूत्र पाठ)	(संस्कृत छाया)
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चउत्थं करेइ, करित्ता	चतुर्थं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
छट्ठ करेइ, करित्ता	षष्ठं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
चउत्थी लया ।४।	चतुर्थी लता ।४।

सूत्र ५

चउद्दसम करेइ, करित्ता	चतुर्दशं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
सोलसम करेइ, करित्ता	षोडशं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चउत्थ करेइ, करित्ता	चतुर्थं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
छट्ठं करेइ, करित्ता	षष्ठं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
अट्ठम करेइ, करित्ता	अष्टमं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
दसमं करेइ, करित्ता	दशमं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
दुवालसम करेइ, करित्ता	द्वादशं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
पंचमी लया ।५।	पंचमी लता ।५।

सूत्र ६

छट्ठ करेइ, करित्ता	षष्ठ करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा

[हिन्दी शब्दार्थ]	[हिन्दी अर्थ]
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके उपवास किया, करके सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके बेला किया, करके सर्वकामगुणित पारणा किया, करके इस प्रकार चौथी लता पूर्ण हुई ।४।	उपवास किया और सर्वकामगुण पारणा किया, बेला किया और सर्वकामगुण पारणा किया, यह चौथी लता हुई ।

सूत्र ५

छः उपवास किये, करके सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके सात उपवास किये, करके सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके उपवास किया, करके सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके बेला किया, करके सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके तेला किया, करके सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके चौला किया, करके सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके पाच उपवास किये, करके सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके इस प्रकार पाँचवी लता पूर्ण की ।५।	छह किये और सर्वकामगुण पारणा किया, सात किये और सर्वकामगुण पारणा किया, उपवास किया और सर्वकामगुण पारणा किया, बेला किया और सर्वकामगुण पारणा किया, तेला किया और सर्वकामगुण पारणा किया, चौला किया और सर्वकामगुण पारणा किया, पचोला किया और सर्वकामगुण पारणा किया, यह पाचवी लता हुई ।

सूत्र ६

बेला किया, करके सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके	बेला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

(मूल सूत्र पाठ)

सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउत्थं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
छट्ठं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
चउत्थी लया ।४।

(संस्कृत छाया)

सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चतुर्थं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
षष्ठं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
चतुर्थी लता ।४।

सूत्र ५

चउद्दसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
सोलसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
चउत्थ करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
छट्ठ करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
अट्ठम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
दसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
दुवालसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
पचमी लया ।५।

चतुर्दश करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
षोडशं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चतुर्थ करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
षष्ठं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
अष्टमं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
दशम करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
द्वादश करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
पचमी लता ।५।

सूत्र ६

छट्ठ करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता

षष्ठ करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा

[हिन्दी शब्दार्थ]	[हिन्दी अर्थ]
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके उपवास किया, करके सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके बेला किया, करके सर्वकामगुणित पारणा किया, करके इस प्रकार चौथी लता पूर्ण हुई ।४।	उपवास किया और सर्वकामगुण पारणा किया, बेला किया और सर्वकामगुण पारणा किया, यह चौथी लता हुई ।

सूत्र ५

छः उपवास किये, करके सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके सात उपवास किये, करके सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके उपवास किया, करके सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके बेला किया, करके सर्वकामगुणयुक्त पारणा ि ा, करके तेला किया, करके सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके चौला किया, करके सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके पाच उपवास किये, करके सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके इस प्रकार पाँचवी लता पूर्ण की ।५।	छह किये और सर्वकामगुण पारणा किया, सात किये और सर्वकामगुण पारणा किया, उपवास किया और सर्वकामगुण पारणा किया, बेला किया और सर्वकामगुण पारणा किया, तेला किया और सर्वकामगुण पारणा किया, चोला किया और सर्वकामगुण पारणा किया, पचोला किया और सर्वकामगुण पारणा किया, यह पाचवी लता हुई ।

सूत्र ६

बेला किया, करके सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके	बेला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
अट्ठम करेइ, करित्ता	अष्टम करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
दसम करेइ, करित्ता	दशमं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
दुवालसम करेइ, करित्ता	द्वादशं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चउद्दसम करेइ, करित्ता	चतुर्दशं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
सोलसमं करेइ, करित्ता	षोडश करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
चउत्थं करेइ, करित्ता	चतुर्थ करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
छट्ठी लया ।६।	षष्ठी लता ।६।

सूत्र ७

मूल सूत्र पाठ	संस्कृत छाया
दुवालसम करेइ, करित्ता	द्वादश करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चउद्दसम करेइ, करित्ता	चतुर्दश करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
सोलसमं करेइ, करित्ता	षोडश करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सव्वकामगुणियं पारयति, पारयित्वा
चउत्थ करेइ, करित्ता	चतुर्थं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सव्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
छट्ठं करेइ, करित्ता	षष्ठ करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सव्वकामगुणिय पारयति, पारयित्वा
अट्ठमं करेइ, करित्ता	अष्टम करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सव्वकामगुणिय पारयति, पारयित्वा

[हिन्दी शब्दार्थ]

तेला किया, करके
कामगुणयुक्त पारणा किया, करके
चौला किया, करके
कामगुणयुक्त पारणा किया, करके
पाच किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
छः किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
सात किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
उपवास किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
यह छट्ठी लता हुई ।

[हिन्दी अर्थ]

तेला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

चार किये और सर्वकामगुण पारणा किया,

पाँच किये और सर्वकामगुण पारणा किया,

छह किये और सर्वकामगुण पारणा किया,

सात किये और सर्वकामगुण पारणा किया,

उपवास किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

इस तरह छठी लता सम्पूर्ण हुई ।

सूत्र ७

पाच किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
छः किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
सात किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
उपवास किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
बेला किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
तेला किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके

पाच किये और सर्वकामगुण पारणा किया,

छह का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

सात किये और सर्वकामगुण पारणा किया,

उपवास किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

बेले का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

तेला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

(मूल सूत्र पाठ)	(सस्कृत छाया)
द करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता सत्तमी लया ।७।	दशमं करोति, कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा सप्तमी ।७।

सूत्र ८

एक्काए कालो अट्ठमासा पंच य दिवसा । चउण्ह दो वासा अट्ठमासा बीस दिवसा । सेसं तहेव जाव सिद्धा ।	एकैकस्याः कालः : पंच च दिवसाः चतसृणां कालः द्वौ वर्षौ अष्ट- मासाः विंशति दिवसाः । शेषं तथैव यावत् सिद्धा ।

इति सप्तममध्ययनम्

ममध्ययनम्

सूत्र १

एव रामकण्हा वि ।	एव रामकृष्णाऽपि ।
णवरं भद्दोत्तर पडिमं उवसंप- ज्जित्ताण विहरइ ।	विशेषः—भद्रोत्तरप्रतिमाम् उप विहरति ।
त जहा— दुवालसम करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता चउद्दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता सोलसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता अट्ठारसमं करेइ, करित्ता	तद् यथा— द्वादश करोति, कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा चतुर्दशं करोति, कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा षोडशं करोति, कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा अष्टादशं करोति, कृत्वा

[हिन्दी शब्दार्थ]	[हिन्दी अर्थ]
चौला किया, करके `कामगुणयुक्त पारणा किया, करके इस प्रकार पाँ ी लता पूर्ण की ।७।	चोला किया और सर्वकामगुण पारणा किया, यह सातवी लता हुई ।७।

सूत्र ८

इस प्रकार सात लता की परिपाटी का काल आठ महीने और पाँच दिन हुआ। चारो परिपाटियो का काल दो वर्ष आठ महीने और बीस दिन हुआ। शेष सूत्रानुसार। पूर्ण आराधना करके अन्त मे सलेखना करके यह भी सिद्ध बुद्ध मुक्त हो गई।	इस प्रकार इस तप मे सात लताओ की एक परिपाटी हुई। इस तप मे भी कुल परिपाटिया चार होती है। इस मे एक परिपाटी का काल आठ महीने और पाँच दिन हुए एव इसी हिसाब से चारो का काल दो वर्प आठ महीने और बीस दिन होते है। प्रथम परिपाटी के आठ मास और पाच दिनो मे, उनपचास दिन पारणे के और छ

सातवा अध्ययन समाप्त

आठवा अध्ययन

सूत्र १

इसी प्रकार आठवी रामकृष्णा देवी का अध्ययन भी समझना चाहिये। विशेष यह है कि वह रामकृष्णा देवी भद्रोत्तर प्रतिमा अंगीकार करके विचरण करने लगी। वह (भद्रोत्तर प्रतिमा) इस प्रकार है— पांच उपवास किये, करके सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके छ. उपवास किये, करके सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके सात उपवास किये, करके सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके आठ उपवास किये, करके	मास सोलह दिन तपस्या के होते है। इस प्रथम परिपाटी मे पारणो मे विगय का त्याग नही किया। दूसरी परिपाटी मे पारणो मे विगय का त्याग किया। तीसरी परिपाटी मे पारणो मे विगय के लेप मात्र का भी त्याग कर दिया। चौथी परिपाटी मे पारणो मे आयम्बिल किये। इन चारो परिपाटियो को पूर्ण करने मे दो वर्प आठ मास और बीस दिन का समय लगा। शेप आर्या वीर सेन कृष्णा ने सूत्रानुसार इस तप की साधना की और अन्त मे कृश काय होने पर वे भी सलेखना-सथारा कर यावत् सिद्ध-बुद्ध और मुक्त हो गई।७।

[मूल सूत्र पाठ]

सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
बीसइमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
पढमा लया ।१।

[संस्कृत छाया]

सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
विंशतितमं करोति, कृत्वा
ˊकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
(एव) प्रथमा लता ।१।

सूत्र २

सोलसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
अट्ठारसम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
बीसइम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
दुवालसम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
चउद्दसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
बीया लया ।२।

षोडश करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
अष्टादश करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
विंशतितम करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
द्वादशं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
चतुर्दश करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
(एवं) द्वितीया लता ।२।

सूत्र ३

बीसइम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
दुवालसम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
चउद्दसम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
सोलसम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता

विंशतितम करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
द्वादशम् करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
चतुर्दश करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
षोडश करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा

[हिन्दी शब्दार्थ]

सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
नौ उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
यह प्रथम लता हुई ।१।

[हिन्दी अर्थ]

इसी प्रकार आठवा रामकृष्णा देवी का अध्ययन भी समझना चाहिये । विशेष मे, यह भी श्रेणिक राजा की रानी और राजा कौणिक की छोटी माता थी । इसने भी दीक्षा ली और आर्या चन्दनबाला की आज्ञा प्राप्त

सूत्र २

सात उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
आठ उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
नौ उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
पचौला किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
छः उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
इस प्रकार दूसरी लता पूर्ण की ।२।

कर रामकृष्णा 'भद्रोत्तर प्रतिमा' तप अगीकार करके विचरने लगी ।

इसकी विधि इस प्रकार है—

पाँच किया और सर्वकामगुण पारणा किया,
छह किये और सर्वकामगुण पारणा किया,
सात किये और सर्वकामगुण पारणा किया,
आठ किये और सर्वकामगुण पारणा किया,
नव किये और सर्वकामगुण पारणा किया ।

यह प्रथम लता हुई ।१।

सात किये और सर्वकामगुण पारणा किया ।
आठ किये और सर्वकामगुण पारणा किया ।
नव किये और सर्वकामगुण पारणा किया ।

सूत्र ३

नौ उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
पचौला किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
छ उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
सात उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके

पचौला किया और सर्वकामगुण पारणा किया
छह किये और सर्वकामगुण पारणा किया,

यह दूसरी लता हुई ।२।

नव किया और सर्वकामगुण पारणा किया,
पाँच किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

छ किये और सर्वकामगुण पारणा किया ।

सात किये और सर्वकामगुण पारणा किया ।

[मूल सूत्र पाठ]

सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
बीसइम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
पढमा लया ।१।

[संस्कृत छाया]

सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
विंशतितमं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
(एवं) प्रथमा लता ।१।

सूत्र २

सोलसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
अट्ठारसम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
वीसइमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
दुवालसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
चउद्दसम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
बीया लया ।२।

षोडश करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
अष्टादश करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
विंशतितमं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
द्वादश करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
चतुर्दशं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
(एवं) द्वितीया लता ।२।

सूत्र ३

वीसइम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
दुवालसम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
चउद्दसम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
सोलसम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता

विंशतितम करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
द्वादशम् करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
चतुर्दश करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
षोडश करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा

[हिन्दी शब्दार्थ]

उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
इस प्रकार तीसरी लता पूर्ण की ।३।

[हिन्दी अर्थ]

आठ का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया ।

यह तीसरी लता हुई ।३।

सूत्र ४

छ उपवास किये, करके
कामगुणयुक्त पारणा किया, करके
सात किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
आठ उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
नौ उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
पाच उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
इस प्रकार चौथी लता पूर्ण हुई ।४।

छह किये और सर्वकामगुण पारणा किया ।

सात किया और सर्वकामगुण पारणा किया ।

आठ किया और सर्वकामगुण पारणा किया ।

नव किया और सर्वकामगुण पारणा किया ।

पाँच किये और सर्वकामगुण पारणा किया ।

यह चौथी लता हुई ।४।

५

आठ उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
नौ उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
पॉच उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
छ उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
सात उपवास किये, करके

आठ किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

नव किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

पाच किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

छह किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
अट्ठारसमं करेइ, करित्ता	अष्टादश करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
तइया लया ।३।	(एवं) तृतीया लता ।३।

सूत्र ४

चउद्दसम करेइ, करित्ता	चतुर्दश करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
सोलसम करेइ, करित्ता	षोडशं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
अट्ठारसम करेइ, करित्ता	अष्टादशं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
बीइसमं करेइ, करित्ता	विंशतितमं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
दुवालसमं करेइ, करित्ता	द्वादशं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चउत्थी लया ।४।	चतुर्थी लता ।४।

सूत्र ५

अट्ठारसम करेइ, करित्ता	अष्टादश करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
वीसइम करेइ, करित्ता	विंशतितमं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
दुवालसम करेइ, करित्ता	द्वादश करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चउद्दसम करेइ, करित्ता	चतुर्दश करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
सोलसम करेइ, करित्ता	षोडश करोति, कृत्वा

[हिन्दी शब्दार्थ]

उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
इस प्रकार तीसरी लता पूर्ण की ।३।

[हिन्दी अर्थ]

आठ का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया ।

यह तीसरी लता हुई ।३।

सूत्र ४

छः उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
सात किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
आठ उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
नौ उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
पाच उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
इस प्रकार चौथी लता पूर्ण हुई ।४।

छह किये और सर्वकामगुण पारणा किया ।

सात किया और सर्वकामगुण पारणा किया ।

आठ किया और सर्वकामगुण पारणा किया ।

नव किया और सर्वकामगुण पारणा किया ।

पाँच किये और सर्वकामगुण पारणा किया ।

यह चौथी लता हुई ।४।

५

आठ उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
नौ उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
पाँच उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
छ उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
सात उपवास किये, करके

आठ किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

नव किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

पाच किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

छह किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

[मूल सूत्र पाठ] | [संस्कृत छाया]

सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
पचमी लया ।५।

सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
पंचमी लता ।५।

सूत्र ६

एक्काए कालो छम्मासा वीस
य दिवसा ।
चउण्ह कालो दो वरिसा दो
मासा बीस य दिवसा ।
सेसं तहेव जहा काली जाव सिद्धा ।

एतस्याः (पंचलतात्मिकाया.) कालः
षण्मासा. विशतिश्च दिवसा. ।
चतसृणा कालः द्वौ वर्षौ द्वौ
मासौ विशतिश्च दिवसाः ।
शेष तथैव यथा काली यावत् सिद्धा ।

इति अष्टममध्ययनम्

नवममध्ययनम्

एव पिउसेण कण्हा वि

एवं पितृसेनकृष्णाऽपि ।

णवर—मुत्तावली तवोकम्म
उवसंपज्जित्ताण विहरइ ।
त जहा—

विशेष'—मुक्तावली तपः कर्म
उपसपद्य विहरति ।
था—

चउत्थ करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
छट्ठ करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
चउत्थ करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
अट्ठम करेइ, करित्ता

चतुर्थ करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
षष्ठं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
चतुर्थ करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
अष्टम करोति, कृत्वा

[हिन्दी शब्दार्थ]

सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
इस प्रकार पाँचवी लता पूर्ण की ।५।

[हिन्दी अर्थ]

सात किया और सर्वकामगुण पारणा किया,
यह पाचवी लता हुई ।५।

सूत्र ६

इस प्रकार एक परिपाटी का काल
छः मास और बीस दिन हुआ ।
चारो का काल दो ˊ दो मास और
बीस दिन हुए ।
शेष उसी प्रकार काली रानी के समान
रामकृष्णा भी संलेखना करके यावत्
सिद्ध बुद्ध मुक्त हो गई ।

इस तरह पाच लताओ की एक परिपाटी हुई । ऐसी चार परिपाटिया इस तप मे होती हैं । एक परिपाटो का काल छ महीने और बीस दिन, एव चारो परिपाटियो का काल दो वर्ष, दो महीने और बीस दिन होते है । शेष उसी प्रकार पूर्व वर्णन के अनुसार समझना चाहिये ।

काली के समान आर्या रामकृष्णा भी सलेखना करके यावत् सिद्ध-बुद्ध मुक्त हो गई।

आठवां अध्ययन समाप्त

नवमा अध्ययन

इसी प्रकार पितृसेन कृष्णा का
अध्ययन भी समझना चाहिए ।
विशेष —उन्होने मुक्तावली तप को
अगीकार किया और विचरने लगी ।
मुक्तावली तप का वर्णन इस प्रकार
है—
उन्होने उपवास किया और
सर्वकामगुण पारणा किया, करके
बेला किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
उपवास किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
तेला किया, करके

ऐसे ही पितृसेन कृष्णा का नवमा अध्ययन भी समझना चाहिये । इसमे विशेष इतना है कि गुरुणी आर्या चन्दन बाला की आज्ञा पाकर पितृसेन कृष्णा आर्या 'मुक्तावली' तप को अगीकार करके विचरने लगी, जो इस प्रकार है—

उपवास किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

बेला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

उपवास किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

[मूल सूत्र पाठ]	[सस्कृत छाया]
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता पचमी लया ।५।	सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा पचमी लता ।५।

सूत्र ६

एक्काए कालो छम्मासा वीस य दिवसा । चउण्हं कालो दो वरिसा दो मासा बीस य दिवसा । सेस तहेव जहा काली जाव सिद्धा ।	एतस्याः (पंचलतात्मिकायाः) कालः षण्मासा. विंशतिश्च दिवसाः । चतसृणा कालः द्वौ वर्षौ द्वौ मासौ विंशतिश्च दिवसाः । शेष तथैव यथा काली यावत् सिद्धा ।

इति अष्टममध्ययनम्

नवममध्ययनम्

एव पिउसेण कण्हा वि	एवं पितृसेनकृष्णाऽपि ।
णवर—मुत्तावली तवोकम्मं उवसपज्जित्ताण विहरइ । त जहा—	विशेष—मुक्तावली तपः उपसंपद्य विहरति । तद्यथा—
चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता छट्ठ करेइ, करित्ता सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता चउत्थ करेइ, करित्ता सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता अट्ठमं करेइ, करित्ता	चतुर्थ करोति, कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा षष्ठं करोति, कृत्वा सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा चतुर्थ करोति, कृत्वा सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा अष्टमं करोति, कृत्वा

[हिन्दी शब्दार्थ] [हिन्दी अर्थ]

स ं ामगुणयुक्त पारणा किया, करके
इस प्रकार पाँचवी लता पूर्ण की ।५।

सात किया और सर्वकामगुण पारणा किया,
यह पाचवी लता हुई ।५।

सूत्र ९

इस प्रकार एक परिपाटी का काल
छः मास और बीस दिन हुआ ।
चारो का काल दो ं दो मास और
बीस दिन हुए ।
शेष उसी प्रकार काली रानी के समान
रामकृष्णा भी सलेखना करके यावत्
सिद्ध बुद्ध मुक्त हो गई ।

इस तरह पाच लताओ की एक परिपाटी हुई। ऐसी चार परिपाटिया इस तप मे होती हैं। एक परिपाटी का काल छ महीने और बीस दिन, एव चारो परिपाटियो का काल दो वर्ष, दो महीने और बीस दिन होते है । शेष उसी प्रकार पूर्व वर्णन के अनुसार समझना चाहिये ।

काली के समान आर्या रामकृष्णा भी सलेखना करके यावत् सिद्ध-बुद्ध मुक्त हो गई।

आठवा अध्ययन समाप्त

नवमां अध्ययन

इसी प्रकार पितृसेन कृष्णा का
अध्ययन भी समझना चाहिए ।
विशेष.—उन्होने मुक्तावली तप को
अगीकार किया और विचरने लगी ।
मुक्तावली तप का वर्णन इस प्रकार
है—
उन्होने उपवास किया और
सर्वकामगुण पारणा किया, करके
बेला किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
उपवास किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
तेला किया, करके

ऐसे ही पितृसेन कृष्णा का नवमा अध्ययन भी समझना चाहिये। इसमे विशेष इतना है कि गुरुणी आर्या चन्दन बाला की आज्ञा पाकर पितृसेन कृष्णा आर्या 'मुक्तावली' तप को अगीकार करके विचरने लगी, जो इस प्रकार है—

उपवास किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

बेला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

उपवास किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चउत्थ करेइ, करित्ता	चतुर्थ करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
दसम करेइ, करित्ता	दशमं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चउत्थ करेइ, करित्ता	चतुर्थ करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
दुवालसम करेइ, करित्ता	द्वादशं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
चउत्थ करेइ, करित्ता	चतुर्थ करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
चउद्दसमं करेइ, करित्ता	चतुर्दश करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चउत्थं करेइ, करित्ता	चतुर्थ करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सव्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
सोलसम करेइ, करित्ता	षोडशं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सव्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चउत्थ करेइ, करित्ता	चतुर्थ करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
अट्ठारसमं करेइ, करित्ता	अष्टादश करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
चउत्थं करेइ, करित्ता	चतुर्थ करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
वीसइम करेइ, करित्ता	विशतितम करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चउत्थ करेइ, करित्ता	चतुर्थ करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा

[हिन्दी शब्दार्थ]

सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
उपवास किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
चौला किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
उपवास किया, करके
सर्वकामगुणित पारणा किया, करके
पाँच उपवास किये, करके
सर्वकामगुणित पारणा किया, करके
उपवास किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
छः उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
उपवास किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
सात उपवास किये, करके
सर्वकामगुणित पारणा किया, करके
उपवास किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
आठ उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
उपवास किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
नौ उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
उपवास किया, करके
सर्वकामगुणित पारणा किया, करके

[हिन्दी अर्थ]

तेला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

उपवास किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

चौला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

उपवास किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

पाँच किये और सर्वकामगुण पारणा किया,

उपवास किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

छह किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

उपवास किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

सात किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

उपवास किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

आठ किये और सर्वकामगुण पारणा किया,

उपवास किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

नव किये और सर्वकामगुण पारणा किया,

उपवास किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
बावीसइमं करेइ, करित्ता	द्वाविंशति ˙ करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
चउत्थं करेइ, करित्ता	चतुर्थ करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चउवीसइमं करेइ, करित्ता	चतुर्विंशति करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चउत्थ करेइ, करित्ता	चतुर्थ करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
छव्वीसइम करेइ, करित्ता	षड्विंशतितम करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चउत्थ करेइ करित्ता	चतुर्थ करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
अट्ठावीसइमं करेइ, करित्ता	अष्टाविंशतितम करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
चउत्थ करेइ, करित्ता	चतुर्थ करोति कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति पारयित्वा
तीसइमं करेइ, करित्ता	त्रिंशत्तमं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चउत्थ करेइ, करित्ता	चतुर्थ करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
बत्तीसइम करेइ, करित्ता	द्वात्रिंशत्तम करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चउत्थ करेइ, करित्ता	चतुर्थ करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
चोत्तीसइम करेइ, करित्ता	चतुस्त्रिंशत्तमं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
चउत्थ करेइ, करित्ता	चतुर्थं करोति, कृत्वा

(हिन्दी शब्दार्थ)

दस उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
उपवास किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
ग्यारह उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
उपवास किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
बारह उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
उपवास किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
तेरह उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
उपवास किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
चौदह उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
उपवास किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
पन्द्रह उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
उपवास किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
सोलह उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
उपवास किया, करके

(हिन्दी अर्थ)

दश किये और सर्वकामगुण पारणा किया,

उपवास किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

ग्यारह किये और सर्वकामगुण पारणा किया,

उपवास किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

बारह किये और सर्वकामगुण पारणा किया,

उपवास किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

तेरह किये और सर्वकामगुण पारणा किया,

उपवास किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

चौदह किये और सर्वकामगुण पारणा किया,

उपवास किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

पद्रह किये और सर्वकामगुण पारणा किया,

उपवास किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

सोलह किये और सर्वकामगुण पारणा किया,

उपवास किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

[हिन्दी शब्दार्थ]

सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
उपवास किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
पन्द्रह उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
इस प्रकार वैसे ही एक एक उतारते
हुए यावत् उपवास किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया ।
एक परिपाटी का काल ग्यारह महीने
पन्द्रह दिन चारों में तीन वर्ष दस महीने
लगे । शेष उसी प्रकार यावत् सलेखना
करके पितृसेनकृष्णा भी सिद्ध हो गई ।

[हिन्दी अर्थ]

उपवास किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

पद्रह किये और सर्वकामगुण पारणा किया,

इस प्रकार वैसे ही एक एक उल्टा उतारते जाते है, यावत् अन्त मे उपवाम करके सर्वकामगुण पारणा किया । इस तरह यह एक परिपाटी हुई । एक परिपाटी का काल ग्यारह महीने और पद्रह दिन होते है। ऐसी चार परिपाटिया इस तप मे होती है । इन चारो परिपाटियो मे तीन वर्ष दश महीने का समय लगता है ।

शेष वर्णन पूर्व की तरह समझना चाहिये ।

इति नवम अध्ययन

द अध्ययन

सूत्र १

इसी प्रकार महासेनकृष्णा का अध्ययन
है । विशेष यह है कि वह आयंबिल
वर्धमान तप को अगीकार करके
विचरने लगी । जो इस प्रकार है—
एक आयबिल करके
उपवास किया, करके
फिर दो आयविल करके
उपवास किया, करके
फिर तीन आयबिल किये, करके
उपवास किया, करके
चार आयबिल तप किये, करके
उपवास किया, करके

अन्त मे अत्यन्त कृशराय होने पर आर्या पितृसेन कृष्णा भी सलेखना सथारा करके सिद्ध-बुद्ध और सर्व दुखो से मुक्त हो गई ।

इसी प्रकार महासेन कृष्णा का दसवा अध्ययन भी समझना चाहिये । इसमे विशेष इतना ही है कि महासेन कृष्णा 'वर्द्धमान आयबिल' तप को अगीकार करके विचरने लगी । जो इस प्रकार है—

प्रारम्भ में एक आयविल करके उपवास किया,

दो आयविल किये और उपवास किया,

तीन आयविल किये और उपवास किया,

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
पंच आयंबिलाइ करेइ, करित्ता	पञ्च आचामाम्लानि करोति, कृत्वा
चउत्थ करेइ, करित्ता	चतुर्थ करोति, कृत्वा
छ आयबिलाइ करेइ, करित्ता	षडाचामाम्लानि करोति, कृत्वा
चउत्थं करेइ, करित्ता	चतुर्थ करोति, कृत्वा
एकोत्तरियाए वुड्ढीए आयंबिलाइं	एकोत्तरिकया वृद्ध्या आचामाम्लानि
वड्ढति चउत्थतरियाइं जाव	वर्धन्ते चतुर्थान्तरितानि यावत्
आयबिलसय करेइ, करित्ता	आचामाम्लशत करोति, कृत्वा
चउत्थं करेइ ।१।	चतुर्थ करोति ।१।

सूत्र २

तएण सा महासेरण कण्हा अज्जा	ततः खलु सा महासेन कृष्णा आर्या
आयबिल वड्ढमाण तवोकम्मं	आचामाम्लवर्द्धमानं तपः कर्म
चोद्दसेहि वासेहि तिहि य	चतुर्दशभिः वर्षैः त्रिभिश्च
मासेहि वीसेहि य अहोरत्तेहि	मासैः विंशत्या च अहोरात्रैः
अहासुत्तं जाव सम्मं काएणं फासेइ	यथासूत्र यावत् सम्यक् कायेन स्पृशति,
जाव आराहित्ता, जेणेव अज्ज-	यावत् आराध्य, यत्रैव आर्यचन्दना
चंदणा अज्जा तेणेव उवागच्छइ ।	आर्या तत्रैव उपागच्छति ।
उवागच्छित्ता अज्जचंदणा अज्जं	उपागत्य आर्यचन्दनाम् आर्याम्
वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता	वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा
बहूहि चउत्थेहि जाव भावेमाणी	बहुभिः चतुर्थैः यावत् भावयन्ती
विहरइ ।	विहरति ।
तएण सा महासेणकण्हा अज्जा	ततः खलु सा महासेनकृष्णा आर्या
तेण ओरालेणं जाव उवसोभेमाणी	तेन उदारेण तपसा यावत् उपशोभमाना
उवसोभेमाणी चिट्ठइ ।२।	उपशोभमाना तिष्ठति ।२।
तएण तीसे महासेणकण्हाए	ततः खलु तस्याः महासेन कृष्णायाः
अज्जाए अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्त	आर्यायाः अन्यदा कदाचिद् पूर्वरात्रापररात्र
काले चिंता, जहा	काले चिंता, यथा

[हिन्दी शब्दार्थ]

पांच आयंबिल किये, करके
उपवास किया, करके
छ: आयबिल किये, करके
उपवास किया, करके
इस प्रकार एक एक की वृद्धि से आयबिल बढाये बीच बीच मे उपवास किया यावत् सौ आयंबिल किये, करके उपवास किया ।

[हिन्दी अर्थ]

चार आयविल किये और उपवास किया,
पाच आयविल किये और उपवास किया,
छह आयविल किये और उपवास किया,
ऐसे एक एक की वृद्धि से आयविल बढाये । बीच बीच मे उपवास किया, इस प्रकार सौ आयविल करके उपवास किया ।

सूत्र २

तब उन महासेनकृष्णा आर्या ने आयबिलवर्धमान तप कर्म को चौदह वर्ष तीन महीने और बीस अहोरात्र मे सूत्रानुसार यावत् विधिपूर्वक काया से स्पर्शन किया, यावत् आराधना करके जहाँ आर्य चन्दना आर्या थी वहां आई । आकर आर्यचन्दना आर्या को वन्दन नमस्कार करती है, वन्दन नमस्कार करके बहुत से उपवासो से आत्मा को भावित करती हुई विचरने लगी । तब वह महासेनकृष्णा आर्या उस प्रधान तप से यावत् शोभायमान होकर रहने लगी ।
फिर महासेनकृष्णा आर्या को अन्य किसी दिन पिछली रात्रि के समय स्कंदक के समान धर्म चिन्ता उत्पन्न हुई ।

यह वर्द्धमान आयम्बिल तप हुआ ।
इस प्रकार महासेन कृष्णा आर्या ने इस 'वर्द्धमान आयम्बिल' तप की आराधना चौदह वर्ष तीन महीने और बीस अहोरात्र की अवधि मे सूत्रानुसार विधि पूर्वक पूर्ण की ।
आराधना पूर्ण करके आर्या महासेन कृष्णा जहा अपनी गुरुणी आर्या चदनबाला थी, वहा आई और चदनबाला को वदना नमस्कार करके उनकी आज्ञा प्राप्त करके बहुत से उपवास आदि तप से आत्मा को भावित करती हुई विचरने लगी । इस महान् तप के तेज से महासेन कृष्णा आर्या शरीर से दुर्बल हो जाने पर भी अत्यन्त दैदीप्यमान लगने लगी ।
एक दिन पिछली रात्रि के समय महासेन कृष्णा आर्या को धर्म-चिन्ता उत्पन्न हुई—"मेरा शरीर तपस्या से दुर्बल हो गया है तथापि अभी तक मुझ मे उत्थान, बल, वीर्य आदि है । इसलिये कल सूर्योदय होते ही आर्या चन्दनबाला के पास जाकर उनसे आज्ञा लेकर सलेखणा सथारा करू ।"

[मूल सूत्र पाठ]	[सस्कृत छाया]
खदयस्स जाव अज्जचंदरणं अज्जं	स्कदकस्य यावत् आर्यचन्दनाम्
आपुच्छइ जाव सलेहणा,	आर्याम् आपृच्छति यावत् सलेखना,
काल अरणवकखमाणी विहरइ ।	कालमनवकाक्षन्तो विहरति ।
तएणं सा महासेरण कण्हा अज्जा	तत. खलु सा महासेनकृष्णा आर्या
अज्जचदणाए अज्जाए अतिए	आर्यचदनामार्याम् अन्तिके
सामाइयमाइयाइ एक्कारस	सामायिकादीनि एकादशागानि
अगाइ अहिज्जित्ता बहुपडिपुण्णाइं	अधीत्य बहुप्रतिपूर्णानि
सत्तरस वासाइ परियाय	सप्तदश ाणि पर्याय
पालइत्ता (पाउणित्ता) मासियाए	पालयित्वा मासिक्या सलेखनया
संलेहणाए अप्पाण झूसित्ता सट्ठिभत्ताइं	आत्मानं जोषयित्वा षष्टि भक्तानि
अणसणाए छेदित्ता जस्सट्ठाए	अनशनेन छित्वा यस्यार्थाय
कीरइ जाव तमट्ठ आराहेइ	क्रियते यावत् तमर्थम् आराधयति ।
चरिम उस्सासणीसासेहि	चरमोच्छ्वासनिःश्वासैः
सिद्धा बुद्धा ।	सिद्धा बुद्धा ।
अट्ठ य वासा आदी,	च वर्षाणि आदिः,
एकोत्तरियाए जाव सत्तरस ।	एकोत्तरिकया यावत् सप्तदशी ।
एसो खलु परियाओ,	एष खलु पर्यायः,
सेणियभज्जाण णायव्वो ॥	श्रेणिक भार्याणां ज्ञातव्यः ॥

इति दशममध्ययनम्

इति अष्टम. वर्गः

एव खलु जबू ! समरणेण	एवं खलु जम्बू ! श्रमणेन
भगवया महावीरेणं आइगरेणं	भगवता महावीरेण आदिकरेण
जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स	यावत् (मुक्ति) संप्राप्तेन अष्टमस्य
अगस्स अतगडदसाण	अंगस्य अतकृद्दशानाम्
अयमट्ठे पण्णत्ते त्ति वेमि ।	अयमर्थः प्रज्ञप्तः इति ब्रवीमि ।
अतगड दसाणं अगस्स	अन्तकृद्दशानाम् अगस्य
एगो सुयक्खधो अट्ठवग्गा	एकः श्रुतस्कन्धो अष्ट- वर्गा

[हिन्दी शब्दार्थ]

आर्यचन्दना आर्या को पूछकर यावत् सलेखना की और काल (मृत्यु) को नही चाहती हुई विचरने लगी । फिर उस महासेनकृष्णा आर्या ने आर्यचन्दना आर्या के पास साम- ि ादि ग्यारह अगो का अध्ययन किया, पूरे सत्रह वर्ष तक चारित्र्य धर्म को पालन करके एक मास की सलेखना से आत्मा को भावित करके साठ भक्त अनशन को पूर्ण कर यावत् जिस कार्य के लिये सयम लिया था उसकी पूर्ण आराधना करके अन्तिम श्वास उच्छ्वास से सिद्ध बुद्ध मुक्त हुई । एवं श्रेणिक राजा की भार्याओ मे से पहली काली देवी की आठ वर्ष की दीक्षा, दूसरी की नव वर्ष इस प्रकार एक एक बढ़ाते हुए यावत् दसवी रानी का १७ वर्ष दीक्षा काल जाने ।

[हिन्दी अर्थ]

तदनुसार दूसरे दिन सूर्योदय होने पर आर्या महासेन कृष्णा ने आर्या चन्दन वाला के पास जाकर वन्दन नमस्कार करके सथारे की आज्ञा मागी । आज्ञा लेकर यावत् सलेखणा सथारा किया और काल की इच्छा नही रखती हुई धर्मध्यान-शुक्लध्यान मे तल्लीन रहते हुए विचरने लगी ।

उन महासेनकृष्णा आर्या ने आर्य चदना आर्या के पास सामायिक आदि ग्यारह अगो का अध्ययन किया । पूरे सत्रह वर्ष तक श्रमणी चारित्र-धर्म का पालन किया अन्त मे एक मास की सलेखना से आत्मा को भावित करते हुए साठ भक्त अनशन तप किया । इस तरह जिस लक्ष्य-प्राप्ति हेतु सयम ग्रहण किया था उस की पूर्ण आराधना करके महासेन कृष्णा आर्या अतिम श्वास-उच्छ्वास मे अपने सम्पूर्ण कर्मों को नष्टकर सिद्ध-बुद्ध और मुक्त हो गई ।

इन दसो रानियो के दीक्षापर्याय काल का वर्णन एक ही गाथा मे किया गया है । इन मे से प्रथम काली आर्या ने आठ वर्ष तक चारित्र पर्याय का पालन किया ।

दसवा अध्ययन समाप्त

आठवा वर्ग समाप्त

इस प्रकार हे जम्बू! श्रमण भ० महावीर जो कि धर्म की आदि करने वाले यावत् मुक्ति पधारे है, ने आठवे अग अतगडदशासूत्र का यह अर्थ कहा है, ऐसा मै कहता हूँ ।

अंतगडदशा अंग मे एक श्रुतस्कन्ध और आठ वर्ग है ।

दूसरी सुकाली आर्या ने नौ वर्ष तक इस प्रकार क्रमश एक एक रानी के चारित्र पर्याय मे एक एक वर्ष की वृद्धि होती गई । अन्तिम दसवी रानी महासेन कृष्णा आर्या ने १७ वर्ष तक दीक्षा पर्याय का पालन किया । ये सभी राजा श्रेणिक की राणिया थी और कौणिक राजा की छोटी माताए थी ।

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
अट्ठसु चेव दिवसेसु उद्दिसिज्जंति ।	अष्टसु चैव दिवसेषु उद्दिश्यन्ते ।
तत्थ पढमबितियवग्गे दस	तत्र प्रथम द्वितीय वर्गयोः दश
दस उद्देसगा, तइयवग्गे	दश उद्देशकाः, तृतीय वर्गे
तेरस उद्देसगा, चउत्थपंचम-	त्रयोदश उद्देशकाः, चतुर्थ-
वग्गे दस दस उद्देसगा,	पचम वर्गयोः दश दश उद्देशकाः,
छट्ठवग्गे सोलस उद्देसगा,	षष्ठ वर्गे षोडश उद्देशकाः,
सत्तमवग्गे तेरस उद्देसगा,	सप्तम वर्गे त्रयोदश उद्देशकाः,
अट्ठम वग्गे दस उद्देसगा ।	अष्टम वर्गे दश उद्देशकाः ।
सेसं जहा णायाधम्मकहाणं ।	शेषं यथा ज्ञाताधर्मकथानाम् ।

सिरि अंतगडदसांगसुत्तं समत्तं

—o—

[हिन्दी शब्दार्थ]

आठ ही दिनो मे इनका वाचन होता है।
इसमे प्रथम व द्वितीय वर्ग मे
उद्देशक है, तीसरे
वर्ग मे तेरह उद्देशक है, चौथे और
पाचवे वर्ग मे दस दस उद्देशक है,
छठे वर्ग मे सोलह उद्देशक है,
सातवे वर्ग मे तेरह उद्देशक है,
वे वर्ग मे दस उद्देशक है।
शेष वर्णन ज्ञाताधर्म कथा मे है।

[हिन्दी अर्थ]

श्री सुधर्मा—"हे जम्बू! अपने शासन की अपेक्षा से धर्म की आदि करने वाले श्रमण भगवान् महावीर, जो मोक्ष पधार गये हैं, ने आठवे अग अन्तगडदशा का यह भाव, यह अर्थ प्ररूपित किया है।

भगवान् से जैसा भाव, जैसा अर्थ मैंने सुना उसी प्रकार मैंने तुम्हे कहा है।"

इस अन्तगडदशा सूत्र मे एक श्रुतस्कन्ध है और आठ वर्ग है। आठ दिनो मे इसका वाचन होता है।

इसमे प्रथम और दूसरे वर्ग के दस दस अध्ययन है। तीसरे वर्ग मे तेरह उद्देशक (अध्ययन) है। चौथे और पाचवे वर्ग मे दस-दस उद्देशक (अध्ययन) है।

छठे वर्ग मे सोलह अध्ययन है।

सातवे वर्ग मे तेरह और आठवे वर्ग मे दस अध्ययन है।

शेष वर्णन ज्ञाता धर्मकथाग सूत्र मे है।

इस सूत्र मे नगर आदि का वर्णन सक्षेप मे किया गया है। नगर आदि से लेकर बोधि-लाभ और अन्त क्रिया आदि का विस्तारपूर्वक वर्णन ज्ञाता धर्म कथाग सूत्र के समान जानना चाहिये।

कृद्दशांगसूत्रं समाप्तम्

—o—

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	का	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
८	२	१५	कोऽर्थः	कोऽर्थः
९	२	१८		पद्म
१०	१	१७	असोभवर	ोगवर
१२	१	नीचे से दूसरी	अंधगवण्हिह्स्स	अंधगवण्हिस्स
१४	१	३	सयाणिज्जंसि	सयणिज्जंसि
१५	२	नीचे से दूसरी	गौतममार	गौतमकुमार
१६	१	७	समाइयमाइयाइं	सामाइयमाइयाइं
१६	२	७	सामयिकादीनि	सामायिकादीनि
३०	१	१२	अजयसेणे	अजियसेणे
३१	२	१८	अनिहतऋप	अनिहतऋपु
४४	१	२१	एसिसए	सरिसए
७०	१	८	गयसुकुमालस्स	गयसुकुमालस्स कुमारस्स
७०	२	८	गजसुकुमालस्य	गजसुकुमालस्य कुमारस्य
७१	१	८	गजसुकुमाल	गजसुकुमाल कुमार
८०	१	७	च	य
१०९	२	२२ व ३०	श्रवण	श्रमण

पृष्ठ	कालम	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
११०	१	२	संपत्तेरण	संपत्तेरणं
१२०	२	१६	एतदथं	ए थं
१३६	१	अन्तिम	अरिट्ट	अरिट्ठ
१४६	२	१४	तत्रैव	यत्रैव
१६०	२	२०	पर्सुपासते	पर्युपासते
२००	१	७	च	य
२४०	२	१०	चतस्त्रः	चतस्रः
२५४	१	१०	बीइसमं	बीसइमं
२६४	२	१	पच्च	पञ्च

टिप्पणियां

१	अभवत्	पेज २	'आसीत्' इत्यप्यर्थ ।
२	वर्ण्य	पेज २	वर्णक , वर्णयितु योग्य इत्यर्थ ।
३	उस समय	पेज २	अवसर्पिणी काल के चतुर्थ आरक मे, जब कि भगवान् महावीर अपने चरण विहार से इस भारत भूमि को पावन कर रहे थे ।
४	वर्णनीय	पेज ३	वर्णन करने योग्य ।
५	उत्तर पूर्व दिशा भाग मे	पेज ३	ईशान कोण मे ।
६	महा हिमवान् पर्वत के समान	पेज ३	महान् हिमालय पवत जैसे गुणो से सुशोभित । जिस प्रकार महा हिमवान् पर्वत लोक की मर्यादा करता हे, उसी प्रकार राजा प्रजा के लिये मर्यादा, जिसे आज की परिभापा मे आचार सहिता कहा जा सकता है, निर्द्धारित करता है, एव जिस पर दृढता से आचरण करता हे । इस दृष्टि से वह राजा कौणिक मलय पर्वत के समान कीर्ति रूपी सुवास से सुगन्धित एव कर्त्तव्य पालन करने कराने मे अत्यन्त जागरूक एव दृढ होने से मेरु तुल्य अचल था । आज के शासक एव शासित इससे वहुत कुछ सीख ले सकते है ।
७-८-९	नगरी, पर्वत, राजा	पेज ३	इनके विस्तृत कलात्मक एव गुणात्मक वर्णन की जानकारी के लिये "औपपातिक सूत्र" का अवलोकन करे ।
१०-११	परिसा णिग्गया जाव परिसा पडिगया	पेज ४	परिसा णिग्गया जाव परिसा पडिगया (परिपद् आई यावत् परिपद् लौट गई) उस वक्त की प्रचलित भापा मे परिसा-परिषद् शब्द नागरिक अथवा ग्रामीण जनो के अर्थ मे प्रयुक्त होता था, जो भगवान् का अथवा धर्माचार्यो एव धर्मोपदेशको का धर्मोपदेश सुनने के लिये अपने अपने घरो से निकल कर आते थे एव धर्म श्रवण के पश्चात् पुन लौट जाते थे ।
१२	यावत्	पेज ५	यह शब्द इस सूत्र-ग्रन्थ मे स्थान-स्थान पर वहुलता से प्रयुक्त हुआ ह । इस शब्द का सामान्य शाब्दिक अर्थ होता हे" से लेकर पर्यन्त"। पर विशेप अर्थ मे यह उस काल की श्रुत एव लेखन पद्धति

की एक शैली के रूप मे विकसित हो गया था और बहुलता से प्रयोग मे लिया जाता था, जिसके अनुसार 'जाव' (यावत्) शब्द का प्रयोग कथन के सक्षिप्तिकरण का द्योतक समझा जाता था।

जहा-जहा जिस-जिस विषय के निश्चित पाठ होते थे, उनमे से जिस सन्दर्भित विषय के पाठ को कहना होता था तो उसके लिये 'जाव' कहकर या लिखकर यह दर्शा दिया जाता था कि अमुक अमुक पाठ अमुक-अमुक जगह या शब्द से लेकर अमुक-अमुक जगह या शब्द तक समझ लिया जाय। जैसे "आइगरेण जाव सपत्ते ण" वाक्य प्रयोग से यह अर्थ लिया जाना अपेक्षित है कि तीर्थंकर अरिहन्त प्रभु की स्तुति के लिये जो पाठ निश्चित है उसमे से "आइगरेण" शब्द या जगह से लेकर "सपत्ते ण" शब्द या जगह तक समझ लिया जाय। इसमे "आइगरेण" से लेकर "सपत्ते ण" का पाठ इस तरह से आएगा—"आइगरेण तित्थयराण सय सबुद्धाण, पुरिसुत्तमाण, पुरिससिहाण, पुरिसवर पु डरियाण,पुरिसवर गन्धहत्थिण, लोगुत्तमाण, लोगनाहाण, लोगहियाण लोगपइवाण, लोगपज्जोयगराण,अभयदयाण, चक्खुदयाण, मग्गदयाण,सरणदयाण, जीवदयाण, वोहिदयाण, धम्मदयाण, धम्मदेसियाण, धम्मनायगाण, धम्मसारहिण, धम्मवर चाउरतचक्कवट्ठीण, दीवोत्ताण, सरणगइ पइट्ठाण, अप्पडिहय वरनाणदसणधराण, विअट्ठछउमाण, जिणाण जावयाण, तिन्नाण तारयाण, बुद्धाण वोहियाण, मुत्ताण, मोयगाण, सव्वन्नुण हव्वदरिसिण, सिव मयल मरुअमणतमक्खय मव्वावाह-मप्पुणराविति सिद्धिगइ नामधेय ठाण सम्पत्ते ण"

इस प्रकार जहा जहा जिस जिस सन्दर्भ मे "जाव" शब्द का प्रयोग आए वहा वहा वही सन्दर्भित पाठ समझना चाहिये।

२३	**पाच सौ साधुओ के परिवार सहित**	**पेज ५**	कुछ टीकाकारो ने इसका भिन्न अर्थ भी किया है। जैसे पाच सौ साधु उनके अनुशासन मे थे, साथ थे—ऐसा नही। पर यह अर्थ ठीक नही बैठता। पाच सौ साधु साथ लेकर चलना उस वक्त की सामाजिक, भौगोलिक एव राजनैतिक आदि परिस्थितियो मे असम्भव हो, ऐसा नही लगता, फिर शब्द स्पष्ट हैं एव यथार्थसूचक है।—(सम्पादक)
२४	**पाच वर्ण**	**पेज ५**	इन्द्र, नील, वैडूर्य, पद्म, रागादि।
२५	**मर्यादापालक**	**पेज ११**	टिप्पण सख्या ६ देखें।
२६	**सार्थवाह**	**पेज १३**	वणिक्, जो उस समय की पद्धति के अनुसार पूरे समूह के साथ व्यापार हेतु देशाटन पर निकलते थे क्योंकि उस युग मे आवागमन के साधन आज की तरफ उन्नतावस्था मे नही थे, अत चोर डाकू

आदि के आक्रमण की सभावनाए निरन्तर रहती थी। उनसे रक्षा करने आदि की व्यवस्थाका पूरा भार भी स्वय पर लेकर चलता था।

१७ महाहिमवान पेज १३ इसका अर्थ भी टिप्पण सख्या ६ के समान जानना चाहिये।

१८ देवानन्दा की तरह उपासना करती है पेज ४७ भगवान् महावीर स्वामी की माता देवानन्दा रथ पर चढकर जिस प्रकार भगवान् के दर्शन हेतु गई एव वन्दन नमस्कार करके उपासना करने लगी एव जिसका विस्तार से वर्णन भगवतीसूत्र आदि शास्त्रो मे मिलता हे, वैसा ही वर्णन यहा भी समझना चाहिये।

१९ यथा अभय पेज ६० (जिस प्रकार अभयकुमार ने) ज्ञाताधर्म कथाग, (घासीलाल जी म०) अध्ययन १ सूत्र १४ पृष्ठ १९८-२००

२० जहा मेहकुमारे पेज ६४ ज्ञाता धर्म कथाग अध्ययन १ सूत्र १७ पृष्ठ २३७-२३९ (घासी लाल जी म सा)

२१ जहा मेहे पेज ७२ ज्ञाता धर्म कथाग अध्ययन १ सूत्र ३२--३८, पृष्ठ ३७८-४३२ (घासी लाल जी म सा)

२२ जहा महाबलस्स पेज ७६ भगवती सूत्र भाग ८ शतक ९, उद्देशक ३३, पृष्ठ ४९९--५५५ (जमालिअभिनिष्क्रमण)

२३ निक्षेपक पेज १०९ उपसहारक वाक्य। यह शब्द इस भाव का द्योतक है कि प्रभु महावीर ने इस अध्ययन अथवा वर्ग का यह अर्थ कहा है।

२४ गगदत्ते तहेव पेज १४१ इन गगदत्त मुनि का वर्णन भगवती सूत्र मे विस्तार से है कि किस तरह वे भगवान् के दर्शनार्थ एव धर्मोपदेश श्रवणार्थ गये थे। उसी तरह मकई गाथापति भी गये।

२५ यथा स्कन्दकस्य पेज १४३ भगवती सूत्र मे इसका विस्तृत वर्णन है।

२६ जैसे पूर्णभद्र पेज १४५ उववाई सूत्र, [घासी लाल जी म सा] सूत्र स २, पृष्ठ स २०-२६

२७ उत्क्षेपक पेज १७९ प्रारम्भिक वाक्य। उपोद्घात। भूमिका। यह शब्द इस भाव का द्योतक है कि प्रभु महावीर ने पिछले अध्ययन अथवा वर्ग का जो भाव कहा है वह सुना। अब अगले अध्ययन अथवा वर्ग का क्या अर्थ कथन किया है। यह कृपा कर बताइये।

२८ उत्क्षेपक पेज १८३ टिप्पण सख्या २७ देखे।

२९ ३० जहा महाबलस्स पेज १९६-१९७ कृपया टिप्पण स २२ देखे।

३१ जहा कूणिए पेज १९८ उववाई सूत्र (श्री घासी लाल जी म सा सूत्र ११ पृष्ठ ४९-५७

३२ जहा उदायणे पेज १९८ भगवती सूत्र (श्री घासी लाल जी म) भाग ११, शतक १३, उद्देशक ६, सूत्र ३, पृष्ठ २१-२२

३३	उक्खेवओ	पेज १६८ टिप्पण सख्या २७ देखे।
३४	कूणिक के समान	पेज १६६ टिप्पण सख्या ३१ देखे।
३५	उदायन की तरह	पेज १६६ टिप्पण सख्या ३२ देखे।
३६	निक्षेपक	पेज २०३ टिप्पण सख्या ३३ देखे
३७	पारित्ता	पेज २२८ सैलाना से प्रकाशित सूत्र मे यह शब्द नही है। सम्भव है कुछ अन्यो मे भी न हो, जो हमारी जानकारी मे न आये हो (सम्पादक)।

अस्वाध्याय

निम्नलिखित ३४ कारण टालकर स्वाध्याय करना चाहिये—

अस्वाध्याय के ३४ कारण

	(क) आकाश सम्बन्धी	अस्वाध्याय की काल मर्यादा
१	बडा तारा टूटे तो	एक पहर तक
२	उदय अस्त के समय लाल दिशा	जब तक रहे
३	अकाल मे मेघ गर्जना हो तो	दो प्रहर तक
४	अकाल मे विजली चमके तो	एक प्रहर तक
५	अकाल मे विजली कडके तो	दो प्रहर तक
६	शुक्ल पक्ष की एकम् दूज व तीज की राते	एक प्रहर रात्रि तक
७	आकाश मे यक्ष का चिन्ह हो तो	जब तक दिखाई दे
८	काली धूअर हो तो	जब तक रहे
९	सफेद धूअर हो तो	जब तक रहे
१०	आकाश मण्डल धूलि से आच्छादित हो तो	जब तक रहे
	(ख) औदारिक एव ग्रहण सम्बन्धी	
११	तिर्यञ्च जीवो के हड्डी, रक्त एव मास ६० हाथ के भीतर हो तो	जब तक रहे
१२	मनुष्य के हड्डी, रक्त एव मास १०० हाथ के भीतर हो तो	जब तक रहे
१३	मनुष्य की हड्डी, यदि जली या धुली न हो तो	१२ वर्ष तक
१४	अशुचि की दुर्गन्ध	जब तक आए या दिखाई दे तब तक।
१५	श्मशान भूमि	सो हाथ से कम दूर हो तो
१६	चन्द्र ग्रहण खण्ड अवस्था मे	८ प्रहर तक
	पूर्ण अवस्था मे	१२ प्रहर तक
१७	सूर्य ग्रहण खण्ड अवस्था मे	१२प्रहर तक
	पूर्ण अवस्था मे	१६प्रहर तक

१८	राजा अथवा गणाधिपति का अवसान होने पर	जब तक उत्तराधिकारी घोषित न हो तब तक
१६	युद्ध स्थान के निकट	जब तक युद्ध चले तब तक
२०	उपाश्रय अथवा स्वाध्याय स्थान मे पचेन्द्रिय का शव पडा होने पर	जब तक पडा रहे तब तक

(ग) अन्य

२१	आषाढ मास की पूर्णिमा	१ दिन रात
२२	भाद्रपद मास की पूर्णिमा	१ दिन रात
२३	आश्विन मास की पूर्णिमा	१ दिन रात
२४	कार्तिक मास की पूर्णिमा	१ दिन रात
२५	चैत्र मास की पूर्णिमा	१ दिन रात
२६	आषाढ पूर्णिमा के बाद की प्रतिपदा	१ दिन रात
२७	भाद्रपद पूर्णिमा के बाद की प्रतिपदा	१ दिन रात
२८	आश्विन पूर्णिमा के बाद की प्रतिपदा	१ दिन रात
२९	कार्तिक पूर्णिमा के बाद की प्रतिपदा	१ दिन रात
३०	चैत्र पूर्णिमा के बाद की प्रतिपदा	१ दिन रात
३१	प्रात	१ मुहूर्त भर
३२	मध्याह्न	१ मुहूर्त भर
३३	सध्या	१ मुहूर्त भर
३४	अर्द्ध रात्रि	१ मुहूर्त भर

नोट —(१) उपरोक्त अस्वाध्याय के ३४ कारणो के समय को छोड कर बाकी समय मे स्वाध्याय करना चाहिये । खुले मु ह नही बोलना चाहिये एव दीपक के उजाले मे नही बाचना चाहिये ।

(२) मेघ गजनादि मे अकाल आर्द्रा नक्षत्र से पूर्व और स्वाति नक्षत्र से बाद का माना गया ह ।